बेदारियां, परमेश्वर की मुलाकातें

मुद्रण और वितरण: **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण : फरवरी 2015

द्वारा संकलित: आशीश रायचुर (सीनियर पास्टर)
अनुवादक : डॉर्थी शरदकान्त थॉमस
टाईप सेटिंग, प्रूफ रीड़िंग : शरदकान्त थॉमस

संपर्क :

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

विनामूल्य वितरण के लिए

इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से संभव हुआ है। यदि आपने इस विनामूल्य पुस्तकों द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च द्वारा प्रकाशित विनामूल्य पुस्तकों की छपाई एवं प्रकाशन के लिए योगदान दें। आपका दान भेजने हेतु चबूवण्वतहध्हपअम इस पते पर जाएं। धन्यवाद!

डाकसूची

नए पुस्तकों के प्रकाशित होने के बाद उन्हें प्राप्त करने के लिए यदि आप अपना नाम हमारी डाकसूची में दर्ज कराना चाहते हैं, तो कृपया हमें अपना सही डाक पता भेजें।

ज्यादा पुस्तकों के लिए

आपकी स्थानीय कलीसिया, बाइबल अध्ययन समूह, बाइबल कॉलेज, सेमिनार आदि में उपयोग करने हेतु हमें आपको अतिरिक्त प्रतियां भेजकर प्रसन्नता होगी। कृपया हमें बताएं कि आपको कितने पुस्तकों की आवश्यकता है, साथ ही साथ डाक पता भी भेजें।

(Hindi book - Revivals Visitations and Moves of God)
बेदारियां, परमेश्वर की मुलाकातें और कार्य (हिन्दी)

बेदारियां, परमेश्वर की मुलाकात और कार्य

मैं अपना मुंह नीतिवचन कहने के लिये खोलूंगा; मैं प्राचीनकाल की गुप्त बातें कहूंगा, जिन बातों को हम ने सुना, और जान लिया, और हमारे बाप दादों ने हम से वर्णन किया है। उन्हें हम उनकी सन्तान से गुप्त न रखेंगे, परन्तु होनहार पीढ़ी के लोगों से, यहोवा का गुणानुवाद और उसकी सामर्थ्य और आश्चर्यकर्मों का वर्णन करेंगे (भजनसंहिता 78:2–4)

मसीही अगुवों की सभा का आयोजन करें

ऑल पीपल्स चर्च, पासबानों, स्थानीय कलीसिया के अगुवों, मसीही संस्थाओं के अगुवों को और मसीही सेवकाई में शामिल अन्य लोगों को पवित्र आत्मा से अभिषिक्त होकर तैयार करता है और प्रतिदान (इम्पार्टेशन) प्रदान करता है। अभिषिक्त शिक्षा, आत्मा की अगुवाई में सेवकाई और प्रतिदान के अलावा, हमारी टीमें सहभागियों के साथ व्यक्तिगत विचारों का व्यक्तिगत आदान–प्रदान और चर्चा करती हैं। प्रत्येक क्रिश्चियन लीडर्स कान्फ्रंस विशिष्ट तौर पर 2, 3 दिनों के लिए रहती है और उसका ज़ोर विशिष्ट विषय पर होता है। सहभागी यहां से नवीनीकरण, और सामर्थ प्राप्त करके और उनकी सेवकाई में अधिक प्रभाव और प्रभावकारिता के लिए लैंस होकर जाएंगे। क्रिश्चियन लीडर्स कान्फ्रेंस विशिष्ट तौर पर स्थानीय कलीसिया, मसीही सेवकाई, मिशन संस्था या डिनॉमिनेशन के मुख्यालय द्वारा उसके क्षेत्र के या उसके नेटवर्क या डिनॉमिनेशन के अंतर्गत कलीसियाओं और पासबानों के लिए आयोजित की जाती है। आयोजक संस्था कांन्फ्रस का, उसी तरह सहभागियों को निमंत्रण देने का खर्च उठाती है। ऑल पीपल्स चर्च क्रिश्चियन लीडर्स कान्फ्रेस में सहभागियों की सेवा करने हेतु अपनी सेवकाई टीम भेजेगी।

हमारी टीमें सामान्य तौर पर इन विषयों पर सेवकाई करेगी :

- **बेदारियां, परमेश्वर की मुलाकात और कार्य** : उत्तेजना उत्पन्न करती है और बेदारी के लिए प्रतिदान (इम्पार्टेशन) भेजती है, इस समझ के साथ की बेदारी की खोज कैसे करें और उसे कैसे संभालकर रखें।
- **उपस्थिति और महिमा** : परमेश्वर की उपस्थिति और महिमा, परमेश्वर की प्रकट उपस्थिति में कैसे प्रवेश करें, परमेश्वर की महिमा कैसे प्रकट करें और जहां उसकी उपस्थिति वास करती है और उसकी महिमा प्रकट होती है, वहां उसके लोगों को उसका निवासस्थान बनाना, आदि बातों की समझ प्रदान करता है।
- **राज्य के निर्माता (परमेश्वर का राज्य और राज्य का निर्माण)** : परमेश्वर के राज्य की स्पष्ट समझ प्रदान करता है और लोगों का निर्माण करने और राज्य के उद्देश्य को आगे बढ़ाने पर ज़ोर देते हुए एकता का गहरा बोध उत्पन्न करता है।
- **समतल भूमि** : व्यक्तिगत परिवर्तन, छुटकारा लाता है और शुद्धता, परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत जीवन, खराई और मसीही अगुवों के जीवनों में आचरण की बुनियाद स्थापित करता है।
- **परमेश्वर का भवन** : यह विषय स्थानीय कलीसिया के लिए परमेश्वर की अभिकल्पना, परमेश्वर के नक्शे के अनुसार स्थानीय कलीसिया का निर्माण कैसे करें, और परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार उसे कैसे बनाएं इसकी उचित समझ प्रदान करता है।
- **आज प्रेरित और भविष्यद्वक्ता की सेवकाई** : यह विषय प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की सेवकाई को सक्रिय बनाता है और इन सेवा–क्षेत्रों में कैसे कार्य करना चाहिए इसकी उचित समझ प्रदान करता है।
- **चंगाई और छुटकारा प्रदान करना** : चंगाई और छुटकारा प्रदान करने हेतु सुसज्जीकरण, उचित समझ, अनुग्रह और अभिषेक प्रदान करता है।
- **वरदानों को प्रकट करना और आत्मा के अभिषेक में कार्य करना** : आत्मा के वरदानों को सक्रिय बनाता है, आत्मा के वरदानों को उचित रीति से कैसे प्रकट करें, आत्मा के अभिषेक में कैसे प्रेरित हों, आगे बढ़ें और बढ़ते चले जाएं इसकी समझ प्रदान करता है।

- **विवाह और परिवार** : वैवाहिक जीवन और परिवार का निर्माण कैसे करें, उसकी परवरिश और रक्षा कैसे करें इस विषय में प्रत्येक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण।
- **पवित्र जनों को तैयार करना और बाजार के स्थान में परिवर्तन** : सात मुख्य कार्य, शहरी मिशन और विश्वासियों को कैसे तैयार करें और व्यापार केंद्रों में प्रभाव डालने हेतु उन्हे कैसे भेजें, परमेश्वर की अगली बेदारी के लिए कलीसिया को तैयार करना आदि के विषय में यह समझ प्रदान करता है।
- **अन्य विषय** : प्रभु जैसे अगुवाई और मार्गदर्शन करता है, उसके अनुसार नए विषयों को जोड़ा जाएगा।

क्रिश्चियन लीडर्स कान्फ्रंस के लिए विषयों की वर्तमान सूची के लिए देखें : apcwo.org/CLC

क्रिश्चियन लीडर्स कान्फ्रंस की योजना तैयार करने और समय निश्चित करने हेतु हमें इस पते पर ई–मेल करें : contact@apcwo.org

विषयसूचि

परिचय		vii
1.	हमारी तलाश	01
2.	प्रेरितों के कामों की पुस्तक का सफर	07
3.	समयरेखा : सुधार, बेदारियां, पुनर्स्थापन और मिशन	27
4.	सुधारक और सुधार	65
5.	बेदारी की कुछ कहानियां	66
6.	कलीसिया की पुनर्स्थापना	79
7.	हमारे दिन में बेदारी	85
8.	बेदारी की खोज – परमेश्वर की भेंट और कार्य के लिए पुकार	99
9.	परमेश्वर की उपस्थिति का पोषण करने और उसकी महिमा प्रकट करने हेतु बेदारी को संभालना	108
10.	ग्रंथ सूची	116

परिचय

बेदारी का अर्थ है जो कुछ मर गया है, मिट गया है उसे फिर जिलाना। यही बेदारी है। आज की अधिकतर कलीसिया को बेदारी की ज़रूरत है। जब परमेश्वर असाधारण तरीके से आता है, और कलीसिया सामान्य तौर पर जिन बातों को अनुभव करती है उससे अधिक उपस्थिति और सामर्थ को वह मुक्त करता है, तो हम उसे परमेश्वर के संजीवन का प्रकटन कहते हैं। परमेश्वर का प्रत्येक प्रकटन परमेश्वर का निवासस्थान बनने पाए और परमेश्वर का कार्य बनने पाए, वह उस कलीसिया से परे निकलकर शहर, समाज और राष्ट्र में फैले। परमेश्वर के इस कार्य का परिणाम सुसमाचार प्रचार, मिशन और महान आदेश की परिपूर्णता होता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक से आरंभ कर और विभिन्न सदियों में, परमेश्वर के अनेकों संजीवन और बेदारियां होती रही हैं।

हम कलीसिया के इतिहास का अवलोकन करते हैं। इतिहास को समझने से वर्तमान की सही परिभाषा करने और भविष्य की तैयारी करने में हमें सहायता मिलती है। परमेश्वर ने पिछले दिनों में जो कुछ किया है, उनसे, कहानियों का पुनरावलोकन करने और उचित प्रश्न पूछने से हमें प्रेरणा, अंतर्दृष्टियां और सबक मिलते हैं : हम बेदारियों, संजीवनों और परमेश्वर की आत्म–जागृतियों के विषय में कलीसिया के इतिहास से क्या सीख सकते हैं? परमेश्वर का दर्शन परमेश्वर का संजीवन कैसे बन जाता है? परमेश्वर के वास्तविक संजीवन के क्या चिन्ह हैं? हम परमेश्वर की बेदारी, संजीवन और आत्म–जागृति का भंड़ारीपन कैसे करते हैं?

कटनी से पहले "पिछली बारीश" आती है। *" इसलिए हे भाइयो, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो; देखो, गृहस्थ पृथ्वी के बहुमूल्य फल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है। तुम भी धीरज धरो, और अपने हृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का शुभागमन निकट है"* (याकूब 5:7,8)। बाइबल के संदर्भ में, पहली वर्षा वह बौछार होती थी जो सामान्य तौर पर अक्टूबर–नवम्बर में आती थी और बीज के लिए ज़मीन तैयार करती थी। पिछली वर्षा मार्च–अप्रैल के दौरान आती थी, और वह कटनी से पहले फसल के पकने के लिए आवश्यक होती थी। यदि हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर अपने पुनरागमन से पहले, एक सामर्थी अंत समय के उड़ेले जाने की, बड़ी बेदारी की और कटनी की तैयारी कर रहा है, तो हमें पवित्र आत्मा की पिछली वर्षा के लिए खुद को और हमारी मण्डलियों को तैयार करना चाहिए।

इस पुस्तक की ऐतिहासिक विषय–वस्तु कई विश्वसनीय माध्यमों से ली गई है जिसकी सूची इस पुस्तक के अंत में दी गई है। इस कार्य में बाइबल आधारित विषय–वस्तु और अंतर्दृष्टियां परमेश्वर के वचन के व्यक्तिगत अध्ययन का, प्रभु के साथ यात्रा करते समय पाए गए अनुभवों के माध्यम से सीखने का, उसी तरह परमेश्वर के अन्य कई सेवकों की सेवकाईयों के माध्यम से सीखने का फल है।

हमें भरोसा है कि यह संकलन परमेश्वर के लिए उत्साह को प्रज्वलित करेगा और कई स्थानों में बेदारी की आग लगाएगा। हमारी इच्छा केवल यह नहीं है कि बेदारी की आग भड़क उठे, परंतु हम यह देखना चाहते हैं कि स्थानीय मण्डलियां और विश्वासियों का समाज बढ़ते हुए पैमाने में परमेश्वर की उपस्थिति का, उसकी महिमा के और बड़े प्रकाशन का निवासस्थान बने, ताकि संसार सच्चे और जीवित परमेश्वर से भेंट कर सके।

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

1

हमारी तलाश

जब हम बेदारी, परमेश्वर के संजीवन या भेंट और आत्म–जागृति के लिए प्रार्थना करने, तलाश करने और उसे पाने की कोशिश करने के विषय में बोलते हैं, तब हम वास्तव में क्या पाना चाहते हैं? क्या हम मात्र 'मसीही' उत्तेजना की ऋतु, लगातार कई सभाओं की अपेक्षा करते हैं या किसी चमत्कारपूर्ण प्रकाशन या विशेष घटना की तलाश में हैं? हम वास्तव में किस बात की खोज में हैं?

1949–1952 में परमेश्वर ने स्कॉटलैंड के हेब्राइड्स टापूओं में आई बेदारी के लिए डंकन कैम्पबेल का उपयोग किया। उसने इन शब्दों में बेदारी का सार प्रस्तुत किया है : *"बेदारी परमेश्वर से तर–बतर (संतृप्त) समाज है।"* बेदारी में, हमारी तलाश, हमारा जोश, हमारा लक्ष्य परमेश्वर को और पाना होता है (और वास्तव में होना चाहिए), जब तक कि हम उससे परिपूर्ण न हो जाएं, संतृप्त न हो जाएं और लबालब न भर जाएं।

"बेदारी परमेश्वर का आना है!" – लू एंगल

उसे और पाने की इच्छा

हमारी तलाश मात्र परमेश्वर से और पाने की है, जो हमारे द्वारा विश्वासियों की मण्डली के रूप में व्यक्तिगत तौर पर और सामूहिक तौर पर अनुभव की जाती है और व्यक्त की जाती है। परमेश्वर अनंत है और हम उसके विषय में कितना जान सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं, इसके लिए कोई सीमा नहीं है।

जैसा उसके वचन में बताया गया है, उसके अनुसार उसने खुद को हमारे लिए उपलब्ध कर दिया है। उदाहरण के तौर पर, उसने हमसे प्रतिज्ञा की है कि वह हमेशा हमारे साथ रहेगा। वह हमारे साथ है। वह अपने लोगों के मध्य वास करता है और चलता–फिरता है। परंतु, अनुभव की दृष्टि से देखा जाए तो, हमेशा और कुछ होता है जिसे हम अनुभव कर सकते हैं और हमेशा और कुछ होता है जिसे हम दूसरों पर प्रकट कर सकते हैं। उसके विषय में अधिक जानना, उससे अधिकाई से भेंट करना, अनुभव करना और व्यक्त करना (प्रकट करना) हमारी तलाश है। हमारा प्रयास मात्र धर्म–सैद्धांतिक या बौद्धिक नहीं है। हम उसे जानना चाहते हैं और अनुभव करना चाहते हैं ताकि हमारे द्वारा, अन्य लोग उसे जान सकें और अनुभव कर सकें। और हम निरंतर बढ़ते पैमाने पर इसकी चाहत रखते हैं।

हम उसमें परिपूर्ण हैं। हमने उसमें हर प्रकार की आत्मिक आशीष पाई है। हमारे पास उसमें हमारी संपन्न आत्मिक विरासत है। फिर भी, असीम परमेश्वर के हमारे प्रतिदिन के जीवन और अनुभव में और जो कुछ उसने हमारे लिए किया, उसमें हमें और की नितांत ज़रूरत है।

मसीह की समानता – व्यक्तिगत और सामूहिक मापदण्ड

यीशु का संसारिक जीवन और सेवकाई, जिसके विषय में सुसमाचारों में लिखा गया है, ऐसा जीवन था जो परमेश्वर की महिमा का मूर्त रूप था और उसे प्रकट करता था (इब्रानियों 1:2, यूहन्ना 1:14, यूहन्ना 2:11)। परमेश्वर की महिमा परमेश्वर के स्वभाव की अभिव्यक्ति है – परमेश्वर कौन है और वह क्या करता है। कलीसिया का जन्म व्यक्तिगत स्तर पर प्रत्येक विश्वासी के जीवन में, और कलीसिया के द्वारा सामूहिक स्तर पर, मात्र मसीह के जीवन

का दो बारा उत्पन्न होना और बहुगुणन था। हमें वैसा ही चलना है जैसे वह चला (1 यूहन्ना 2:6)। इस संसार में हमारा जीवन उसके जीवन के समान होना चाहिए (1 यूहन्ना 4:17)। व्यक्तिगत तौर पर और सामूहिक तौर पर विश्वासियों के समुदाय के रूप में, हमें जीवन और सेवकाई में निरंतर बढ़ते हुए पैमाने में परमेश्वर की महिमा को प्रकट करना है।

हमें फिर जिला

भजनसंहिता 85:6

क्या तू हम को फिर न जिलाएगा, कि तेरी प्रजा तुझ में आनन्द करे?

भजनसंहिता 85 का लेखन बाबुल की बंधुवाई के बाद किया गया होगा, जब यहूदी बाबुल से यरूशलेम को लौटे। यहां पर एक प्रार्थना है, बेदारी के लिए पुकार – सब कुछ सही स्थान में हो इसलिए पुकार। बेदारी का अर्थ है वापस जीवन प्रदान करना, किसी चीज में सांस फूंकना ताकि उसे पूर्व स्थिति में लाया जा सके। बेदारी के लिए प्रार्थना ऐसी है ताकि लोग स्वयं परमेश्वर में आनंद मनाने के स्थान पर आ सकेंगे। बेदारी का अंतिम उद्देश्य हमारा ध्यान और हमारा आनंद उस स्थान में लाना जहां उसे होना चाहिए, स्वयं परमेश्वर में।

एज्रा 9:8–9

[8] और अब थोड़े दिन से हमारे परमेश्वर यहोवा का अनुग्रह हम पर हुआ है, कि हममें से कोई कोई बच निकले, और हमको उसके पवित्र स्थान में एक खूंटी मिले, और हमारा परमेश्वर हमारी आंखों में ज्योति आने दे, और दासत्व में हमको कुछ विश्रान्ति मिले।

[9] हम दास तो हैं ही, परन्तु हमारे दासत्व में हमारे परमेश्वर ने हमको नहीं छोड़ दिया, वरन फारस के राजाओं को हम पर ऐसे कृपालू किया, कि हम नया जीवन पाकर अपने परमेश्वर के भवन को उठाने, और इसके खंडहरों को सुधारने पाए, और हमें यहूदा और यरूशलेम में आड़ मिली।

एज्रा की पुकार और प्रार्थना यह अंगीकार करती है कि परमेश्वर के भवन को और उसकी शहरपनाह को दुरूस्त होते हुए देखने में, उसका फिर निर्माण होते हुए देखने में वे पुनर्स्थापन का अनुभव कर रहे हैं, जो कि वास्तव में परमेश्वर अपने लोगों को पुनर्जीवित कर रहा है।

उसी तरह, आज कलीसिया में, स्थानीय कलीसियाई समुदाय के संदर्भ में हो या मसीह की विशाल देह के संदर्भ में हो, जब हम विश्वासियों को आत्मिक सच्चाई के एक या कई क्षेत्रों में पुनर्स्थापित, दुरूस्त, पुनर्निर्मित होते और उठते देखते हैं, तब हम कहते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों को संजीवित कर रहा है। बेदारी आई है।

बेदारी के ऋतु

प्रेरितों के काम 3:19

"इसलिए मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाए, जिससे प्रभु के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन आए।

जब हम पश्चाताप करते हैं, उद्धार पाते हैं और क्षमा पाते हैं, तब हम प्रभु की उपस्थिति से विश्राम का समय पाने की स्थिति में होते हैं। कई ऋतु जो संजीवन और ताज़गी लाते हैं।

ये वे ऋतु होते हैं जहां पर हम पर लोगों के रूप में परमेश्वर की उपस्थिति उण्डेली जाती है।

हम समझते हैं कि ऋतु का आरम्भ और अंत होता है। अतः, हम इन ताज़गी देने वाले या वर्षा के ऋतुओं को 'परमेश्वर की भेंट या संजीवन' का नाम देते हैं। लोग सामान्य तौर पर जिन बातों का अनुभव करते हैं उन बातों के अलावा, परमेश्वर असाधारण रूप से अपने लोगों से मुलाकात करता है। यही बेदारी है।

हम इसे और इस तरह भी देख सकते हैं :

1 कुरि. 5:4

कि जब तुम, और मेरी आत्मा, हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ के साथ इकट्ठे हो...

हम जानते हैं कि परमेश्वर का आत्मा विश्वासियों के नाते हम में से प्रत्येक में वास करता है। हम पवित्र आत्मा का मन्दिर हैं। हम यह भी जानते हैं कि जब हम एक साथ इकट्ठा होते हैं, तब प्रभु यीशु हमारे साथ उपस्थित होता है और उसकी सामर्थ भी उपस्थित होती है।

परंतु हम यह भी जानते हैं कि प्रकटीकरण और कार्य संचालन में इस सामर्थ के विभिन्न स्तर हो सकते हैं। कभी–कभी ऐसा लगता है कि 'कोई सामर्थ नहीं' है। अक्सर 'सामर्थ' उपस्थित होती है। परंतु, बेदारी, आत्मा के उण्डेले जाने या संजीवन के समय में, लोग जानते हैं कि एक 'महान सामर्थ' उपस्थित होती है, जैसा कि हम प्रांरभिक कलीसिया में देखते हैं।

प्रेरितों के काम 4:33

और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।

प्रेरितों के काम 5 में हमें एक छोटी–सी झलक मिलती है कि यह 'महान सामर्थ' लोगों के मध्य क्या कर रही थी।

प्रेरितों के काम 5:12–16

12 और प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, (और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे।

13 परन्तु औरों में से किसी को यह हियाव न होता था कि उनमें जा मिले; तौभी लोग उनकी बड़ाई करते थे।

14 और विश्वास करनेवाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे);

15 यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस आए, तो उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए।

16 और यरूशलेम के आस पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे।

बेदारी की ऋतु (आत्मा उण्डेले जाने, या संजीवन, या ताज़गी का या विश्राम का समय) ऐसा समय होता है जब परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ का स्तर उन्नत होता है, परमेश्वर अपने लोगों के मध्य संचार करता है और सामर्थपूर्ण कार्य करता है।

परमेश्वर के ऐसे कार्य का उल्लेख करने हेतु हम विभिन्न शब्दों का उपयोग करने का प्रयास करते हैं : **बेदारी, जागृति, आत्म–जागृति, संजीवन, विश्राम का समय, ताज़गी का समय, नवीनीकरण, परमेश्वर की भेंट, आत्मा की वर्षा, आत्मा का उण्डेला जाना, महिमा का प्रकट होना** आदि। परमेश्वर के ऐसे कार्य का उल्लेख करने हेतु हम चाहे जिस शब्द या संज्ञा का उपयोग करें, हमारी तलाश केवल यह है – हम उसकी उपस्थिति की अपेक्षा रखते हैं और अधिकाई से उसकी उपस्थिति पाना चाहते हैं।

बेदारी की ऋतु हमें नए क्षेत्रों में उठाती है

एक ऋतु का अंत दूसरी नई ऋतु का संकेत देता है। ऋतु का अंत अवनति या नीचे स्तर पर वापस गिरावट नहीं दर्शाती। नई ऋतु जिसका उदय होता है, उसका उद्देश्य हमें और ऊँचे स्तर, और बेदारी, और बड़ी ताज़गी, और बड़ी महिमा की और ले जाना होता है।

हमारी आत्मिक यात्रा ऐसी होती है जहां पर हम एक महिमा से दूसरी महिमा की ओर (2 कुरि. 3:18), विश्वास से विश्वास की ओर (रोमियों 1:17), एक बल से अधिक बल की ओर (भजनसंहिता 84:7) आगे बढ़ते हैं।

बेदारी की ऋतु हमें महिमा के नए स्तर को अनुभव करने की सामर्थ देती है। यह नए स्तर की ओर परिवर्तन के लिए एवं हमारे लिए निमंत्रण होता है कि हम आगे कदम बढ़ाएं और इस नए स्तर पर जिएं। प्रत्येक ऋतु में हमारा लक्ष्य वह सब कुछ थामना और मज़बूत बनाना होता है जो हमारे लिए मुक्त किया गया है और उसे जीवन एवं सेवकाई का नया स्वरूप बनाना होता है। यह हमें अगली ऋतु के लिए, हम पर उदय होने वाली बड़ी महिमा के लिए तैयार करता है।

अतः एक अर्थ से, यदि हम अपनी आत्मिक यात्रा सही तरह से करते हैं, तो हमें अखंड, निरंतर बेदारी में रहना है, परमेश्वर की उपस्थिति की सदाबहार ऋतु में जो निरंतर बढ़ते हुए पैमाने पर उण्डेली जाती है। यह यहां पृथ्वी पर प्राप्त की जा सकती है, और हमें इस पर अपनी आंखें लगाना है।

संजीवन की विशिष्ट ऋतु में जो कुछ हमारे लिए भेजा जाता है उसे जब हम उचित रीति से ग्रहण और आत्मसात नहीं करते, तब हम निचले स्तर पर गिर जाते हैं, क्योंकि हमने परमेश्वर में अगले ऊँचे क्षेत्र के लिए खुद को तैयार नहीं किया है।

पूर्वावलोकन : बेदारी (आत्मा की वर्षा) में क्या होता है

प्रेरितों के काम की पुस्तक से आरम्भ कर और संपूर्ण कलीसियाई इतिहास में, हम उन समयों (ऋतुओं) को देखते हैं जब परमेश्वर का अनुभव सामान्य से ऊपर होता है। इसका प्रभाव न केवल विश्वासियों के समुदाय पर होता है, बल्कि उन लोगों पर भी होता है जिन्होंने उद्धार नहीं पाया है, प्रभावित समाज, और दूर के क्षेत्रों पर भी होता है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक से और विभिन्न बेदारियों से जो हम कलीसिया के इतिहास में देखते हैं, हम कुछ दिलचस्प बातों को पाते हैं जो वर्षा, बेदारी, संजीवन की ऋतु में, जो परमेश्वर विश्वासियों के समुदाय पर भेजता है, घटित होती है।

#1, परमेश्वर कौन है इसका बड़ा प्रकटीकरण

हम परमेश्वर के भय और विस्मय, उसकी पवित्रता, उसके प्रेम, उसकी महानता, उसकी सामर्थ से भर जाते हैं। हम अभिभूत हो जाते हैं और हमें अचानक अपने पाप का, निर्बलता, आदि का एहसास होने लगता है।

#2, आत्मिक सत्य और वास्तविकताओं का उच्च प्रकटीकरण

अचानक, जिन सच्चाईयों के विषय में हमने भूतकाल में सुना था, वे संजीवित हो उठती हैं। प्रकाशन पवित्र शास्त्र के पन्नों से अचानक जीवित होकर हमसे बातें करता है। हम वचन के लिए और परमेश्वर के गहरे रहस्यों के प्रति आवेशी बन जाते हैं।

#3, आत्मिक बातों के प्रति परमेश्वर के लोगों में बढ़ता हुआ जोश, उत्साह और आवेश

प्रार्थना, आराधना, वचन, संगति (जिसमें देना शामिल है), शिष्यता, गवाही देना और मिशन आदि बातों के लिए जोश बढ़ता जाता है। लोग बिना किसी प्रेरणा या मनुहार के इन कामों को करने लगते हैं।

#4, उद्धार न पाए हुए लोगों का निरंतर आना

जो यीशु को नहीं जानते, वे परमेश्वर के राज्य की और खींचे जाते हैं। चुंबक के समान, समाज पर परमेश्वर की महिमा उद्धार न पाए हुओं को आकर्षित करती है और वे प्रभु के ज्ञान में लाए जाते हैं।

#5, अलौकिक प्रकाशनों, असामान्य और अद्‌भुत सामर्थ के कामों और आश्चर्यकर्मों में बढ़ोत्तरी

असामान्य बातें होती हैं जिनकी हमने कभी अपेक्षा भी नहीं की थी। ऐसी बातें जिन्हें हम समझा नहीं सकते। अलौकिक प्रकटीकरण, चंगाईयां, आश्चर्यकर्म, छुटकारा, स्वर्गदूतों की भेंट – वह कुछ भी और सब कुछ जिसे करने की परमेश्वर इच्छा रखता है।

#6, समाज का सामर्थपूर्ण परिवर्तन

समुदाय के आस–पास का समाज सामर्थ के साथ प्रभावित होता है। सामाजिक बुराइयां जड़ से मिटने लगती हैं और धार्मिकता और सत्य प्रबल होते हैं।

#7, सेवकों को लैंस करना और भेजना और मिशनों, कलीसिया रोपन में नए सेवकाईयों का आरम्भ और बेदारी की आग का फैलना

विश्वासी सुसज्जित होते हैं और वे बाहर जाकर अपने आसपास के संसार को प्रभावित करते हैं। संगठित प्रयासों के द्वारा जो होता है उससे परे सेवकाइयों और मिशनों का जन्म होता है। बेदारी की आग अन्य स्थानों में ले जाई जाती है।

कार्यक्रम जो हासिल कर सकते हैं उससे परे

"सबसे पहले, मैं आपको बताना चाहता हूं कि बेदारी से मेरा क्या तात्पर्य है। सुसमाचारीय अभियान या विशेष सभा बेदारी नहीं है। सफल सुसमाचारीय अभियान या क्रुसेड में, सैकड़ों या हज़ारों लोग यीशु मसीह के लिए निर्णय लेते हैं, परंतु समाज अछूता रह जाता है, कलीसियाएं सुसमाचार प्रचार से पहले जैसी थी, वैसी ही रह जाती हैं। बेदारी में, परमेश्वर पूरे जिले में कार्य करता है। अचानक समाज को परमेश्वर का एहसास होता है। परमेश्वर का आत्मा स्त्री और पुरुषों को इस प्रकार पकड़ लेता है कि लोग परमेश्वर की बांट जोहने लगते हैं और काम रूक जाता है. ..। परमेश्वर की यह उपस्थिति परमेश्वर द्वारा भेजी गई बेदारी की सर्वोच्च विशेषता है। ... परमेश्वर की सामर्थ, परमेश्वर का आत्मा कार्य कर रहा था, और परमेश्वर के भय ने मनुष्य के प्राणों को थाम लिया – यह परमेश्वर के द्वारा भेजी गई बेदारी थी जो सुसमाचार के क्षेत्र में किए जाने वाले विशेष प्रयासों से भिन्न थी।"
– डंकन कैम्पबेल

बेदारी पूरे कलीसियाई समुदाय को नए स्तर पर, परमेश्वर के नए क्षेत्र में उठा लेती है।

बेदारी में, सब कुछ बहुत कम समय में होता है, जिसे हमारे संगठित कलीसियाई कार्यक्रम और प्रयासों के साथ हासिल करने में कई वर्ष लग जाते हैं। बेदारी का फल महत्वपूर्ण रूप से उन बातों से बड़ा होता है जिन्हें सामान्य तौर पर अनुभव किया जाता है और बेदारी का फल बना रहता है।

परमेश्वर ने सचमुच अपनी कलीसिया के लिए जो कुछ ठहराया है, अर्थात मनुष्यों के मध्य परमेश्वर का निवास, उसमें बेदारी आगे ले चलती है, मनुष्यों के मध्य परमेश्वर की महिमा के लिए निवासस्थान बनने के लिए आगे ले चलती है।

जो कुछ आगे है उसमें प्रवेश करने हेतु भूतकाल से सीखना

आने वालों अध्यायों में, हम पिछली बेदारियों का सर्वेक्षण करेंगे, भूतकाल को दोहराने का प्रयास करने के लिए नहीं, परंतु सबक सीखने, अंतर्दृष्टियां प्राप्त करने, उस क्षेत्र को समझने जिसमें हमें चलना चाहिए और जो कुछ हमने पहले अनुभव किया उससे परे आगे बढ़ने हेतु प्रेरित होने के लिए। यदि परमेश्वर ने इतिहास में ऐसा किया, तो हम जानते हैं कि वह आज भी और आगे भी ऐसा करेगा। हम अतीत से सबक सीखते हैं ताकि जो कुछ हम हमारे दिनों में पाते और अनुभव करते हैं उनके हम बेहतर भंड़ारी बन सकें।

पुराने कुओं को फिर से खोदना और नए कुओं को खोलना

उत्पत्ति 26:18–23,32–33

[18] तब जो कुएं उसके पिता इब्राहीम के दिनों में खोदे गए थे, और इब्राहीम के मरने के पीछे पलिश्तियों ने भर दिए थे, उनको इसहाक ने फिर से खुदवाया; और उनके वे ही नाम रखे, जो उसके पिता ने रखे थे।

[19] फिर इसहाक के दासों को नाले में खोदते खोदते बहते जल का एक सोता मिला।

[20] तब गरारी चरवाहों ने इसहाक के चरवाहों से झगड़ा किया, और कहा, कि यह जल हमारा है। सो उसने उस कुएं का नाम एसेक रखा; इसलिये कि वे उससे झगड़े थे।

[21] फिर उन्होंने दूसरा कुआं खोदा, और उन्होंने उसके लिये भी झगड़ा किया, सो उसने उसका नाम सित्रा रखा।

[22] तब उसने वहां से कूच करके एक और कुआं खुदवाया, और उसके लिये उन्होंने झगड़ा किया; सो उसने उसका नाम यह कहकर रहोबोत रखा, कि अब तो यहोवा ने हमारे लिये बहुत स्थान दिया है, और हम इस देश में फूलें–फलेंगे।

[23] वहां से वह बर्शेबा को गया।

[32] उसी दिन इसहाक के दासों ने आकर अपने उस खोदे हुए कुएं का वृत्तान्त सुना के कहा, कि हमको जल का सोता मिला है।

[33] तब उसने उसका नाम शिबा रखा; इसी कारण उस नगर का नाम आज तक बर्शेबा पड़ा है।

यह अनुच्छेद इसहाक के जीवन की कुछ दिलचस्प घटनाओं को बताता है। इसहाक ने उसके पिता अब्राहम द्वारा खोदे गए कुछ पुराने कुओं को फिर से खोद निकाला। जब उसने पुराने कुओं को फिर से खोदने का प्रयास किया, तब उसे कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा, परंतु उसने उन्हें खोदना जारी रखा। उसके बाद, उसने कुछ नए कुएं खोदे और उसे पानी मिला और वह उस स्थान की ओर आगे बढ़ता रहा जहां उसे बढ़ने के लिए जगह मिल गई और उसने स्वयं बर्शेबा की स्थापना की। उसी तरह, हमें पुराने कुओं को फिर से खोदना है जो परमेश्वर ने कलीसिया के पिछले इतिहास में उसे दिए हैं। जो कुछ परमेश्वर ने कलीसिया को दिया है, उसमें से हमें पीना है। इसके अलावा, हमें नए क्षेत्र में बढ़ना है और नए कुएं खोदना है और आत्मा में ऐसे स्थानों में आ पहुंचना है जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखे हैं – वर्तमान समय की कलीसिया।

कलीसिया ने भारी जागृति और बेदारी के समयों को देखा है। ये समय तब आए जब कलीसिया बड़े सूखे का अनुभव कर रही थी या उसके चारों ओर आत्मिक अंधकार छाया हुआ था।

फिलिस्तीनों ने अब्राहम के कुओं को बुझा दिया था और मिट्टी से भर दिया था। कलीसिया के कई प्रकार के शत्रु थे, गलत कल्पनाएं, गलत शिक्षा, संसारिकता, आत्मिक आलस्य आदि, जिसने कलीसिया में प्रवेश करके बेदारी के कुंओं को बंद कर दिया था जिनसे हम लगातार पी रहे थे। जब हम परमेश्वर द्वारा कलीसिया को दिए गए पुराने कुओं को खोदने की कोशिश करते हैं, ये 'फिलिस्तीनी' कभी–कभी हमें डरा देते हैं, हमसे विवाद करते हैं।

बेदारी में, जो कुछ हमने पहले पाया था उसकी ओर लौटना होता है, जो कुछ हम प्रेरितों के कामों की पुस्तक में पाते हैं उसकी ओर लौटना होता है। जो कुछ भी प्रेरितों के कामों की पुस्तक में पहले अनुभव किया गया था उस ओर लौटना बेदारी होता है। लौटने से, हम वास्तव में हम उसमें आगे बढ़ते हैं जैसा हमें वास्तव में होना चाहिए, जिसके लिए हमें सचमुच बुलाया गया है।

"बेदारी के पूर्व की घटनाएं, साथ की घटनाएं और उसके परिणाम हमेशा मुख्य रूप से वैसे ही होते हैं जैसे पिन्तेकुस्त के दिन में थे।" – चार्ल्स फिनी

कलीसिया की बड़ी अत्यावश्यक ज़रूरत है आत्मा का जीवन, सामर्थ और कार्य – हम अपने मानवीय प्रयासों से जो प्रणालियां और सुधार लाते हैं, उनकी नहीं। हमें बेदारी की ज़रूरत है!

2

प्रेरितों के काम की पुस्तक का सफ़र

प्रेरितों के कामों की पुस्तक में परमेश्वर के ऐसे संजीवन और बेदारी के अंदाज़न चालीस वर्षों का लेख पाया जाता है जिसका आरम्भ यरूशलेम में पिन्तेकुस्त के दिन परमेश्वर आत्मा के उण्ड़ेले जाने के कारण हुआ। आत्मा का उण्डेला जाना विश्वासियों के समुदाय के मध्य परमेश्वर का वासस्थान बन गया और यह आग यरूशलेम से पूरे एशिया माइनर में, और यूरोप में, और उसके बाद विश्व की राजधानी रोम में फैल गई।

पवित्र आत्मा जिन लोगों और समुदायों को सामर्थ देता है, उनमें और उनके द्वारा सामर्थ के साथ कार्य करता है, उनके माध्यम से क्या कर सकता है उस विषय में प्रेरितों के कामों की पुस्तक में लिखा गया है कि

प्रार्थना में एकचित्त

प्रेरितों के काम की पुस्तक प्रभु के स्वर्गारोहण से खुलती है, जिसके बाद 120 शिष्यों ने एक चित्त होकर लगातार दस दिन प्रार्थना में बिताए (प्रेरितों के काम 1:14)। आत्मा की वर्षा को ग्रहण करने की तैयारी करते समय इससे हमें दो मुख्य उपादानों के विषय में मालूम होता है : अ. एक चित्त, एकता, एक मन और एक चित्त होना, ब. लगातार सामुहिक प्रार्थना।

आत्मा का उण्डेला जाना

आत्मा का उण्डेला जाना, जिसका उद्देश्य पृथ्वी के छोर तक गवाह बनने हेतु शिष्यों को सामर्थ प्रदान करना था, उसके साथ अलौकिक घटना भी शामिल थी। जिस नगर में सामान्यतया 100,000 निवासी थे उसमें फसह के पर्व के समय, पहले फल और पिन्तेकुस्त के पर्ब के लिए करीब 500,000 लोगों की भीड़ इकट्ठा हुई थी। आत्मा के उण्डेले जाने के समय जो कुछ देखा गया था उसके प्रति विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएं थीं; कुछ लोग उलझन में पड़े थे (प्रेरितों के काम 2:6), कुछ अचंभित और विस्मित थे (प्रेरितों के काम 2:7), कुछ लोग अचंभित थे और उलझन में पड़े थे (प्रेरितों के काम 2:12), और कुछ जो कुछ हुआ था उसका उपहास कर रहे थे (प्रेरितों के काम 2:13)।

यही वह है!

प्रेरितों के काम 2 (बड़ी आन्धी की सी सनसनाहट, आग की जीभें, अन्य भाषाएं) और योएल 2 में दी गई भविष्यद्वाणी (दर्शन, स्वप्न, भविष्यद्वाणी) में कोई समानता नहीं है, फिर भी पवित्र आत्मा ने कहा "यह वही है!" (प्रेरितों के काम 2:16) यहां पर एक महत्वपूर्ण सबक है, आत्मा की प्रत्येक वर्षा में अलौकिक प्रकटीकरण समान हो यह ज़रूरी नहीं है। पवित्र आत्मा उसकी प्रत्येक वर्षा में उसकी इच्छा के अनुसार करेगा।

प्रेरितों के कामों की पुस्तक का पुनरावलोकन करने का हमारा तरीका इस समझने की इच्छा के दृष्टिकोण से होगा कि जब पवित्र आत्मा की बड़ी वर्षा होती है और जब यह अन्य क्षेत्रों में पहुंचता है तब क्या होता है।

हमारे अध्ययन के लिए हम प्रेरितों के कामों की पुस्तक को तीन भागों में विभाजित करेंगे :

अ. पहिले आठ वर्ष बताते हैं कि आत्मा का उण्डेला जाना समाज में और समाज के द्वारा क्या करता है। हम यह समझने का प्रयास करते हैं कि बेदारी में कलीसिया (विश्वासियों का समुदाय) कैसी दिखेगी।

ब. अगले दस वर्ष प्रकट करते हैं कि एक समाज किस प्रकार बेदारी की आग लगाकर अन्य कई समुदायों को बेदारी में जागृत कर सकता है। हम सीखने का प्रयास करते हैं कि बेदारी की आग को अन्य समुदायों में कैसे फैलाएं।

क. अगले बीस वर्ष बेदारी की आग ले चलने वाले व्यक्ति, पौलुस के जीवन में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

पहिले आठ वर्ष (सन 30– सन 38) : कलीसिया में बेदारी

प्रेरितों के काम 2 – प्रेरितों के काम 8

पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा 120 लोगों पर उण्डेला गया था। आत्मा के कार्य के परिणामस्वरूप पहिले संदेश के प्रचार करने के बाद 3000 लोगों ने उद्धार पाया। विश्वासियों के समुदाय में कई लोग आते रहे। लंगड़े व्यक्ति के चंगा होने के बाद और 4000 कलीसिया में शामिल हो गए। कई लोग उद्धार पाते रहे और आत्मा का कार्य इस समाज में सामर्थ के साथ चलता रहा।

यहां यरूशलेम की कलीसिया में आत्मा के उण्डेले जाने के फल के विषय में और यरूशलेम नगर में और पड़ोस के क्षेत्रों में लोगों के जीवन पर उसके प्रभाव के विषय में बताया गया है :

1. ऐसा समाज जिसने कई आत्माओं को उद्धार पाते हुए और परमेश्वर के राज्य में आते हुए देखा (प्रेरितों के काम 2:41,47, प्रेरितों के काम 4:4, प्रेरितों के काम 5:14, प्रेरितों के काम 6:7)।
2. ऐसा समाज जो दृढ़तापूर्वक मन्दिर में और घर–घर जाकर शिक्षा, संगति, साझा जीवन और प्रार्थना में लगा रहा (प्रेरितों के काम 2:42, प्रेरितों के काम 5:42)।
3. ऐसा समाज जिस पर उनके मध्य होने वाले परमेश्वर के कामों को देखकर बड़ा भय या परमेश्वर के लिए आदर छा गया। (प्रेरितों के काम 2:43, प्रेरितों के काम 5:5,11)।
4. ऐसा समाज जिसने बड़ी सामर्थ और बड़ा अनुग्रह प्राप्त किया, जिससे अनेक चिन्ह और चमत्कार हुए जिससे नगर पर बड़ा प्रभाव पड़ा (प्रेरितों के काम 2:43, प्रेरितों के काम 4:16,33)।
5. ऐसा समाज जिसने बड़े हियाव के साथ धार्मिक अगुवों के द्वारा विरोध और सताव का सामना किया (प्रेरितों के काम 4:5–6, प्रेरितों के काम 5:17–18, प्रेरितों के काम 5:29–32, प्रेरितों के काम 5:40–41, प्रेरितों के काम 6:12, प्रेरितों के काम 7:59, प्रेरितों के काम 8:1)।
6. ऐसा समाज जो आपस में मिल–बांटकर रहता था और जो निःस्वार्थ थे (प्रेरितों के काम 2:44–45, प्रेरितों के काम 4:32–35)।
7. बहुत प्रार्थना करने वाला समाज (प्रेरितों के काम 4:29–31)।
8. ऐसा समाज जो एक मन और एकचित्त था (प्रेरितों के काम 4:32, प्रेरितों के काम 5:12)।
9. ऐसा समाज जिसका प्रभाव अन्य क्षेत्रों तक फैल गया जिससे लोग परमेश्वर की चंगाई और छुटकारे की सामर्थ को अनुभव करने के लिए अन्य शहरों से यरूशलेम को आए (प्रेरितों के काम 5:16)।
10. ऐसा समाज जिन्होंने स्वर्गदूतों से भेंट की जो उनके लिए छुटकारा और शिक्षा ले आए (प्रेरितों के काम 5:19–20, प्रेरितों के काम 8:26)।
11. ऐसा समाज जिसने शांति के साथ और बुद्धिमानी के साथ समस्याओं को सुलझाया (प्रेरितों के काम 6:1–7)।

12 ऐसा समाज जहां पर पवित्र आत्मा, विश्वास, बुद्धि और सामर्थ से परिपूर्ण होकर लोगों ने अन्य लोगों के मध्य बड़े चिन्ह और चमत्कार किए (प्रेरितों के काम 6:3,8,10)।

13 ऐसा समाज जिसका प्रभाव उन दिनों के अगुवों तक पहुंच गया जिससे कई याजकों ने विश्वास किया (प्रेरितों के काम 6:7)।

14 ऐसा समाज जिसने आठ वर्षों में शिष्यों को तैयार किया जो बेदारी की आग – वचन और आत्मा को, यहूदिया, गलील और सामरिया (प्रेरितों के काम 9:31) और सूरिया जैसे अन्य स्थानों में ले गए (प्रेरितों के काम 8:4–8, प्रेरितों के काम 11:19–21)। यह अनुमान लगाया जाता है कि प्रेरितों के काम 8:1 के सताव के बाद यरूशलेम से करीब 20,000 विश्वासी यहूदिया, सामरिया और गलील के 200 नगरों और गांवों में तितर–बितर हो गए। एक रात में बेदारी की आग फैल गई और बढ़ गई। हमारे पास फिलिप्पुस के विषय में लिखा हुआ है जिसने सामरिया, गाज़ा और उस समय के संपूर्ण यहूदिया के समुद्री तट पर अश्दोद से लेकर कैसरिया तक सुसमाचार प्रचार किया (प्रेरितों के काम 8:40)। हमारे पास यरूशलेम के उन विश्वासियों के विषय में लिखा हुआ है जिन्होंने यरूशलेम से 300 किलोमीटर उत्तर में सूरिया की अंताकिया में सेवकाई स्थापित की (प्रेरितों के काम 11:19–21)।

15 ऐसा समाज जिसने परमेश्वर के हस्तक्षेप को देखा जिसने ऊंचे पद पर आसीन लोगों को प्रभावित किया – इथियोपियन खोजा और तरसुसवासी शाऊल (प्रेरितों के काम 8:27, प्रेरितों के काम 9:1–6)।

कलीसिया को वास्तव में क्या होना चाहिए

कई तरह से यरूशलेम की कलीसिया के आठ वर्ष, हमें यह बताते हैं कि विश्वासियों का समाज कैसे दिखाई देता है जब वे परमेश्वर के आत्मा को अनुभव करते हैं और अनुग्रह, सामर्थ और महिमा प्रकट होती है। कलीसिया को (स्थानीय कलीसियाई) ऐसा ही होना चाहिए। हमारी कलीसिया की सेवकाई में और कार्यक्रमों में जो प्रयास हम लगा देते हैं उनकी हम सराहना करते हैं, परंतु हमें ऐसी कलीसिया बनने का प्रयास करना है जो उसकी प्रकाशित महिमा के अधीन बढ़ते प्रमाण में जीती और कार्य करती है।

अगले दस वर्ष (ए.डी. 38 – ए.डी. 47) : बेदारी की आग फैलाना

प्रेरितों के काम 8 – प्रेरितों के काम 13

यरूशलेम में हुए सताव के साथ, चेले तितर–बितर हो गए और इसके परिणामस्वरूप बेदारी की आग चारों तरफ फैल गई। यरूशलेम की कलीसिया के "समान डी एन ए" वाला शिष्यों का समुदाय उदय हुआ। ये समुदाय उनके मध्य पवित्र आत्मा के सामर्थी कार्य और आंदोलन को अनुभव कर रहे थे। अगले दस वर्षों में जो मुख्य घटनाएं हुईं उनमें से कुछ घटनाओं के विषय में यहां बताया गया है:

- सन 38 प्रभु से शाऊल की मुलाकात (प्रेरितों के काम 9:1–6)।
- प्रेरितों ने यरूशलेम से निकलकर अन्य स्थानों में नई कलीसियाओं को मज़बूती दी : सामरिया (प्रेरितों के काम 8:14), अन्य कई स्थानों में जिसमें लुद्दा और शारोन, और याफा शामिल हैं (प्रेरितों के काम 9:35–36)। लुद्दा यरूशलेम से उत्तर–पूर्व की और 25 मील (40 किलोमीटर) की दूरी पर दो महत्वपूर्ण महामार्गों, मिस्र– सूरिया महामार्ग और याफा–यरूशलेम महामार्ग के मध्य बसा हुआ था। कलीसियाएं भी बढ़ रही थीं और परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ का अनुभव ले रही थीं।
- परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और रोमी सूबेदार के साथ दर्शन में बातें की और अन्यजातियों के लिए सुसमाचार के द्वार को खोल दिया। प्रभु ने कैसरिया में रोमी सूबेदार की सेवा करने के लिए पतरस को भेजा (प्रेरितों के काम 10:1)। अन्यजातियों ने परमेश्वर के कार्य को अनुभव किया।
- यरूशलेम की कलीसिया में और अगुवों को तैयार किया गया (बरनबास, सीलास और अगबूस)। बरनबास को सूरिया की अंताकिया में कलीसिया की देखरेख करने के लिए भेजा गया। बाद में, पौलुस को बरनबास के साथ सेवा करने के लिए अंताकिया लाया गया। भविष्यद्वक्ता अगबूस और अन्य भविष्यद्वक्ताओं को यरूशलेम से अंताकिया में सेवा करने के लिए भेजा गया (प्रेरितों के काम 11:27)।
- सन 44, "महान हेरोदेस" का पोता हेरोदेस अग्रिप्पा 1 (जो यीशु के जन्म से पहले यहूदिया पर राज करता था) मसीहियों का और सताव करने लगा। उसने यूहन्ना के भाई याकूब की हत्या कर दी और पतरस को कैद कर लिया। परंतु यरूशलेम की कलीसिया प्रार्थना में दृढ़ रही। परमेश्वर ने पतरस को छुड़ाने के लिए स्वर्गदूतों को भेजा। राजा हेरोदेस अग्रिप्पा पर परमेश्वर का दण्ड उतर आया।
- सारांश रूप में, कई समुदाय (स्थानीय कलीसियाएं) उदय हुए, जिनमें यरूशलेम की कलीसिया का गुण (समान डी एन ए) था, वे आत्मा और वचन में सामर्थी थे, जो उनके व्यक्तिगत स्थानों में लोगों की सेवा करते थे।
- नए कलीसियाई समुदायों को यरूशलेम की कलीसिया के अगुवे भेंट देते रहे, उनके मध्य सेवकाई करते रहे और उन्हें प्रतिदान (इम्पार्टेशन) करते रहे, इस कारण ये नए कलीसियाई समुदाय जल्द ही बढ़ गए। उदाहरण के तौर पर, अंताकिया में तीन–चार सालों में अगुवों, भविष्यक्ताओं और शिक्षकों का उदय हुआ (प्रेरितों के काम 13:1)।

हम यरूशलेम की कलीसिया से कई सबक सीखते हैं कि जब हम स्थानीय समाज के रूप में परमेश्वर की वर्षा या संजीवन को अनुभव करते हैं, तब बेदारी की आग कैसे फैलती है।

- ✓ ऐसे विश्वासियों को तैयार करें जो वचन और आत्मा में दृढ़ हैं। जो बेदारी लेकर चल सकते हैं, और जहां कहीं वे जाते हैं, वे स्थानीय कलीसियाओं को उत्पन्न कर सकते है और तैयार कर सकते हैं।
- ✓ लोगों और विभिन्न स्थानों में जिन्होंने अब तक सुसमाचार नहीं सुना है, वहां सुसमाचार पहुंचाने हेतु अवसर के नए द्वारों को खोलने के लिए परमेश्वर पर विश्वास करें और उसके साथ आगे बढ़ें।
- ✓ सताव होते हुए भी ईश्वरीय/स्वर्गदूतों के हस्तक्षेप के लिए परमेश्वर पर विश्वास करें। पीछे न हटें। आगे बढ़ें।
- ✓ जो नई स्थानीय कलीसियाएं स्थापित हो रही हैं उन्हें मज़बूत बनाने हेतु अगुवों को तैयार करें और भेजें।

प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक लूका

प्रेरितों के कामों का लेखक संभवतः ग्रीक था जो सूरिया के अंताकिया नगर में रहता था। लूका पेशे से वैद्य था (कुलुस्सियों 4:14)। लूका प्रभु यीशु मसीह पर उद्धारकर्ता के रूप में कब, कहां और कैसे विश्वास करने लगा इस विषय में बाइबल कुछ नहीं कहती। शायद वह प्रेरितों के काम 11:20–21 में उद्धार पाए हुए लोगों के समूह का एक भाग था। सूरिया का अंताकिया पौलुस का 'होम चर्च' था और इसलिए अंताकिया में उसके सेवकाई के आरम्भ से ही वह पौलुस के साथ जुड़ा होगा। प्रेरितों के कामों की पुस्तक में "चार हम वाले भाग" हैं; (प्रेरितों के काम 16:10–40; 20:5–15; 21:1–18; 27:1–28:16)। इन अनुच्छेदों में लूका खुद को लिखानों में शामिल करता है जिससे यह दिखाई देता है कि वह व्यक्तिगत तौर पर वहां था और जो कुछ हो रहा था उसमें सहभागी था।

अगले बीस वर्ष ;सन 48 . सन 68द्ध रू बेदारी को ले चलने वाला पौलुस

प्रेरितों के काम 13 – प्रेरितों के काम 28

प्रेरितों के कामों की बाकी पुस्तक प्रेरित पौलुस की यात्राओं और सेवकाई पर ध्यान केंद्रित करती है, वह भूमध्यक क्षेत्र में और यूरोप के कुछ हिस्सों में सुसमाचार प्रचार करता फिरा। यहां उसके प्रारंभिक दिनों और सेवकाई के विषय में कुछ मुख्य बातें बताई गई हैं।

- सन 38 पौलुस का दमिश्क में परिवर्तन हुआ (प्रेरितों के काम 9:1–19), उस समय उसकी आयु 29 वर्ष से 33 वर्षों के बीच होगी।
- पौलुस ने अपने उद्धार के तुरंत बाद थोड़े समय के लिए दमिश्क के सिनेगॉग (आराधनालय) में प्रचार किया (प्रेरितों के काम 9:19–22)।
- पौलुस अन्यजातियों को प्रचार करने के उद्देश्य से अरेबिया में गया जो उस समय नबातियन राज्य का हिस्सा था (गलातियों 1:17)।
- उसके बाद पौलुस दमिश्क को लौट गया और बाकी तीन वर्ष वह वहां के सिनेगॉग (आराधनालय) में सुसमाचार प्रचार करता रहा (प्रेरितों के काम 9:23–25)।
- यहूदी और अरीतास राजा के प्रतिनिधि (9 बी.सी. – ए.डी. 40), अरेबिया के नबातियन राज्य के राज्यकर्ताओं ने पौलुस को ढूंढ़ने और कैद करने की कोशिश की (2 कुरि. 11:32–33)। परंतु पौलुस दमिश्क को चला गया और उसने यरूशलेम की ओर 15 दिनों की यात्रा की।

यरूशलेम को संक्षिप्त भेंट

- बरनबास ने प्रेरितों से पौलुस का परिचय करने का प्रयास किया (प्रेरितों के काम 9:27)। इस अवसर पर पौलुस 15 दिनों तक पतरस के साथ रहा और "प्रभु के भाई याकूब को छोड़ और प्रेरितों में से किसी से न मिला" (गलातियों 1:18–19)।
- यरूशलेम में रहते हुए पौलुस "निधड़क होकर प्रभु के नाम से प्रचार करता था" (प्रेरितों के काम 9:28–29)। वह यूनानी यहूदी के साथ वाद–विवाद करता था।
- जब चेलों को पता चला कि पौलुस के विरोध में षड्यंत्र रचा जा रहा है, तब वे तुरंत उसे कैसरिया ले गए, उन्होंने उसे जहाज पर बिठा दिया और उसे तरसूस को घर भेज दिया (प्रेरितों के काम 9:30)।

मौन वर्ष

- शायद 6 वर्षों तक या ज्यादा–से–ज्यादा दस वर्षों तक पौलुस के जीवन पर पर्दा पड़ा हुआ है। इस दौरान पौलुस का संक्षिप्त उल्लेख उसकी गलातियों को लिखी हुई पत्री में आता है जहां पर वह उल्लेख करता है कि यरूशलेम छोड़ जाने के बाद, वह सूरिया और किलिकिया के देशों में आया (गलातियों 1:21,23)। अधिक निश्चित तौर पर, यह सूरिया का अंताकिया और किलिकिया का तरसुस होगा। तरसुस किलिकिया का मुख्य नगर था और पौलुस का गृह नगर था।

  बाद में, जब बरनबास को सूरिया में अंताकिया की कलीसिया में सेवा करने हेतु उसकी सहायता की ज़रूरत पड़ी, तब वह पौलुस को ढूंढ़ने तरसुस गया और उसे अंताकिया ले आया जहां उन्होंने एक वर्ष से अधिक समय तक एक साथ सेवा की (प्रेरितों के काम 11:25–26)।

हम विभिन्न दृष्टिकोनों से पौलुस का अध्ययन कर सकते हैं, अगुवे के रूप में, प्रेरित के रूप में, परंतु हम पौलुस की ओर परमेश्वर के आत्मा के कार्य के वाहक, बेदारी के वाहक के रूप में देख सकते हैं। (यह किसी रीति से प्रेरित के रूप में उसकी बुलाहट की या परमेश्वर के राज्य के लिए जो कुछ उसने किया उसकी उपेक्षा नहीं करता)। हम उसके जीवन और सेवकाई से क्या सीख सकते हैं जो हमें परमेश्वर के आत्मा के कार्य के वाहक बनने की योग्यता प्रदान करेगा।

पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा (ए.डी. 44 – ए.डी. 46)

प्रेरितों के काम 13:1 – प्रेरितों के काम 14:28

सूरिया का अंताकिया – पौलुस के गृह चर्च का शहर

बाइबल में दो शहरों का उल्लेख अंताकिया के रूप में किया गया है, एक सूरिया के अंताकिया में है और दूसरा पिसिदिया के अंताकिया में। सूरिया के अंताकिया का उल्लेख प्रेरितों के काम 13 में किया गया है, और यहां की कलीसिया पौलुस की गृह कलीसिया थी और पौलुस की तीन मिशनरी यात्राओं का आरम्भबिंदु थी। सूरिया के अंताकिया की स्थापना ई. पू. 301 में सूरिया का राज्यकर्ता सेलूकस निकेटर ने की और यह शहर यरूशलेम के उत्तर में 300 मील की दूरी पर स्थित था। अंताकिया सूरिया की राजधानी थी, और नए नियम के दिनों में तीसरा सबसे बड़ा शहर था जिसमें अनुमानतः 500,000 लोग थे, यह केवल रोम और एलेक्ज़ैंड्रिया से छोटा था। अंताकिया अत्यंत विकसित वाणिज्यिक केन्द्र था जिसमें कई प्रकार की सुविधाएं थीं, जैसे राजा का दरबार, चार मील लम्बे संगमरमर के रास्ते जिसके दोनों और स्तंभावली थी, दिए से रोशन रास्ते और इमारतें, कृत्रिम जलाशय, जलप्रपात और फव्वारे, ऑलिम्पिक स्टेडियम जिसमें ग्रीक के साथ प्रतियोगिता करने वाले ऑलिम्पिक खेलों का आयोजन किया जाता था, नाटकगृह, निजी प्रसाधन गृह, महंगे आलीशान बंगले, अलंकृत बाग–बगीचे, जुलियस सीज़र के बड़े बड़े भवन (अदालतों और सरकारी कामकाजों के लिए सार्वजनिक इमारतें) और ज्युपिटर और डॅफनी के मंदिर, जो अनैतिकता के स्थान थे। अंताकिया पर यहूदी, ग्रीक, रोमी, अरबी और पर्शिया का प्रभाव था। दिलचस्पी की बात यह थी कि 'अंताकिया का नवदीक्षित नीकोलस' उन सात चुने हुए लोगों में से एक था जिसे यरूशलेम की कलीसिया में भोजन खिलाने की सेवा के लिए चुना गया था (प्रेरितों के काम 6:5)। प्राचीन अंताकिया अब तुर्की शहर 'अंताक्या' है जो तुर्कस्तान के दक्षिण–पूर्व में स्थित है।

अंताकिया की कलीसिया में अगुवों की टीम

अंताकिया की कलीसिया में जिस अगुवों की टीम का उदय हुआ वह अत्यंत दिलचस्प है। अंताकिया में पांच पुरुष थे जिन्हें भविष्यद्वक्ता और शिक्षक कहा जाता था (प्रेरितों के काम 13:1) : बरनबास, शिमोन नीगर, कुरेनी लेकियूस, मनाहेम (जो राजा हेरोदेस के साथ पला–बढ़ा था) और शाऊल। उनके नाम बताते हैं कि वे विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रों या जातियों से थे। बरनबास कुप्रस का लेवी था, उसने यरूशलेम की कलीसिया में शिक्षा पाई और अगुवे के रूप में खड़ा हुआ (प्रेरितों के काम 4:36–37)। शिमोन का दूसरा नाम नीगर या काला है। यह अस्पष्ट है कि वह आफ्रिकी था या उसका रंग काला था। परंतु शिमोन यहूदी नाम है, इसलिए दूसरी बात के विषय में हम सोच सकते हैं। लूकिनुस कुरेन से है जो उत्तर आफ्रिका के आधुनिक लिबिया में है (वह संभवतः अन्यजाति विश्वासी था) जो यरूशलेम के कुरेनी दल से होगा जिन्होंने सबसे पहले अंताकिया के अन्यजातियों को प्रचार किया (प्रेरितों के काम 11:20)। मनाहेम का अर्थ है 'सांत्वना देने वाला' और वह हेरोदेस तृतीय का दूधभाई था (प्रेरितों के काम 13:1), जिस हेरोदेस के विषय में हम सुसमाचारों में पढ़ते हैं (लूका 13:32, मरकुस 6:14–28)। मनाहेम का पालनपोषण राजा के दरबार में राजकुमार के साथी के रूप में या उसके 'दूधभाई' के रूप में हुआ होगा, अर्थात, वह हेरोदेस जो बाद में राजा बना। इस प्रकार इस नेतृत्व टीम में एक लेवी, एक यहूदी, आफ्रिका का अन्यजाति विश्वासी, राजा के दरबार में पला–बढ़ा व्यक्ति और अत्यंत विद्वान फरीसी शाऊल आदि से मिलकर यह नेतृत्व टीम बड़ी ही दिलचस्प और विविधतापूर्ण बनी होगी। अंताकिया की कलीसिया भी अन्यजाति विश्वासियों से बनी थी और इस कारण अगुवों की टीम भी उचित थी। ये अगुवे उपवास और प्रार्थना करते थे और प्रभु की खोज में एक साथ लगे रहते थे।

पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा 2 वर्षों तक रही, जहां पर उसने करीब 1200 मीलों की यात्रा की। बर्नबा, पौलुस और यूहन्ना मरकुस (बर्नबा का भतीजा) आदि ने मिलकर एक टीम तैयार की जो अंताकिया से निकल पड़ी।

- **अंताकिया** से दक्षिण–पश्चिम की ओर सोलह मीलों की यात्रा करके वे बंदरगाह वाले नगर **सिलूकिया** की ओर आए।
- सिलूकिया से वे करीब 90 मैल कुप्रुस द्वीप पर **सलमीस** को आए (प्रेरितों के काम 13:4–5)। सलमीस कूप्रुस द्वीप पर पूर्व किनारे पर बसा हुआ सबसे विशाल नगर था। कूप्रुस बरनबास का नगर था। सलमीस में उन्होंने सिनेगॉग (आराधनालय) में यहूदियों को प्रचार किया।

- सलमीस से उन्होंने दक्षिण–पश्चिम की ओर करीब 140 मैलों की ज़मीनी यात्रा की और वे **पाफुस** को आ पहुंचे, जो कूप्रस की राजधानी का शहर था (प्रेरितों के काम 13:6–12)। पाफुस में, उन्होंने सिरगियुस पौलुस सूबे को सुसमाचार सुनाया, और उसने सुसमाचार पर विश्वास किया। पाफुस में पवित्र आत्मा से सामर्थ पाकर पौलुस ने यहूदी जादूगर इलीमास का सामना किया और वह अंधा हो गया।
- पाफुस से वे 150 मैलों की समुद्री यात्रा करके **पिरगा** में आए। पिरगा से मरकुस वापस यरूशलेम घर लौट गया (प्रेरितों के काम 13:13)।
- पिरगा से, वे ज़मिनी यात्रा करके करीब 100 मील का सफर तय कर **पिसिदिया के अंताकिया** में आए (प्रेरितों के काम 13:14–52)। हमारे पास अंताकिया में पौलुस के संदेश का लेख है। कइयों ने सुसमाचार पर विश्वास किया। परंतु, जो यहूदी विश्वास नहीं करते थे उन्होंने सताव शुरू किया और पौलुस और बरनबास को नगर से निकाल दिया।
- पिसिदिया के अतांकिया से, पौलुस और बरनबास पूर्व की ओर 60 मीलों की यात्रा करके **इकुनियुम** आए, जो लुकाउनिया प्रांत की राजधानी थी (प्रेरितों के काम 14:1–5)। यह नगर ऊंची दीवारों से घिरा हुआ था। कुछ समय उन्होंने इकुनियुम में बिताया जहां वे "प्रभु के भरोसे पर हियाव से बातें करते थे : और वह उन के हाथों से चिन्ह् और अद्भुत काम करवाकर अपने अनुग्रह के वचन पर गवाही देता था" (प्रेरितों के काम 14:3)।
- वे इकुनियुम से लुकाउनिया के दूसरे नगर **लुस्त्रा** को 18 मीलों की यात्रा तय करके आए (प्रेरितों के काम 14:6–20)। लुस्त्रा में एक जन्म से लगड़ा व्यक्ति चंगा हुआ। लोगों ने सोचा कि देवता उतर आए हैं और "उन्होंने बरनबास को ज्यूस, और पौलुस को हिरमेस कहा" (प्रेरितों के काम 14:12)। पौलुस ने उन्हें रोका और उन्हें वचन सुनाया। पिसिदिया के अंताकिया से और इकुनियुम से कुछ यहूदी लुस्त्रा को आए और उन्होंने पौलुस को पत्थरवाह किया और उसे नगर के बाहर घसीट ले गए।
- लुस्त्रा से वे **दिरबे** आए जो 20 मील की दूरी पर था (प्रेरितों के काम 14:20–21)। इकुनियुम, लुस्त्रा और दिरबे **गलातिया प्रांत** के नगर थे। यह संभव है कि इस दौरान पौलुस किसी बीमारी से पीड़ित हो गया जिसके विषय में वह बाद में लिखता है (गलातियों 4:13–14)।
- दिरबे से उन्होंने वापस यात्रा की और फिर से **पहले के स्थानों को** भेंट दी और लुस्त्रा, इकुनियुम और पिसिदिया के अंताकिया की स्थानीय कलीसियाओं में प्राचीनों को नियुक्त किया, फिर वे पंफूलिया के पिरगा को, **अत्तालिया** और फिर वापस सिलुकिया से होते हुए सूरिया के अंताकिया को वापस घर लौट गए (प्रेरितों के काम 14:21–28)।

पौलुस और उसकी टीम ने पवित्र आत्मा की सामर्थ में सेवा की, और यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाते हुए चिन्ह् और चमत्कार किए। उन्होंने यहूदी और अन्यजातियों के मध्य सेवा की और उन्हें सरकारी अधिकारियों को सुसमाचार सुनाने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने विश्वासियों के स्थानीय समुदायों को स्थापित किया, प्राचीनों को नियुक्त किया और उन्हें प्रोत्साहन दिया कि वे प्रभु में आगे बढ़ते जाएं।

उनकी पहली मिशनरी यात्रा के बाद, पौलुस और बरनबास करीब तीन वर्षों तक अंताकिया में रहे।

तीतुस का आगमन। सन 49 में यरूशलेम परिषद

प्रेरितों के काम 15:1–35

प्रेरित पौलुस तीतुस नामक एक जवान व्यक्ति को प्रभु के पास ले आया और उसने उसे विश्वास में बढ़ाया, वह तीतुस को प्रभु में अपना पुत्र कहता है (तीतुस 1:4)। परंतु, नए नियम में हमारे पास यह नहीं लिखा हुआ है कि पौलुस तीतुस को कब, कहां और कैसे प्रभु के निकट ले आया और इस जवान व्यक्ति की उसने परवरिश करना कैसे शुरू किया। हमारे पास केवल यही लिखा हुआ है कि उनकी पहली मिशनरी यात्रा के अंत में तीतुस पौलुस, बरनबास

और सूरिया के अंताकिया में अन्य लोगों के साथ था। तीतुस ग्रीस का निवासी था (गलातियों 2:3), और जन्म से अन्यजाति था और संभवतः सूरिया के अंताकिया में रहता था। तीतुस ने अंताकिया में पौलुस की सेवा की।

सन 49 में "क्या उद्धार पाने के लिए अन्यजातियों का खतना करना चाहिए और उन्हें यहूदी प्रथाओं का पालन करना चाहिए?" इस महत्वपूर्ण विषय को सम्बोधित करने हेतु कलीसिया के लिए यरूशलेम परिषद महत्वपूर्ण थी। जब पौलुस और बरनबास अन्यजाति विश्वासियों के इस मामले की चर्चा करने हेतु यरूशलेम में अगुवों से भेंट करने गए, तब पौलुस तीतुस को अपने साथ ले गया (गलातियों 2:1–3)। इस परिषद में, तीतुस को खतने की ज़रूरत के बिना मसीही विश्वासी के रूप में स्वीकार किया गया (गलातियों 2:3–5)। पौलुस और बरनबास के साथ कलीसिया के प्रेरितों और प्राचीनों ने विचार–विमर्श किया और घोषित किया कि "पवित्र आत्मा को और हमको ठीक जान पड़ा" (प्रेरितों के काम 15:28) कि अन्यजातियों को उद्धार पाने के लिए खतना करने की ज़रूरत नहीं है (प्रेरितों के काम 15:13–39)। इससे अन्यजाति विश्वासियों में बड़ा आनंद हुआ।

पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा (ए.डी.49 – ए.डी.52)।

प्रेरितों के काम 15:36 – प्रेरितों के काम 18:22

पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा का समय तीन वर्षों का था, इस दौरान पौलुस और उसकी टीम ने एशिया माइनर और यूरोप के कई स्थानों को भेंट दी और कई स्थानीय कलीसिया की स्थापना की। उन्होंने विश्व के कुछ मुख्य नगरों में सुसमाचार प्रचार किया जिसमें फिलिप्पी, थिस्सलुनीका, एथेन्स, कुरिन्थुस, इफिसुस की यात्रा की। इस दौरान पौलुस ने 1 और 2 थिस्सलुनीकियों की पत्रियां भी लिखीं।

यूहन्ना मरकुस के विषय में पौलुस और बरनबास में संघर्ष। अंत भला तो सब भला

दूसरी मिशनरी यात्रा का आरम्भ कुछ बुरा हुआ, यूहन्ना और मरकुस को साथ में लेना है या नहीं इस विवाद के चलते हुए पौलुस और बरनबास एक–दूसरे से अलग हो गए। बरनबास यूहन्ना मरकुस को लेकर कुप्रस को चला गया और हम प्रेरितों के कामों की पुस्तक में उसके विषय में फिर नहीं सुनते। परंतु, बाद में पौलुस ने जब कुरिन्थुयों को पत्र लिखा, तब उसने बरनबास के कार्य और सेवकाई के विषय में आदर व्यक्त किया। उसने कहा, *"या केवल मुझे और बरनबास को अधिकार नहीं कि कमाई करना छोड़ें"* (1 कुरि. 9:6)। बाद में, पत्रियों के माध्यम से हमें पता चलता है कि यूहन्ना मरकुस, पौलुस और पतरस के साथ सेवा करता है। इस प्रकार इस घटना के बाद, सारी बातों का अंत भला ही दिखाई देता है : *"अरिस्तर्खुस जो मेरे साथ कैदी है, और मरकुस जो बरनबास का भाई लगता है (जिसके विषय में तुमने आज्ञा पायी थी कि यदि वह तुम्हारे पास आए, तो उससे अच्छी तरह व्यवहार करना)"* (कुलुस्सियों 4:10)। *"केवल लूका मेरे साथ है; मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिए वह मेरे बहुत काम का है"* (2 तीमुथियुस 4:11)। *"इपफ्रास, जो मसीह यीशु में मेरे साथ कैदी है, और मरकुस और अरिस्तर्खुस और देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी हैं, उनका तुझे नमस्कार!"* (फिलेमोन 23–24)। *"जो बाबुल में तुम्हारे समान चुने हुए लोग हैं, वह और मेरा पुत्र मरकुस तुम्हें नमस्कार कहते है"* (1 पतरस 5:13)।

- पौलुस और सीलास ने अतांकिया छोड़कर कलीसियाओं को दृढ़ करते हुए **सूरिया** और **किलिकिया** की यात्रा की (प्रेरितों के काम 15:41)।
- सूरिया और किलिकिया से पौलुस **दिरबे** और **लुस्त्रा** में आया (करीब 270 मील) जहां तीमुथियुस पौलुस की टीम में दाखिल हुआ (प्रेरितों के काम 16:1–5)। इस समय तीमुथियुस की उम्र 17 वर्ष की होगी। हम जानते हैं कि तीमुथियुस के पिता यूनानी थे और उसकी माता यहूदी थी (प्रेरितों के काम 16:3, 2 तीमुथियुस 1:5, 2 तीमुथियुस 3:15)। पौलुस ने तीमुथियुस का खतना कराया ताकि तीमुथियुस यहूदियों के मध्य सेवा कर सके।
- लुस्त्रा से वे करीब 200 मील तय करके **फूगिया** और **गलातिया** प्रांत में गए।
- उसके बाद वे **मूसिया** में आए और उन्होंने बितूनिया जाना चाहा, परंतु पवित्र आत्मा ने उन्हें अनुमति नहीं दी (प्रेरितों के काम 16:6)।
- मूसिया से, वे गलातिया से 200 मील की दूरी पर **त्रोआस** को आए (प्रेरितों के काम 16:8)। त्रोआस प्राचीन ट्रॉय नगर से 4 मील की दूरी पर स्थित था। त्रोआस में पौलुस को मकिदुनिया की बुलाहट मिली (प्रेरितों के काम 16:9)। लूका पौलुस को त्रोआस में आ मिला (प्रेरितों के काम 16:11)। इस प्रकार अब वे चार लोग हो गए, पौलुस, सीलास, तीमुथियुस और लूका।
- त्रोआस से वे जहाज में बैठकर **सुमात्राके** आए और दूसरे दिन बंदरगाह वाले नगर **नियापुलिस** में आए (प्रेरितों के काम 16:11)।
- नियापुलिस से वे बारह मील दूर यात्रा करते हुए **फिलिप्पी** पहुंचे। फिलिप्पी मकिदुनिया के उस भाग का प्रमुख नगर था (प्रेरितों के काम 16:12)। फिलिप्पी में, उन्होंने समाज के हर तबके के लोगों के मध्य सेवा की : धनवान व्यापारी स्त्री लुदिया (प्रेरितों के काम 16:13–15), वेतन प्राप्त कर्मचारी, या नीली कॉलर वाले कर्मचारी का प्रतीक बंदीगृह का अधिकारी (प्रेरितों के काम 16:27–34) और समाज के निर्धन भाग से गुलाम लड़की (प्रेरितों के काम 16:16–20)। ऐसा लगता है कि लूका फिलिप्पी में रह गया, परंतु पौलुस, सीलास और तीमुथियुस वहां से चले गए।
- फिलिप्पी से उन्होंने 105 मील की मैदानी यात्रा की और **अम्फिपुलिस** और **अपुल्लोनिया** होकर **थिस्सलुनीके** में आए (प्रेरितों के काम 17:1–5)। आत्मा के सामर्थ में सुसमाचार प्रचार किया गया (1 थिस्सल. 1:5)। पौलुस ने अपने हाथों से काम करके खुद की और थिस्सलुनीका टीम की सहायता की (1 थिस्सल. 2:9, 2 थिस्सल. 3:6–10)। फिलिप्पियों की कलीसिया ने भी इस टीम को कुछ आर्थिक सहायता भेजी (फिलिप्पियों 4:16)।

- थिस्सलुनीके से 50 मील की यात्रा तय करके वे **बिरीया** आए (प्रेरितों के काम 17:7–9)। सीलास और तीमुथियुस बिरीया में रह गए (प्रेरितों के काम 17:14)।

एथेन्स में, बौद्धिक राजधानी

- **बिरीया** से पौलुस 270 मील की यात्रा तय करते हुए (20 मील ज़मीन से मैदानी यात्रा ओर 250 मील **एथेन्स** की और समुद्री यात्रा) **एथेन्स** (आधुनिक ग्रीस की राजधानी) के लिए निकल पड़ा। ज़मिनी यात्रा बारह दिन की होगी, जो जहाज़ से तीन दिनों में तय की जा सकती थी।

- एथेन्स के विषय में कुछ दिलचस्प तथ्य : एथेन्स का नाम यूनानी देवता एथेना के नाम पर रखा गया था। एथेन्स दुनिया के सबसे पुराने नगरों में से एक है, उसमें लगातार 5000 वर्षों से लोग रहे हैं। एथेन्स कई यूनानी दार्शनिकों का निवासस्थान था : जैसे सुकरात (ई. पू. 469 – ई. पू. 399), प्लूटो (ई. पू. 423 – ई. पू. 348, अंदाजन), डेमोस्थेनिस (ई. पू. 384 – ई. पू. 322)। महान तत्वज्ञानी और वैज्ञानिक अरिस्तु ने भी 18 वर्ष की उम्र से लेकर 37 वर्ष की उम्र होने तक कुछ समय एथेन्स में प्लूटो की अकादमी में अध्ययन करते हुए बिताया। एथेन्स विज्ञान, कला और दर्शन शास्त्र का अध्ययन केंद्र था जहां विश्व के सबसे बड़े विश्वविद्यालय थे। उस समय एथेन्स में दो तत्वज्ञानों का वर्चस्व था : एपिकुरी और स्टोइक्सवाद – तितिक्षावाद। एपिकुरी एपिक्यूरस की शिक्षा का पालन करते थे और विश्वास करते थे कि सब कुछ संयोग से होता है; मृत्यु सारी बातों का अंत है; उनका विश्वास था कि देवता इस संसार से दूर हैं और वे परवाह नहीं करते; और उनका मानना था कि सुखविलास मनुष्य का मुख्य अंत है। तितिक्षावाद या स्टोइक वाद का प्रतिपादन ज़ेनो नामक एक व्यक्ति ने किया जो एपिक्यूरियस का समकालीन था। स्टोईक मतवादियों का विश्वास है कि सबकुछ ईश्वर है और ईश्वर अग्नीमय आत्मा है; मनुष्य को जीवन देने वाली उस अग्नीमय आत्मा की एक छोटी–सी चिनगारी है जो उनमें वास करती है, और जब वे मर जाते हैं तब वह उनके पास लौट जाती है; सब कुछ जो होता है, परमेश्वर की इच्छा से होता है; बार–बार यह दुनिया आग से विघटित हो जाती है और फिर वही घटनाचक्र शुरू होता है। एथेन्स आने के बाद पौलुस ने सीलास और तीमुथियुस को संदेश भेजा कि शीघ्रता के साथ एथेन्स को आए।

- एथेन्स नगर मूर्तिपूजा में लिप्त था (प्रेरितों के काम 17:16)। ग्रीस की तुलना में एथेन्स में ज्यादा मूर्तियां थीं। गायस पेट्रोनियस आर्बिटर (सन 27 – सन 66) रोमन दरबारी था जिसने उपरोध के साथ कहा कि एथेन्स में मनुष्य से अधिक देवता पाना आसान है। एथेन्स के ग्रीक इतिहासकार झेनोफोन ने कहा कि एथेन्स को एक बड़ी वेदी, देवताओं के लिए बड़ा बलिदान कहा जाता था।

- पौलुस ने इस नगर को कैसे मोह लिया यह दिलचस्प है। वह इन लोगों के साथ, सिनेगॉग (आराधनालय) के यहूदियों के साथ, धार्मिक अन्यजाति उपासकों के साथ और बाजार में – व्यापार केन्द्रों में लोगों के साथ वादविवाद किया करता था (प्रेरितों के काम 17:17)। 'अगोरा' एथेन्स का बड़ा व्यापार केंद्र था। अगोरा सभा का खुला मैदान था, जहां लोग वस्तुओं को लाकर बेचते थे। यहां पर लोग आपस में चर्चा करने हेतु इकट्ठा होते थे, और इसी स्थान में राजनैतिक/सरकारी और धार्मिक सभाएं और चर्चा होती थी। यहीं पर जनतंत्र का उदय हुआ। अंगोरा वह स्थान था जहां पर तत्वज्ञानी (उदा. सॉक्रेटिस) अपने विचारों को बताते थे, और बाज़ार जाने वालों को जीवन का अर्थ जैसी बातों के विषय में सवाल पूछते थे।

- एपिकुरी और स्टोइकी पौलुस द्वारा अंगोरा में सिखाए गए उद्धार के सुसमाचार से असहमत थे, और उसे अज्ञानी और विदेशी देवता का समर्थक कहते थे (प्रेरितों के काम 17:18)। उन्होंने मार्स पर्वत पर या अरियुपगुस में उसके बोलने का समय निश्चित किया।

- एथेनियन अरियुपगुस नगर परिषद थी जिसमें चुने हुए लोगों का समुह था, जो न्याय संबंधी, सांस्कृतिक, शिक्षा–विषयक और धार्मिक मामलों के जिम्मेदार थे। अरियुपगुस बैठकर सुनने और मूल्यांकन करने बैठ गया कि पौलुस क्या कहना चाहता है। अरियुपगुस या मार्स पर्वत पर पौलुस का प्रवचन (प्रेरितों के काम 17:22–31)

प्रकट करता है कि उसने किस प्रकार लोगों के साथ बुद्धिवाद किया। किसी पर दोष न लगाते हुए, पौलुस ने धार्मिक मामलों की और उनके झुकाव की सराहना की – "तुम बहुत धार्मिक हों" (17:22)। फिर उसने उनके अज्ञान को सम्बोधित किया जो उन्होंने वेदी पर लिखी गई बातों में कबूल किया था – "अनजाने ईश्वर के लिए" (17:23), और सच्चे परमेश्वर के विषय में बोलने हेतु उसने पृष्ठभूमि के रूप में उसका उपयोग किया (प्रेरितों के काम 17:23)। उसने जीवित परमेश्वर की और संकेत करने हेतु उनके अपने कुछ विचारों का उपयोग किया (प्रेरितों के काम 17:28, 29)। उसके बाद उसने पश्चाताप, न्याय, यीशु और मरे हुओं के पुनरूत्थान के विषय में बोलते हुए सुसमाचार प्रस्तुत किया (प्रेरितों के काम 17:30,31)। कुछ लोगों ने उसकी बातों को सुनकर उपहास किया, कुछ लोग उस विषय में बाद में और सुनना चाहते थे। हमारे पास लिखा है कि कुछ लोगों ने विश्वास किया और पौलुस के साथ बने रहे। इसमें चुने हुए लोगों में से एक का समावेश है जो अरियुपगुस की परिषद का भाग थे, "अरियुपगुस का सदस्य दियुनुसियुस।" उसके समय के अत्यंत धार्मिक और बौद्धिक शहर में, पौलुस ने विश्वासियों के स्थानीय समुदाय की स्थापना की।

- बाद में पौलुस ने तीमुथियुस को थिस्सलुनीका से एथेन्स को भेजा ताकि यहूदियों द्वारा सताए जा रहे विश्वासियों को प्रोत्साहन दे सके (1 थिस्सल.. 3:1–2)।
- **एथेन्स** से उन्होंने **कुरिन्थुस** की करीब 55 मीलों की यात्रा की।

व्यापार नगरी और पापमय नगरी कुरिन्थुस में 18 महीने

- कुरिन्थुस शहर बंदरगाह का शहर था जिसमें दो बंदरगाह और समृद्ध वाणिज्य केंद्र थे, जिसे "ग्रीस का गहना" कहा जाता था। इस शहर की अनुमानित जनसंख्या करीब 200,000 थी। कुरिन्थुस में प्रेम की देवता अफ्रोडिट का मंदिर था जो 1750 फीट की ऊँचाई पर बसा हुआ था – ऊँचा एक्रोकोरिंथ और उसमें 1,000 पुरुष और स्त्री मंदिर में वेश्याओं के रूप में रखे गए थे। अनैतिकता और सुखविलास के लिए कुरिन्थुस मशहूर था।

  पौलुस 18 महीने कुरिन्थुस में रहा (प्रेरितों के काम 18:11)। अक्विला और प्रिसिल्ला यहूदी विश्वासी थे जो रोमन सम्राट क्लॉडियस द्वारा सन 49, में जारी किए गए आदेश पर रोम से कुरिन्थुस आए थे। आदेश के अनुसार सभी यहूदियों को रोम छोड़ने कहा गया था (प्रेरितों के काम 18:1–3)। उन्होंने तम्बू बनाने और सेवकाई करने में पौलुस के साथ काम किया। फिलिप्पी से पौलुस को कुछ सहायता भी भेजी गई (1 कुरि. 9:1–10, 2 कुरि. 11:6–10, फिलिप्पियों 4:15–16)। सीलास और तीमुथियुस मासेदोनिया से आकर कुरिन्थुस में पौलुस, अक्विला, प्रिसिल्ला और लुका से आ मिले (प्रेरितों के काम 18:5)।

- प्रारंभ में पौलुस ने सिनेगॉग (आराधनालय) में यहूदियों और परमेश्वर का भय रखने वाले यहूदियों को सुसमाचार की घोषणा की। कई यहूदियों ने सुसमाचार का इन्कार किया, इस कारण वह सिनेगॉग (आराधनालय) के बाहर यहूदियों को सुसमाचार सुनाने लगा।
- कुरिन्थुस की सेवा में उत्तम फल आया। यूसतुस, जिसका घर सिनेगॉग (आराधनालय) के नज़दीक था, सिनेगॉग (आराधनालय) का मुख्य अधिकारी क्रिस्पुस और उसका सारा घराना, गयुस और "स्तेफनुस का घराना" कुरिन्थुस में प्रभु के निकट आए। ऐसा प्रतीत होता है कि आराधनालय का सरदार सोस्थिनेस (प्रेरितों के काम 18:17) भी प्रभु के निकट आया और यह वही व्यक्ति होगा जिसने कुरिन्थियों को पत्र देकर पौलुस की सहायता की (1 कुरि. 1:1)। यदि पौलुस ने कुरिन्थुस से रोमियों को अपनी पत्री लिखी, तो नगर का भण्डारी इरास्तुस (रोमियों 16:23) भी उच्च अधिकारियों में से एक था जिसने कुरिन्थुस में उद्धार पाया। "बहुत से कुरिन्थी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया" (प्रेरितों के काम 18:8) और संभावना है कि इनमें से अधिकतर लोग जो प्रभु के पास आए निम्न वर्गों में से आए होंगे (1 कुरि. 1:26) और कई पापमय और अनैतिक जीवनशैलियों से (1 कुरि. 6:11)।
- **कुरिन्थुस** में रहते हुए पौलुस ने 1 थिस्सलुनीकियों और 2 कुरिन्थियों की पत्रियां लिखीं।

- संभावना है कि कुरिन्थियुस में पौलुस के 18 महीने के दौरान, कुरिन्थियुस के आसपास के स्थानों में भी सुसमाचार प्रचार किया गया, जिसमें नगर के मध्य स्थान से सात मीलों की दूरी पर बसे कुरिन्थुस के पूर्वी बंदरगाह, सेन्क्रिया और अकाया के अन्य भागों का समावेश है। पौलुस ने सेन्क्रिया की कलीसिया की एक सेविका बहन फीबी के विषय में भी लिखा है (रोमियों 16:1)।
- जब पौलुस कुरिन्थुस से गया, तब प्रिसिल्ला और अक्विला भी उसके साथ थे (प्रेरितों के काम 18:18)।
- कुरिन्थियों को लिखी हुई पौलुस की पत्रियों से, जो उसने बाद में लिखीं, हम जानते हैं कि एक उन्नति प्राप्त पवित्र आत्मा से परिपूर्ण कलीसिया वहां स्थापित हुई थी। इस कलीसिया ने कई व्यवहारिक समस्याओं का सामना किया, फिर भी वे एक आवेशी समुदाय थे जहां परमेश्वर का आत्मा मुक्त रूप से कार्य कर रहा था।
- सन 52 के प्रारंभ में, पौलुस ने और उसके साथियों ने कुरिन्थुस से, अक्विला और प्रिसिल्ला के साथ बारह मील की यात्रा की और सेन्क्रिया आए। पौलुस ने अपना सिर मुंडाया क्योंकि उसने शपथ ली थी (प्रेरितों के काम 18:18)। पौलुस ने संकल्प किया था कि वह पर्ब के लिए समय पर यरूशलेम पहुंच जाएगा।

इफिसुस में थोड़े समय के लिए रुकना

- **सेन्क्रिया** से पौलुस एजियन समुद्र के मार्ग से **इफिसुस** को गया (प्रेरितों के काम 18:18–10)।
- इफिसुस शहर एशिया माइनर का महत्वपूर्ण शहर था, यह एशिया के पहले और सबसे बड़े महानगरों में से एक था जिसकी जनसंख्या करीब 225,000 थी। इफिसुस का डायना का मन्दिर उस समय सबसे बड़ी इमारत के रूप में विद्यमान था, और दुनिया के सात अजूबों में से एक माना जाता था। यह मन्दिर शुद्ध संगमरमर का बना हुआ था, जिसकी सड़कें संगमरमर से बनी थी। इसके निर्माण में 220 वर्षों का समय लगा। इस मन्दिर में कई स्तनों वाली देवता, डायना की मूर्ति थी, इफिसुसवासियों का विश्वास था कि वह आसमान से गिरी थी (प्रेरितों के काम 19:35)।
- पौलुस ने इफिसुस के सिनेगॉग (आराधनालय) में प्रचार किया (प्रेरितों के काम 18:19), परंतु इस बार वह इफिसुस में अधिक समय तक नहीं रहा क्योंकि यरूशलेम जाने की उसकी योजना थी। उसने अक्विला और प्रिसिल्ला को इफिसुस (प्रेरितों के काम 18:19) में छोड़ा और वह यरूशलेम की ओर आगे बढ़ गया।
- अक्विला और प्रिसिल्ला इफिसुस में अपुल्लोस से मिले और उसे प्रभु यीशु की बातों के विषय में सिखाया। बाद में उन्होंने अपुल्लोस को कुरिन्थुस भेजा और वहां के विश्वासियों को उसकी सिफारिश की। अपुल्लोस कुरिन्थुस के विश्वासियों के लिए बड़ी आशीष सिद्ध हुआ (प्रेरितों के काम 18:24–28)।
- बाद में पौलुस ने इफिसुस आकर कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण काम किए।

यरूशलेम की ओर और वापस अपने घर की ओर

- इफिसुस से पौलुस जहाज में बैठकर कैसरिया गया, जिसके लिए तीस दिन लगे और तीस दिनों में उसने करीब 650 मीलों की यात्रा तय की। कैसरिया से पौलुस ने यरूशलेम के लिए 70 मीलों की यात्रा की और यरूशलेम की कलीसिया का अभिवादन किया। उसके उद्धार के बाद से यरूशलेम को यह उसकी चौथीं भेंट थी।
- यरूशलेम में समय बिताने के बाद पौलुस वापस **सूरिया के अतांकिया** में अपनी मूल कलीसिया में लौट गया (प्रेरितों के काम 18:22)।
- कुरिन्थुस और इफिसुस में रहने के बाद प्रिसिल्ला और अक्विला वापस रोम को चले गए (रोमियों 16:3)।

दूसरी मिशनरी यात्रा के मुख्य मुद्दे हैं एथेन्स और कुरिन्थुस में पौलुस की सेवकाई जो कि अत्यंत विशाल और चुनौतीपूर्ण नगर थे, ये अत्यंत विशाल और चुनौतीपूर्ण नगर थे। परंतु, यह बुद्धिमत्ता की सामर्थ थी या सुखवाद का बल, बेदारी के वाहक के रूप में, पौलुस ने आत्मा की सामर्थ और बुद्धिमानी में सेवा की और जागृति को देखा। विश्वासियों के स्थानीय समुदाय स्थापित हुए और इन बड़े–बड़े शहरों में भी परमेश्वर का राज्य बढ़ता गया।

पौलुस को समझ गया कि खोए हुओं को जीतने की सच्ची चुनौती इस संसार के देवता ने लोगों के मनों को अंधा कर रखने के विरोध में थी (2 कुरि. 4:4)। पौलुस ने हमेशा मसीह और क्रूस पर उसके कार्य का प्रचार किया (1 कुरि. 1:20–24)। पौलुस संस्कृतियों और तत्वज्ञानों को समझता था और लोगों के साथ वाद–विवाद करता था, परंतु वह केवल तर्क पर निर्भर नहीं था वह आत्मा की सामर्थ के साथ, चिन्ह् चमत्कारों और सामर्थ के कामों के साथ सेवा करता था (1 कुरि. 2:3–4)। पौलुस ने अर्थहीन विवाद और बहस में हिस्सा लेने से इन्कार किया (2 तीमुथियुस 2:23–26)।

पतरस का सामना करना (सन 52/53)

पतरस ने वसंत में पवित्र दिन की ऋतु में अंताकिया को भेंट की। यरूशलेम के यहूदी भाइयों के आने तक पतरस ने खतना न किए हुए अन्यजातियों के साथ खाया और संगति की। जब वे आए, तब पतरस ने और अन्य कुछ अगुवों ने अन्यजाति विश्वासियों के साथ खाना और संगति करना बंद कर दिया। पौलुस ने पतरस के बाइबल विरोधी आचरण के लिए खुलेआम उसका सामना किया (गलातियों 2:11–20)।

पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा (सन 53 – सन 58)

प्रेरितों के काम 18:23 – प्रेरितों के काम 21:15

पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा चार वर्षों तक चली जिसमें उसने अनुमानतः 2500 मीलों की यात्रा तय की। पहली दो मिशनरी यात्राओं में, पौलुस नए स्थानों में गया जहां उसने सुसमाचार प्रचार किया और कलीसियाओं की स्थापना की। तीसरी यात्रा में, पौलुस नए क्षेत्रों में नहीं गया, परंतु उन नगरों में जहां वह पहले गया था जाकर उसने विश्वासियों को बल प्रदान किया।

- सूरिया के अंताकिया में थोड़ा समय बिताने के बाद, पौलुस अकेले निकल पड़ा और "फिर कुछ दिन रहकर वहां से चला गया, और एक ओर से **गलातिया (दिरबे, लुस्त्रा और इकुनियम), पिसिदिया (अंताकिया का पिसिदिया) और फ्रूगिया** में सब चेलों को स्थिर करता फिरा" (प्रेरितों के काम 18:23)। यह दिरबे, लुस्त्रा और

इकुनियम और अंताकिया के पिसिदिया आदि शहरों को उसकी तीसरी भेंट थी। यद्यपि कुलुस्से, लौदीकिया और हिरापुलिस इस क्षेत्र में थे (तीन शहरों वाला क्षेत्र), जो एक–दूसरे से 10–12 मीलों की दूरी पर थे, फिर भी पौलुस वहां प्रचार करने नहीं रुका (कुलुस्सियों 1:1)।

- उसके बाद वह **इफिसुस** शहर में आया जहां पर उसने तीन साल बिताए, अधिकतर समय उसकी तीसरी मिशनरी यात्रा में बीता। पौलुस ने तीन महीनों तक आराधनालयों में प्रचार किया (प्रेरितों के काम 19:8), फिर वहां से अलग हो गया और प्रतिदिन तुरन्नुस की पाठशाला में विवाद करता रहा(प्रेरितों के काम 19:9), यहां वह दो वर्षों तक रहा और प्रभु का वचन पूरे एशिया में फैल गया (प्रेरितों के काम 19:10)।
- प्रकाशितवाक्य 2 और 3 की "एशिया की सात कलीसियाएं (इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन, थूआतीरा, सरदीस, फिलदिलफिया, लौदीकिया) सभी इस क्षेत्र में थे और इसी दौरान उनकी स्थापना हुई। पौलुस ने तरन्नुस के सभागार में शिक्षा दी, उस समय उसके सहकर्मियों और अन्य लोगों ने अन्य नगरों में सुसमाचार प्रचार किया और कलीसियाएं स्थापित की होगी।

- इफिसुस में पौलुस के हाथों असामान्य चमत्कार हुए (प्रेरितों के काम 19:11–12)। जब स्किवा के सात पुत्रों द्वारा दुष्टात्माओं को निकालने का प्रयास विफल होने की खबर चारों ओर फैल गई, तब कई लोग प्रभु के पास आए। लोगों ने पश्चाताप किया और उन्होंने जादू–टोना और टोटका आदि बातों से मन फिराया (प्रेरितों के काम 19:17–20)। इफिसुस में सामर्थी काम हुआ।
- इफिसुस में पौलुस ने कई जवान अगुवों को प्रशिक्षित किया। बिरीया का सोपत्रुस, थिस्सलुनीकियों में से अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस और दिरबे का गयुस, और तीमुथियुस और आसिया का तुखिकुस और त्रुफिमुस (प्रेरितों के काम 20:4) और कुरिन्थुस का इरास्तुस (प्रेरितों के काम 19:22, रोमियों 16:23)। उसे फिलेमोन, इपफ्रास भी मिले, दोनों इफिसुस के पूर्व में 100 मील के अंतर पर बसे हुए कुलुस्से शहर से थे। कुलुस्सियों की कलीसिया इपफ्रास द्वारा स्थापित की गई थी। इस समय के दौरान इफिसुस में पौलुस के साथ इस टीम के भाग के रूप में तीतुस ने कार्य किया।
- पौलुस ने इफिसुस के विश्वासियों की निगेहबानी करने हेतु अगुवों को तैयार किया, जिन्हें प्राचीन या अध्यक्ष कहा जाता है।

- इफिसुस में कार्य स्थापित करने के बाद, पौलुस ने मकिदुनिया, अकाया से होते हुए यरूशलेम और उसके बाद रोम जाने की योजना बनाई (प्रेरितों के काम 19:21)। यरूशलेम की ओर आगे बढ़ने में पौलुस का उद्देश्य मुख्य रूप से यरूशलेम के विश्वासियों की मदत करने हेतु उसने इकट्ठा किया हुआ पैसा देना था (1 कुरि. 16:1–4; 2 कुरि. 8:1–9:15; रोमियों 15:25–32)। उसके बाद, पौलुस रोम जाना चाहता था और वह पश्चिम यूरोप में स्पेन तक जाना चाहता था (रोमियों 15:23–24)।
- इसलिए उसने यरूशलेम ले जाने हेतु इन कलीसियाओं के पवित्र जनों से धन इकट्ठा करने हेतु तीमुथियुस और इरास्तूस को आगे मकिदुनिया को भेजा (प्रेरितों के काम 19:22, प्रेरितों के काम 24:17)।
- वहां कुछ लोग थे जिनमें "खलोए के घराने के लोग" शामिल थे (1 कुरि. 1:11) जिन्होंने पौलुस से इफिसुस में मुलाकात की और उसे कुरिन्थुस की कलीसिया की सारी समस्याओं के विषय में बताया। इनमें "स्तिफनुस और फूरतूनातुस और अखइकुस" ये लोग हो सकते हैं जो कुरिन्थुस से आए थे (1 कुरि. 16:17)।
- इफिसुस में रहते समय पौलुस ने गलातियों को पत्री लिखी। उसने उसे बताई गई कुरिन्थुस की कलीसिया की समस्याओं को सम्बोधित करने के लिए कुरिन्थुस की पहली पत्री भी लिखी। या तो कुरिन्थुस से आए लोग या तीतुस यह पहली पत्री वापस कुरिन्थुस को ले गए होंगे। पौलुस ने तीतुस को कुरिन्थुस को भेजा ताकि वहां की कलीसिया की बातों का ध्यान रखे। त्रोआस में तीतुस से मिलने की पौलुस की योजना थी (2 कुरि. 2:12–13)। पौलुस ने कुरिन्थुस के विश्वासियों को बताया कि उसे इफिसुस में प्रचार करने का बड़ा अवसर प्राप्त हुआ है हालांकि साथ ही में बड़ा विरोध भी है। उसने उन्हें बताया कि पिन्तेकुस्त तक इफिसुस में रहने का उसका इरादा था और उसके बाद वह मकिदुनिया को जाना चाहता था (1 कुरि. 16:8,9)।
- डायना का मन्दिर बनाने वाले एक सुनार देमेत्रियुस ने उपद्रव मचाया जिसे अंत में नगर के मंत्री ने खारिज किया (प्रेरितों के काम 19:23–41)। इसके तुरंत बाद पौलुस इफिसुस से चला गया।
- इफिसुस से पौलुस **मकिदुनिया** गया (प्रेरितों के काम 20:1), जिसमें निम्नलिखित शहर शामिल थे (नियापुलिस, फिलिप्पी, थिस्सलुनीका, बेरिया)। मकिदुनिया में रहते हुए पौलुस ने, **कुरिन्थुसं की दूसरी पत्री** लिखी। मकिदुनिया में रहते हुए पौलुस को बहुत दुख उठाना पड़ा, परंतु तीतुस के आने से उसे बड़ी सांत्वना मिली, जिसने कुरिन्थुस की कलीसिया का बड़ा समाचार दिया (2 कुरि. 7:5–7)। तीतुस अन्य दो भाइयों के साथ पौलुस की दूसरी पत्री कुरिन्थुस को ले गया (2 कुरि. 8:23)। कुरिन्थुस में एक साल पहले शुरू हुए पैसों को इकट्ठा करने हेतु अंतिम प्रबंध करने की जिम्मेदारी भी तीतुस को सौंपी गई (2 कुरि. 8:6, 16–17)।
- मकिदुनिया से पौलुस ने **ग्रीस** की यात्रा की (एथेन्स को संभवनीय भेंट?) जहां पर वह तीन महीनों तक रहा। पौलुस ने अपना कुछ समय कुरिन्थुस में ही बिताया होगा। वहीं से संभवतः पौलुस ने **रोम की कलीसिया को पत्र** लिखा होगा (रोमियों 15:23–26)। पौलुस जब सूरिया की यात्रा पर जाने तैयार था, तब यहूदियों ने उसके विरोध में षड्यंत्र रचा (प्रेरितों के काम 20:3)। इसलिए पौलुस ने अपनी योजनाओं को बदला और **मकिदुनिया** से होते हुए वह फिलिप्पी **को आया।**
- फिलिप्पी में लूका पौलुस के साथ दाखिल हुआ (प्रेरितों के काम 20:6) और अन्य सात भाइयों के साथ (सोपत्रुस, अरिस्तर्खुस्त, सिकुन्दुस, गयुस, तीमुथियुस, तुखिकुस, त्रुफिमुस) उसने यरूशलेम की यात्रा की ताकि वहां के पवित्र जनों के लिए भेंट ला सके। फिलिप्पी से वे **त्रोआस** की ओर बढ़ गए (प्रेरितों के काम 20:6)।
- त्रोआस में पौलुस जब प्रचार कर रहा था, तब यूतुखुस तीसरी मंजिल पर सो गया और वहां से गिर पड़ा, उसे मुर्दों में से जिलाया गया (प्रेरितों के काम 20:9–12)।
- त्रोआस से अस्सुस से **मितुलेने,** वहां से खियुस और खियुस से सामोस, सामोस से त्रोगिलियम, त्रोगिलियम से मिलेतुस (प्रेरितों के काम 20:15)। मिलेतुस इफिसुस के दक्षिण में 28 मीलों की दूरी पर था। पौलुस इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों से मिलेतुस में मिला (प्रेरितों के काम 20:17–38)। यहां पर पौलुस ने कलीसिया के प्राचीनों को सामर्थी संदेश दिया।
- मिलेतुस से टीम ने कई स्थानों की यात्रा की (कोस से रुदुस, और वहां से पतरा, वहां से सूर, और सूर से पतुलिमयिस) और कैसरिया आ पहुंचे। **कैसरिया** में, उन्होंने सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस के घर को भेंट दी

(प्रेरितों के काम 21:7–16)। यह वही फिलिप्पुस था जो सात में से एक था (प्रेरितों के काम 6:5) और जिसने सामरिया में प्रचार किया (प्रेरितों के काम 8:4–12)। अगबूस यहूदिया से पौलुस को यह चेतावनी देने के लिए आया कि यदि वह यरूशलेम जाएगा तो क्या होगा (प्रेरितों के काम 21:10–11)। लूका और उसके भाइयों ने पौलुस को यरूशलेम की ओर आगे न जाने की बिनती की, परंतु पौलुस के निर्णय को उन्होंने स्वीकार कर लिया (प्रेरितों के काम 21:12–14)।

- कैसरिया से वे **सन 58 की वसंत ऋतु में यरूशलेम** को गए, जहां बड़े आनंद के साथ उनका स्वागत किया गया (प्रेरितों के काम 21:15–17)।

पौलुस, कैसरिया में कैदी (सन 58 – सन 60)

उसकी चेतावनी के अनुसार, यरूशलेम को पौलुस की भेंट अत्यंत मुश्किल समय साबित हुआ। चार यहूदी विश्वासियों के साथ जब पौलुस ने मन्दिर को भेंट दी (प्रेरितों के काम 21:18–26), तब बलवा हुआ और क्रोधित भीड़ ने पौलुस को पकड़कर मन्दिर से बाहर खींचा और उसे पीटा। रोमी सिपाहियों ने हस्तक्षेप किया और उसे कैद कर लिया। पौलुस को उसके जीवन के विषय में बताने और यहूदी भीड़ के साथ यीशु से भेंट करने का अवसर मिला (प्रेरितों के काम 22:1–30)। अंततः, रोमी पहरेदारों के साथ पौलुस को कैसरिया और वहां से सूबेदार फेलिक्स के पास लाया गया, जहां पौलुस को दो वर्षों तक कैद में रखा गया (प्रेरितों के काम 24:27)। पौलुस को सूबेदार फेलिक्स, उसके उत्तराधिकारी सूबेदार फेस्तुस, राजा अग्रिप्पा और कैसरिया तथा यहूदिया के महत्वपूर्ण राजनीतिक अगुवों के सामने मसीह का प्रचार करने का अवसर मिला। उसने कैसर के दरबार में ले जाने के लिए अर्जी दी, जिसका अर्थ यह था कि उसे सम्राट के सामने लाया जाएगा, जो उस समय नीरो था।

लूका पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा के अंत में यरूशलेम को गया। जब पौलुस को यरूशलेम में पकड़ा गया और कैसरिया में कैद हुई, तब पौलुस ने न केवल उसे भेंट दी (प्रेरितों के काम 24:23), बल्कि इस समय का उपयोग उसने कुछ लोगों से मिलने हेतु किया, जिसमें मरियम और प्रेरित शामिल थे, उसने कुछ स्थानों को भेंट दी और **लूका रचित सुसमाचार** लिखा। बाद में जब पौलुस ने कैसर के लिए बिनती की और रोम के लिए समुद्री यात्रा पर निकल पड़ा, तब लूका और अरिस्तर्खुस्त भी उसके साथ गए (प्रेरितों के काम 20:4, प्रेरितों के काम 27:2)।

रोम को पौलुस की यात्रा और रोमी कैद (सन 60 – सन 63)

प्रेरितों के काम 27:1 – प्रेरितों के काम 28:31

प्रेरितों के काम 27:1–28:15 में रोम की पौलुस की यात्रा का विस्तृत और यथार्थ वर्णन है। लूका और अरिस्तर्खुस्त ने पौलुस के साथ यरूशलेम से रोम की यात्रा की।

- रोम की कैद में (प्रेरितों के काम 28:16–30), **पौलुस ने कुलुस्सियों, फिलेमोन, इफिसियों और फिलिप्पियों को पत्र लिखे** (इन्हें बंदिगृह की पत्रियां कहा जाता है।) पौलुस स्वयं कुलुस्से नहीं गया था। जब पौलुस रोम में कैदी था, तब इपफ्रास कुलुस्से की कलीसिया का विवरण लेकर उसके पास आया। वह पौलुस के साथ रोम में रहा और एक अर्थ से, 'उसके साथ कैदी' था (फिलेमोन 1:23)। फिलेमोन का भागा हुआ नौकर, उनेसिमुस पौलुस से मिलने के बाद रोम में बचाया जाता है और उसे वापस पत्र लेकर फिलेमोन के पास भेजा जाता है। फिलेमोन 1:24 में पौलुस उल्लेख करता है, "मरकुस और अरिस्तर्खुस और देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी हैं।" तीमुथियुस भी रोमी कैद के इस समय में पौलुस के साथ था क्योंकि पौलुस ने फिलिप्पियों की अपनी पत्री में (फिलिप्पियों 1:1, 2:19), कुलुस्सियों की पत्री में (कुलुस्सियों 1:1), और फिलेमोन की पत्री में उसका उल्लेख किया है (फिलेमोन 1:1)।
- उच्च स्तर के रोमी पहरेदार जो पौलुस की निगरानी कर रहे थे, उन्होंने पौलुस के द्वारा सुसमाचार सुना क्योंकि पौलुस अपने घर में उससे भेंट करने वालों की सुसमाचार के साथ सेवा करता था और सुसमाचार रोमी दरबार में पहुंच गया (प्रेरितों के काम 28:16, फिलिप्पियों 1:13)।

पोलुस के अंतिम वर्ष (सन 63 – सन 67)

प्रेरितों के काम 28:30 के बाद की संभवनीय घटनाएं यहां हैं, जिनके विषय में हमें पौलुस की बाकी पत्रियों से मालूम होता है।

आज़ादी का समय (सन 63 – सन 67)

- पौलुस की पहली रोमी कैद से छुटकारे के बाद, उसने और तीतुस ने थोड़े समय क्रेते में काम किया (तीतुस 1:5), उसके बाद पौलुस ने तीतुस को काम आगे बढ़ाने हेतु क्रेते में छोड़ दिया (तीतुस 1:5; 2:15; 3:12–13)।
- यह संभव है कि इस समय पौलुस ने तीमुथियुस के साथ इफिसुस की यात्रा की होगी और इफिसुस के कार्य की देखभाल करने हेतु उसने तीमुथियुस को वहां छोड़ दिया और पौलुस मकिदुनिया को चला गया (1 तीमुथियुस 1:3)।
- पौलुस ने इस समय के दौरान 1 तीमुथियुस, तीतुस (और इब्रानियों) की पत्री लिखी, संभवतः मकिदुनिया से इफिसुस में स्थित तीमुथियुस को और क्रेते में स्थित तीतुस को प्रोत्साहन देने के लिए। पौलुस ने तीतुस से कहा कि अरतिमास और तुखिकुस के क्रेते पहुंचने पर, तीतुस की जगह लेने के लिए वह उसे नीकुपुलिस में आकर मिले (तीतुस 3:12)।
- यह संभव है कि पौलुस के छुटकारे के बाद, उसने जैसा सोचा था उसके अनुसार पश्चिम यूरोप की यात्रा की होगी और स्पेन को भेंट दी होगी, परंतु हम इस विषय में निश्चित रूप से नहीं जानते।

  बाद में, तीतुस एक मिशन पर दलमतिया गया (2 तीमुथियुस 4:10)। दलमतिया (आधुनिक दिनों का क्रोआशिया) इल्लुरिकुम में था। पौलुस ने इल्लुरिकुम प्रांत में भी सेवा की थी (रोमियों 15:19) जिसका विस्तार आधुनिक समय के क्रोआशिया और अल्बेनिया, एड्रियाटिक समुद्र के पूर्व तक फैला हुआ था। परंपरा के अनुसार तीतुस क्रेते को लौट गया और उसने अपना बाकी जीवन वहीं सेवा में बिताया।

रोम में पौलुस की दूसरी कैद, अंतिम दिन और शहादत (सन 67 – सन 68)

रोम को लौटने के बाद पौलुस को कैद कर लिया गया। उसने **अपनी अंतिम पत्री 2 तीमुथियुस लिखी।** कैद में रहते हुए और जब उसकी मृत्यु निकट थी, तब पौलुस ने विश्वास में जो उसका पुत्र था उसे अंतिम शब्द लिखे, और उसे जल्द आने के लिए कहा और परमेश्वर के राज्य के लिए तैयार किए जा रहे अन्य लोगों के विषय में विस्तृत जानकारी दी :

2 तीमुथियुस 4:6–22

6 क्योंकि अब मैं अर्घ के समान उंडेला जाता हूं, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है।

7 मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है।

8 भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं, वरन् उन सब को भी, जो उसके प्रकट होने को प्रिय जानते हैं।

9 मेरे पास शीघ्र आने का प्रयत्न कर।

10 क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है, और थिस्सलुनीके को चला गया है, और क्रेसकेंस गलतिया को और तीतुस दलमतिया को चला गया है।

11 केवल लूका मेरे साथ है; मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिए वह मेरे बहुत काम का है।

12 तुखिकुस को मैंने इफिसुस को भेजा है।

13 जो बागा मैं त्रोआस में करपुस के यहां छोड़ आया हूं, जब तू आए, तो उसे और पुस्तकें, विशेष करके चर्मपत्रों को लेते आना।

14 सिकन्दर ठठेरे ने मुझ से बहुत बुराइयां की है, प्रभु उसे उसके कामों के अनुसार बदला देगा।

15 तू भी उससे सावधान रह, क्योंकि उसने हमारी बातों का बहुत ही विरोध किया।

16 मेरे पहले प्रत्युत्तर करने के समय में किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया, वरन् सब ने मुझे छोड़ दिया था। भला हो, कि इसका उनको लेखा देना न पड़े।

17 परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा, और उसने मुझे सामर्थ दी, ताकि मेरे द्वारा पूरा पूरा प्रचार हो, और सब अन्यजाति सुन लें; और मैं तो सिंह के मुंह से छुड़ाया गया।

18 और प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा, और अपने स्वर्गीय राज्य में उद्धार करके पहुंचाएगा। उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

19 प्रिस्का और अक्विला को, और उनेसिफुरुस के घराने को नमस्कार।

20 इरास्तुस कुरिन्थुस में रह गया, और त्रुफिमुस को मैंने मीलेतुस में बीमार छोड़ा है।

21 जाड़े से पहले चले आने का प्रयत्न कर। यूबूलुस, और पूदेंस, और लीनुस और क्लौदिया, और सब भाइयों का तुझे नमस्कार।।

22 प्रभु तेरी आत्मा के साथ रहे। तुम पर अनुग्रह होता रहे।

पौलुस शायद सन 66–सन 68 के समय में शहीद हुआ था। परंपराओं का यह लेख है कि उसका सर कलम कर दिया गया; और रोमी नागरिक होने के कारण; संभावना है कि किसी और तरह से उसकी हत्या नहीं की गई।

पौलुस ने जिन शहरों में सेवा की उनका सारांश

परमेश्वर की बेदारी के वाहक पौलुस का सारांश

- प्रेरित पौलुस ने 20 से 24 वर्षों तक, सन 44 से सन 68 तक सेवा की।
- उसने पूरे एशिया माइनर में 49 ज्ञात शहरों और नगरों में सुसमाचार सुनाया, और 10,000 मीलों की ज़मिनी यात्रा और कई हजार मीलों की समुद्री यात्रा की।
- उसने विश्वासियों के समुदायों को स्थापित किया जिन्होंने आत्मा की उसी आग (उदा. कुरिन्थियों, इफिसियों) और कार्य को अनुभव किया जो यरूशलेम में आरम्भ हुई थी।
- प्रेरित पौलुस ने अन्य कई लोगों को तैयार किया जो वही आग लेकर चले और जिन्होंने उसी के समान काम किया (कुलुस्से में कार्य शुरू हुआ)। उसके सहकर्मियों के रूप में करीब 24 लोगों के नामों का उल्लेख किया गया है।
- वह विभिन्न संस्कृतियों को (यहूदी और यूनानी दोनों) और सामाजिक स्तरों को (धनवान और निर्धन, शिक्षित और अशिक्षित) को प्रभावित कर सका। *"मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्जदार हूं।"* (रोमियों 1:14)।
- प्रेरित पौलुस ने नगरों में, बाजारों के स्थानों में और उच्च पदों पर स्थित लोगों को प्रभावित किया (प्रेरितों के काम 13:12, 17:4, 17:2, 18:8)। कुछ मामलों में, सारे शहर प्रभावित हुए।
- इस समय के दौरान उसने कलीसियाओं को मज़बूत बनाने के लिए 13 पत्रियां (या इब्रानियों को मिलाकर 14) लिखीं।

यदि प्रभु एक व्यक्ति को उपयोग कर सका, जो इतने सामर्थी रूप से पूर्णतया उसे समर्पित था, तो वह ऐसा बार–बार करेगा। वह ऐसा हमारे दिन और समय में, हमारे द्वारा करेगा।

हम बेदारी के लिए आगे बढ़ें और पवित्र आत्मा के सामर्थी उण्डेले जाने का स्वागत करें।

हम परमेश्वर से संतृप्त लोग बनने के लिए तैयार हो जाएं।

हम अन्य समुदायों को भी बेदारी की आग से प्रज्वलित करें।

हममें से प्रत्येक हमारे प्रभाव के क्षेत्रों से बेदारी के वाहक बनें।

3

समयरेखा : सुधार, बेदारी, पुनर्स्थापन और मिशन

इस अध्याय में हम कलीसिया का 2000 वर्षों का इतिहास देखेंगे और मुख्य घटनाओं की और उन लोगों के जीवनों की ऐतिहासिक सूची प्रस्तुत करेंगे जिन्होंने कलीसिया पर, प्रारंभिक कलीसिया के प्राचीनों पर, बेदारी लाने वाले प्रचारकों, सुधारकों और मिशनरियों पर बड़ा प्रभाव डाला। हम कई बेदारियों को और मिशनरी आंदोलनों को भी शामिल करेंगे। अन्य कई लोग और घटनाएं हैं जिन्होंने कलीसिया के जीवन और यात्रा को रूप दिया, परंतु हमने केवल कुछ ही की सूची प्रस्तुत की है।

कलीसिया के इतिहास का अवलोकन करने में हमारा उद्देश्य भूतकाल से सीखना, परमेश्वर के लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहार के विषय में अंतर्दृष्टि प्राप्त करना और कलीसिया के साथ कार्य करने का परमेश्वर का तरीका पहचानना है।

हमारे लिए "पूरी" तस्वीर देखकर सुधार, बेदारी, कलीसिया का पुनर्स्थापन, मिशन और कलीसिया की उन्नति के बीच के सम्बंध को पहचानना है। कलीसिया के जीवन में होने वाली इन प्रत्येक घटनाओं के बीच एक रिश्ता है, परस्पर सम्बंध है।

वर्तमान को सही रीति से समझने और उसकी व्याख्या करने हेतु, और भविष्य के लिए निर्णय लेने हेतु हमें इतिहास जानने की ज़रूरत है। वर्तमान को समझने में एक महत्वपूर्ण कारक है, जहां आज हम हैं वहां हमें कौन सी बात ले आयी है इसके विषय में समझ प्राप्त करना। इससे हमें भविष्य के लिए सही कदम उठाने हेतु निर्णय लेने में सहायता प्राप्त होगी, ताकि हम भूतकाल की गलतियों को फिर दोहराने न पाएं।

हमारे पुरखाओं ने हमें उन कामों के विषय में बताया, जो तूने उनके दिनों में किए

व्यवस्थाविवरण 4:9

यह अत्यंत आवश्यक है कि तुम अपने विषय में सचेत रहो, और अपने मन की बड़ी चौकसी करो, कहीं ऐसा न हो कि जो जो बातें तुमने अपनी आंखो से देखी उनको भूल जाओ, और वह जीवन भर के लिये तुम्हारे मन से जाती रहे; किन्तु तुम उन्हें अपने बेटों पोतों को सिखाना।

परमेश्वर ने अपने लोगों को यह आज्ञा दी कि वे भूतकाल के उसके कामों को और उसके व्यवहार की कहानियों को नई पीढ़ी के सामने दोहराएं। वह नहीं चाहता था कि जो कुछ उनके पूर्वजों ने देखा, सीखा, और अनुभव किया था, उसे वे भूल जाएं।

यहोशू 4:1–7

[1] जब उस सारी जाति के लोग यरदन के पार उतर चुके, तब यहोवा ने यहोशू से कहा,

2 प्रजा में से बारह पुरुष, अर्थात् गोत्र पीछे एक एक पुरुष को चुनकर यह आज्ञा दे,

[3] कि तुम यरदन के बीच में, जहां याजकों ने पांव धरे थे वहां से बारह पत्थर उठाकर अपने साथ पार ले चलो, और जहां आज की रात पडाव होगा वहीं उनको रख देना।

[4] तब यहोशू ने उन बाहर पुरुषों को, जिन्हें उसने इस्राएलियों के प्रत्येक गोत्र में से छांटकर ठहरा रखा था,

[5] बुलवाकर कहा, तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सन्दूक के आगे यरदन के बीच में जाकर इस्राएलियों के गोत्रों की गिनती के अनुसार एक एक पत्थर उठाकर अपने अपने कन्धे पर रखो,

[6] जिससे यह तुम लोगों के बीच चिन्हानी ठहरे, और आगे को जब तुम्हारे बेटे यह पूछें, कि इन पत्थरों का क्या मतलब है?

[7] तब तुम उन्हें यह उत्तर दो, कि यरदन का जल यहोवा की वाचा के सन्दूक के सामने से दो भाग हो गया था; क्योंकि जब वह यरदन पार आ रहा था, तब यरदन का जल दो भाग हो गया। सो वे पत्थर इस्राएल को सदा के लिये स्मरण दिलानेवाले ठहरेंगा।

यरदन नदी पार करने के बाद परमेश्वर ने अपने लोगों को आज्ञा दी कि वे एक स्मारक तैयार करें, ऐसा कुछ जो आने वाली पीढ़ियों को इस बात का स्मरण दिलाए कि परमेश्वर ने बीते दिनों में क्या किया था।

भजनसंहिता 44:1–4

[1] हे परमेश्वर हम ने अपने कानों से सुना, हमारे बापदादों ने हम से वर्णन किया है, कि तू ने उनके दिनों में और प्राचीनकाल में क्या क्या काम किए हैं।

[2] तू ने अपने हाथ से जातियो का निकाल दिया, और इनको बसाया; तू ने देश देश के लोगों को दुःख दिया, और इनको चारों और फैला दिया;

[3] क्योंकि वे न तो अपनी तलवार के बल से इस देश के अधिकारी हुए, और न अपने बाहुबल से; परन्तु तेरे दहिने हाथ और तेरी भुजा और तेरे प्रसन्न मुख के कारण जयवन्त हुए; क्योंकि तू उनको चाहता था।

[4] हे परमेश्वर, तू ही हमारा महाराजा है, तू याकूब के उद्धार की आज्ञा देता है।

परमेश्वर ने भूतकाल में, पुराने दिनों में जो कुछ किया है उसे जानना महत्वपूर्ण है। हम अपने दिन और समय में जिन लड़ाइयों को लड़ते हैं, उनका सामना करते समय यह बात विश्वास को प्रेरित करेगी। ये कहानियां हमें प्रोत्साहन देगी कि हम समान या उससे बड़ी विजय के लिए परमेश्वर पर विश्वास करें।

पहली सदी (सन 1–100)

सन या ए.डी. "ॲनो डोमिनी" का संक्षिप्त रूप है, इस लैटिन भाषा के शब्द का अर्थ है "हमारे प्रभु के वर्ष में" जो मसीह के जन्म के वर्ष का उल्लेख करता है। इस शब्द का निर्माण सन 525 में साधु डायनिशियस एक्ज़ेजस ने किया।

प्रारम्भिक तिथियों को अंदाजन समय माना जाए।

व्यक्तियों के लिए दी गई तिथियां निश्चित करती हैं कि उन्होंने अपने कार्य/सेवकाई कब आरम्भ की और उनके सेवकाई का समय, उनकी जन्म की तारीख या मृत्यु की तारीख नहीं है।

यीशु का जन्म बेतलेहेम में कहीं ई. पू. 10 से ई. पू. 3 के बीच हुआ था।

सन 30 या 33: यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाता है और वह मृतकों में से जी उठता है। हम सन 30 का उपयोग संदर्भ बिंदु के रूप में करते हैं और यहां से आरम्भ करते हैं।

सन 30 : पिन्तेकुस्त का दिन। पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना और कलीसिया का जन्म होता है। प्रेरितों के कामों की पुस्तक में नए नियम की कलीसिया के जन्म से अंदाजन 40 वर्षों का समय दिया गया है।

सन 44 : राजा अग्रिप्पा की मृत्यु होती है (प्रेरितों के काम 12:21)। यह निश्चित ऐतिहासिक तिथी है। जल्द ही इसके बाद बरनबास और पौलुस यात्रा करना शुरू करते हैं (प्रेरितों के काम 13:1–3)।

सन 52: प्रेरित थोमा भारत के मलबार और कोरोमंडल समुद्रतट पर आता है और कलीसिया की स्थापना करता है।

सन 64: नीरो सताव शुरू करता है। रोम की आग।

सन 66–68: पौलुस और पतरस को मृत्युदण्ड दिया गया, सम्भवतः नीरो के द्वारा। नीरो ने मुख्य सताव रोम में किया जो सन 64 में शहर को तहस–नहस करने वाली आग के लिए मसीहियों पर दोष लगाता है। वह अपने बगीचे की रोशनाई के लिए मसीहियों का उपयोग मानव–मशाल के रूप में करता है।

सन 70: रोमी सेनापति और भविष्य का बादशाह टायटस **यरूशलेम को नाश करता है।** यहूदी रोमी अधिकारियों के विरोध में विद्रोह करते हैं। मसीही लोग इस विद्रोह में भाग नहीं लेते और यरदन के पेला में जाकर फिर बस जाते हैं।

सन 90: जमनिया की परिषद

यहूदी इतिहासकार योसेफस (सन 37–95) के अनुसार, इब्रानी पुराना नियम पूरा हो गया और अर्तक्षयर्ष (ई.पू. 464–424) (मलाकी का समय) के राज्य के बाद बाइबल के और लिखानों को कैनन में शामिल नहीं किया गया। जमनिया परिषद में यहूदियों ने इब्रानी पुराने नियम की पुस्तक को दृढ़तापूर्वक पवित्र शास्त्र के रूप में मान्य किया और इब्रानी पवित्र वचन के कैनन की पुष्टि की। इन्हीं पुस्तकों को मसीहियों द्वारा अधिकृत माना गया है।

सन 95: प्रकाशित वाक्य की पुस्तक लिखी गई।

सन 96–150: नये नियम की पुस्तकों को मान्यता और उनका संकलन। इस दौरान सुसमाचार की सभी पुस्तकों को और पौलुस की सभी पत्रियों को कलीसियाओं में जाना गया और मान्यता दी गई।

सन 98: करीब 100 वर्ष की उम्र में **प्रेरित यूहन्ना की मृत्यु हुई।**

सन 99: नये नियम की सभी पुस्तकों का लेखन पूरा हुआ।

सन 100: पहले मसीही मोनाको, अल्जेरिया और श्रीलंका में देखे गए।

दूसरी सदी (सन 101–200)

कलीसिया के बाहर वालों की ओर से बीच–बीच में सताव जारी रहा, परंतु कलीसिया के अंदर झूठी शिक्षा बड़ा खतरा बन गई और उन्हें सम्बोधित करना ज़रूरी था। इन झूठी शिक्षाओं में निम्नलिखित शामिल थीं:

गूढ़वाद (Gnosticism): नवयुग आंदोलन के समान ही, जो विशेष गुप्त ज्ञान होने का दावा करता है।

मार्सिओनिज़्म (Marcionism): पवित्र शास्त्र को – इब्रानी और मसीही पवित्र शास्त्र – को घटाकर कुछ ही चुने हुए पुस्तकों तक सीमित करने का प्रयास।

मॉन्टेनिज़्म (Montanism): कैरिस्मैटिक आंदोलन जो नये प्रकटीकरणों, भविष्यद्वाणियों और अन्य मसीहियों के विरोध में न्याय आदि बातों के विषय में गुमराह हो गया।

इस समय के दौरान धर्म के पक्ष समर्थकों (apologists) का उदय हुआ जिन्होंने झूठी शिक्षाओं को सम्बोधित किया और मसीही विश्वास के विरोधियों को उत्तर दिया। कुछ महत्वपूर्ण अपोलॉजिस्ट में इरेनियस और जस्टिन मार्टर का समावेश है।

सन 107: पॉलिकार्प को स्मरना के बिशप के रूप में नियुक्त किया गया।

पॉलिकार्प प्रेरित यूहन्ना का चेला था और उसी ने उसे स्मुरना का बिशप नियुक्त किया था।

सन 108: अंताकिया का इग्नेशियस, और प्रारम्भिक कलीसिया का पिता, शहीद हो गया।

अंताकिया का इग्नेशियस, प्रेरित पौलुस का विद्यार्थी, और अंताकिया (सूरिया) का तीसरा बिशप। उसकी रचनाएं प्रारम्भिक कलीसिया की शिक्षा के विषय में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। कलीसिया को लिखे गए सातों पत्र सुरक्षित रखे गए हैं, जिसमें मसीह के ईश्वरत्व, प्रभुभोज की मेज़; बिशप, प्रेस्बिटर, डिकन्स और अन्य पदों के साथ स्थानीय कलीसिया की रचना आदि कई विषय सम्मिलित हैं। उसे कैद करके रोम ले जाया गया जहां वह शहीद हो गया, उसे **कोलिज़ियम** में जंगली जानवरों के सामने फेंक दिया गया।

सन 125: एरिस्टाईड्स पहली प्रारम्भिक कलीसिया का पक्ष समर्थन ("Apology") लिखता है, विश्वास का समर्थन जो सम्राट हेड्रियन को दिया गया।

सन 150–190: कैनन का संकलन

इस युग के दौरान, कैनन की औपचारिक कल्पना आकार लेती है। नये नियम की अधिकतर पुस्तकों को कैनन के रूप में स्पष्ट मान्यता दी जाती है – केवल कुछ ही पुस्तकों को सूक्ष्म जांच की ज़रूरत थी।

सन 150: बाइबल का पुराना लैटिन संस्करण तैयार किया गया, जो ग्रीक सेप्टूआजिन के अनुवाद पर आधारित था।

सन 155: जस्टिन मार्टर *पहला पक्ष समर्थन* लिखता है

प्रारम्भिक कलीसिया का मसीही पक्ष समर्थक जस्टिन मार्टर (apologist) ने पक्ष समर्थकों (सही शिक्षा का बचाव करने वाले) के युग का प्रारम्भ किया, और उसका अनुसरण थियोफिलस (सन 168), एथेनेगोरस (सन 177), इरेनियस (सन 185) और टर्टूलियन (सन 200–220) ने किया।

सन 155: बिशप पॉलिकार्प 84 वर्ष की उम्र में शहीद हो गया।

उसकी शहादत का समय सन 155 के आसपास था। पॉलिकार्प ने कलीसिया के इतिहासकार इरेनियस को शिक्षा दी। उसके शहादत की कहानी यूसेबियस द्वारा कलीसिया के इतिहास में सुरक्षित रखी गई है, यह सन 323 तक प्रारम्भिक कलीसिया का इतिहास है।

सन 177: एथेनेगोरस *मसीहियों के लिए एक याचिका (A Plea for the Christians)* में त्रिएक परमेश्वर का वर्णन पाया जाता है जो पिता और पुत्र एक ही तत्व होने का उल्लेख करता है।

सन 183–186: लग्डूनम का बिशप इरेनियस, झूठी शिक्षाओं के विरोध में लिखता है, अधिकतर गुढ़वाद पर लिखी गई पुस्तक के द्वारा। इरेनियस पॉलिकार्प का शिष्य था जो यूहन्ना को जानता था, इसलिए वह उसके समयकाल के प्रेरित युग के सबसे मज़बूत गवाहों में से एक है।

सन 190–200: एलेक्ज़ैन्ड्रिया (इजिप्त) का क्लेमेंट, मसीही ईश्वरविज्ञानी, एलेक्ज़ेन्ड्रिया के नये मसीहियों को सिखाता है। उसने मसीही विश्वास की अपनी शिक्षाओं को समझाने के लिए तीन पुस्तकें लिखीं।

सन 190: एलेक्ज़ैन्ड्रिया का **पेटेनस** मसीही शिक्षकों के लिए दिए गए निवेदन के उत्तर में भारत जाता है।

तीसरी सदी (सन 201–300)

सन 200: एडेस्सा (आधुनिक टर्की का उर्फा) पहला मसीही राज्य बनता है। कार्थेज़ और एलेक्जैन्ड्रिया पहले मसीही ईश्वरविज्ञान विकास के प्रमुख केंद्र बनते हैं जिसमें ओरिजेन, टरटुलियन, क्लेमेंट ऑफ एलेक्ज़ैन्ड्रिया मुख्य व्यक्ति थे।

सन 202–211: सम्राट सेप्टिमस सेवेरस मसीही धर्मांतरण की मनाही करता है। परंतु मसीहत का प्रसार जारी रहता है।

सन 200–220: टरटुलियन, उत्तर आफ्रिका के कार्थेज का मसीही वकील, कई पुस्तकें और ट्रॅक्ट्स लिखे। उसके द्वारा लिखा गया ***अगेन्स्ट प्रैक्सियास*** प्रारम्भिक मसीही रचनाओं में त्रिएक परमेश्वर का सबसे सम्पूर्ण वर्णन है, और त्रिएकता शब्द का उपयोग करने वाला वह पहला व्यक्ति है।

सन 245: ओरिजेन, मसीही पक्ष समर्थक और ईश्वर–विज्ञानी 70 साल पहले लिखे गए सेल्सस की आलोचना का उत्तर देता है, जो कि अब तक कलीसिया के लिए खतरे का कारण था।

सन 248: रोम की 1000 वीं सालगिरह और फिर भी सर्वत्र आनन्द नहीं है क्योंकि सीमा पर पड़ोसियों द्वारा साम्राज्य को धमकियां दी जा रही हैं।

सन 250: सम्राट डेशियस ने आदेश दिया कि हर एक व्यक्ति मूर्तियों को बलिदान चढ़ाए और सबूत के रूप में प्रमाणपत्र दे। कलीसिया के सामने एक मुश्किल समस्या थी कि जो लोग सताव के दौरान पीछे हट गए थे और अब वापस कलीसिया में आना चाहते थे, उनके साथ कैसा व्यवहार करें।

कलीसिया के विरोध बौद्धिक सताव बढ़ गए। पॉरफिरी प्रेरितों, कलीसियाई अगुवों, सुसमाचार की पुस्तकों और पुराने नियम पर आक्रमण कर *मसीहियों के विरोध* में लिखता है।

सन 300: इजिप्त का एन्टनी महान (सन 251–356) जंगल में साधु बनकर जाता है, यह मठवाद के विकास में एक प्रारम्भिक कदम है। उसे सामान्य तौर पर मठवाद का संस्थापक माना जाता है, शुरूवात में इसका आरम्भ उन व्यक्तियों के द्वारा हुआ जो संसारिक जीवन को छोड़ने लगे और बाद में यह मठवासियों का एक समुदाय बन गया। यह प्रथा अंधकारमय युगों ;सन 500 से सन 1300) और मध्ययुगों ;सन 600 सन से सन 1517) में जारी रही। ये मठवासी साधु प्रार्थना में सामर्थी थे, उन्होंने चंगाइयां, छुटकारा और आश्चर्यकर्म देखे थे। ये मठवासी "कलीसियाई प्रेणेता" (चर्च फादर्स) का हिस्सा थे जिन्हें वनवासी प्रणेता भी कहा जाता है। अन्य महत्वपूर्ण अगुवे जिन्होंने एन्टनी महान का अनुसरण किया, उनमें ये शामिल हैं: ;सन 251–356), पेकोमियस ;सन 292–346), अथेनेसियस ;सन 295–373), हिलेरियोन ;सन 305–385), ॲम्ब्रोज़ ;सन 340–397), जेरोमी ;सन 347–420), अगस्टीन ;सन 354–430), नर्सिया का बेनेडिक्ट (सन 480–547) और ग्रेगरी महान ;सन 540–604)।

सन 300: उत्तर आफ्रिका मुख्य मसीही केन्द्र बनता है। तीसरी सदी के अंत में केवल मिस्र में ही दस लाख मसीही विश्वासी थे। बिशप की भूमिका और मज़बूत होती जाती है।

4 थी सदी (सन 301–400)

सन 303: सम्राट डिओक्लेशियन कलीसिया को मिटा देने के इरादे से मसीहियों को सताता है, परंतु अपने प्रयास में असफल रहता है।

सन 311: बिशप डोनेटस मैग्नस की अगुवाई में रोमन प्रांत के अंतर्गत क्षेत्र उत्तर आफ्रिका के बर्बर लोगों के मध्य एक मसीही सम्प्रदाय अलग हुआ जिसका **डोनेटिस्ट** के रूप में उदय हुआ। डोनेटसवादी प्रारम्भिक मसीही कलीसिया से अलग हो गए। इस मतभेद का मुख्य कारण था रोमन सम्राट डायोक्लेशियन ;सन 303–305) के समय में हुए सताव के समय जिन लोगों ने अपने विश्वास को त्याग दिया था उनके साथ हुआ बर्ताव। डोनेटसवादियों ने उन पुरोहितों और बिशपों की जो सताव के दौरान अपने विश्वास से पीछे हट गए थे, और बाद में वापस लौट आए, उनसे सेवा और आत्मिक अगुवाई स्वीकार करने से इन्कार किया। डोनेटसवादियों ने उन्हें **"प्रेडिटोरेस"** (याने कि विश्वासघाती) करार दिया। उत्तर आफ्रिकी कलीसिया में यह विभाजन तीन सौ वर्षों तक जारी रहा। जो पहले

कलीसिया के सबसे मज़बूत प्रारम्भिक केंद्रों में से एक था वह इस कदर कमज़ोर हो गया कि अंत में वह मसीहत से दूर हो गया।

सन 312: कॉन्सटन्टाईन महान को क्रूस का दर्शन प्राप्त होता है। एक सम्राट, कॉन्सटन्टाईन महान, अपने साथी सम्राट मैग्जेनिटस से युद्ध लड़ने के लिए आगे बढ़ रहा था, कि उसे इन शब्दों के साथ क्रूस का एक दर्शन प्राप्त हुआ, "इस चिन्ह के साथ विजयी हो," यह क्रूस के नीचे लिखा गया था। उसने युद्ध जीता और इस विजय का श्रेय मसीह परमेश्वर को दिया। सन 313 में वह प्रारम्भिक कलीसिया का समर्थक बन गया, उसने और उसके साथी सम्राट लिसिनियस ने रोमी साम्राज्य में मसीही धर्म को कानूनी ठहराते हुए मिलान का आदेश जारी किया। उसके बाद रोमी सम्राट **कॉन्सटन्टाईन** और लिसीनियस ने प्रारम्भिक कलीसिया के नष्ट किए गए गिरजाघरों का फिर से निर्माण किया और सताव के दौरान जप्त की गई सम्पत्ति लौटा दी।

सन 313–337: सम्राट कॉन्सटन्टाईन के राज्य से प्रारम्भिक कलीसिया को समर्थन (कृपा) प्राप्त होता है

प्रारम्भिक कलीसियाओं ने कॉन्सटन्टाईन का स्वागत बड़े आनंद के साथ किया, वे इस बात के विषय में उपकृत थे कि उसने न केवल सताव का अंत किया, बल्कि उन पर कृपा भी की। रोमन नागरिकों की भीड़ की भीड़ गिरजाघरों में आने लगी, यद्यपि कॉन्सटन्टाईन रोमी मूर्तिपूजक धर्म का प्रमुख बना रहा। लाखों नये सदस्य आते रहे। अब मसीही बनना खतरे की बात नहीं थी, परंतु राजनैतिक और सामाजिक तौर पर यह एक सुअवसर था, इसलिए अब कलीसिया को विश्वास और आचरण के मापदण्डों में नई शिथिलता का सामना करना पड़ा। कलीसिया के पास ज़मीन और इमारतें आ गईं। अक्सर उसकी बड़ी–बड़ी इमारतें उन स्थानों पर बनाई जाती, जहां पहले मूर्तिपूजक मंदिर थे।

सन 318: एरियन विवाद

मिस्र के एलेक्ज़ैन्ड्रिया के प्राचीन ने जिसका नाम एरियस था, यीशु के ईश्वरत्व और परमेश्वर पिता के साथ उसके रिश्ते के सम्बंध में एक थोड़ा भिन्न स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया। जब उसे सुधारा गया, तब उसने इस बात से इन्कार किया, इसलिए सन 321 में कलीसिया ने उसे बहिष्कृत कर दिया।

सन 323: "कलीसियाई इतिहास का जनक"

कैसरिया का बिशप यूसेबियस पहला महत्वपूर्ण कलीसियाई इतिहासकार बन गया और उसने प्रारम्भिक कलीसिया के बहुमूल्य लेखन का कार्य किया है। पॅम्फिलस के साथ ही वह भी बाइबल कैनन का विद्वान था और उसे अपने समय के अत्यंत सुशिक्षित मसीही विद्वानों में से एक माना जाता है। उसने *सुसमाचार के प्रात्यक्षिक, सुसमाचार की तैयारियां, सुसमाचारों के बीच* ***तफावतें,*** *बाइबल पाठों का अध्ययन* आदि पुस्तकों का लेखन किया है। "कलीसियाई इतिहास के जनक" के रूप में उसने *पेम्फिलस के जीवन पर,* ***बखर*** और *शहीदों पर सभोपदेशीय इतिहास (Ecclesiastical History)* तैयार किया।

सन 325: नायसीन परिषद

अब कलीसिया को उसके विश्वास को स्पष्ट करने और परिभाषित करने की ज़रूरत पड़ी, विशेषकर मसीह के व्यक्तित्व और स्वभाव को समझने और समझाने की। उस समय **कॉन्स्टन्टाईन** लिसिनियस के साथ गृहयुद्ध में व्यस्त था। सन 324 में वह राज्य को एकजुट करने में विजयी हुआ। परंतु वह डर गया कि एरियन विवाद केवल कलीसिया में ही विभाजन नहीं लाएगा, परंतु उसके नए एकजुट साम्राज्य में भी फूट डालेगा, इसलिए उसने विवाद को सुलझाने के लिए प्रारंभिक कलीसिया के सभी बिशपों को नायकिया में बुलाया, जो आधुनिक टर्की है। सम्राट कॉन्स्टन्टाईन की अधीनता में कलीसिया की पहली मुख्य परिषद आधुनिक टर्की के नायकिया में सन 325 हुई जहां कॉन्सटन्टाईन मॉडरेटर के रूप में विद्यमान था। नायसीन परिषद ने एक अधिकृत विश्वासमत जारी किया, इसे नायसीन विश्वास कहा जाता है जो प्रारंभिक कलीसिया के विश्वास के नियम पर आधारित था। वह सीधे तौर पर एरियनवाद के तत्वों का खण्डन करता है, जबकि एरियन विवाद सन 381 में कान्स्टॅटिनोपल की परिषद तक पूर्ण

रूप से सुलझाया नहीं जा सका। नासिया की परिषद में एक और महत्वपूर्ण विवाद का उदय हुआ, वह था प्रणेताओं (फादर्स) को अधिकृत मान्यता। ये एलेक्जेन्ड्रिया, रोम और एन्टिओक के बिशप थे जिन्हें बड़े–बड़े प्रांतों पर अधिकार दिया गया था। इससे अंत में यह हुआ कि बिशप का रोम पश्चिम में रोमन कैथोलिक कलीसिया का पोप बन गया। अन्य प्रणेता – उसके बाद और कई जोड़े गए – आज भी पूर्व ऑर्थोडॉक्स कलीसिया के अगुवे हैं।

सन 330: रोमन साम्राज्य की राजधानी कॉन्स्टॅन्टिनोपल को ले जाई जाती है

सन 324 में कॉन्स्टॅन्टिनोपल शहर की स्थापना हुई। मई 11, सन 330 को यह शहर समर्पित किया गया। अब रोम साम्राज्य की सता का केंद्र नहीं रहा और रोम में कलीसिया इस स्थान की कमी पूरा करने लगी।

सन 361–363: सम्राट जुलियन ने मूर्तिपूजा को फिर स्थापित करने का असफल प्रयास किया।

सन 367: नये नियम के कैनन की पुष्टि की गई

सन 367 में, एथेनेसियस का ईस्टर पत्र, और 382 में और 397 में हुई परिषद में अंतिम मान्यता प्रदान की गई। इससे मसीही पवित्र शास्त्र तैयार नहीं हुआ, परंतु सामान्य तौर पर जिसे पहले से मान्यता और स्वीकृति थी, उसकी पुष्टि की गई।

सन 381: सम्राट थियोडोशियस IX मसीहत को अधिकृत राज्यधर्म घोषित करता है।

सन 381: कॉन्स्टॅन्टिनोपल में **दूसरी प्रमुख परिषद** आयोजित की गई।

सन 384: जेरोम द्वारा लैटिन वल्गेट बाइबल का संकलन

सन 382 में जेरोम ने सुसमाचारों का लैटिन भाषा में अनुवाद करने की ज़िम्मेदारी स्वीकार की (और उसके बाद सम्पूर्ण बाइबल)। पुराने लैटिन संस्करण (सन 150) के विपरीत जो ग्रीक सेप्टूआजिन के आधार पर अनुवादित किया गया था, जेरोम द्वारा संकलित किया गया वल्गेट, सीधे इब्रानी से अनुवाद किया गया।

सन 386: अगस्तीन का उद्धार हुआ। वह सम्पूर्ण कलीसियाई इतिहास के सर्वाधिक महत्वपूर्ण ईश्वरविज्ञानियों में से एक बन गया।

सन 393: हिप्पो की परिषद

सम्भवतः यह पहली मसीही परिषद थी जिसने पवित्र शास्त्र के कैनन पर सीमा निर्धारित की। यहां चर्चा की गई कैनन की सीमाओं को अगस्तीन ने मान्यता दी और एथेनेशियस द्वारा प्रस्तुत किए गए कैनन को प्रमाणित किया।

सन 397: कॉर्थेज की परिषद

हिप्पो में जिन बातों पर शोध किया गया था उन्हें इस परिषद में दोहराया गया। पवित्र शास्त्र के कैनन को बंद कर दिया गया।

सन 400: पुराना सीरियाक नया नियम

नये नियम का यह अनुवाद सीरिया में प्रचलित था।

इस सदी के अंत में, "सतायी गई" कलीसिया "सताने वाली" कलीसिया बन गई। इस सदी के अंत में, कई बातों में, वह एक भिन्न कलीसिया और एक भिन्न दुनिया थी।

मध्य (अंधकारमय) युग और प्रारम्भिक सुधारक (सन 401–1500)

सन 500 से 1500: संस्था में परिवर्तित कलीसिया पूर्ण रूप से तैयार हो गई और पोप राजनैतिक एवं आत्मिक अधिकार चलाने लगे। वे कर इकट्ठा करते थे, सेना तैयार करते थे और अधीनस्थ राजाओं और राज्यकर्ताओं पर अधिकार जताते थे और इस प्रकार वे समाज में प्रभुताकारी शक्ति बन गए और उनका प्रभाव पूरे पश्चिमी दुनिया में फैल गया। कलीसिया की नैतिक और आत्मिक दशा में गिरावट आने लगी। पवित्र शास्त्र और आत्मा के जीवन और कार्य का स्थान, स्वरूप, आराधना विधि, और रीति–रस्मों ने ले लिया। सामान्य विश्वासी पवित्र शास्त्र नहीं पढ़ सकते थे। संतों की प्रार्थना, पर्गेटरी (पापक्षालन का स्थान) में विश्वास, प्रतिस्थापक, क्षमापत्र, और स्मारक चिन्हों की उपासना आदि गलत प्रथाओं को परिचित कराया गया। कलीसिया को प्रमादरहित माना गया और सर्वोच्च सत्ता पोप के हाथों में सौंप दी गई। मठवाद का आत्मिक लक्ष्य, सामर्थ और बल धीरे–धीरे कम होने लगा।

सन 596: साधु ग्रेगरी महान अगस्तीन को और मिशनरियों की टीम को सुसमाचार का फिर परिचय कराने हेतु इंग्लैंड भेजता है। मिशनरी कैन्टरबरी में स्थायी हो जाते हैं और एक साल के अंदर दस हज़ार लोगों को बपतिस्मा देते हैं।

सन 635: पहले मसीही मिशनरी (नेस्टोरियन और एलोपेन साधु), एशिया माइनर और पर्शिया से चीन में आते हैं।

अब तक मिशनरियों ने जगत के विभिन्न भागों में सुसमाचार फैलाया था।

सन 1150–1270: पीटर वाल्डो और द वाल्डेन्सेस

मत्ती 10:5–13 में दी गई प्रभु की शिक्षा से प्रभावित होकर दक्षिण आफ्रिका में स्थित लियॉन्स के धनी व्यापारी पीटर **वाल्डो** ने भौतिक सुख–सुविधा की परवाह न करते हुए बाहर जाकर सुसमाचार प्रचार करने का निर्णय लिया। जल्द ही लोग उसका अनुसरण करने लगे, जिसके परिणामस्वरूप संस्थागत कलीसिया द्वारा उन्हें सताया जाने लगा। वाल्डेनवादियों के कुछ मुख्य गुण थे:

- उन्होंने कलीसिया से अनुरोध किया कि वे पवित्र शास्त्र की मूल शिक्षा की और लौट आएं।
- उन्होंने पाप शोधन स्थान और कलीसिया के प्रमादरहित होने की कल्पना का इन्कार किया।
- सामान्य मसीही विश्वासियों को प्रचार करने की अनुमति दी गई।
- और अपनी सम्पत्ति बेचकर कंगालों को देना समर्पण के कार्य थे।

सन 1200 : बायबल अब 22 अलग–अलग भाषाओं में उपलब्ध थी।

सन 1266: मंगोल नेता खान ने मार्को पोलो के पिता और चाचा, निकोलो और मैटियो पोलो को इस बिनती के साथ पोप के पास यूरोप वापस भेजा कि वह सौ मसीही मिशनरी भेजे (केवल दो मिशनरियों ने हां कहा और और मंगोल प्रांत आते–आते एक की मृत्यु हो गई)।

सन 1382 : जॉन विक्लिफ – सुधारकाल के भोर का सितारा, पूरी अंग्रेज़ी बाइबल

जॉन विक्लिफ का जन्म 1324 के दौरान यार्कशायर में हुआ। उसने ऑक्सफर्ड यूनिवर्सिटी से शिक्षा प्राप्त की और 1366 और 1372 के बीच ईश्वरविज्ञान में डॉक्टरेट की पदवी प्राप्त की। विक्लिफ सुधार के करीब 200 वर्ष पहले जीवित था, लेकिन उसके विश्वासमत और शिक्षाएं लूथर, केल्विन और अन्य सुधारकों के साथ समानता रखती हैं। वह अपने समय से बहुत आगे था, इस दृष्टि से इतिहासकारों ने विक्लिफ को सुधार का भोर का सितारा कहा है। *"प्रत्येक मसीही व्यक्ति को बाइबल जानने का अधिकार है यह घोषणा उसने की, और यह कि बाइबल उद्धार के एकमात्र पर्याप्त मार्ग के रूप में केवल मसीह के महत्व को देखने की प्रत्येक व्यक्ति को ज़रूरत है इस बात पर ज़ोर दिया, उसके लिए तीर्थयात्रा, कार्य, और मास की ज़रूरत नहीं है।"* 1378 में, अपने कुछ विद्यार्थियों की सहायता से,

अनुवाद के लिए जेरोम के लैटिन वल्गेट का उपयोग कर विक्लिफ ने अंग्रेजी में बाइबल का अनुवाद किया। उसका कार्य 1382 में पूरा हुआ। 1384 में दिल का दौरा पड़ने से विक्लिफ की मृत्यु हो गई। विक्लिफ के अनुयायियों को लोलार्ड कहा जाता है और 16वीं सदी के आरम्भ में लोलार्ड आंदोलन को प्रोटेस्टंट सुधार युग का पूर्वगामी माना जाता है।

1415 : जॉन हस – प्राण देने तक विश्वासयोग्य

जॉन हस का जन्म 1369 में हजेजिज़ में (बोहेमिया, अब जेकोस्लावाकिया) एक किसान परिवार के घर में हुआ। उसने पादरी का प्रशिक्षण प्राप्त किया, मुख्य रूप से निर्धनता से बचने के लिए। 1396 में, उसने प्राग के चार्ल्स विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर पदवी प्राप्त की और उसके बाद दो साल तक वह ईश्वरविज्ञान का प्राध्यापक रहा। सन 1400 में, उसे पादरी की दीक्षा दी गई। 1404 में, ईश्वरविज्ञान में बैचलर की पदवी प्राप्त की। वह प्राग के चार्ल्स विश्वविद्यालय में प्राध्यापक था और प्राग के बेथलेहेम चैपल में पादरी भी, यह प्राग का सबसे प्रभावी गिरजाघर था। जॉन विक्लिफ की रचनाओं और शिक्षा से प्रेरित होकर, उसने यह राय बना ली कि कलीसिया सर्वश्रेष्ठ है, पोप नहीं। उसने सुधार और परिवर्तन की ज़रूरत, रोमन कैथलिक कलीसिया के भ्रष्टाचार और दुर्व्यवहार को दूर करने की ज़रूरत महसूस की। हस का भी यह विश्वास था कि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी बाइबल हो, उसकी अपनी भाषा में जिसे वह पढ़ सकता हो। लूथर से सौ वर्ष पहले, उसने विश्वास से धर्मी ठहराए जाने और पवित्र शास्त्र के सर्वोच्च अधिकार के विषय में प्रचार किया। उसके प्रचार ने कलीसिया के पुरोहित वर्ग को क्रोधित किया। प्राग के आर्चबिशप ने हस से कहा कि वह प्रचार करना बंद करे और पोप ने हस को बहिष्कृत कर दिया। औपचारिक तौर पर दोषी ठहराकर उसे संसारिक अधिकारियों के हाथ सौंपा गया और उसे जुलै 6, 1415 में जला दिया गया।

सन 1429 : जोन ऑफ आर्क – दर्शन देखना

एक साधारण और भक्तिमान किसान लड़की जो बुनाई करती थी, उसने स्वर्गीय व्यक्तियों को देखा और उनकी आवाज़ें सुनीं। वह समझ गई कि उसके द्वारा अंग्रेजी प्रभुता से फ्रांस को छुटकारा मिलेगा। अप्रैल 1429 में, जोन ऑफ आर्क बड़ी गति से अपनी फ्रेंच सेना के साथ शहर में आयी। यह सौ वर्ष के युद्ध का परिवर्तन क्षण था। अंग्रेज पीछे हट गए। बाद में, अंग्रेजों ने जोन को पकड़ लिया, और उन्होंने उसके विरोध में जादूटोने का आरोप लगाया। उसने बिनती की कि उसकी आंखों के सामने क्रूस का चिन्ह पकड़ा जाए, और जब तक उसमें सांस बाकी थी, तब तक वह यीशु के नाम को पुकारती रही।

सन 1452 : सॅवोनारोला – उसके प्रचार की वजह से उसे जलाया गया

गिरोलोमा सॅवोनारोला नामक डोमिनिकन साधु 1480 में फ्लॉरेन्स आया, उसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से आने वाले क्रोध की चेतावनी देते हुए अपने उपदेशों से लोगों को हिलाकर रख दिया। जब लोगों ने परमेश्वर की दया के कोमल आश्वासन को भी सुना, तब उनकी आंखों में आंसू आ गए। आने वाले न्याय की चेतावनी देते हुए, सॅवोनालोरा ने पोप लॉरेन्ज़ो डी मेडिसी, और नेपल्स के राजा के आसन्न मृत्यु की भविष्यद्वाणी भी की। फ्लोरेन्स में नाट्यपूर्ण बदलाव आए। उसके उपदेशों ने शहर की सरकार को अत्यंत प्रभावित किया। उसके सुधार तुरंत थे – भूखमरी से पीड़ित लोगों को राहत दी गई, बेरोजगारों को काम देने के लिए दुकान खोली गई, धर्मार्थ कर्ज देने के लिए बैंक शुरू की गई और कर घटाए गए। अंत में पोप ने गिरोलोमा सॅवोनारोला को यह घोषणा करने के लिए कि वह परमेश्वर की ओर से विशेष संदेशदाता है, दोषी ठहराया और उसे बहिष्कृत कर दिया। गिरोलोमा सॅवोनारोला को फांसी दी गई और उसके बाद मई 23, 1498 को खूंटे से बांधकर जला दिया गया।

सन 1455 : गटेनबर्ग की लैटिन बाइबल

जोहान्स गटेनबर्ग (1396–1468) ने छपाई यंत्र की खोज की और वह चलनेवाले टाईप से पुस्तकों की छपाई करने वाला इतिहास का पहला व्यक्ति ठहरा। गटेनबर्ग बाइबल का प्रकाशन 1455 में हुआ और उसने कलीसिया की भाषा, लैटिन में बाइबल के संग्रह की छपाई की।

सन 1492 : कोलंबस अमेरिका में आ पहुंचता है

बेदारी लाने वाला सुधार (सन 1501–1800)

सन 1516: डच विद्वान एरॅस्मस, साधु बना लेखक

जिस तोप को लूथर ने दागा उसमें एरॅस्मस ने बारूद भरने का काम किया। वह अपने समय का सबसे महान विद्वान था, उसने सुधार युग की बंदूक मे और दो गोलियां भर दीं। पहली गोली "मूर्खता की प्रशंसा" *(The Praise of Folly)* नामक व्यंग लिखा, जिसने मसीही यूरोप की गलतियों का मज़ाक उड़ाया है। उदाहरण के तौर पर, एरॅस्मस ने अपने पाठकों को यह स्मरण दिलाया कि पतरस ने प्रभु से कहा था, "हमने तेरे लिए सबकुछ त्याग दिया है।" परंतु मूर्खता अपने प्रभाव के बदौलत घमण्ड करती है, "शायद ये ऐसे लोग हैं जो प्रेरितों के उत्तराधिकारियों से अधिक आरामदायक जिंदगी बिताते हैं।" दूसरी गोली थी, ग्रीक नया नियम। सदियों से, जेरोम का लैटिन अनुवाद, वल्गेट, कलीसिया की बाइबल थी। परंतु जेरोम के अनुवाद में कमियां थीं। एरॅस्मस ने मूल नये नियम को फिर तैयार किया, उसने ग्रीक अनुवाद का सहारा लिया और उसे प्रकाशित किया। समानांतर स्तम्भ में उसने नया लैटिन अनुवाद भी प्रस्तुत किया। इतना ही नहीं – इसके लिए उसे अपनी जान भी देनी पड़ती – उसने बाइबल की व्याख्या करते समय पाई जाने वाली सामान्य गलतियों की ओर संकेत करने वाली हज़ार टिप्पणियां लिखीं। पादरियों को विवाह करने से मनाई करने के रोम के इन्कार के विरोध में उसने जमकर हमला बोला, जबकि कुछ पादरी खुलेआम रखैलों के साथ जीवन बिताते थे और उसने इस बात का इन्कार किया कि पोप जिन अधिकारों का दावा करते हैं वे अधिकार उनके हैं। इस विद्वान ने उन प्रथाओं को भी चुनौती दी जिनके विषय में पवित्र शास्त्र में सिखाया नहीं गया है: संतों की प्रार्थना, क्षमा पत्र, स्मृतिचिन्हों की उपासना। फरवरी 1, 1516 को एरॅस्मस ने अपना नया नियम प्रकाशित किया और पोप लियो ग के नाम उसे समर्पित किया।

सन 1517 : मार्टिन लूथर अपने 95 शोधप्रबंध चिपकाता है

पोप लियो ग ने कलीसियाई इतिहास के सबसे कुख्यात क्षमा पत्र के लिए पैसों की हेराफेरी का पाप किया। इसके प्रतिउत्तर के रूप में मार्टिन लूथर ने अक्टूबर 31, 1517 को जर्मनी के विटेनबर्ग के गिरजाघर के दरवाजे पर अपने 95 शोध प्रबंध चिपकाए जिसका परिणाम सुधारवाद में हुआ।

सन 1519: उल्रिच ज़्विंगली के नेतृत्व में ज़ुरिच सुधारना

ज़्विंगली का जन्म 1484 में नये वर्ष के दिन स्वित्ज़रलैंड के विल्डान्स में हुआ। उसने शात्रीय विषयों में उत्तम शिक्षा प्राप्त की और 1506 में उसे पादरी की दीक्षा दी गई। ज़्विंगली ने व्यक्तिगत् तौर पर मूल ग्रीक भाषा में पौलुस की पत्रियां लिखीं और याद की। वह 1506 से 1516 तक ग्लैरस में पैरिश प्रीस्ट के रूप में सेवा करता रहा। 1 जनवरी, 1519 में, वह ज़ुरिच के मध्यवर्ती गिरजाघर में पादरी बन गया और उसने मत्ती के सुसमाचार से प्रचार करने का निर्णय लिया। कलीसिया की रीति–रस्में और शिक्षाएं पवित्र शास्त्र के उसके वाचन से मेल नहीं खाती थीं। उसने बाइबल में जो पाया उसके आधार पर प्रचार किया – भले ही उसका अर्थ लम्बे समय से स्वीकार की गई कलीसिया की शिक्षाओं के विरोध में जाना था। परिणामस्वरूप, विवाद फैल गया। ज़ुरिच नगर परिषद द्वारा विश्वास और शिक्षा के विवादातीत विषयों पर चर्चा करने हेतु सार्वजनिक बहस आयोजित की गई। जनवरी 29, 1523 को परिषद ने ज़्विंगली का पक्ष लेते हुए एक नियम पारित किया और एक आदेश जारी किया कि वह और उस क्षेत्र के पासबानों को "पवित्र सुसमाचार और मात्र पवित्र शास्त्र द्वारा साबित किए जाने वाले प्रचार के सिवा अन्य कुछ प्रचार करना नहीं है।" दुर्भाग्य से, उस समय की कलीसिया की शिक्षाओं के विषय में विवाद करने वाले और ज़ुरिच के कैथोलिक के बीच तनाव बढ़ता गया जिसका परिणाम आपस में लड़ाई और हत्या के रूप में हुआ। अक्टूबर 11, 1531 में, मारे जाने वाले अन्य कई लोगों में ज़्विंगली भी था।

सन 1525: आमूल सुधारवादी (Reformation Radicals): एनाबैप्टिस्ट्स

उल्रिच ज़्विंगली (1484–1531), जो कि लूथर का समकालीन था, उसके सुधार आंदोलन के रूप में स्वित्ज़रलैंड के ज़ुरिच में एनाबैप्टिस्ट की शुरूवात हुई। मास मनाना जारी रखने और गिरजाघर की मूर्तियों को नाश करना रोक देने के ज़ुरिच नगर परिषद के आदेश के साथ ज़्विंगली ने जब सहयोग करने का फैसला किया तब ज़्विंगली और उसके दो साथी, फेलिक्स मैन्ज और कॉनरेड ग्रेबेल के बीच मतभेद हो गया। एनाबैप्टिस्ट का अर्थ है "वह जो फिर से बपतिस्मा लेता है।" एनाबैप्टिस्टवादियों का यह आग्रह था कि बपतिस्मा केवल विश्वासियों के लिए है और इसलिए शिशुओं को बपतिस्मा देने की कल्पना हटा दी जाए। इस बात के लिए उन्हें कैथोलिक और अन्य प्रोटेस्टंट विश्वासियों द्वारा गम्भीर रूप से सताया गया। एनाबैप्टिस्ट यह भी विश्वास करते थे कि उन्होंने जब बाइबल पढ़ी तब पवित्र आत्मा की उद्‌बोधनकारी उपस्थिति को अनुभव किया। उन्होंने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि सेवकाई सम्पूर्ण मण्डली की ज़िम्मेदारी है। एनाबैप्टिस्ट के प्रत्यक्ष वंशजों में एमिस, हटेराईट और मेनोनाईट कलीसियाओं का समावेश है। इसके अतिरिक्त, उनकी मुक्त कलीसिया की अवधारणा ने प्यूरिटन अलगाववादियों, बैप्टिस्ट और क्वेकर्स को प्रभावित किया। इससे अधिक महत्वपूर्ण बात आने वाली पीढ़ियों पर उनका कैरिस्मैटिक प्रभाव है।

मैनोनाईट विद्वान जॉन एच. योडर ने कहा है कि हमारी सदी में पाया जाने वाला पेन्टिकॉस्टलवाद "छठी सदी में एनाबैप्टिस्ट लोगों ने जो सिखाया उसके समानांतर है।"

सन 1525: विलियम टिंडेल, अंग्रेजी बाइबल का मूल ग्रीक और इब्रानी अनुवाद

विलियम टिंडेल (1492–1536) एक प्रतिभावान विद्वान था जिसने ऑक्सफर्ड और केम्ब्रिज़ में अध्ययन किया था। टिंडेल एरॅस्मस का विद्यार्थी था और वह सात भाषाएं बोलता था, वह इब्रानी और ग्रीक भाषा में प्रभुता रखता था। जीवन में टिंडेल का लक्ष्य अंग्रेज लोगों को लैटिन भाषा पर आधारित नहीं, परंतु ग्रीक और इब्रानी भाषा के आधार पर बाइबल का अनुवाद देना था। किसी एक पादरी ने उसे यह चुनौती दी कि अंग्रेज़ लोग "पोप की व्यवस्था के बगैर रहने के बजाए परमेश्वर की व्यवस्था के बगैर बेहतर हैं।" टिंडेल ने उत्तर दिया, *"यदि परमेश्वर मेरी जान बचाएगा, तो मैं पोप का और उसके सारे कानूनों और नियमों का धिक्कार करूंगा, जल्द ही आने वाले वर्षों में मैं ऐसा करूंगा कि एक हल चलाने वाला लड़का भी तुमसे ज्यादा पवित्र शास्त्र जाने।"* 1523 में, टिंडेल ने इंग्लैंड के पुरोहित वर्गों से उसके अंग्रेजी अनुवाद के लिए अधिकृत समर्थन पाने की कोशिश की, परंतु उसे इन्कार कर दिया गया। कुछ धनवान व्यापारियों से आर्थिक सहायता पाकर, टिंडेल जर्मनी गया जहां उसने फरवरी 1526 में नया नियम पूरा किया। वर्म्स में उसके नए नियम की छः हज़ार प्रतियों की नकल तैयार की गई और अप्रैल 1526 में वे इंग्लैंड में बेची जाने लगीं। परंतु लंडन के बिशप टन्स्टॉल ने इन प्रतियों में से कई प्रतियां खरीद लीं और उन्हें आग लगा दी। उपरोध की बात यह है कि टन्स्टॉल ने टिंडेल की बाइबल खरीदने के लिए जो पैसे दिए, उससे टिंडेल के सारे खर्च चुकता हो गए और नये और सुधारित संस्करण के लिए भी उसे पैसे मिल गए। टिंडेल ने कई बार नये नियम का पुनर्मुद्रण किया और 1530 में उसने पंचग्रंथों (च्मदजंजमनबी) का अनुवाद प्रकाशित किया, 1534 में उत्पत्ति का संशोधित संस्करण प्रकाशित किया गया। टिंडेल ने योना और यहोशू से 2 इतिहास तक सारी पुस्तकों का अनुवाद किया। टिंडेल ने सीधे इब्रानी और ग्रीक भाषा से अनुवाद किया और वह सचमुच अंग्रेजी बाइबल का जनक है। उसके शब्दों में से 90 प्रतिशत शब्द किंग जेम्स के संस्करण में और 75 प्रतिशत शब्द रिवाईज़्ड स्टॅन्डर्ड संस्करण में लिए गए हैं। 1611 में, किंग जेम्स की बाइबल से पहले 86 वर्षों में बाइबल के आठ प्रमुख भाषांतर प्रकाशित हुए, परंतु उन सबमें टिंडेल सबसे अधिक प्रभावशाली रहा। टिंडेल के अनुवाद कलीसिया के अधिकारियों में अप्रिय थे क्योंकि उसका कार्य अनधिकृत था और उसने बाइबल सामान्य लोगों के हाथों में दी। टिंडेल एन्टवर्प में अंग्रेज व्यापारियों के साथ थोड़ी सुरक्षा में रहा, परंतु 1535 में उसे धोखे से पकड़वाकर कैद कर लिया गया। डेढ़ साल तक कैद में रहने के बाद, उसे फांसी लगा दी गई और 6 अक्टूबर, 1536 में ब्रुसेल्स में खूंटे पर जला दिया गया। उसके अंतिम शब्द थे, "प्रभु, इंग्लैंड के राजा की आंखें खोल दे।" (टोनी लेन, "The Crown of English Bibles, in Christian History, Issue 43, pp.8.9)।

सन 1529: प्रोटेस्टंट विश्वासियों को पहली बार प्रोटेस्टंट कहा गया

सन 1536: स्वित्ज़रलैंड में जॉन केल्विन जिनेवा सुधार का नेतृत्व करता है

जॉन केल्विन का जन्म फ्रांस में 1509 में हुआ, वह एक भक्तिमान कैथोलिक था और अत्यंत प्रतिभावान व्यक्ति था। उसने ऑर्लिन्स और पेरिस विश्वविद्यालयों में कानून का अध्ययन किया। जब प्रोटेस्टंट सुधार क्रांति की शुरूवात हुई, तब जॉन केल्विन मार्टिन लूथर के विषय में पढ़ने लगा और जल्द ही फ्रांस में सुधार का अगुवा बन गया। 1533 में, केल्विन को पैरिस से भाग जाना पड़ा और उसने अगले तीन वर्ष **भगोड़े प्र**चारक के रूप में बिताए, और अंत में वह स्वित्ज़रलैंड के जिनेवा में बस गया, जहां वह काफी समय तक रहा, 1564 में उसकी मृत्यु होने तक। 1536 में, केल्विन ने "The Institutes of the Christian Religion" नामक पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रकाशित किया, जिसमें सुधार क्रांति के मुख्य विश्वास मतों को स्पष्ट रूप से समझाया और संकलित किया गया है। 27 वर्ष की उम्र में उसने पहले ही प्रमुख क्रमबद्ध ईश्वरविज्ञान प्रकाशित कर लिया था, जिसमें सुधार युग की शिक्षाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है। जिनेवा में केल्विन को अद्भुत सफलता प्राप्त हुई। सेंट पियरी गिरजाघर के पासबान के पद के अलावा, वह लगभग प्रतिदिन प्रचार करता था, उसने बहुत लेखन किया और दर्जनों भक्तिपर और बाइबल शिक्षा पर आधारित पर्चे लिखे और बाइबल की लगभग प्रत्येक पुस्तक पर टीका प्रकाशित की। वह बहुत अधिक पत्र व्यवहार भी करता था, उसने बीसियों मिशनरियों को प्रशिक्षित किया और सेवा के लिए भेजा। जिनेवा पर केल्विन का प्रभाव विस्मयकारी था। वह जिनेवा शहर को पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के समान बनाना चाहता था। जिनेवा नैतिक रूप से पतनावस्था में था, फिर भी केल्विन का प्रभाव सर्वत्र महसूस किया गया – उसने लोगों को आकर्षित किया कि वे आत्मिक मापदण्डों के अनुसार बदल जाएं। नगर परिषद ने उसके विश्वास के अंगीकार को स्वीकार किया था और यह नियम बनाया कि जिनेवा का प्रत्येक नागरिक उसका पालन करे। जिनेवा एक सामर्थी नैतिक चुम्बक बन गया, और उसने पूरे यूरोप के प्रोटेस्टंट विश्वासियों को आकर्षित किया। जॉन नॉक्स ने जिनेवा का वर्णन, "प्रेरितों के दिनों के समय के बाद मसीह की सबसे परिपूर्ण शाला" इन शब्दों में किया। केल्विन के नैतिक प्रभाव से जिनेवा शहर सचमुच परिवर्तित हो गया। और उसके फ्रेंच और लैटिन लिखान – विशेषकर द इन्स्टिट्यूट – ने प्रोटेस्टंटवाद को और उत्साह प्रदान किया। केल्विन की शिक्षाओं में से एक को पूर्व–निर्धारण – प्री–डेस्टिनेशन कहा जाता है (परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति से पहले ही हमें चुन लिया है)। यद्यपि अगस्तीन ने सदियों पहले इसकी शिक्षा दी थी और लूथर और अन्य सुधारकों ने उसे अपनाया था, फिर भी केल्विन उसका मुखर प्रस्तावक बन गया और इसलिए पूर्व–निर्धारण की शिक्षा के साथ उसका नाम जोड़ा जाता है। फरवरी 6, 1564 को मरने से पहले, जब केल्विन अपना अंतिम संदेश प्रचार कर रहा था, तब उसका मुंह बीमारी की वजह से खून से भर गया।

1556 : जॉन नॉक्स – स्कॉटलैंड में सुधार

जॉन नॉक्स को उसकी साहसी प्रार्थना के लिए जाना जाता है, उसके साहसी प्रार्थना का उदाहरण है, "प्रभु, मुझे स्कॉटलैंड दे दे, या मैं मरा।" एक बार स्कॉटलैंड की रानी ने कहा, "मैं सारे यूरोप की सेना से जितना नहीं डरती, उतना मैं जॉन नॉक्स की प्रार्थनाओं से डरती हूं।" जॉन नॉक्स के समय में, एक ही पीढ़ी में, स्कॉटलैंड के 90 प्रतिशत लोग मसीही बन गए। उस पर जॉन कैल्विन का गहरा प्रभाव था। जॉन नॉक्स स्कॉटिश पादरी, ईश्वरविज्ञानी, और लेखक था जो प्रोटेस्टंट सुधार क्रांति का अगुवा था और उसे स्कॉटलैंड में प्रेस्बिटेरियन डिनॉमिनेशन का संस्थापक माना जाता है।

सन 1560: फ्रेंच प्रोटेस्टंट – ह्यूगनॉट्स

सुधारवाद की कल्पनाएं 1520 के बाद फ्रांस में भी प्रवेश करने लगी। प्रबल सताव के बावजूद इन विचारों को उपजाऊ ज़मीन मिल गई और प्रोटेस्टंट विश्वास उस राष्ट्र में शक्ति माना जाने लगा। 1560 के बाद, फ्रेंच प्रोटेस्टंट विश्वासियों को ह्यूगनॉट्स के नाम से पहचाना जाने लगा, और 1598 में, उन्हें **नानटेस** के आदेश के अनुसार धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की गई। परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ में उनका दृढ़ विश्वास उनकी प्रार्थना और नये

नियम की यत्नशीलता की खोज से उत्पन्न हुआ था। उनका आग्रह था, "पवित्र शास्त्र में परमेश्वर ने कभी मनुष्यों को अपने आत्मा के असाधारण वरदान देना नहीं रोका।" सचमुच, अन्यान्य भाषा, दर्शन, भविष्यद्वाणियां और अन्य अलौकिक घटनाएं उनके मध्य आम थीं। उनके मध्य में आत्मा की प्रबल सामर्थ के द्वारा वे फ्रेंच भविष्यद्वक्ताओं के रूप में विख्यात हो गए।

सन 1563: जॉन फॉक्स और *जॉन फॉक्स की शहीदों की पुस्तक*

सुधारवाद का जब हाल ही उदय हो रहा था उस समय इंग्लैंड के बोस्टन में सन 1516 में जॉन फॉक्स का जन्म हुआ। जिस वर्ष जॉन फॉक्स का जन्म हुआ, उस वर्ष एरॅस्मस ने ग्रीक भाषा में नया नियम प्रकाशित किया; फॉक्स के जन्म के एक साल बाद, मार्टिन लूथर ने विटेनवर्ग में अपने 95 शोधप्रबंध चिपकाए। 1563 में अंग्रेज जॉन फॉक्स ने अपनी कलीसिया के निर्माण में परमेश्वर के कार्य का सर्वगत इतिहास प्रस्तुत करने के उद्देश्य से अपना Acts and Monuments प्रकाशित किया। इस पुस्तक को अक्सर फॉक्स की शहीदों की पुस्तक कहा जाता है, यह इतिहास मसीहत का उत्कृष्ट ग्रंथ बन गया है। ऐसा समय था जब बाइबल और फॉक्स की पुस्तक इन दो पुस्तकों का ही वाचन कई मसीही लोग अक्सर करते थे। फॉक्स का विश्वास था कि मसीही इतिहास पुराने नियम के इतिहास और प्रेरितों के कामों के पुस्तक में पायी जाने वाली प्रारम्भिक कलीसिया की निरंतरता है, और सामान्य मसीहियों को परमेश्वर की योजना कैसे प्रकट हुई यह और पवित्र शास्त्र में प्रकट किए गए सिद्धांतों को जानना ज़रूरी है।

सन 1611: किंग जेम्स संस्करण (अधिकृत)

सन 1604 में, राजा जेम्स ᑊ ने धार्मिक सहिष्णुता के विषय पर चर्चा करने के उद्देश्य से विभिन्न धार्मिक समूहों के प्रतिनिधियों की बैठक बुलाई गई। हॅम्पटन कोर्ट कॉन्फ्रन्स के नाम से विख्यात इस बैठक में, ऑक्सफर्ड के डॉक्टर जॉन रेनॉल्ड्स ने अंग्रेजी बाइबल के अधिकृत संस्करण की अनुकूलता के विषय में चर्चा की जो कलीसिया के सभी पक्षों में मान्य होगी। जेम्स ने रेनॉल्ड्स के साथ सहमति जताई और ऐसे संस्करण के लिए अनुरोध किया जिसका उपयोग सार्वजनिक और निजी तौर पर किया जाएगा। जेम्स के अनुसार, जो विद्वान नये संस्करण पर काम कर रहे थे, उन्हें मूल संस्करण के रूप में बिशप्स बाइबल का उपयोग करना था, बशर्ते वह मूल ग्रीक और इब्रानी भाषा से निकटता रखती हो। उन्हें अन्य अनुवादों से भी परामर्श पाना था, जैसे टिन्डेल, मॅथ्यू, कवरडेल, ग्रेट बाइबल और जिनेवा बाइबल। पिछले संस्करणों के विपरीत, उन्हें टिप्पणियां तैयार नहीं करना था, केवल पाठ का अनुवाद करते समय जो आवश्यक था उतना ही टिप्पणी में शामिल करना था। 1607 में, औपचारिक तौर पर अनुवाद आरम्भ हुआ। ग्रीक और इब्रानी भाषा में प्रभुता रखने वाले 44 पुरुषों को चुना गया और उन्हें 6 गुटों में विभाजित किया गया – वेस्टमिनिस्टर में दो, दो ऑक्सफर्ड में, और दो केम्ब्रिज में, प्रत्येक दल को विस्तृत निर्देश दिए गए और अनुवाद के लिए चुनिंदा पुस्तकें दी गई। प्रत्येक समूह के कार्य की जांच दूसरे समूहों को करना था। इस प्रकार, यह अनुवाद संशोधकों का कार्य था, किसी एक व्यक्ति या समूह का नहीं। काम दो वर्ष और नौ माह तक जारी रहा। 1611 में, नये संस्करण की पहली प्रतियां छापी गईं। उसे राजा को समर्पित किया गया और उसके मुख्य पृष्ठ पर ये शब्द लिखे गए, "गिरजाघरों में पढ़ी जाने के लिए निर्धारित।" तुरंत गिरजाघरों में बिशप्स बाइबल का स्थान किंग जेम्स बाइबल ने ले लिया, फिर भी लोकप्रिय जिनेवा बाइबल के साथ उसकी कड़ी प्रतियोगिता थी। परंतु कुछ ही दशकों में केजेवी बाइबल विश्व भर के अंग्रेजी भाषा बोलने वाले लोगों में आदर्श मानी गई। केजेवी की कई आवृत्तियां निकाली गई हैं और 1611 के बाद से उसमें काफी आधुनिकीकरण किया गया है। टिन्डेल के समय से 1611 तक, सात मुख्य अंग्रेजी अनुवाद हुए – कवरडेल बाइबल, मॅथ्यू बाइबल, ट्रेवर्नर बाइबल, द ग्रेट बाइबल, द जिनेवा बाइबल, और बिशप्स बाइबल और रिम्स–दोनाई बाइबल। 1611 किंग जेम्स संस्करण इन सभी संस्करणों से श्रेष्ठ ठहरने वाला था और अगले साढ़े तीन वर्षों के लिए आदर्श अंग्रेजी बाइबल साबित होने वाला था। अन्य संशोधन 1615, 1629, 1638 और 1762 में हुए। 1762 के संशोधन को आज अधिकतर लोग किंग जेम्स संस्करण के रूप में जानते हैं।

सन 1646: जॉन इलियट, मूल उत्तर अमेरिकी इंडियन्स के मिशनरी

जॉन इलियट (1604–1690), मूल अमेरिकन जनजातियों के बीच परिश्रम करने वाला सम्भवतः सबसे बड़ा मिशनरी था। जॉन इलियट ही एकमात्र प्यूरिटन मिशनरी नहीं थे जिन्होंने मूल अमेरिकन इंडियन्स को मसीहत में लाने का प्रयास किया, परंतु वे पहले व्यक्ति थे जिसने इन आदिवासियों की अपनी भाषाओं में मुद्रित पुस्तकों का प्रकाशन किया। यह अत्यंत महत्वपूर्ण था क्योंकि "प्रार्थना करने वाले इंडियन्स" के उपनिवेशों को जॉन इलियट ने आरम्भ किया हुआ कार्य जारी रखने के लिए अन्य प्रचारक और शिक्षक भेजे जा सके। अल्गॉन्क्वीन भाषा में संदेशों का अनुवाद करके, जॉन इलियट ने केवल उन्हें मसीहत की समझ ही प्रदान नहीं की, परंतु लिखित भाषा की समझ भी दी। उनके पास उनके अपने वर्णाक्षर नहीं थे और वे मुख्य रूप से मौखिक भाषा और चित्र भाषा पर निर्भर थे। इलियट ने मैसाच्यूसेट भाषा में बाइबल का अनुवाद किया और उसे 1663 में प्रकाशित किया। यह पश्चिम गोलार्ध में सबसे पहली संपूर्ण बाइबल थी।

सन 1649 : ग्रेट ब्रिटेन में न्यू इंग्लैंड में सुसमाचार के प्रचार के लिए **मिशनरी सोसायटी** संस्थापित।

1650 : जॉर्ज फॉक्स और क्वेकर्स। 36 बार कैद कर लिया गया।

क्वेकर्स के संस्थापक, जॉर्ज फॉक्स (1624–1691), का जन्म इंग्लैंड के लिसेस्टरशायर में हुआ। बचपन से उसने आत्मिक सत्य के लिए गहरी इच्छा व्यक्त की, और जवान व्यक्ति के रूप में उसने परमेश्वर को व्यक्तिगत रीति से और अनुभवात्मक रूप से जानने के लिए गहरा आत्मिक संघर्ष किया। प्रारंभिक समय के क्वेकर्स के मध्य कैरिस्मैटिक घटनाएं सामान्य थीं। फॉक्स की दैनिकी और आश्चर्यकर्मों की पुस्तके आश्चर्यजनक चंगाइयों और अन्य कैरिस्मैटिक वरदानों से परिपूर्ण हैं। भयानक सताव, पत्थरवाह, कोड़ों की मार, मारपीट, सार्वजनिक तौर पर फांसी पर लटकाने और लम्बे समय तक कैद में रखे जाने के बावजूद, क्वेकर्स के मिशनरियों ने एक ही पीढ़ी में, तुर्कस्तान से लेकर पश्चिम के न्यू वर्ल्ड के अंग्रेज उपनिवेशों जैसे संसार के विभिन्न भागों में अपना प्रकाश चमकाया। एक ही पीढ़ी में क्वेकर्स कहलाए जाने वाले लोग पश्चिमी विश्व में सबसे तेजी से बढ़ने वाला आंदोलन सिद्ध हुए। 1656 तक, फॉक्स के पास कम से कम 56 साथी थे जो यात्री प्रचारक थे, और 1660 तक, यह आंदोलन 40 हजार से 60 हजार अनुयायी होने का दावा करने लगा।

सन 1698: मसीही ज्ञान की बढ़ौतरी के लिए **मिशनरी सोसायटी,** अमेरिकन उपनिवेशों के लिए ग्रेट ब्रिटेन में स्थापित मिशन।

सन 1701: अमेरिकन उपनिवेशों और वेस्ट इंडीज़ में सुसमाचार प्रचार करने हेतु विदेशों में सुसमाचार प्रचार की घोषणा के लिए ग्रेट ब्रिटेन में स्थापित **मिशनरी सोसायटी।**

सन 1726–1750 : उत्तर अमेरिका में पहली बड़ी जागृति (जोनाथन एडवर्ड्स और जॉर्ज व्हिटफील्ड)। 1726 में उपनिवेशी अमेरिका में नैतिक और आत्मिक पतन हुआ। सीमान्त जीवन की चुनौतियों और लगातार होने वाले निर्दयी युद्धों से कई लोग हिम्मत हार चुके थे, और कलीसियाओं और सेवकों की कमी के कारण कई लोग आत्मिक निगरानी के बगैर थे। कई विद्यमान कलीसियाएं औपचारिक धार्मिक संस्थाएं बनकर रह गईं जिनके पास आवश्यक बदलाव की सामर्थ नहीं थी। परमेश्वर ने जोनाथन एडवर्ड्स और जॉर्ज व्हिटफील्ड जैसे प्रचारकों को खड़ा किया जिन्होंने उत्तम अमेरिका में होने वाली पहली महान जागृति में सामर्थ के साथ प्रचार किया।

सन 1735 : जोनाथन एडवर्ड्स (1703–1758) नॉर्दम्टन, मैसॅच्यूसेट्स की कॉंग्रिगेशनल मंडली के पासबान ने "संपूर्ण देश में व्याप्त सामान्य मृतावस्था" के लिए अपनी चिंता व्यक्त की और 'धर्म की बेदारी' के लिए परमेश्वर की खोज में लग गए। अन्य लोग भी तत्परता के साथ परमेश्वर की खोज में लग गए, और 1726 में, पूर्व समुद्री तट के विभिन्न क्षेत्रों में आत्मिक बेदारी आई। पवित्र आत्मा ने जहां महत्वपूर्ण सामर्थ उण्डेली उन स्थानों में से एक था नॉर्दम्टन, मैसॅच्यूसेट्स। सचमुच, उसकी ईश्वरीय उपस्थिति के अद्भुत बोध ने संपूर्ण समाज को व्याप्त कर लिया।

एडवर्ड्स बताते हैं कि 1735 की वसंत ऋतु और ग्रीष्म ऋतु के दौरान ऐसा लगता था कि "नगर परमेश्वर की उपस्थिति से भरपूर है।" नगर के हर भाग में परमेश्वर की उपस्थिति सामर्थी रूप से कार्य कर रही थी और *"नगर में शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति बचा था, बूढ़ा हो या जवान, जो सनातन जगत के बारे में चिंतित न हो।"* बिना किसी योजनाबद्ध सुसमाचार प्रचार के "आत्माएं झुण्ड के रूप में यीशु मसीह के पास आ रही थीं।" एडवर्ड्स की कलीसिया अचानक उद्धार की खोज करने वाले लोगों से और उन लोगों से भर गई जो पहले से नया जन्म पाने के फल को अनुभव कर रहे थे। 1741 में, न्यू इंग्लैंड के एनफिल्ड में, जोनाथन एडवर्ड्स ने अपना सुविख्यात प्रवचन प्रचार किया, "क्रोधी परमेश्वर के हाथ में पापी जन।" 1748 में, एडवर्ड्स ने *"पृथ्वी पर धर्म की बेदारी और मसीह के राज्य की उन्नति के लिए असाधारण प्रार्थना में परमेश्वर के लोगों की स्पष्ट सहमति और दृष्यमान एकता को बढ़ाने का विनम्र प्रयास"* प्रकाशित किया।

सन 1739: जॉर्ज व्हिटफील्ड (1714–1770), ये वेस्ली के मित्र, प्रतिभाशाली प्रचारक और सामर्थी निवेदक थे। यद्यपि उन्होंने एंग्लीकन पादरी के रूप में **दिक्षा** प्राप्त की थी, फिर भी वे डिनॉमिनेशन के लिए पूर्वग्रह नहीं रखते थे। 1739 में, वे अमेरिका आए और उन्होंने पूर्व समुद्री तट पर उपनिवेशों में सारे स्थानों में यात्रा की। जहां कहीं वे गए, वहां दुकानदारों ने अपने दरवाजे बंद किए, किसानों ने अपने हल छोड़ दिए और काम करने वालों ने अपने हथियारों को नीचे रख दिया और वे उस स्थान की ओर दौड़ पड़े जहां व्हिटफील्ड को प्रचार करना था। जिस समय बोस्टन की जनसंख्या अनुमानतः 25000 थी, वहां व्हिटफील्ड ने बोस्टन कॉमन पर 30000 लोगों को प्रचार किया। व्हिटफील्ड के प्रचार के साथ चिन्ह और चमत्कार हुए। जब वे बोलते थे, तब परमेश्वर की सामर्थ स्वयं ही सारी मण्डली में काम करती थी। उनके संदेश के बाद, आत्मा के और प्रकटीकरण होते। एक अवसर पर प्रचार करने के बाद, एक बड़ी भीड़ दरवाजों के बाहर इकट्ठा हो गई। व्हिटफील्ड ने भीड़ का सर्वेक्षण किया और लोगों की अद्भुत प्रतिक्रिया देखी। कहा जाता है कि यूहन्ना 3:3 के एक ही वचन पर व्हिटफील्ड ने 3000 संदेश दिए।

सन 1727: जर्मनी में मोरावियन बेदारी और काऊंट झिन्झेनडॉर्फ

मोरावियन कलीसिया का आरम्भ लूथरन–पूर्व सुधारक जॉन हस के समय से माना जाता है (1373–1415)। 1727 में हर्नहट में विश्वासियों के छोटे–से समुदाय में इसका आरम्भ होने के बाद जर्मनी ने पवित्र आत्मा के सामर्थी संजीवन का अनुभव किया। उन्होंने लगातार प्रार्थना के प्रयास में खुद को संगठित कर दिया जो सम्पूर्ण सप्ताह चौबीसों घण्टे चलती रही, ऐसा 100 वर्षों तक होता रहा। इससे एक मिशन आंदोलन का जन्म हुआ जो पिछली सदी में हुए कार्य से आगे बढ़ गया।

सन 1738: इंग्लैंड में मेथडिस्ट बेदारी और जॉन वेस्ली

जॉन वेस्ली (1703–1791) और उसके भाई चार्ल्स ने एक समूह की स्थापना की जिसके सहभागी परमेश्वर को खोजने के उनके क्रमबद्ध तरीके के कारण मेथडिस्ट कहलाए जाने लगे। हर शाम वे छः से नौ बजे तक प्रार्थना और बाइबल अध्ययन के लिए इकट्ठा होते थे, और हर बुधवार और शुक्रवार उपवास करते थे। सप्ताह में एक दिन वे प्रभुभोज लेते थे। परंतु इनमें से किसी बात ने जॉन वेस्ली को संतुष्ट नहीं किया। जॉर्जिया की असफल मिशन के यात्रा के बाद, वे इंग्लैंड को लौट गए जहां उन्होंने अपनी खोज जारी रखी। मई 14, 1738 की शाम, उन्हें आंतरिक आश्वासन मिला जिसकी वे बहुत समय से खोज में थे, उद्धार का व्यक्तिगत अनुभव। अब वे केवल मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने का प्रचार करने लगा। उन्होंने अनुग्रह के दूसरे कार्य पर, मसीही सिद्धता या सम्पूर्ण पवित्रीकरण के दूसरे अनुभव पर ज़ोर दिया। कहा जाता है कि वेस्ली ने 50000 प्रवचन प्रचार किए और घोड़े पर सवार होकर 2,50,000 मील की यात्रा की।

1741–1744 : स्कॉटलैंड में कॅम्बसलैंग बेदारी

विलियम मॅक्यूलॉक ने कॅम्बसलैंग की छोटी–सी कलीसिया की ज़िम्मेदारी अपने हाथों में ली, यह चार हजार लोगों की जनसंख्या वाला छोटा–सा गांव था (इस समय कॅम्बसलैंग ग्लासगो शहर का एक छोटा जिला है)। उसके पास पुलपिट पर प्रचार करने का गुण कम था। उनका अपना बेटा लिखता है, "वे उत्तम वक्ता नहीं थे, भले ही वे उनकी

विद्वत्ता और भक्तिमानता के लिए जाने जाते थे, फिर वे कुशल वक्ता नहीं थे... वे धीरे–धीरे सावधानी से बोलते थे, लोकप्रिय वक्ता से वे बिल्कुल भिन्न थे। उन्हें 'यिल' या एल पासबान नाम दिया गया था, क्योंकि जब वे बोलने के लिए खड़े होते थे, तब कई लोग मधुशाला में अपनी प्यास बुझाने के लिए निकल जाते थे। परंतु, विलियम मॅक्यूलॉक यूनाईटेड स्टेट्स में, जॉर्ज व्हिटफील्ड और जॉन वेस्ली के द्वारा इंग्लैंड में आई बेदारी, और डैनियल रोलैंड और हॉवेल हॅरिस द्वारा वेल्श में आई बेदारी की कहानियों से प्रेरित थे (न्यू जर्सी के फ्री होल्ड में सन 1730 में आई बेदारी और 1734–35 में जोनाथन एडवर्ड्स के द्वारा नार्दम्टन में आई बड़ी जागृति)। विलियम मॅक्यूलॉक ने अपनी छोटी–सी मण्डली को ये कहानियां पढ़कर सुनाई और जनवरी 1742 में बेदारी के लिए प्रार्थना शुरू की। जुलाई 1742 तक, प्रतिदिन सामुहिक प्रार्थना में समय बिताया जाने लगा, लोग परमेश्वर को पुकारने लगे कि वह उनके मध्य कार्य करे। करे। इनमें से अधिकतर सभाएं रातभर चलती रहीं। सैकड़ों उसी प्रकार की प्रार्थनाएं पूरे स्कॉटलैंड में होने लगीं। जुलाई 1742 में जॉर्ज व्हिटफील्ड ने 20,000 लोगों की भीड़ को प्रचार किया और बाद में अगस्त में भीड़ की संख्या 30,000 लोगों तक बढ़ गई। कई लोगों के दिल कायल हुए और वे रोते हुए और अपने पापों को अंगीकार करते हुए ज़मीन पर गिर पड़े। व्हिटफील्ड ने इन सभाओं के विषय में लिखा हैः "ऐसी बात मैंने पहले कभी नहीं देखी। परमेश्वर की सामर्थ भीड़ के एक छोर से दूसरी छोर तक ऐसी उपस्थिति थी जैसे बिजली चमकती है; आप हज़ारों को आंसू बहाते हुए देख सकते थे, कुछ लोग अपने हाथ को मरोड़ रहे थे, कुछ लगभग बेहोश हो रहे थे, और कुछ लोग क्रूसित उद्धारकर्ता को पुकार रहे थे और विलाप कर रहे थे।" 1744 में, कॅम्बसलैंग प्रार्थना का नमूना पूरे स्कॉटलैंड में दोहराया गया और पूरा राष्ट्र कलीसिया में बेदारी के लिए और पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए प्रार्थना करने पर केंद्रित "प्रार्थना के उत्सव" पर कहे जाने वाले प्रार्थना के कार्य में सक्रिय हो गया। जो प्रचारक उत्तम रीति से प्रचार करना नहीं जानता था, उसके द्वारा छोटे–से गांव में जो शुरू हुआ, वह पूरे राष्ट्र में फैल गया।

सन 1742: डेविड ब्रेनर्ड, उत्तर अमेरिकी इंडियन्स मिशनरी

डेविड ब्रेनर्ड का जीवन संक्षिप्त था, उनकी मृत्यु 29 वर्ष की युवावस्था में हुई। 14 वर्ष की उम्र में डेविड ब्रेनर्ड अनाथ हो गया। बाद में उन्हें येल विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया। उन्होंने खुद को पासबान के रूप में तैयार किया और स्वदेशी अमेरिकन इंडियन्स के साथ काम करने चले गए। आरम्भ में वे न्यू यॉर्क गए और बाद में पेन्सिल्वानिया गए। यहां अधिक सफलता न मिलने पर, बाद में 1745–1746 के दौरान वे न्यू जर्सी के ट्रेन्टन में स्वदेशी इंडियन्स के साथ काम करने लगे। इन इंडियन्स के बीच में उन्होंने बहुत फल देखा, कई लोग प्रभु के पास आने लगे। ब्रेनर्ड ने अपना जीवन इन इंडियन्स लोगों की सेवा में उण्डेल दिया, और यह व्यक्त किया कि "वे परमेश्वर के लिए एक अखण्ड ज्योति में जलते रहना" चाहते थे। उन्होंने इंडियन्स के लिए ज़मीन प्राप्त की और एक गिरजाघर, एक स्कूल, बढ़ई की दुकान और अस्पताल बनाया। 1746 की पतझड में वे टी बी से बेहद बीमार हो गए और जोनाथन एडवर्ड्स ने नार्दम्टन, मैसॅच्यूसेट के उनके घर में उनकी देखभाल की। 9 अक्टूबर 1747 को उनकी मृत्यु हो गई। ब्रेनर्ड की मृत्यु के बाद, जोनाथन एडवर्ड्स ने उनकी निजी डायरी प्रकाशित की। इस डायरी ने भविष्य के कई मिशनरियों की पीढ़ियों को प्रभावित किया, जिसमें विल्यम कॅरी, हेन्री मार्टिन और जिम एलियट शामिल हैं।

सन 1780–1810 : दूसरी बड़ी जागृति

इंग्लैंड में दूसरी बड़ी जागृति शुरू हुई और वह उत्तर अमेरिका, दक्षिण आफ्रिका, यूरोप और विश्व के अन्य भागों में फैल गई। आत्मा के इस कार्य का जन्म सबसे पहले आग्रहपूर्ण, एकतापूर्ण और संगठित प्रार्थना के द्वारा हुआ।

इंग्लैंड में बेदारी (सन 1780–1810 : दूसरी बड़ी जागृति)

18वीं सदी यूरोप में "उद्बोधन के युग" के रूप में विख्यात हो गई, इसका आरम्भ कहीं 1789 या उससे पहले हुआ। इसका कारण था अधिकार का प्राथमिक स्रोत। कई नई विचारधाराओं का उदय हुआ जिसमें आस्तिकतावाद (सृजनहार में विश्वास, परंतु बाइबल में या अलौकिक में विश्वास नहीं) और नास्तिकवाद शामिल था। इंग्लैंड में नैतिकता का स्तर हमेशा से कम था, लोग "जगत की उत्पत्ति के समय से और बुरे होते जा रहे थे।" इंग्लैंड नैतिक

रूप से, आर्थिक रूप से और आत्मिक रूप से संकट की कगार पर था। इंग्लैंड के मसीही लोग इंग्लैंड में और विश्व भर में बेदारी के लिए हर सोमवार प्रार्थना करने लगे। 1780 से "प्रार्थना उत्सव" आयोजित किया जाने लगा जहां कलीसियाओं ने एकता के साथ प्रार्थना करने हेतु सहमति जताई। संगठित, समर्पित और सुसंगत प्रार्थना सात वर्षों तक होती रही और जल्द ही बेदारी के चिन्ह 1780 के उत्तरार्ध में स्थानीय मण्डलियों में प्रकट होने लगे। 1792 से 1810 तक परमेश्वर के आत्मा का निश्चित कार्य था, जिससे पूरे ब्रिटेन में बेदारी आई जिसमें इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, वेल्श और आयर्लैंड शामिल था। दो से तीन सालों के अंदर कई नई कलीसियाएं रोपन की गई, कलीसिया की सदस्यता दुगनी हो गई (और कुछ मामलों में तिगुनी) और हज़ारों मिशनरी विदेशी मिशन क्षेत्रों में भेजे गए, जिनमें विलियम कॅरी शामिल हैं। इसी समय के दौरान विलियम विल्बरफोर्स (1759–1833) का उद्धार हुआ और उन्होंने गुलामों के व्यापार के विरोध में अभियान चलाया। रॉबर्ट रेकेस ने ग्लोचेस्टर, इंग्लैंड में 1780 में पहला सण्डे–स्कूल शुरू किया, और यह आंदोलन आग की तरह फैल गया। 1784 में, "पूरे ब्रिटिश राज्य में सण्डे–स्कूलों के समर्थन और प्रोत्साहन के लिए सोसायटी" स्थापित की गई और सण्डे–स्कूल में 250,000 लोगों ने दाखिला लिया। लोगों को परमेश्वर के वचन की नियमित शिक्षा बेदारी को बनाए रखने के लिए बुनियादी साबित हुई। फ्रेंच राज्य क्रांति के दौरान इंग्लैंड को राजनीतिक, सामाजिक और नैतिक तौर पर सुरक्षित रखा गया था (1789–1799)।

उत्तर अमेरिका में बेदारी (1789–1814: दूसरी महान जागृति)

अमेरिकन राज्य क्रांति के बाद (1775–1783), अमेरिका नैतिक पतन की अवस्था में था, परंतु इंग्लैंड में जो प्रार्थना आंदोलन शुरू हुआ वह जल्द ही उत्तर अमेरिका में फैल गया। न्यू इंग्लैंड क्षेत्र के पासबान जैसा ब्रिटेन में हो रहा था, उसी के समान "प्रार्थना उत्सव" का आयोजन करने लगे, जिससे बेदारी आई, जो मध्य अटलांटिक राज्यों में फैल गई।

कॉलेज के आवासों में बेदारी आई और येल के एक तिहाई विद्यार्थी मसीह में अपने विश्वास को प्रतिपादन करने लगे, और ऐसी ही बेदारियां डार्टमाऊथ, विलियम्स और अन्य कॉलेजों में भी आई, और वहां से गांव और शहरों में फैल गई। केन रिज काऊंटी और केन्टूकी के लोगन काऊंटी की बेदारी इतनी महत्वपूर्ण थी, कि 1800–1803 के बीच केन्टूकी में ही, बैप्टिस्ट चर्चेस ने 10,000 नए सदस्यों को जोड़ लिया और मेथडिस्ट ने 40,000। वस्तुतः, हर डिनॉमिनेशन ने बेदारी के फल का अनुभव किया।

1793: विलियम कॅरी, भारत के मिशनरी

विलियम कॅरी को "आधुनिक मिशनरी आंदोलन का जनक" भी कहा जाता है। विलियम कॅरी (1761–1834) ब्रिटिश मिशनरी और बैप्टिस्ट सेवक थे जो नवम्बर 1793 में कलकत्ता आए। उन्होने अपने जीवन के अगले 41 वर्ष भारत में अखण्ड मिशनरी सेवा में बिताए। मिशनरी के रूप में विलियम कॅरी ने जो छाप, प्रभाव, और विरासत छोड़ी है, वह विस्मयकारी है। उन्होंने बंगाली, उड़िया, असामी, अरबी, हिन्दी और संस्कृत भाषा में बाइबल का अनुवाद किया। उन्होंने सेरामपुर में पदवियां प्रदान करने वाले भारत के पहले विश्वविद्यालय की स्थापन की। वे स्वदेश नहीं लौटे और जून 1834 में भारत मे ही उनकी मृत्यु हो गई। विलियम कॅरी के जीवन ने 19वीं सदी के विश्वव्यापी मिशनरी आंदोलन को प्रेरित किया। एडनीरैम जडसन, हडसन टेलर, और डेविड लिविंगस्टन, जैसे हज़ारों में से कुछ मिशनरियों ने विलियम कॅरी के उदाहरण से चुनौती प्राप्त की। विलियम कॅरी उनके इन शब्दों के लिए सुविख्यात हैं: "परमेश्वर से बड़ी बातों की अपेक्षा करें, परमेश्वर के लिए बड़े काम करें।"

हम कई मिशनरी सोसायटियों (मिशनरी संस्थाओं) का निर्माण होते हुए देखते हैं जो या तो किसी डिनोमिनेशन की थी या धन इकट्ठा करने हेतु, लोगों को सक्रिय बनाने हेतु, या अनपहुंचे हुए स्थानों में सुसमाचार सुनाने हेतु विदेशी मिशनरियों की सहायता करने के उद्देश्य से स्थापित की गई थीं।

सन 1795: लंडन मिशनरी सोसायटी की स्थापना

सन 1796: स्कॉटिश और ग्लाज़गो मिशनरी का निर्माण

सन 1797: नेदरलैंड मिशनरी सोसायटी की स्थापना

सन 1799: चर्च मिशनरी सोसायटी की स्थापना

इस सोसायटी की स्थापना लंडन में 1799 में तीन उद्देश्यों से की गई थी: गुलाम व्यापार का निर्मूलन, स्वदेश में सामाजिक सुधार और विश्व सुसमाचार प्रचार। इसके संस्थापक इव्हेंजिलिकल मसीही विश्वासी थे, उनमें हेन्री थॉर्नटन और विलियम विल्बरफोर्स शामिल थे, दोनों ही पार्लमेंट के सदस्य थे।

19वीं सदी – मार्ग तैयार करना (सन 1801–1900)

सन 1804: ब्रिटिश और फॉरेन बाइबल सोसायटी संस्थापित

सन 1806: हेन्री मार्टिन, भारत और पर्शिया के मिशनरी

हेन्री मार्टिन (1781–1812) भारत और पर्शिया के अंग्रेज़ मिशनरी थे। मार्टिन अप्रैल 1806 में एक बोझ के साथ भारत के कलकत्ता में आ पहुंचे, इस बोझ से प्रेरित होकर उन्होंने कहा, "अब मुझे परमेश्वर के लिए जलने दो!" प्रचार के अलावा, मार्टिन भाषा विषय में भी व्यस्त रहे। मार्टिन ने सम्पूर्ण नए नियम का अनुवाद उर्दू और पर्शिया में, भजनसंहिता का अनुवाद पर्शिया में किया और सार्वजनिक प्रार्थना का अनुवाद उर्दू में किया। मार्टिन का नया नियम 5वीं सदी के बाद पहला पर्शियन अनुवाद था। जनवरी 1811 में, वे भारत छोड़कर पर्शिया (आधुनिक ईरान) गए। टी. बी. से परेशान होकर, मार्टिन वापस इंग्लैंड चले गए। रास्ते में उनका रोग बढ़ गया और तुर्कस्तान के **टोकट** में 16 अक्टूबर, 1812 को उनकी मृत्यु हो गई। यद्यपि उनकी मिशनरी सेवा का अंत छः सालों के अंदर हुआ, फिर भी मार्टिन ने साहस, स्वार्थहीनता और परमेश्वर के लिए प्रेम की विरासत छोड़ दी।

सन 1809: रॉबर्ट मॉरिसन, चीन के पहले प्रोटेस्टंट मिशनरी

रॉबर्ट मौरिसन (1782–1834) लंडन की लंडन मिशनरी सोसायटी (एल.एम.एस.) के अंग्रेज मिशनरी थे, जहां उन्होंने मेडिसिन, खगोल विद्या, और चीनी भाषा का अध्ययन करके मिशनरी के रूप में खुद को तैयार किया। वे जनवरी 1807 में चीन की यात्रा पर निकल पड़े और फरवरी 1809 में, उन्हें चीन की ईस्ट इंडिया कम्पनी का अधिकृत अनुवादक नियुक्त किया गया। मॉरिसन ने ई.आय.एस. के साथ उनके अधिकृत कर्तव्यों के बीच और अपने मिशनरी और साहित्यिक कार्य के बीच समय का विभाजन कर लिया। अधिकृत अनुवादक के रूप में वे अपनी उपजीविका कमाते थे। 1813 में उन्होंने नए नियम की पुस्तक का चीनी भाषा में अनुवाद किया; अगले ही वर्ष वह प्रकाशित की गई। अपने साथी विलियम मिल्न के साथ मिलकर उन्होंने 1818 में मलक्का में एंग्लो–चायनीज़ कॉलेज की स्थापना की। उन्होंने एक साथ मिलकर 1819 में सम्पूर्ण बाइबल का चीनी भाषा में अनुवाद पूरा किया। उन्होंने तीन खण्डों में चीनी–अंग्रेजी शब्दकोष भी संकलित किया (1815–1823)। इसके अलावा उन्होंने चीनी व्याकरण भी लिखा और भाषा पर कई प्रबंध लिखे। उन्होंने चीनी भाषा में भजनों का अनुवाद किया और एक प्रार्थना की पुस्तक तैयार की और कई पर्चे और लेख लिखे। 1834 में कॅन्टन में रॉबर्ट की मृत्यु हो गई।

सन 1810: विदेशी मिशनों के लिए अमेरिकन बोर्ड ऑफ कमिशनर्स की स्थापना हुई

सन 1812: एडनीरैम और ॲन जडसन, बर्मा (और भारत) के मिशनरी

एडनीरैम जडसन (1788–1850) और उनकी पत्नी हैजेलटाईन जडसन (1789–1826) प्रारम्भ में अमेरिकन बोर्ड ऑफ कमिशनर्स फॉर फॉरेन मिशन्स (ए.बी.सी.एफ.एम.) द्वारा 1812 में भारत के कलकत्ता मे भेजे गए। कलकत्ता में, उन्होंने बैप्टिस्ट ईश्वरविज्ञान ग्रहण किया और विलियम कॅरी द्वारा उन्हें बपतिस्मा दिया गया। इस परिवर्तन के कारण उन्हें ए.बी.सी.एफ.एम. और यू. एस. में बॅप्टिस्ट मिशन सोसायटी के **निर्माण** को छोड़ना पड़ा। 1813 में, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के आदेश पर उन्हें भारत छोड़ना पड़ा और वे फिर रंगून, बर्मा (म्यांमार) में आकर स्थायी हो गए, यहां उन्होंने अमेरिकन बॅप्टिस्ट का पहला मिशन शुरू किया। वे सुसमाचार प्रचार और बाइबल का अनुवाद करने लगे। 1826 में, खसरे से उत्पन्न पेचिदा समस्याओं के कारण ॲन जडसन की मृत्यु हो गई। बर्मा में रहते समय, एडनीरैम

जडसन ने एक कलीसिया, पाठशाला की स्थापना की और बर्मीज बाइबल का अनुवाद पूरा किया (सन 1834 में)। 1842 में, उन्होंने उनका पहला इंग्लिश–बर्मी शब्दकोष पूरा किया, और 1849 में इसका विस्तृत संस्करण प्रकाशित किया। 1850 में, जडसन को श्वास रोग हो गया और समुद्री यात्रा में, बेहतर जलवायु के लिए जाते समय उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने लिखा है, "बर्मा में जो कुछ भी किया गया, वह सब कुछ मेरे और मेरे भाइयों के निर्बल और अयोग्य पात्रों के माध्यम से कलीसियाओं द्वारा किया गया है।" ॲन हैज़लटाईन जडसन ने कहा, "मुझे अपनी सब सेवा में अगुवाई कीजिए, और मैं कुछ नहीं मांगती।"

सन 1814: अमेरिकन बॅप्टिस्ट मिशनरी यूनियन की स्थापना

सन 1816: अमेरिकन बाइबल सोसायटी की स्थापना

1816: अमेरिकन सण्डे–स्कूल यूनियन की स्थापना

दूसरी महान जागृति के दौरान इंग्लैंड में जो संडेस्कूल आंदोलन आरम्भ हुआ वह महान जागृति के दौरान यू.एस. में दोहराया गया और अपने पीछे स्थायी फल छोड़ गया। फिलाडेलफिया में 1816 में सण्डे–स्कूल यूनियन की स्थापना की गई। बाद में 1829 में अध्यक्ष फ्रान्सिस स्कॉट के (अमेरिकन राष्ट्रगीत के लेखक) द्वारा आम जागृति के दौरान बेदारी ने और ज़ोर पकड़ लिया।

सन 1816: रॉबर्ट मोफट "प्रोटेस्टंट आफ्रिकन मिशनों के जनक"

आफ्रिका के स्कॉटिश मिशनरी रॉबर्ट मोफट (1795–1883) बोत्सवानालैंड में कइयों को मसीह के लिए प्रभावी रूप से सुसमाचार प्रचार करते थे। उन्होंने सम्पूर्ण बाइबल का और *पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस* का सेत्स्वाना भाषा में अनुवाद किया। वे मिशनरी डॉक्टर डेविड लिविंगस्टन के ससुर थे।

सन 1819: डॉ. जॉन स्कडर, ज्यु. भारत के मेडिकल मिशनरी

डॉ. जॉन स्कडर ज्यु. (1793–1855) श्रीलंका और भारत में अग्रणी अमेरिकन डॉक्टर और सुसमाचार प्रचारक थे। 1819 में वे न्यू यार्क छोड़कर अमेरिकन बोर्ड ऑफ कमिशनर्स फॉर फॉरेन मिशन्स (ए.बी.सी.एफ.एम.) के पहले मेडिकल मिशनरी के रूप में श्रीलंका के लिए निकल पड़े (उस समय का सिलोन)। वे अस्पताल, छात्रावास, जाफना के तमिल मेडिकल विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देने के साथ ही साथ सुसमाचार प्रचार भी करते थे। 1836 में डॉ. जॉन स्कडर का अगले 6 वर्षों के लिए मद्रास में तबादला कर दिया गया। अमेरिका में 4 वर्षों के अवकाश के बाद (1842 से 1846), वे भारत लौटे और 1855 तक मद्रास और मदुराई में सेवा करते रहे। 1855 में, दक्षिण आफ्रिका में स्वास्थ्य अवकाश के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मेडिकल सेवा और प्रचार के अलावा, स्कडर ने तमिल और अंग्रेजी भाषा में कई पर्चे प्रकाशित किए। कहा जाता है कि वे एक ही समय में प्रचार के लिए और साहित्य वितरण के लिए 11 घण्टों तक खड़े रहते थे। स्कडर परिवार की चार पीढ़ियों ने **हज़ार वर्षों से** अधिक मिशनरी सेवा का योगदान दिया है, इन मिशनरियों की संख्या 42 थी जिनमें डॉ. आयडा सोफिया स्कडर (1870–1960, भारत) का समावेश है जिन्होंने वेल्लोर में क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज की स्थापना की!

सन 1830–1840: आम जागृति (या तीसरी महान जागृति)

दूसरी महान जागृति अमेरिका में सन 1810 तक जारी रही। 1812–1815 के युद्ध का दूसरी महान जागृति के फल पर कोई परिणाम नहीं हुआ, क्योंकि कलीसिया में कोई महत्**वपूर्ण अवनति नहीं हुई।** 1821 में, न्यू यॉर्क का एक वकील चार्ल्स फिनी मसीह में विश्वास करने लगा और जल्द ही उसके बाद उन्होंने प्रचार करना शुरू किया। 1830 में, न्यू यॉर्क के रोचेस्टर में उनके पहले मिशनरी अभियान में भारी फल प्राप्त हुआ, कइयों को पापों का अहसास हुआ और उन्होंने उद्धार पाया। चार्ल्स फिनी के द्वारा जो कुछ हो रहा था उसके अलावा, सम्पूर्ण अमेरिका में मानव जागृति की दूसरी लहर चल रही थी। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि 1830 में एक ही साल में 100,000 लोग अमेरिका की कलीसिया में जोड़े गए। उसी तरह इसी समय के दौरान दुनिया के अन्य भागों में बेदारी आई थी। ग्रेट ब्रिटेन में, मेथडिस्ट समूहों ने बेदारी का अनुभव किया। परमेश्वर विशेष रूप से अमेरिकन सुसमाचार प्रचारक जेम्स कॉफे

को इस्तेमाल कर रहा था और इसी समय के दौरान विलियम बूथ मसीह के पास आए। दक्षिण में वेल्श बेदारी शुरू हुई और उत्तर में फैल गई। स्कॉटलैंड में, परमेश्वर विशेष तौर पर विलियम सी. बर्न्स नामक व्यक्ति को इस्तेमाल कर रहा था। आयर्लैंड ने भी सामर्थी बेदारी का अनुभव किया, जिसका वर्णन कई लोग "दूसरे सुधार" के रूप में करते हैं। क्रिश्चियन ब्रेदर्न डिनॉमिनेशन का आरम्भ इसी समय जॉन नेल्सन डार्बी द्वारा किया गया, और उसी की एक शाखा का नेतृत्व जॉर्ज म्यूलर करने लगे। यूरोप में, जिन लोगों ने दूसरी बेदारी का अनुभव किया था, उनमें से कुछ इस दशक के दौरान बेदारी के वाहक बन गए। इनमें से एक थे जॉर्ज स्कॉट, स्वीडन के एक ब्रिटिश मेथडिस्ट सुसमाचार प्रचारक, जिनका कार्य कार्ल ओलोफरोज़ेनियस ने जारी रखा। जेम्स हेल्डेन और जिन्हें उसने प्रशिक्षित किया, वे बेदारी की आग स्वित्ज़रलैंड, फ्रांस, और हॉलंड ले गए। नॉर्वे और जर्मनी में भी बेदारी के विषय में सुना गया। जो मिशनरी इस बेदारी से प्रेरित हुए थे, वे अन्य क्षेत्रों में बेदारी के वाहक बने। अमेरिकन मिशनरी टाइटस कोन ने हवाई के आदिमों के बीच बड़ी बेदारी देखी। ऑस्ट्रेलिया और पोलिनेशियन राज्यों में बेदारी आई। इस समय के दौरान ग्रेहम्सटाऊन और केप्सटाऊन दक्षिण आफ्रिका (दोनों दूसरी महान बेदारी और सामान्य बेदारी के समयों में) में, बोत्सवानालैंड (रॉबर्ट मोफट द्वारा), एशिया, मध्य–पूर्व, चीन और बर्मा में बेदारी के विषय में भी सुना गया।

सन 1830: चार्ल्स फिनी: "आधुनिक बेदारी का जनक"

चार्ल्स फिनी (1792–1873) का उद्धार उन्तीस वर्ष की उम्र में हुआ और वह आधुनिक समय के एक अत्यंत सफल सुसमाचार प्रचारक बन गए। चार्ल्स फिनी न्यू यॉर्क का एक कट्टर नास्तिक और पेशेवर वकील था। उद्धार पाने के बाद, फिनी ने प्रेस्बिटेरियन कलीसिया के साथ शुरूवात की, परंतु बाद में वे कॉंग्रिगेशनल कलीसिया में शामिल हो गए। फिनी की सेवकाई की विशेषता बेदारी थी और वे दृढ़तापूर्वक परमेश्वर के सामने मनुष्य की ज़िम्मेदारी पर ज़ोर देते थे और लोगों को आवाहन करते थे कि वे प्रभु के प्रति अपनी आज्ञाकारिता का नवीनीकरण करें। अक्सर, जब फिनी प्रचार करते, तब लोग छटपटाने लगते और रोते। फिनी ने सुसमाचार प्रचार में 'नए पैमानों' का या नए तकनीकों का उपयोग किया, जिसके लिए कुछ लोगों ने जालसाज कहकर उनकी आलोचना की और अन्य लोगों ने केवल आपत्ति जताई क्योंकि पहले ऐसा कभी नहीं किया गया था। फिनी के 'नए पैमानों' में ये बातें शामिल थीं अ. सार्वजनिक निमंत्रण या आल्टर कॉल, जहां पर उद्धार के लिए सामने आने का स्पष्ट निमंत्रण होता था, और ब. 'उत्कंठित बैठक' या एंक्शस सीट जो कि गिरजाघर के सामने वाले हिस्से में रखे हुए कई बेंचेस होते थे जो उन लोगों के लिए रखे जाते थे जो फिनी के प्रचार के दौरान कायल हो जाते थे। फिनी की सबसे अनोखी बेदारियों में से एक सन 1830 में न्यू यॉर्क के रोचेस्टर में 6 महीनों की उनकी सेवकाई के दौरान घटित हुई। इस बेदारी में अद्‌भुत चंगाइयां हुईं और प्रेस्बिटेरियन कलीसियाओं और अन्य फिरकों में मेलमिलाप हुआ। रोचेस्टर बेदारी के अंत में शहर के प्रत्येक वकील, डॉक्टर और व्यवसायी का महिमामय रीति से उद्धार हुआ। कइयों को पाप का अहसास हुआ। स्थानीय हायस्कूल में सारे विद्यार्थी आत्मा में कायल हो गए। प्रधानाचार्य ने फिनी को सहायता के लिए बुलाया। उस दिन 40 विद्यार्थियों का उद्धार हुआ। अनुमान लगाया जाता है कि रोचेस्टर बेदारी के समाचार ने न्यू इंग्लैंड के 1500 गांवों और नगरों में बेदारी की आग लगा दी। हज़ारों लोगों ने उद्धार पाया और फिनी की सेवकाई के माध्यम से पूरे समाज बदल गए। कई स्त्री और पुरुष प्रार्थना में फिनी की सेवकाई को सहायता प्रदान करने हेतु उनके प्रार्थना सहभागी बन गए। कुछ सुविख्यात नामों में एबेल क्लेरी, बिलियस पॉन्ड और 'फादर' नैश शामिल हैं जो प्रार्थना सहभागियों के रूप में शहरों में जाते थे और वहां के लोगों के लिए प्रार्थना में समय बिताते थे, जिन लोगों को फिनी प्रचार करने वाले होते। यह फिनी की सेवकाई के लिए दूसरा महत्वपूर्ण सहारा बन गया। फिनी की "ऑटोबायोग्रफी" (जीवनी) और "लेक्चर्स ऑन रिवाइवल ऑफ रिलीजन" ये पुस्तकें बेदारी का उत्तम अध्ययन हैं।

सन 1830: एडवर्ड आयर्विंग और स्कॉटलैंड में कैरिस्मैटिक बेदारी

एडवर्ड आयर्विंग (1792–1834) ने 1822 में चर्च ऑफ स्कॉटलैंड के प्रेस्बिटेरियन पासबान के रूप में अपनी सेवकाई शुरू की, जहां 50 लोगों की एक छोटी–सी मण्डली कुछ ही महीनों में बढ़कर हज़ार सदस्यों की विशाल मण्डली बन गई। 1827 में, प्रेरितों के कामों की पुस्तक का अध्ययन करने के बाद, आयर्विंग लोगों को चुनौती देने लगे कि

यह विश्वास करें कि प्रेरितों के कामों की पुस्तक में जो कुछ हुआ, वह उनके दिन के लिए मानक था। अन्यान्य भाषाओं, भविष्यद्वाणी और चंगाई के प्रकटीकरण होने लगे। एडवर्ड ने सामान्य विश्वासियों को प्रोत्साहित किया कि वे अपने वरदानों का उपयोग करें, प्रेस्बिटरी और कलीसिया के बोर्ड ने इस बात का समर्थन नहीं किया। वे मसीह के ईश्वरत्व पर विश्वास करते थे, परंतु उनके प्रचार में मसीह की मानवता पर ज़ोर दिया गया था जिसने आत्मा से सामर्थ पाकर पापरहित जीवन बिताया और सामर्थी काम किए। इस प्रचार के कारण लोग उन्हें पाखंडी कहने लगे और उनका ऑर्डिनेशन रद्द कर दिया गया और उन्हें लंडन प्रेस्बिटरी से और स्कॉटिश चर्च से निकाल दिया गया। एडवर्ड अलग स्थान में कार्य करने लगे और उन्होंने अपने कार्य को उन लोगों के मध्य जारी रखा जहां लोग मुक्त रूप से आत्मा के वरदानों का उपयोग करते थे जिसमें से कुछ सच्चा था और कुछ देह के प्रकटीकरण थे जिससे बहुत हानि हुई। जिस कलीसिया की वे अगुवाई करते थे, यद्यपि वह प्रेरितों के कामों की पुस्तक का अनुसरण करने की खोज में वास्तविक थी, फिर भी उचित अगुवों और परिपक्व मार्गदर्शन के अभाव में, भिन्न दिशाओं में जाने लगी और आपस में पृथक हो गई। स्वयं एडवर्ड को स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ा और 42 वर्ष की छोटी उम्र में उनकी मृत्यु हो गई। परंतु एडवर्ड आयर्विंग की आत्मा के उण्डेले जाने की और प्रकटीकरण की खोज करने की इच्छा और तैयारी के लिए प्रशंसा करनी चाहिए।

सन 1834: बेजल मिशन (जर्मन) की स्थापना हुई

सन 1835–1840: हवाई में बेदारी और टाइटस कोन

अमेरिका, न्यू इंग्लैंड क्षेत्र की दूसरी महान बेदारी के दौरान टाइटस कोन (1801–1881) ने मसीह में विश्वास लाया। वे और उनकी पत्नी 1835 में हवाई आए और हिलो टापू में प्रचार करने लगे। 1837 तक, बेदारी की आग भड़कने लगी और लोग उससे प्रेरित हो गए। भीड़ 15000 की संख्या तक बढ़ गई। लोग दो वर्षों की कॅम्प सभा के लिए आकर बस गए, जहां पर किसी भी समय 2000 से 6000 तक लोग उपस्थित रहते थे। वचन आग और हथोड़े की नाईं काम कर रहा था। जीवन बदल रहे थे। 1837–38 के दो वर्षों में, इतने लोग मसीह के पास आए कि टाइटस जिस कलीसिया के पासबान थे, वह विश्व की उस समय की एकमात्र सबसे बड़ी मण्डली बन गई। 1870 में, करीब 60 स्वावलम्बी कलीसियाएं थीं, जिसमें अधिकतर स्वदेशी पासबान थे और 15000 लोगों की सदस्यता थी। हिलो की जनसंख्या के 70 प्रतिशत लोगों को मसीह में विश्वास लाते हुए देखने के बाद बेदारी के मध्य ही दिल का दौरा पड़ने से कोन की मृत्यु हो गई। कोन को हमेशा यह आशा थी कि "उनकी मृत्यु आत्मिक युद्ध के मैदान में हथियार पहनकर, चमकते हुए हथियारों के साथ हो।"

सन 1836 : जॉर्ज मुल्लर, प्रार्थना और विश्वास का जन

जॉर्ज मुल्लर (1805–1898), एक युवा जर्मन मसीही को प्रभु ने इंग्लैंड में ब्रिस्टल के गरीब बच्चों की सहायता के लिए बुलाहट दी। 1836 में, मुल्लर और उनकी पत्नी उनके अपने किराए के घर में 30 लड़कियों की देखभाल करने लगे। उन्होंने ब्रिस्टल, इंग्लेंड में एश्ली डाऊन अनाथालय की स्थापना और संचालन किया और 10,024 अनाथों की देखभाल करने लगे और उन्हें शिक्षा देने लगे। उन्होंने 117 स्कूलों की स्थापना की और 120,000 से अधिक बच्चों को मसीही शिक्षा देने लगे, इनमें से कई अनाथ थे। मुल्लर कभी पैसों के लिए याचना नहीं करते थे और न ही पैसा इकट्ठा करने में लगे रहे। वे केवल प्रत्येक ज़रूरत के लिए प्रार्थना करते थे और परमेश्वर पर विश्वास करते थे कि वह उनकी ज़रूरतों की पूर्ति के लिए लोगों के हृदयों से बात करेगा। अपने जीवनकाल में उन्होंने 1,500,000 पौंड इस कार्य के लिए भेंट के रूप में पाए। अक्सर, बच्चों को भोजन खिलाने से कुछ घण्टे पहले अनपेक्षित रूप से दान के रूप में भोजन आ जाता था। एक घटना के विषय में बताया जाता है कि सभी बच्चे नाश्ते की मेज पर बैठे थे, उनके पास उस दिन खाने के लिए कुछ भी नहीं था। उन्होंने परमेश्वर को धन्यवाद दिया। उन्होंने प्रार्थना करना समाप्त किया, और एक बेकर ने दरवाजे पर खटखटाया। वह हर एक के लिए पर्याप्त ताजी ब्रेड ले आया। परमेश्वर ने उस रात बेकर के दिल में काम किया था कि वह हमेशा से अधिक ब्रेड तैयार करे और उसे अनाथालय ले जाए। जॉर्ज ने धन्यवाद कहा और बच्चों के लिए ब्रेड भीतर ले आए। उतने में दूधवाले ने खटखटाया। उसकी गाड़ी बिल्कुल अनाथालय के सामने बिगड़ गई थी। वह गाड़ी छोड़कर नहीं जाना चाहता था, इसलिए उसने बच्चों

के लिए जॉर्ज को दूध देने का निर्णय लिया। परमेश्वर ने नाश्ते का प्रबंध किया था! इस प्रकार मुल्लर ने समय समय पर और अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में यह साबित कर दिया कि जो लोग उस पर विश्वास करते हैं उनके द्वारा परमेश्वर क्या करेगा। जॉर्ज मुल्लर ने कहा, "मैंने आनंद के साथ इस उदाहरण के लिए अपने जीवन को समर्पित कर दिया है कि प्रार्थना और विश्वास से कितना कुछ हासिल किया जा सकता है।"

सन 1839: विलियम चाल्मर्स बर्न्स, चीन में बेदारी लाने वाले स्कॉटिश मिशनरी

विलियम चाल्मर्स बर्न्स (1815–1868) बेदारी लाने वाले स्कॉटिश सेवक और चीन के मिशनरी थे। 1831 में, मसीह में विश्वास लाने के बाद बर्न्स ने प्रभु की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित किया। 1839 में, किल्सिथ (ग्लासगो, स्कॉटलैंड) में उनकी स्थानीय कलीसिया में अनपेक्षित रूप से प्रचार का अवसर मिलने पर, बेदारी की असामान्य ऋतु शुरू हो गई और उस नगर का लगभग प्रत्येक व्यक्ति प्रभु के पास आया। जल्द ही पूरे स्कॉटलैंड में बेदारी के प्रचारक के रूप में परमेश्वर बर्न्स का इस्तेमाल करने लगा। परंतु उनका दिल उन लोगों को सुसमाचार सुनाने की ओर लगा था जिन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना था। उन्होंने अपने जीवन के लक्ष्य को व्यक्त करते हुए कहा : "मेरे हृदय की इच्छा यह होगी कि मरने से पहले मैं पूरे संसार में जाऊं और हर प्राणी के कान में सुसमाचार का निमंत्रण दूं।" 1847 में, बर्न्स हाँगकाँग होते हुए चीन साम्राज्य में जा पहुंचे और ब्रिटिश हाँगकाँग में उन्होंने अपना मिशनरी कार्य शुरू किया। बाद में उन्होंने अन्य स्थानों में यात्रा की जिनमें शांटाऊ, ज़ियामेन और बिजिंग आदि स्थान शामिल हैं। 1855 में बर्न्स ने हडसन टेलर से भेंट की और एक साथ मिलकर वे चीन के क्षेत्रों में गए। हडसन टेलर बर्न्स को अपने एक आत्मिक गुरू के समान मानते थे और बर्न्स के प्रार्थना जीवन की गहराई के विषय में उन्होंने लिखा है। चीन में करीब बीस वर्ष सेवा करने के बाद, 1868 में, थोडे से बुखार से यिंगकाऊ (न्यूचवांग) (लियाओनिंग प्रान्त) में बर्न्स की मृत्यु हो गई। विलियम बर्न्स के एक वाक्य का हमेशा संदर्भ लिया जाता है : "हमेशा तैयार रहें" (1 पतरस 3:15)।

सन 1841: डेविड लिविंगस्टन, आफ्रिका के मिशनरी

डेविड लिविंगस्टन (1813–1873) लंडन मिशनरी सोसायटी के अग्रणी मेडिकल मिशनरी थे और 1841 से उनकी मृत्यु तक वे आफ्रिका के खोजी थे। उनके जीवन, त्याग और दृढ़ संकल्प ने अन्य कई लोगों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा: "यदि आपके पास ऐसे लोग हैं जो केवल तब आएंगे जब वहां पर अच्छा रास्ता हो, तो मैं उन्हें नहीं चाहता। मुझे मज़बूत, साहसी लोग चाहिए, जो वहां पर रास्ता न होने पर भी आएंगे।" "इस अत्यंत पवित्र और सन्माननीय कार्य में शामिल होने की अनुमति प्राप्त होना कैसी अवर्णनीय दया है।" "लोग उस बलिदान के विषय में बोलते हैं जो मैंने आफ्रिका में अपना जीवन बिताने के द्वारा किया। क्या इसे बलिदान कहा जा सकता है जो परमेश्वर के प्रति एक बड़े कर्ज़ का छोटा सा अंश है, जो कि मैं कभी अदा नहीं कर सकता? क्या यह बलिदान है, जो भलाई करने, मन की शांति देने, और इस जीवन के बाद एक महिमामय भविष्य की उज्वल आशा देने के एहसास में अपना ही प्रतिफल पाता है? ऐसे शब्द, ऐसे दृष्टिकोण, और ऐसे विचार से दूर रहें। यह निश्चित रूप से कोई बलिदान नहीं है। बल्कि यह विशेष सौभाग्य है।"

सन 1841: जर्मनी इव्हेन्जिलिकल लूथरन मिशन की स्थापना हुई

सन 1843: हडसन टेलर, चीन के मिशनरी

हडसन टेलर (1832–1905) ने, 21 वर्ष की उम्र में अपने स्वदेश इंग्लैंड को छोड़कर चीन के मिशनरी के रूप में लिवरपुल से बाहर यात्रा की। शांघाई में आने के बाद, हडसन टेलर तुरंत चीनी पोशाख पहनने लगे, उन्होंने चोटी बढ़ा ली, इससे उनके साथी मिशनरी उनका मज़ाक उड़ाने लगे। हडसन टेलर चीन के अंदरूनी इलाकों में सुसमाचार ले जाना चाहते थे, इसलिए उनके आगमन के तुरंत बाद उन्होंने चीनी बाइबल और पर्चों का वितरण करते हुए हुआंग पू नदी की यात्रा की। 1857 में, उनके मिशनरी बोर्ड का पैसा खत्म हो गया और वे अब उसे सहायता नहीं दे पा रहे थे। इसलिए हडसन टेलर स्वतंत्र मिशनरी बन गए और अपनी सारी ज़रूरतों की पूर्ति के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखने लगे। 1861 में, उन्हें अपनी बीमारी से स्वस्थ होने के लिए इंग्लैंड लौटना पड़ा। इस दौरान

उन्होंने एक नए मिशन की स्थापना की जिसे 'चायना इन्लैंड मिशन' कहा जाता था ताकि चीन और मंगोलिया के अंदरूनी हिस्सों में सुसमाचार फैलाया जाए। सी आय एम की शर्त थी कि उसके मिशनरी चीन के अंदरूनी भागों में काम करें। सी आय एम अपने मिशनरियों को वेतन का आश्वासन नहीं देता था। मिशनरियों को केवल परमेश्वर पर भरोसा रखना पड़ता था। उनकी शर्त यह भी थी कि उसके मिशनरी चिनी पोशाक पहनें। जल्द ही सी आय एम में हडसन टेलर, उनकी पत्नी और चार बच्चों के अलावा अन्य 23 मिशनरी हो गए। यद्यपि हडसन टेलर पैसों के लिए कभी याचना नहीं करते थे, फिर भी सी आय एम के मिशनरियों की संख्या बढ़ती गई और 1887 तक 102 मिशनरी हो गए। हडसन टेलर खुद से और अपने टीम के सदस्यों से भारी मांग रखते थे। हर कोई उनकी नेतृत्व शैली, उच्च आदर्श, कार्यस्थल, आत्मिक उत्साह और परमेश्वर में भरोसे की बराबरी नहीं कर सकता था। उन्होंने कहाः "शांत, आरामपरस्त स्त्री और पुरुष मसीह के लिए चीन को जीत नहीं सकते। जिन स्त्री और पुरुषों की हमें ज़रूरत है वे ऐसे लोग होंगे जो यीशु, चीन, और आत्माओं को सब बातों में और हर समय पहला स्थान देते हैं – जीवन को भी दूसरा स्थान दिया जाना चाहिए।" परंतु स्वयं टेलर ने अपने इस आवेश के लिए भारी कीमत चुकाईः 33 वर्ष की उम्र में उनकी पत्नी मारिया की मृत्यु हो गई, आठ में से चार बच्चे दस वर्ष की उम्र में पहुंचने से पहले ही मर गए। अंत में 1900 में वे स्वयं शारीरिक और मानसिक रूप से अस्वस्थ हो गए। अपने जीवन के द्वारा हडसन टेलर ने कई हज़ारों को प्रेरित किया कि वे चीन के अंदरूनी हिस्सों में सुसमाचार ले जाने के लिए अपने स्वदेश की आरामदायक जिंदगी त्याग दें। सी.आय.एम. आज भी ओवरसीज़ मिशनरी फेलोशिप (इंटरनैशनल) के नाम से चल रहा है।

सन 1853ः जॉन नेवियस, चीन के मिशनरी और कलीसिया रोपन की 'नेवियस पद्धति'

जॉन लिविंगटन नेवियस (1829–1893) चीन के अमेरिकन प्रेस्बिटेरियन मिशनरी थे। सितम्बर 1853 में नेवियस और उनकी पत्नी हेलन बोस्टन छोड़कर 6 महीने बाद चीन के निंगपो में आ पहुंचे। उन्होंने एक साल के अंदर चीनी भाषा सीख ली और शांटूंग (शेन्डोंग) प्रांत में शुरूवात करके प्रचार करने और सिखाने लगे। उन्होंने अधिकतर समय सफर में, घोड़े पर यात्रा करते हुए, कलीसियाओं को भेंट देते और लोगों को सिखाते और शिष्य बनाते हुए बिताया। हर साल जून से अगस्त तक, वे उनके घर में 30–40 लोगों को क्रमबद्ध बाइबल अध्ययन कराते थे। नेवियस ने स्वयं प्रचार करने वाली, स्वयं शासित और स्वावलंबी कलीसियाओं की स्थापना पर, बाइबल अध्ययन, विश्वासियों के लिए कठोर अनुशासन, अन्य मसीही समूहों के साथ सहकार्य, और "जहां पर लोग आर्थिक समस्या से जूझ रहे हैं वहां यदि सम्भव हो तो सामान्य सहायता" आदि बातों पर ज़ोर दिया। उन्होंने खोजियों के लिए एक हस्तपुस्तिका तैयार की (Manual for Inquirer) जिसमें बाइबल अध्ययन प्रणाली, प्रार्थना कैसे करें, प्रेरितों का विश्वास, याद करने के लिए पवित्र शास्त्र के वचन, विश्वासियों के लिए नियम आदि का समावेश था। कोरिया के प्रेस्बिटेरियन मिशनरियों ने 'नेवियस प्रणाली' का उपयोग करके कोरिया की प्रोस्टेंटंट कलीसिया को बड़े पैमाने पर आकार दिया है। नेवियस उत्तम लेखक थे और उन्होंने चीन में उनके जीवन, कार्य और अध्ययन के विषय में अंग्रेजी में कम से कम चार पुस्तकें लिखी हैं। 1893 में शेफू (यान्टाय) में उनकी मृत्यु हो गई।

सन 1857–1858ः सामान्य विश्वासियों की प्रार्थना बेदारी (The Laymen's Prayer Revival), न्यू यॉर्क

सन 1857–1858 की बेदारी अमेरिका के इतिहास में सबसे बड़ी और सर्वव्यापी बेदारी थी। 6 लोगों की दोपहर की छोटी–सी प्रार्थना सभा के साथ जिसकी शुरूवात हुई, वह कुछ ही महीनों में इतनी बढ़ गई कि प्रार्थना के लिए 10,000 लोग इकट्ठा होने लगे। यह पूरे अमेरिका में फैल गया और अनुमानतः दस लाख लोगों ने उद्धार पाया और अन्य दस लाख लोग इन दो वर्षों के दरमियान संजीवित हो गए। इसकी अगुवाई सम्पूर्ण अमेरिका में सामान्य विश्वासी कर रहे थे। जिस बेदारी की शुरूवात 1857 में न्यू यॉर्क में हुई उसने संसार के अन्य कई भागों को प्रभावित किया जिसमें वेल्श, स्कॉटलैंड, आयर्लैंड, जर्मनी, स्वीडन, नेदरलैंड्स, वेस्ट इंडीज़, दक्षिण आफ्रिका, भारत और इंडोनेशिया का समावेश है। 1857–1861 इस समय ने सम्पूर्ण विश्व में बेदारी का उदय होते हुए देखा, प्रायः हर स्थान में। इस विषय में बाद के अध्याय में और लिखा गया है।

सन 1859: अल्स्टर प्रांत, उत्तर आयर्लैंड में बेदारी

न्यू यॉर्क की बेदारी का समाचार सुनकर, आयर्लैंड की कलीसिया उत्साहित हो गई और उसमें बेदारी के लिए भूख उत्पन्न हो गई। 1857 के सितम्बर के महीने में, उत्तर आयर्लैंड के अल्स्टर में चार जवान पुरुषों ने (जेम्स मैक्विलकिन, जॉन वेलेस, रॉबर्ट कार्लिसल, जेरेमाया मेनली) ने खुद को बेदारी के लिए प्रार्थना करने हेतु समर्पित किया। 1858 के समय में और 1859 के प्रारम्भ में, और कई प्रार्थना समूह बेदारी के लिए प्रार्थना करने लगे। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि अल्स्टर के पूरे शहर में 104 प्रार्थना समूह प्रायः रात और दिन बेदारी के लिए प्रार्थना कर रहे थे। जेम्स मैक्विलकिन ने मार्च 14, 1859 में एक बड़ी प्रार्थना सभा का आयोजन किया जिसमें 300 लोगों ने बारिश और कीचड़ में खड़े होकर प्रार्थना में भाग लिया। पवित्र आत्मा की सामर्थ ने उन्हें पकड़ लिया था। एक सामान्य विश्वासी प्रचार कर रहा था, उसके प्रचार के दौरान करीब 100 लोग पाप से कायल होकर ज़मीन पर गिर पड़े। लोग प्रभु के सामने चिल्लाते हुए अपने पापों का अंगीकार कर रहे थे, उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे। बेदारी की आग भड़क उठी और घरों और बाजारों में फैलने लगी। 17 मई तक, पूरा शहर पवित्र आत्मा की कायल करने वाली सामर्थ की चपेट में आ गया। लोग हर स्थान में प्रार्थना कर रहे थे। स्त्री, पुरुष, बच्चे बिलख–बिलखकर रो रहे थे, दैहिक प्रकटीकरणों के साथ यह हो रहा था, वे उद्धार पा रहे थे। बच्चे बड़ी सामर्थ के साथ प्रार्थना कर रहे थे। बेदारी विभिन्न क्षेत्रों में फैल गई। ब्रोशेन (Broughshane) में दो दिनों तक एक कारखाना बंद रहा, क्योंकि उसके 20 मजदूर परमेश्वर को पुकारते हुए ज़मीन पर पड़े हुए थे। गांव का मेला जहां पर 5000 लोग उपस्थित थे, प्रार्थना सभा में बदल गया। घर और परिवार पुनर्स्थापित हुए क्योंकि लोगों के जीवन बदल गए थे। बेलफास्ट में एक बड़ा शराबखाना बंद पड़ गया और विस्की के व्यापार में गिरावट आ गई। मयखाने बंद पड़ गए। न्यायाधीशों के पास मुकदमे नहीं थे और अक्सर कस्टडी में कोई कैदी नहीं रहे। ऐसी ही बेदारी बेलिमेना, बेलफास्ट और बेलीकॅरी में फैल गई। लोग इंग्लैंड, स्कॉटलैंड और आयर्लैंड के अन्य भागों से यह देखने के लिए आए कि परमेश्वर क्या कर रहा है। यह अनुमान लगाया जाता है कि 1859 में 100,000 लोग कलीसिया में शामिल हुए।

सन 1859: वेल्श में प्रार्थना बेदारी

उत्तर आयर्लैंड में जो कुछ हो रहा था उसी के समान, वेल्श के लोग भी पूरे देश में प्रार्थना में लग गए। परमेश्वर दो पुरुषों का इस्तेमाल कर रहा था, हम्फ्रे जोन्स जो अमेरिका में रहने के दो वर्षों बाद (1856–1858) वेल्श लौट रहा था और डेविड मॉर्गन (या डॅफिड मॉर्गन), कैल्विनवादी मेथडिस्ट प्रचारक, जिसने हम्फ्रे जोन्स को प्रचार करते हुए सुना और उसके साथ काम करने लगा। परमेश्वर ने इन दोनों को उनके प्रचार के द्वारा बेदारी की आग में ईंधन देने के लिए उपयोग किया। कई पापी बचाए गए। बच्चों के जीवन छू लिए गए। करीब 40 कोयला खदानों में बेदारी आई। पूरे वेल्श में सेवक और कलीसियाएं संजीवित हो उठीं।

सन 1860 : स्कॉटलैंड और इंग्लैंड में बेदारी

उत्तर अमेरिका और उत्तर आयर्लैंड में जो कुछ हो रहा था उसकी खबर जब स्कॉटलैंड में पहुंची, तब स्कॉटलैंड की कलीसिया प्रार्थना करने लगी और परमेश्वर से ऐसी ही बेदारी के लिए बिनती करने लगी। प्रेस्बिटेरियन कलीसियाओं में, ऐसा बताया जाता है कि 40,549 लोग बेदारी के लिए साप्ताहिक प्रार्थना में आने लगे। 1,205 प्रार्थना सभाओं के अलावा, हर सप्ताह बेदारी के लिए प्रार्थना करने वाले लोगों की 129 प्रार्थना सभाएं चल रही थीं, जो विभिन्न डिनॉमिनेशन्स की कलीसियाओं की ओर से थीं। इसके परिणाम अद्‌भुत थे। अल्स्टर और वेल्श की बेदारी के समान ही, स्कॉटलैंड ने 300,000 लोगों को उद्धार पाते हुए देखा। पूरे इंग्लैंड में करीब 6,50,000 लोगों ने उद्धार पाया। इस बेदारी का प्रभाव दूर तक था। सुसमाचार कार्य, मिशन और सामाजिक कार्यों की संख्या बढ़ गई।

1860 ऐसा वर्ष था जब विश्व के अन्य भागों में भी बेदारी की खबर सुनी गई, जिसमें जमाईका और दक्षिण आफ्रिका शामिल थे। हम अनेक विख्यात प्रचारकों और ईश्वर विज्ञानियों का उदय भी देखते हैं, परमेश्वर उत्तर अमेरिका और यूनाईटेड किंगडम में जो कुछ कर रहा था उसे ईंधन पहुंचाने में इन प्रचारकों ने सहायता की।

सन 1860 : चार्ल्स स्पर्जन

चार्ल्स स्पर्जन (1834–1892), को "प्रचारकों का राजा" या युवराज कहा जाता है। वे 1854 से 38 वर्षों तक न्यू पार्क स्ट्रीट चैपल नामक मण्डली के पासबान थे जिसे बाद में मेट्रोपोलिटन टेबरनैकल के नाम से जाना गया। स्पर्जन का जन्म इंग्लैंड के एसेक्स कॉऊंटी में हुआ। व्यक्तिगत् विश्वास का अनुभव पाने के बाद अपनी नवयुवावस्था में ही स्पर्जन ग्रामीण केम्ब्रिज शायर में प्रचार करने लगे। उन्होंने प्रचारक के रूप में ऐसी ख्याति प्राप्त की कि डेढ़ साल के अंदर उन्हें लंडन के न्यू पार्क स्ट्रीट चैपल में प्रचार करने के लिए निमंत्रण दिया गया। अगले 6 महीनों तक प्रचार करने के लिए मण्डली ने अपना मतदान किया, और अंततः उन्होंने स्पर्जन को वहां रख लिया। मण्डली तेज़ी से बढ़ती गई और उन्हें नये मेट्रोपोलिटन टेबरनैकल में जाना पड़ा जहां एक साथ 5,600 लोग बैठ सकते थे। स्पर्जन को पूरे देश में प्रचार करने के लिए बुलाया जाता था और उन्होंने लंडन के सबसे बड़े सभागारों में दस हजारों की भीड़ को प्रचार किया। उनके संदेश लंडन टाईम्स के सोमवार के प्रकाशन में और न्यू यॉर्क टाईम्स में भी प्रकाशित किए जाते थे। उनकी शैली नाट्यपूर्ण होते हुए भी उनका विश्वास दृढ़ था और वे अपने संदेशों में सीधे तौर पर बोलते थे।

सन 1860 : सुसमाचार प्रचारक, डी. एल. मूड़ी

डी. एल. मूडी (1837–1899), शिकागो के निवासी थे और 19वीं सदी के दूसरे अर्धशतक में सर्वाधिक प्रमुख सुसमाचार प्रचारक थे। उन्होंने 1855 में उद्धार पाया, और शिकागो में जूतों के विक्रेता के रूप में अपने जीवन की शुरूवात की, और साथ ही साथ वे सण्डे–स्कूल कक्षा में सिखाते थे और स्थानीय यंग मैन्स क्रिश्चियन असोसिएशन में सिखाते थे (वाय.एम.सी.ए.)। मूडी की सण्डे–स्कूल कक्षाएं उद्धार पाए हुए व्यक्ति के सलून में चलती थी, और वे कम पढ़े–लिखे या अशिक्षित बच्चों को सुसमाचार प्रचार करते थे। 1857–1858 में आई सामान्य विश्वासियों की बेदारी के दौरान मूडी ने वाय.एम.सी.ए. में साफ–सफाई और अन्य आवश्यक कार्य किए। 1860 में मूडी ने अपना कारोबार छोड़ा और वाय.एम.सी.ए. में शहर के मिशनरी के रूप में काम करने लगे। अंततः, जैसे–जैसे सण्डे–स्कूल बढ़ता गया, मूडी को अपनी खुद की कलीसिया आरम्भ करने के लिए प्रोत्साहन प्राप्त हुआ और उन्होंने फरवरी 28, 1864 को इलिनॉई स्ट्रीट चर्च के रूप में कलीसिया शुरू की (आज इस कलीसिया को मूडी चर्च कहा जाता है)। मूडी एक महान प्रचारक थे और उनकी उत्तम मित्र और संगीत गायक ईरा सैंकी के साथ उन्होंने 1873–1875 के दौरान यूनाईटेड किंगडम और आयर्लैंड में यात्रा की। 1875–1878 के दौरान यू.एस. लौटने के बाद मूडी ने यूनाईटेड स्टेट के मुख्य शहरों में यात्रा करते हुए सुसमाचार प्रचार करते हुए कई सुसमाचारीय अभियान चलाए। 1879 में, मूडी ने युवा महिलाओं के लिए नॉर्थ फिल्ड सेमिनरी की स्थापना की और उसके बाद जल्द ही निर्धन और अल्पसंख्यकों के लिए लड़कों की मॉऊंट हर्मन स्कूल की शुरूवात की। 1886 में शिकागो इव्हेंजिलिकल सोसायटी की स्थापना हुई, जिसे आज मूडी बाइबल इन्स्टिट्यूट कहा जाता है। 1886 में मूडी ने 'कॉलेज विद्यार्थियों की ग्रीष्मकालीन शाला' का आयोजन किया जिसमें से स्टूडंट वालंटियर मूव्हमेंट फॉर फॉरेन मिशन्स का जन्म हुआ। 1911 तक, केवल अमेरिका से 5,000 विद्यार्थी स्वयंसेवकों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया था। मिशन आंदोलन बढ़ता गया और यूरोप और दक्षिण आफ्रिका तक सम्पूर्ण विश्व में यह फैल गया।

सन 1876 : पश्चिम आफ्रिका के नाइजिरिया की मिशनरी, मेरी स्लेसर

सन 1876, 28 वर्ष की उम्र में मेरी स्लेसर (1848–1915) स्कॉटलैंड के एडिनबर्ग को छोड़कर प्रेस्बिटेरियन मिशनरी के रूप में कालाबार क्षेत्र के इफिक जनजातियों के बीच सेवा करने आई। मेरी स्लेसर ने जब सुना कि डेविड लिविंगस्टन की मृत्यु हो गई है, तब उसकी उम्र 27 वर्ष की थी और वह लिविंगस्टन के नक्श–कदमों पर चलना चाहती थी। कालाबार के लोगों का मानना था कि यदि किसी महिला के जुड़वा बच्चे होते हैं, तो उनमें से एक शैतान होता है और इसलिए जुड़वा बच्चों को मरने के लिए जंगल में मिट्टी के घड़े में रखकर छोड़ दिया जाता था। मेरी स्लेसर ने जुड़वा बच्चों को उनके बचपन में मार डालने की इस बुरी प्रथा के विरोध में सफलतापूर्वक लड़ाई की। उसने कालाबार लोगों के मध्य कई दशकों तक सेवा की। मेरी स्लेसर का लक्ष्य सुसमाचार प्रचार, अनाथों और

स्थानीय बच्चों की देखभाल करना, महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देना, सामाजिक बदलाव लाना, शिक्षा, स्थानीय प्रशासन और व्यापार को प्रोत्साहन देना था।

सन 1878 : विलियम बूथ, सैल्वेशन आर्मी

विलियम बूथ (1829–1912) ब्रिटिश मेथडिस्ट प्रचारक थे जिन्होंने सैल्वेशन आर्मी की स्थापना की और उसके पहले सेनापति बन गए (1878–1912)। 1865 में 'क्रिश्चियन रिवाइवल सोसायटी' के नाम से लंडन के पूर्व छोर में जो शुरू हुआ, उसे बाद में क्रिश्चियन मिशन का नाम दिया गया और अंततः सन 1878 में सैल्वेशन आर्मी कहा जाने लगा। इसका लक्ष्य था सुसमाचार के साथ ही साथ निर्धनों और अत्यंत ज़रूरतमंदों, शराबियों, अपराधियों और वेश्याओं को लोकोपकारी सहायता प्रदान करना। बूथ के जीवनकाल में, सैल्वेशन आर्मी का कार्य 58 देशों में स्थापित हो गया। विलियम बूथ ने काफी लेखन भी किया है और कई गीतों की रचना की है। उनकी पुस्तक 'वे आऊट' 1890 में प्रकाशित हुई और धडल्ले से बिकी। समाज कल्याण हेतु सैल्वेशन आर्मी के लिए यह पुस्तक मार्गदर्शक बनी।

1885 सी. टी. स्टड, चीन, भारत और आफ्रिका के मिशनरी

सी. टी. स्टड (1860–1931) अंग्रेज़ क्रिकेट खिलाड़ी थे जिन्होंने 1878 में अपना दिल मसीह को दिया। 1883 में सी. टी. स्टड ने डी. एल. मूडी को प्रचार करते हुए सुना और सुसमाचार सुनाने की प्रेरणा उन्हें प्राप्त हुई। 1885 में स्टड चीन के मिशनरी के रूप में हडसन टायलर कॉलेज में दाखिल होने गए। अपनी विरासत पाने के बाद, एक जवान व्यक्ति के रूप में, उन्होंने अपना सब कुछ जॉन मुल्लर अनाथालय और मिशन को दे दिया। उन्होंने पूर्ण रूप से परमेश्वर पर निर्भर रहने का निर्णय लिया। उन्होंने चीन, भारत, आफ्रिका के मिशनरी के रूप में सेवा की। उन्होंने कहा है : "कुछ लोग गिरजाघर की घण्टी के आवाज़ के दायरे में रहने की इच्छा रखते हैं; मैं तो नरक के आंगन में बचाव मिशन चलाना चाहता हूं।" सी. टी. स्टड ने एक सुविख्यात कविता भी लिखी है – "Only One Life, 'Twill Soon Be Past." ("केवल एक ही जीवन, जल्द ही मिट जाएगा")।

सन 1892 : एमी कारमाइकल, भारत की मिशनरी

एमी कारमाइकल (1867–1951) का जन्म आयर्लैंड में हुआ। 1892 में आरम्भ करके एमी चाईना इन्लैंड मिशन के साथ स्वयंसेवक के रूप में कार्य करने लगी, परंतु स्वास्थ्य के कारणों से उसे मना किया गया। बाद में उसने जापान और श्रीलंका (सिलोन) में दो वर्ष बिताए। नवम्बर 1895 में वह दक्षिण भारत आई, और फिर कभी अपने देश नहीं लौटी, उसने अपने जीवन के अगले 55 वर्ष भारत में सेवा करने में बिता दिए। उसका प्राथमिक कार्य था डोहनावर में अनाथालयों की स्थापना और संचालन करना। मंदिरों में देवदासी के रूप में रहने वाली और देह व्यापार के लिए विवश की जाने वाली लड़कियों को अनाथालय में छुड़ाकर लाया जाता था और उनकी देखभाल की जाती थी। बाद में अनाथालय लड़कों को भी स्वीकार करने लगा। एमी ने मिशनरी के रूप में उसके कार्य के विषय में कई पुस्तकें भी लिखी हैं। जब उनसे पूछा गया, "मिशनरी जीवन कैसा होता है?" तब एमी ने उत्तर दिया, "मिशनरी जीवन मात्र मरने का एक अवसर है।" जो कार्य उन्होंने आरम्भ किया, वह आज भी जारी है। (dohnavurfellowship.org.in).

1899 : आयडा स्कडर, भारत में मेडिकल मिशनरी

आयडा स्कडर (1870–1960) भारत में तीसरी पीढ़ी की अमेरिकन मेडिकल मिशनरी थी। 1899 में न्यू यॉर्क के कॉर्नेल मेडिकल कॉलेज से पदवी प्राप्त करने के बाद आरम्भ में उनके मन में मिशनरी बनने की कोई इच्छा नहीं थी, फिर भी वह दक्षिण भारत वापस गईं और उन्होंने वहां महिलाओं के लिए एक छोटी–सी डिस्पेन्सरी और क्लिनिक खोला। 1902 में उन्होंने मेरी टेबर स्केल अस्पताल खोला। 1918 में, उन्होंने लड़कियों के लिए मेडिकल स्कूल शुरू किया। 1928 में यह मेडिकल स्कूल बगायम, वेल्लोर के 200 एकर आवास में ले जाया गया। 1945 में स्त्री और पुरुष दोनों के लिए कॉलेज खो दिया गया। द वेल्लोर ख्रिश्चन मेडिकल सेंटर (सी एस सी) विश्व में सबसे बड़े मसीही अस्पतालों में से एक है। सी एम सी मेडिकल स्कूल भारत के प्रमुख मेडिकल कॉलेजेस में से एक है।

1880–1940 : चंगाई की बेदारी के अग्रणी

19 वीं सदी के अंत में और 20 वीं सदी के प्रारंभिक भाग में कइयों का उदय हुआ जिन्होंने सामर्थ के साथ चंगाई और छुटकारे की सेवकाई आरम्भ की। वे चंगाई की बेदारी के सच्चे अग्रणी थे। उनमें से कइयों की सामर्थी सुसमाचारीय और चंगाई की सेवाएं थीं। इनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं :

जॉन एलेक्ज़ैंडर डोवी (1847–1907) को बड़ी सामर्थ के साथ चंगाई की सेवकाई में उपयोग किया गया, परंतु कई असफल योजनाओं के कारण जो आर्थिक रूप से असफल रहीं और उनके 'एलायजा कॉम्प्लेक्स' की वजह से वे कुख्यात हो गए और कई लोग उन्हें बहुरूपिया या ढोंगी समझते थे।

मारिया वुडवर्थ एटर (1844–1924) को परमेश्वर ने चंगाई की सेवकाई में, चिन्ह और चमत्कारों के साथ सामर्थ से उपयोग किया और उनका बड़ा तम्बू था जिसमें उनकी टेंट सभाओं में करीब 8000 लोग बैठ सकते थे।

स्मिथ विगलस्वर्थ (1859–1947), जिन्हें विश्वास का प्रेरित कहा जाता है। परमेश्वर ने विगलस्वर्थ को बीमारों को चंगा करने, दुष्टात्माओं को निकालने और मुर्दों को जिलाने के लिए इस्तेमाल किया।

लिलियन बी. योमन्स (1861–1942) एक मेडिकल डॉक्टर थीं जो अपना डॉक्टरी पेशा छोड़कर प्रभु यीशु मसीह की चंगाई की सामर्थ के द्वारा कइयों को चंगाई की सेवा प्रदान करने लगी।

जॉन जी. लेक (1870–1935) जॉन जी. लेक ने सफल समाचारपत्र और रियल इस्टेट का कारोबार छोड़ दिया और जॉन एलेक्ज़ैंडर डोवी की अधीनता में शिक्षा पाने के बाद चंगाई की सेवा करने लगे। उन्होंने दक्षिण आफ्रिका में मिशनरी के रूप में कुछ समय बिताया। दक्षिण आफ्रिका में पांच सालों से अधिक समय बिताने के बाद, लेक ने 1,000,000 विश्वासियों को देखा, सैंकड़ों कलीसियाओं का रोपन किया और 1000 स्थानीय सेवकों को तैयार किया। यूनाईटेड स्टेट्स लौटने के बाद, उन्होंने स्पोकेन, वॉशिंग्टन में हिलिंग रूम या चंगाई कक्ष की स्थापना की। अंदाजन पांच वर्षों के बाद, 100,000 चंगाइयां दर्ज़ की गई और स्पोकेन को अमेरिका का सबसे स्वस्थ शहर घोषित किया गया।

फ्रेड फ्रान्सिस बोसवर्थ (1877–1958), चंगाई कर्ता सुसमाचार प्रचारक था, परमेश्वर ने कइयों को उद्धार और चंगाई प्रदान करने हेतु उसका उपयोग किया। 1924 में प्रकाशित उनकी पुस्तक "क्राईस्ट द हीलर" (चंगाई कर्ता मसीह) आज भी कैरिस्मैटिक/पेन्टिकॉस्टल लोगों के मध्य उत्कृष्ट मानी जाती है। सन 1930 में एफ.एफ. बोसवर्थ "नॅशनल रेडियो रिवाइवल मिशनरी क्रूसेडर्स" की स्थापना करके अग्रणी रेडियो सुसमाचार प्रचारक बन गए।

एमी सेम्पल मैक्फर्सन (1890–1944) चंगाई सुसमाचार प्रचारक और द इन्टरनैशनल चर्च ऑफ द फोर स्क्वेयर गॉस्पल की संस्थापक थी। 1923 में, उन्होंने लॉस एंजेलिस में श्वेत गुम्मट वाले गिरजाघर की स्थापना की जिसे एंजल्स टेम्पल कहा जाता है। आज यू. एस. में 1,700 से अधिक फोर स्क्वेयर कलीसियाएं हैं और 140 देशों में 66,000 से अधिक सभागार हैं।

20वीं और 21वीं सदियां – बेदारियां और आंदोलन (सन 1901 – वर्तमान समय तक)

चार्ल्स फॉक्स परहैम और टोपेका, कैन्सस का बेथेल बाइबल कॉलेज

चार्ल्स फॉक्स परहैम (1873–1929) युवा, प्रवासी सुसमाचार प्रचारक थे जिन्हें स्वर्ग से पवित्र आत्मा की वर्षा की इच्छा थी जो कलीसिया को वचन और कार्य में सामर्थी बना सकते थे। 1900 में, परहैम ने टोपेका, कैन्सस के अपने स्थान से उत्तर और उत्तर पूर्व की ओर विभिन्न सुविख्यात सेवा संस्थाओं की यात्रा की जिसमें जॉन एलेक्ज़ैन्डर डोवी, ए. बी. सिम्पसन, ए. जे. गार्डन और फ्रेंक सेनफोर्ड का समावेश है। जो कुछ उन्होंने देखा उसका मूल्यांकन करने पर उन्हें यकीन हो गया कि उन्हें पवित्र आत्मा के सामर्थी वर्षा की ज़रूरत है। अक्टूबर 1900 में, अपनी पत्नी

और साली के साथ मिलकर, परहैम ने चालीस विद्यार्थियों के साथ कैन्सस के टोपेका में बेथेल बाइबल कॉलेज की स्थापना की। इस कॉलेज में प्रार्थना पर मुख्य ज़ोर था। नये वर्ष 1900 की संध्या से तीन दिन पहले, परहैम ने अपने सभी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन दिया कि वे पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के विषय पर अध्ययन करें, विशेषकर प्रेरितों के कामों की पुस्तक पर और इस बात का बाइबल आधारित प्रमाण खोज निकालें कि व्यक्ति निश्चित रूप से कैसे जान सकता है कि उसने सचमुच पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया है या नहीं। विद्यार्थियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि पिन्तेकुस्त की आशीषों का निर्विवाद प्रमाण यह था कि लोग अन्य–अन्य भाषाओं में बोलने लगे। बाद में उस संध्या रात जागरण की सभा में (वॉच नाईट सर्विस) में (1900–1901), पवित्र आत्मा असामान्य प्रबलता के साथ प्रकट हुआ। करीब रात 11 बजे जब बीसवीं सदी का आरम्भ होने वाला था, तब कॉलेज की एक विद्यार्थिनी, एग्नेस ओज़मन ने परहैम से कहा कि वे उसके लिए प्रार्थना करें ताकि उसे उसी तरह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिले जैसा उन्होंने अपने अध्ययन में देखा था। छोटी–सी प्रार्थना के बाद, उन्होंने परमेश्वर की सामर्थ को उस पर आते हुए अनुभव किया और वह चीनी भाषा बोलने लगी और तीन दिनों तक अंग्रेजी नहीं बोल पाई। इस घटना ने परहैम में और बेथेल के अन्य लोगों में एक आत्मिक इच्छा जागृत की। सामान्य कामकाज रुक गए, उन्होंने एक ऊपरी कोठी अलग की, जहां पर वे अपने व्यक्तिगत पिन्तेकुस्त के लिए प्रभु की बाट जोहने लगे। जनवरी 3, 1901 को जब उन्होंने प्रार्थना करना जारी रखा, तब विद्यार्थी समूह और परहैम ने आत्मा की सामर्थी वर्षा को अनुभव किया और वे अन्य–अन्य भाषाओं में बोलने लगे। अन्य कई लोग बेथेल में क्या हो रहा है यह देखने के लिए आए। अन्य लोगों ने भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया और दूसरों को यह खबर पहुंचाई। ऐसा 1901 की वंसत ऋतु के समय में जारी रहा। 1901 की पतझड़ तक, बेथेल बाइबल कॉलेज के लिए उपयोग की जाने वाली इमारत बेच दी गई और बाइबल स्कूल खत्म हो गया। परहैम कैन्सस शहर के एक किराए के घर में जाकर रहने लगे और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और ईश्वरीय चंगाई का प्रचार करते हुए पूरे देश में यात्रा करने लगे। 1905 के जाड़े में, परहैम ने यूस्टन में एक नए बाइबल स्कूल की स्थापन की, जैसी वे कैन्सस के टोपेका में चलाते थे। यूस्टन में ही विलियम जे. सेमोर स्कूल में दाखिल हुए, जहां उन्हें पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की सच्चाई का पता चला। बाद में विलियम सेमोर को परमेश्वर ने लॉस एंजेलिस की अजूसा स्ट्रीट बेदारी में उपयोग किया।

1904–1905 : वेल्श बेदारी और ईव्हान रॉबर्ट्स

1904 की वेल्श बेदारी जहां परमेश्वर ने ईव्हान रॉबर्ट्स जवान का उपयोग किया **(1878–1951), इतिहासकारों द्वारा** मसीही इतिहास की सबसे बड़ी बेदारी मानी जाती है। इसका आरम्भ 31 अक्टूबर 1904 को हुआ जहां ईव्हान रॉबर्ट्स ने एक छोटे समूह को प्रचार किया और आत्मा की सामर्थी बेदारी आरम्भ हुई और पूरे वेल्श में और विश्व के अन्य कई भागों में फैल गई। 6 महीने के अंदर केवल वेल्श में 100000 लोगों ने उद्धार पाया। समाज पर उसका परिवर्तनकारी प्रभाव विस्मयकारी था।

1904 : जॉन हाईड और सियालकोट बेदारी। "मुझे आत्माओं को दे दे, परमेश्वर, नहीं तो मैं मरा!"

1892 में, अमेरिकन प्रेस्बिटेरियन मिशनरी जॉन नेल्सन हाईड (1865–1912) ने भारत की यात्रा की और जल्द ही उन्होंने परमेश्वर के कार्य के लिए और उत्तर भारत में बेदारी के लिए प्रार्थना संगति शुरू की। जल्द ही उन्हें "प्रार्थना करने वाले हाईड" के रूप में पहचाना जाने लगा। 1892 में भारत आने के बाद जल्द ही हाईड पवित्र आत्मा से भर गए, और उसके तुरंत बाद वे अपने जीवन में प्रार्थना पर ज़ोर देने लगा। हाईड पंजाब राज्य की बेदारी के लिए प्रार्थना करने लगे जहां पर वे रहते थे। 1899 में हाईड पूरी रात प्रार्थना में बिताने लगे। उन्हें गहराई से महसूस हुआ कि भारत में फल प्राप्त करने के लिए प्रार्थना ही एकमात्र आशा है। जहां कहीं वे प्रचार करते, वे मिशनरी कार्य में सहभागी लोगों को पवित्र आत्मा की सामर्थ से परिपूर्ण होने की ज़रूरत के विषय में बताते। अप्रैल 1904 के बाद, हाईड और कई अन्य मिशनरियों ने पंजाब प्रेयर यूनियन के लिए बुनियाद डाली। उसका उद्देश्य था पंजाब और भारत में बेदारी और फसल के लिए प्रार्थना करना। सभी मसीही कार्यकर्ताओं को आम निमंत्रण भेजा गया कि वे अगस्त 1904 में सियालकोट कन्वेन्शन के लिए पंजाब के सियालकोट में स्थित यूनाईटेड प्रेस्बिटेरियन मिशन केंद्र में इकट्ठा हों। सभा आरम्भ होने से पहले एक माह तक, जॉन हाईड और अन्य कुछ लोगों ने रात और दिन प्रार्थना

में बिताए। सभा में ही प्रार्थना के लिए दो कमरे थे, एक महिलाओं के लिए और एक पुरुषों के लिए, और जब सभा आरम्भ हो गई तब ये प्रार्थना के कमरे कभी खाली नहीं रहे। हाईड वहां पर लगातार उपस्थित रहते थे। कई भारतीय भी प्रार्थना में शामिल हुए उनमें से कुछ लोग सारी रात प्रार्थना में बिताते थे। हाईड ने सियालकोट कन्वेन्शन में जितनी बार भाग लिया उतनी बार वे वास्तव में बिल्कुल नहीं सोए, और उन्होंने प्रार्थना करते हुए प्रार्थना के कमरे में समय बिताया। 1904 की उस पहली सभा में बेदारी का आत्मा कार्य करने लगा। और लोग विनम्रतापूर्वक अपने पापों का अंगीकार करने लगे, परमेश्वर और मनुष्यों के साथ अपने सम्बंध सुधारने लगे उस समय तक जो मिशनरी थे वे अच्छे मिशनरी थे, अब वे सामर्थी मिशनरी बन गए।

सन 1905 : पंड़िता रमाबाई और मुक्ति मिशन की बेदारी

पंड़िता रमाबाई (1858–1920) का जन्म यद्यपि ब्रम्हण परिवार में हुआ, फिर भी वह यीशु मसीह में विश्वासी बन गई। 1889 में, उन्होंने बॉम्बे में ब्राम्हण विधवाओं के लिए "शारदा सदन" (अध्ययन केंद्र) खोला, इन विधवाओं में से कई युवा थीं, परंतु बड़ी उम्र के पुरुषों से उनका विवाह हुआ था और वे मर गए थे। वह बॉम्बे के निकट दूसरे स्थान में आई और 1901 में उनकी पाठशाला में 2000 लड़कियां थीं, इस स्कूल को मुक्ति मिशन कहा जाता है। 1898 से, पंड़िता रमाबाई पूरे भारत में बेदारी के लिए अन्य कई लोगों के साथ आग्रह से प्रार्थना कर रही थीं। उन्होंने वेल्श में आई 1904 की बेदारी के विषय में सुना और अपनी लड़कियों के साथ एक प्रार्थना समूह तैयार किया और बेदारी के लिए आग्रह के साथ प्रार्थना करने लगी। 29 जून, 1905 में मुक्ति मिशन में पवित्र आत्मा की असामान्य बेदारी आई जिसके परिणामस्वरूप लड़कियों ने अद्भुत आत्मिक अनुभव पाए जिसमें अन्य–अन्य भाषाएं शामिल थीं।

सन 1906–1909 : अजूसा मार्ग की बेदारी और विलियम जोसेफ सेमोर

परमेश्वर ने विलियम जोसेफ सेमोर (1870–1922) को पिन्तेकुस्त के दिन के बाद आई कलीसिया के इतिहास की एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण बेदारी में इस्तेमाल किया। अजूसा मार्ग की बेदारी का उल्लेख आधुनिक पेन्टिकॉस्टल आंदोलन के आरम्भ के संदर्भ में किया जाता है। अप्रैल 9, 1906 को जिसका आरम्भ एक छोटे–से घर में हुआ वह यूनाइटेड स्टेस्ट्स और अन्य कई राष्ट्रों में आग की तरह फैल गया। बेदारी तीन वर्षों तक बिना किसी रुकावट के जारी रही (1906–1909)। 1908, तक इस आंदोलन ने पचास से अधिक राष्ट्रों में जड़ पकड़ ली। 1914 तक, प्रत्येक अमेरिकन शहर में तीन हज़ार या उससे अधिक लोग और विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में आइसलैंड से लेकर तान्ज़ानिया तक उसके प्रतिनिधि थे, पेन्टिकॉस्टल विश्वासी तीस भाषाओं में साहित्य का प्रकाशन कर रहे थे।

सन 1906 : साधु सुंदर सिंग "लोहू–लुहान पावों वाला प्रेरित"

सुंदर सिंग (1889–1929) का जन्म लुधियाना, पंजाब के सिख परिवार में हुआ, और वे मसीह धर्म के खिलाफ थे, फिर भी अपनी युवावस्था में मसीह के पास आए और उनके सोलहवें जन्मदिन पर उन्होंने बपतिस्मा लिया। उसके बाद जल्द ही अक्टूबर 1906 में वे मसीही साधु के रूप में घर से बाहर निकल पड़े। उन्होंने यीशु मसीह का प्रचार करते हुए पंजाब, कश्मीर, अफगानिस्तान और पाकिस्तान के कुछ भागों में यात्रा की।

सन 1906 : थॉमस बॉल बैरट और नार्वे में बेदारी (1862–1940)

थॉमस बॉल बैरट (1862–1940) ने 17 वर्ष की उम्र में प्रचार करना आरम्भ किया और बाद में नार्वे की मेथडिस्ट एपिस्कोपल कलीसिया के पासबान के रूप में उन्होंने दीक्षा प्राप्त की। सन 1902 में उन्होंने ऑस्लो सिटी मिशन की स्थापना की और 1906 में उन्हें क्रिस्टियानिया (अब ऑस्लो) के एक विशाल केन्द्रीय मिशन के लिए धनराशी इकट्ठा करने के लिए अमेरिका के दौरे पर भेजा गया। आर्थिक रूप से उनका यह मिशन असफल रहा। परंतु कैलिफोर्निया के पश्चिम तट पर अजूसा मार्ग में बेदारी चल रही थी। टी. बी. बैरट न्यू यॉर्क में होटल के एक कमरे में थे, और 7 अक्टूबर 1906 को उन्होंने पवित्र आत्मा का सामर्थी बपतिस्मा पाया। फटती हुई जीभ के समान एक अलौकिक रोशनी उनके सिर पर उतर आई और उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया और वे अन्य–अन्य भाषाओं में बोलने लगे। विभिन्न ध्वनियों या भाषा के स्वरूपों से उन्हें महसूस हुआ कि उन्होंने सात या आठ भाषाओं में बातें की होगी। वे

दिसंबर 8, 1906 को वापस नार्वे लौट आए और उसके बाद आत्मा का एक सामर्थी कार्य आरम्भ हुआ और आग की तरह फैल गया। उन्हें उत्तर और पश्चिम यूरोप के लिए 'पेन्टिकॉस्टल प्रेरित' कहा जाता है। सन 1907, एलेक्ज़ैडर ए. बॉड़ी, संडरलैंड के ऑल सेंट्स चर्च के विकार, ने नार्वे में हो रही घटनाओं के विषय में सुना, और वह पूछताछ करने हेतु वहां यात्रा करने गया। जो कुछ उन्होंने देखा उससे ए. ए. बॉडी को यकीन हो गया, और उन्होंने बैरट को इंग्लैंड आने का न्योता दिया। सिंतबर 1907 में आरम्भ करके दो रोमांचक सप्ताहों के बाद, कइयों ने आत्माओं का बपतिस्मा पाया और पेन्टिकॉस्टल बेदारी का इंग्लैंड में आरम्भ हो गया। बैरट ने भारत, स्वीडन, फिनलैंड, पोलंड, इस्टोनिया, आइसलैंड और डेन्मार्क की यात्रा की और पवित्र आत्मा की बेदारी का प्रसार किया। 1909 में मेथडिस्ट एपिस्कोपल चर्च में उनकी सदस्यता खत्म कर दी गई, फिर भी बैरट ने सामर्थ के साथ अपना कार्य और सेवकाई जारी रखी।

सन 1907, एलेक्ज़ैडर ए. बॉड़ी, इंग्लैंड के संडरलैंड की बेदारी

1907 में बेदारी के चरम बिंदु पर, ए. ए. बॉडी (1854–1930), संडरलैंड के एँग्लिकन रेक्टर (1884–1922) ने नार्वे को भेंट दी। बॉडी उनके मसीही अनुभव में बड़े आयाम की खोज कर रहे थे और उन्हें विश्वास हो गया कि जो कुछ उन्होंने नार्वे में देखा, वह पवित्र आत्मा का सच्चा कार्य था। टी. बी. बैरट की भेंट के बाद उनकी कलीसिया में पेन्टिकॉस्टल बेदारी आई, जो अंततः ब्रिटिश द्वीप समूहों में फैल गई। वस्तुतः संडरलैंड पेन्टिकॉस्टल नवीनीकरण का केंद्र बन गया और हज़ारों लोग आकर उस स्थान को भेंट देने लगे। इनमें स्मिथ विगलस्वर्थ भी थे (1859–1947), मिसेस बॉडी के हाथ रखकर प्रार्थना करने से उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया।

सन 1907 : कोरियन बेदारी

1903, 1905,1907, 1927–1929, के दौरान कोरिया की कलीसिया ने बेदारी के कई ऋतु देखे। 1907 में बेदारी और प्रार्थना की जो आग सुलगी हुई थी, वह आज भी कोरियन कलीसिया में जारी है। प्रार्थना कोरियन कलीसिया का महत्वपूर्ण और अविभाज्य अंग बन गया है। शुक्रवार रात्री की नियमित प्रार्थना में कई हज़ारों को उनके गिरजाघरों में इकट्ठा होते देखना एक आम बात है, या कुछ लोग प्रार्थना पर्वतों पर कई दिन प्रार्थना में बिता देते हैं।

सन 1908–1911 : मंचूरिया उत्तर चीन में बेदारी

जॉन गोफोर्थ (1859–1936) और उनकी पत्नी रोज़लिन (1864–1942) 1888 में चीन के मिशनरियों के रूप में कैनडा से निकल पड़े और प्रारंभ में उन्होंने चीन के उत्तर होनन क्षेत्र में कार्य किया। 1904 में और 1905 में वेल्श बेदारी में होने वाली घटनाओं को देखकर वे प्रेरित हो गए और उन्होंने बेदारी के विषय पर चार्ल्स फिनी के व्याख्यान भी पढ़े। 1907 में, वे कोरिया में थे और उन्होंने कोरियन बेदारी देखी। 1908 में जब वे मंचूरिया में प्रचार कर रहे थे, तब बेदारी आरम्भ हुई जिसे मंचूरियन (उत्तर पूर्व चीन) बेदारी कहा जाता है। इस बेदारी की विशेषता थी बहुत पश्चाताप और पापों से मन फिराना। इस समय के बाद से, जोनाथन गोफोर्थ मुख्य रूप से प्रचारक और बेदारी के प्रवर्तक बन गए। इस बेदारी के परिणामों में से एक यह था कि उसने चीनी कलीसिया के अंतर्गत अगुवों को खड़ा होने में सहायता की। गोफोर्थ 1930 के दशक में विशेषकर मंचूरिया में सेवा करते रहे।

सन 1909 : विलिस हूवर और दक्षिण अमेरिका के चिली में पेन्टिकॉस्टल बेदारी

मिनी एब्राम्स (1859–1912), अमेरिकन मेथडिस्ट मिशनरी थी जिन्होंने पंड़िता रमाबाई के साथ काम किया था और 1906 की मुक्ति मिशन की बेदारी का आंखों देखा वर्णन लिखा था। उनकी पुस्तक का शीर्षक है "पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और आग।" मिनी एब्राम्स ने उनकी बाइबल कॉलेज की पूर्व साथी मेरी एनी हूवर को अपनी कहानी बताई और अपने लेख की एक प्रति दी। मेरी उनके पति विलिस कॉलिन्स हूवर (1856–1936) के साथ मेथडिस्ट मिशनरी के रूप में चिली के वॅल्पैरेसो में सेवा कर रही थीं। परिणामस्वरूप, वैल्पैरेसो और सान्तियागो की मेथडिस्ट कलीसियाओं ने विलिस हूवर के नेतृत्व में बेदारी के लिए प्रार्थना करना शुरू किया। यह बेदारी 1909 में आरम्भ हुई और चिली में पेन्टिकॉस्टल बेदारी का आरम्भ थी। आज चिली में अधिकतर पेन्टिकॉस्टल कलीसियाएं हैं और चिली के पेन्टिकॉस्टल विश्वास की जड़ें भारत की मुक्ति मिशन की बेदारी में पाई जाती हैं।

सन 1914 : अमेरिकन असेम्ब्लीज़ ऑफ गॉड की स्थापना हुई

सन 1927–1939 : चीन में बेदारी

1907 में चीन में पेन्टिकॉस्टल मिशनरी सक्रिय हो गए। टी. जेम्स और ॲनी मेकिन्टॉश अगस्त 1907 में चीन आए और मे 1908 तक उन्होंने वहां सेवा की। आल्फ्रेड और लिलियन गॅर अक्टूबर 1907 में हाँगकाँग में आने वाले पहले पेन्टिकॉस्टल मिशनरी थे। 1927–1932 के मध्य में विभिन्न स्थानों में बेदारी के प्रारंभिक चिन्ह् दिखाई दे रहे थे, फिर भी शाँन्टूंग बेदारी 1932 में आरम्भ हुई और उसकी शुरूवात कई प्रार्थना समूहों में हुई। बेदारी की ये आग अन्य प्रान्तों में भी विभिन्न डिनॉमिनेशन्स में फैल गई जिसमें होनान, मंचुरिया और एनहुई शामिल हैं। इस बेदारी की कुछ मुख्य विशेषताएं थीं छोटी–छोटी टीमों द्वारा किए जाने वाले सुसमाचार प्रचार पर ज़ोर, ये छोटी–छोटी टीमें स्वयं ही तैयार हो गई थीं, चंगाई के आश्चर्यकर्म हुए, लोग पश्चाताप करके पापों से मन फिराने लगे। यह बेदारी की आग लोगों के जीवनों को प्रभावित करती रही। जब 1949 में विदेशी मिशनरी चले गए, तब अनुमानतः मेनलैंड चीन में 50 लाख मसीही थे। आज यह संख्या 750 लाख से अधिक है। पिछले 50 वर्षो में, भयानक सताव के बावजूद और बाकी मसीही विश्व के प्रभाव के बगैर, स्वतंत्र घरेलू कलीसियाओं की पूरे चीन में बाढ़ सी आई है। चीन में एशिया के कैरिस्मैटिक मसीहियों की सबसे बड़ी संख्या है।

सन 1934 : विलियम केमरॉन टाऊन्सेंड, बाइबल अनुवाद और एविएशन मिशन

विलियम केमरॉन टाऊन्सेंड (1919–1982) ने 1934 में समर इन्स्टिट्यूट ऑफ लिंग्विस्टिक्स की स्थापन की, 1942 में विक्लिफ बाइबल ट्रान्स्लेटर्स की स्थापना की और 1948 में एक मिशनरी वायुसेवा, जंगल विमानन और रेडियो सेवा (JAARS) आरम्भ की। "सबसे बड़ा मिशनरी मातृभाषा में बाइबल है। उसे छुट्टी की ज़रूरत नहीं पड़ती और उसे कभी विदेशी नहीं समझा जाता।"

सन 1949 : हेब्राईड्स टापुओं में बेदारी

सन 1900 के मध्य में स्कॉटलैंड के हेब्राईड्स टापू आत्मिक रीति से सूखी हुई दशा में थे, कोई जवान गिरजाघर नहीं जाता था। 1949 में लेविस के बारवास गांव की दो वृद्ध स्त्रियां जो बहनें थीं, पेग्गी स्मिथ (84 और अन्धी) और क्रिस्टिन (82 और गठिया रोग से कुबड़ी) प्रार्थना योद्धा बन गईं। बेदारी आएगी इस स्वप्न से प्रेरित होकर उन्होंने लोगों के एक समूह को सप्ताह में तीन बार रात 10 बजे से सुबह 3 बजे तक प्रार्थना करने हेतु इकट्ठा किया। विशेषकर, अगले तीन महीनों में वे यशायाह 44:3 में दी गई परमेश्वर की इस प्रतिज्ञा के लिए बिनती करने लगे। *"क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर धाराएं बहाऊंगा; मैं तेरे वंश पर अपनी आत्मा और तेरी सन्तान पर अपनी आशीष उण्डेलूंगा।"* फिर एक रात परमेश्वर की सामर्थ उतर आई और परमेश्वर की जागृति ने पूरे समुदाय को पकड़ लिया। लोग स्थानीय गिरजाघर में आने लगे। उन्होंने सुबह 3 बजे के समय गिरजाघर में बाहर करीब 600 लोगों को पाया। वे किसी अनदेखी सामर्थ से खींचे जाकर अपने बिस्तरों से उठे और गिरजाघर में इकट्ठा हुए। अगले दिन, पूरे टापु से बसें आने लगीं – कोई नहीं जानता था कि यह कैसे हुआ है। पवित्र आत्मा ने खुद ही अपना विज्ञापन दिया था! सभाओं में लोग पूरे गिरजाघर में समाधी अवस्था (ट्रैन्स) में गिर पड़े, बेहोश हो गए और रोने लगे और दया के लिए पुकारने लगे। बेदारी की एक विशेषता थी परमेश्वर की सामर्थ का अभिभूत करने वाला बोध – केवल सभाओं में ही नहीं, परंतु सर्वत्र – मयखानों और नृत्यशालाओं में भी। बारवास गांव में आरम्भ हुई परमेश्वर की जागृति पड़ोस के नगरों में फैल गई और 1958 तक जारी रही। उत्तर उइस्ट ने पहले कभी बेदारी देखी नहीं थी। 1957–58 के दौरान, परमेश्वर ने बेदारी का प्रसार करने हेतु चार युवा लड़कियों का उपयोग किया। सभी प्रारंभिक 20 की अवस्था में थीं। बेदारी सुविख्यात हो गई, उस टापू के शराबखाने खाली हो गए। "प्रचारक लड़कियां प्रचार से टापू को सूखा कर देती हैं।" हेब्राईड्स टापुओं की बेदारी के दौरान परमेश्वर ने डंकन कैम्पबेल का उपयोग किया।

सन 1952 : इक्वाडोर के मिशनरी 'जिम' इलियट

1952 में फिलिप जेम्स 'जिम' इलियट (1927–1956) और पेटे फ्लेमिंग दक्षिण अमेरिका के इक्वाडोर को मिशनरियों के रूप में निकल पड़े। क्विचॉस के मध्य तीन वर्षों तक काम करने के बाद उन्होंने ऑका लोगों के मध्य सुसमाचार प्रचार करने का निर्णय लिया। संपर्क करने के तीन दिनों के अंदर ही, पांच मिशनरियों की पूरी टीम (एड मैकली, रॉजर योडेरियन, नेट सेंट, पेटे फ्लेमिंग, जिम इलियट) इक्वाडोर के ऑका लोगों के द्वारा मार दिए गए। उनके जीवन और बलिदान ने अन्य कइयों को प्रेरित किया है।

सन 1955 – वर्तमान समय तक : पूर्व यूरोप में ओपन डोअर्स मिशन

1955 में, नेदरलैंड्स के भाई एन्ड्रयू (एन्ड्रयू वॅन डर बिल, बी. 1928) ने बड़े साहस के साथ पूर्वी यूरोप में, फौलादी पर्दों के पीछे, और अन्य प्रतिबंधित राष्ट्रों में बाइबल की तस्करी करना आरम्भ किया। उन्होंने सताव पीड़ित कलीसिया की सेवा करने हेतु ओपन डोअर्स (opendoors.org) की शुरूवात की और 1967 में 'परमेश्वर के तस्कर' ("God's Smuggler") नामक पुस्तक लिखी, जो मसीही पुस्तकालयों में धडल्ले से बिकने वाली पुस्तकों में से एक है।

सन 1965–1975 : हिप्पियों के मध्य बेदारी, द जीज़स पीपल

1950 और 1960 की हिप्पी पीढ़ी ने पश्चिमी दुनिया के कई जवान लोगों को विद्रोह, ड्रग्ज़, शराब, मुक्त यौन आदि में खोया हुआ देखा। समाज की मुख्य धारा के लोगों के लिए वे पराजित, तिरस्कृत, पलायनवादी, निकम्मे लोग थे जो आसान तरीका ढूंढ़ रहे थे। परंतु इसी उप–संस्कृति के मध्य परमेश्वर की असामान्य जागृति देखी गई जिसमें कइयों को प्रभु के पास आता हुआ देखा गया, बड़ी संख्या में वे मसीह के विश्वास में आए। यह 'बेदारी की चिनगारी' चार्ल्स 'चक' स्मिथ (1927–2013) और उनकी पत्नी के स्मिथ द्वारा लगाई गई जो कैलिफोर्निया के कोस्टा मेसा में हिप्पियों को सुसमाचार सुनाने लगे। उन्होंने 25 लोगों के छोटे–से समूह से शुरूवात की, और कैल्वरी चैपल यूनाईटेड स्टेट्स की 1000 कलीसियाओं से अधिक का नेटवर्क बन गया और विश्वभर में कई सैंकड़ों लोग भी उसमें शामिल हो गए। उन्हें "आधुनिक अमेरिकन मसीही समाज के सर्वाधिक प्रभावी व्यक्तियों में से एक" माना जाता है। इस पीढ़ी के जवान लोगों के मध्य आई इस बेदारी में परमेश्वर ने अन्य कई लोगों को सामर्थ के साथ उपयोग किया। बाद में यह आंदोलन 'जीज़स मूव्हमेन्ट' नाम से विख्यात हो गया और उसके लोगों को 'जीज़स पीपल' कहा जाने लगा या केवल 'जीज़स फ्रीक' (बेल बॉटम्स और बाइबल मिलकर जीज़स फ्रीक)। जीज़स मूव्हमेन्ट की शुरूवात 1960 के अंतिम भाग में और 1970 के प्रारंभ में यूनाईटेड स्टेट्स के पश्चिम तट पर हुई और वह मुख्य रूप से उत्तर अमेरिका, यूरोप, और मध्य अमेरिका में फैल गई। इस आंदोलन के सदस्यों को जीज़स पीपल या जीज़स फ्रीक कहा जाता है। जीज़स मूव्हमेन्ट ने कलीसियाई उन्नति से संबंधित कई आंदोलनों को प्रभावित किया जिसमें कैल्वरी चैपल, होप चैपल चर्चेस, विन्यार्ड चर्चेस, फेलोशिप हाऊस चर्च, शिलोह युथ रिवाइवल सेंटर और अन्यों का समावेश है। जीज़स मुव्हमेंट ने कई समकालीन मसीही संगीत समूहों को जन्म दिया जिनमें मारानाथा सिंगर्स, हिल साँग, जीज़स कल्चर और अन्य कइयों का समावेश है। 'जीज़स संगीत' की कई विशेषताओं में से एक था गिटार और ड्रम का उपयोग और कोरस और आत्मा में नृत्य का उपयोग। कुछ सुविख्यात संगीतवादक और बैंड्स का उदय हुआ जिनमें किथ ग्रीन, ॲन्ड्रे क्राऊच, बैरी मॅक्गिरे, फिल किगी और अन्य कइयों का समावेश है। यद्यपि यह आंदोलन 1980 के अंतिम भाग में कम होता गया, फिर भी उसने मसीही समाज की मुख्य धारा पर काफी प्रभाव डाला, न केवल जवानों को सुसमाचार सुनाने में, जिनमें से कई विशाल कलीसियाओं और मसीही संस्थाओं की अगुवाई करने लगे, परंतु उसने कलीसियाई जीवन और मसीही आराधना को भी प्रभावित किया।

सन 1970 : ॲस्बरी कॉलेज की बेदारी

विल्मोर, केन्टूकी के ॲस्बरी कॉलेज ने उसके आवास में कई बेदारियों को देखा है जिनमें 1905, 1950 और 1958 की बेदारियां शामिल हैं। फरवरी 3, 1970 को नियमित चैपल आराधना के दौरान डीन कस्टर बी. रेनॉल्ड्स का प्रचार करना तय था। परंतु उन्हें अगुवाई मिली कि वे उसके बदले विद्यार्थियों को व्यक्तिगत गवाहियां देने के लिए निमंत्रित

करें। कैम्पस के कई लोग बेदारी के लिए प्रार्थना कर रहे थे और अपेक्षा में थे। जैसे ही निमंत्रण दिया गया, बोलने के लिए विद्यार्थियों की लम्बी कतार खड़ी हो गई। परमेश्वर की सामर्थी बेदारी उस चैपल में उतर आई। परमेश्वर की उपस्थिति का आदरयुक्त भय था, लोग अपने पापों को कबूल कर रहे थे, पश्चाताप कर रहे थे, प्रभु के सामने शांत बैठे हुए थे, प्रार्थना कर रहे थे, रो रहे थे, और गीत गा रहे थे। मानो प्रभु भीतर चलकर आया था। लोग जाना नहीं चाहते थे। 1500 लोगों की बैठक वाला चैपल लोगों से खचाखच भर गया था। कक्षाएं एक सप्ताह के लिए रद्द कर दी गईं। परंतु फरवरी 10, 1970 को वापस कक्षाओं के शुरू होने के बाद भी, ह्यूग़्ज़ सभागार प्रार्थना और गवाही के लिए खोलकर रखा गया। बेदारी की आग यूनाइटेड स्टेट्स के अखबारों और टेलीविजन पर फैल गई। लोगों के झुण्ड के झुण्ड उन विद्यार्थियों के साथ आराधना करने हेतु विल्मोर आने लगे। जो कुछ हो रहा था वह बताने हेतु ॲस्बरी के विद्यार्थियों और प्राध्यापकों को यूनाइटेड स्टेट्स में चारों ओर निमंत्रण दिया जाने लगा। जहां कहीं ॲस्बरी के निवासी यात्रा करते, बेदारी उनके पीछे आती। 1970 की गर्मी में, प्रकाशित वर्णन के अनुसार यह बेदारी 130 से अधिक कॉलेजों, सेमिनरियों, बाइबल स्कूलों और कई कलीसियाओं में फैल चुकी थी। यह न्यू यॉर्क से कैलिफोर्निया तक, और दक्षिण अमेरिका तक भी फैल चुकी थी।

सन 1980 : अर्जेंटिना में बेदारी

1980 के आरम्भ में, परमेश्वर ने कार्लोस ॲनाकोंडिया नामक व्यवसायी से सुसमाचार प्रचारक बने व्यक्ति का उपयोग करके राष्ट्र में बेदारी की नई आग लगा दी। सामुहिक सभाओं में हज़ारों लोगों ने मसीह को ग्रहण किया। उद्धार के साथ चिन्ह, चमत्कार, चंगाइयां और छुटकारा भी था। कार्लोस ॲनाकोंडिया ने स्थानीय लोगों को प्रोत्साहन दिया कि वे बेदारी के लिए प्रार्थना में एकजुट हों।

सन 1980 – वर्तमान समय तक : कलीसिया की अनोखी बढ़ौतरी

1980 से, हम अनोखी कलीसियाई बढ़ौतरी देखते हैं और कई विशाल मंडलियों की विश्वभर में स्थापना होने लगी। प्रायः प्रत्येक द्वीपखंड में, हमारे पास ऐसी कलीसियाएं हैं जिनकी मंडली की संख्या हज़ारों में है। हम इस लिखान के समय में तीन विशाल मंडलियों का उल्लेख करते हैं।

सन 1980 : कोरिया की बेदारी, याँगी चो और योइडो गॉस्पल चर्च, सेऊल, कोरिया

1928 में, मेरी सी. रम्से जिन्होंने अजूसा मार्ग के समय में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया था, कोरिया के सेऊल में पहली पेन्टिकॉस्टल कलीसिया स्थापित की। डेविड (जो पहले पॉल थे) याँगी चो ने 1958 में सेऊल की झुग्गी झोपडियों में छोटी–सी तम्बू कलीसिया स्थापित की। योइडो फुल गॉस्पल चर्च, सेऊल, कोरिया (http://english.fgtv.com) जिसकी स्थापना पास्टर याँगी चो द्वारा की गई, उसमें 10 लाख से अधिक सदस्य हैं (सन 2014 की बात)। 1980 से, दक्षिण कोरिया ने पेन्टिकॉस्टल कलीसियाओं की अनोखी बढ़ौतरी देखी है और विशेषकर योइडो फुल गॉस्पल चर्च की। इसमें कई बातों का योगदान है जिसमें प्रार्थना पर ज़ोर (प्रार्थना पर्वत), वचन की गहरी सकारात्मक सेवकाई, चंगाई और चमत्कार, पवित्र आत्मा के कार्य पर निर्भर रहना, सेल ग्रूप्स और संचार माध्यमों का उपयोग शामिल है।

सन 1983 : अंतरराष्ट्रीय कैरिस्मैटिक मिशन, बोगोटा, कोलंबिया

पास्टर केसर कॅस्टेलॅनॉस ने 1983 में मात्र आठ लोगों के साथ अंतरराष्ट्रीय कैरिस्मैटिक मिशन, बोगोटा, कोलंबिया (www.mci12.com) की स्थापना की जिसकी संख्या आज बढ़कर 200,000 हो गई है।

सन 1992 : अर्जेंटिना की बेदारी

सन 1992 में, परमेश्वर ने ब्यूनॉस आयर्स की कलीसिया के पासबान क्लॉडियो फ्रिज़डन को बेदारी की अगली लहर के लिए इस्तेमाल किया। क्लॉडियो अपने जीवन में पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व को जानने की ज़रूरत महसूस करने लगे। जब वे इस विषय में प्रभु से प्रार्थना कर रहे थे, तब पवित्र आत्मा ने उन्हें सामर्थी रूप से छू लिया और उनकी

सेवकाई नाट्यपूर्ण रूप से बदल गई। उनकी सभाओं में पवित्र आत्मा की अनोखी उपस्थिति थी जिसके परिणामस्वरूप परमेश्वर के लिए नई भूख उत्पन्न हुई, व्यक्तिगत पवित्रता पर नया ज़ोर दिया गया, प्रार्थना और आत्मा की सामर्थ के प्रकटन के लिए नई इच्छा उत्पन्न हुई। इस समय के दौरान अर्जेंटिना की कलीसिया की स्थिति के विषय में कहते हुए, क्लॉडियो ने कहा, "पासबान कलीसियाई उन्नति के लिए तरीके ढूंढ़ रहे थे, परंतु ये तरीके उत्तर नहीं थे।" उनकी सलाह : "कोई तरीका नहीं है। हमें परमेश्वर की उपस्थिति की खोज करना है। मेरा संदेश सरल है। मैं पवित्र आत्मा की उपस्थिति पर ज़ोर दे रहा हूं।" एक कलीसिया में आरम्भ हुई बेदारी पूरे अर्जेंटिना में फैल गई।

सन 1992 : रॉड्नी हॉवर्ड ब्राऊन और लाफिंग रिवाइवल

रॉड्नी हॉवर्ड ब्राऊन दक्षिण आफ्रिकी सुसमाचार प्रचारक थे जो 1987 में यू एस ए आ गए थे। अप्रैल 1989 में, क्लिफ्टन पार्क, न्यू यॉर्क की एक कलीसिया में प्रचार करते समय, प्रभु ने चिन्ह और चमत्कारों और सामर्थ के कामों की बेदारी भेजी, और इसके परिणामस्वरूप लोगों का उद्धार हुआ, उन्होंने चंगाई पाई और छुटकारा पाया और असाधारण रूप से परमेश्वर की उपस्थिति से मुलाकात की, जो आज भी जारी है। 1992 में बेदारी की सभा में पवित्र हंसी भी फूटने वाली थी, परिणामस्वरूप उसे लाफिंग रिवाइवल अर्थात हंसी की बेदारी नाम दिया गया। 1993 में, उस समय के विन्यार्ड के पासबान रैंडी क्लार्क, जो परमेश्वर से और पाने के लिए भूखे और बेताब थे, उन्होंने रॉड्नी हॉवर्ड ब्राऊन के विषय में सुना और उनकी सभाओं में हिस्सा लिया और रॉड्नी हॉवर्ड ब्राऊन से पांच बार खुद के लिए प्रार्थना करवा ली। वे परमेश्वर से और पाने के लिए बहुत लालयित थे। सेंट लुईस में वापस अपनी कलीसिया में आने के बाद, परमेश्वर उनकी कलीसिया की आराधना सभाओं में और विन्यार्ड पासबानों की प्रांतीय सभा के दौरान भी आत्मा की अलौकिक वर्षा भेजने लगा। इसकी खबर विन्यार्ड कलीसियाओं के अन्य पासबानों को मिली जिसमें टोरोंटो के जॉन और कैरल आर्नाट शामिल थे।

सन 1994 – वर्तमान समय : टोरोंटो बेदारी, टोरोंटो एयरपोर्ट क्रिश्चियन फेलोशिप चर्च

पास्टर जॉन और कैरल आर्नाट और टोरोंटो एयरपोर्ट क्रिश्चियन फेलोशिप चर्च (जो उस समय टोरोंटो एयरपोर्ट विन्यार्ड के रूप में जाना जाता था), परमेश्वर की बेदारी के लिए प्रार्थना कर रहा था। जॉन और कैरल आर्नाट परमेश्वर के लिए भूखे थे और अन्य स्थानों में परमेश्वर जो कर रहा था उसे वे अनुभव करने गए। सबसे बड़ी बात जो नोव्हेंबर 1993 में हुई वह यह थी कि जॉन और कैरल आर्नाट ने क्लॉडिओ फ्रिज़डन के द्वारा सामर्थी दान प्राप्त किया, जिन्हें परमेश्वर सामर्थी रूप से अर्जेंटिना में इस्तेमाल कर रहा था। परंतु उनके मन में, उन्होंने परमेश्वर की बेदारी के विषय में ऐसी कल्पना की जहां पर वे विशाल संख्या में लोगों को उद्धार और चंगाई पाते हुए देख सकें, वे उस आनंद को भी देखना चाहते थे जो ऐसा फल देखते समय प्राप्त होता है। जनवरी 1994 में, वे सेंट लुईस, मिसूरी के विन्यार्ड क्रिश्चियन फेलोशिप के पासबान रैंडी क्लार्क के साथ बेदारी पर चार दिन की सभा का आयोजन कर रहे थे। गुरूवार, जनवरी 20, 1994 की प्रारंभिक रात्री में, मात्र 120 लोग उपस्थित थे। उनकी गवाही बताने के बाद, सेवकाई का समय आरम्भ हुआ जिसमें रैंडी ने लोगों को वेदी के पास आने का निमंत्रण दिया। परमेश्वर की अनोखी उपस्थिति ने कमरे में प्रवेश किया। लोग कांपने लगे, हिलने लगे, कुछ लोग पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर ज़मीन पर गिर पड़े; कुछ लोग हंस रहे थे, रो रहे थे और अन्य–अन्य भाषाओं में बोल रहे थे। कुछ लोग प्रार्थना के लिए मंच पर पहुंचने से पहले ही परमेश्वर की उपस्थिति से अभिभूत हो गए थे। जो बैठे हुए थे उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति ने छू लिया था और वे ज़मीन पर गिर पड़े थे और कई घंटों तक उठ नहीं पा रहे थे। पास के कमरे में बाइबल अध्ययन कर रहे लोगों ने असामान्य उपस्थिति को महसूस किया, वे ज़मीन पर गिर पड़े और परमेश्वर की स्तुति करने लगे। आने वाली रात्री की सभाओं में लोगों की संख्या बढ़ती रही और परमेश्वर की अनोखी बेदारी जारी रही। बेदारी उस तरह प्रकट नहीं हुई जैसे उसकी अपेक्षा की गई थी। वस्तुतः यह असामान्य था, लोग हंस रहे थे, रो रहे थे, ज़मीन पर लोट रहे थे और विचित्र प्रकटन हो रहे थे। परंतु कुंजी यह थी कि वे पिता के प्रेम को अनुभव कर रहे थे और उसका स्पर्श पाकर भावनात्मक और शारीरिक चंगाई प्राप्त कर रहे थे।

बताया जाता है कि 1995 के अंत तक विश्व के प्रायः प्रत्येक राष्ट्र से 600,000 लोगों ने टोरोंटो को भेंट दी है। उसी वर्ष पहली बार 900 लोगों का उद्धार हुआ। विश्वभर की कई कलीसियाओं और सेवकाइयों ने टोरोंटो आशीष का प्रभाव अनुभव किया है। इनमें से कुछ में यू. के. की होली ट्रिनिटी कलीसिया, बेथेल चर्च रेडिंग, कैलिफोर्निया; और आयरीस मिनिस्ट्रीज़ के हाइडी और रोलंड बेकर आदि का समावेश है। वहां 20 वर्षों से अधिक समय बीत चुका है, और बेदारी अब भी जारी है – इसका एक भाग है परमेश्वर की उपस्थिति और बड़ी महिमा की वर्तमान बेदारी।

1995–2000 : फ्लोरिडा के पेन्साकोला की ब्राऊन्सविल असेम्ब्ली ऑफ गॉड में बेदारी

वह जून 18, 1995 (फादर्स डे) का दिन था, पेन्साकोला की ब्राऊन्सविल असेम्ब्ली ऑफ गॉड (brownsvilleag.org) में रविवार की दूसरी आराधना थी। सुसमाचार प्रचारक स्टीफन हिल (1954–2014) को उस सुबह वक्ता के रूप में बुलाया गया था, जहां पर उन्होंने अपने संदेश के रूप में लंडन के होली ट्रिनिटी ब्रॉम्पटन एंग्लीकन कलीसिया के अपने अनुभव के विषय में बताया। पृष्ठभूमि के रूप में, गौर करें कि साउथवेस्ट लंडन विन्यार्ड के वरिष्ठ पासबान जॉन मम्फोर्ड की पत्नी एलिनोर मम्फोर्ड अप्रैल 1994 को टोरोंटो की सभा में हिस्सा लेने गई थीं। इंग्लैंड आने पर, उन्होंने होली ट्रिनिटी ब्रॉम्पटन एंग्लीकन कलीसिया में अपने अनुभव के विषय में बताया और वहां पर बेदारी आई, और फैल गई। स्टीफन हिल होली ट्रिनिटी ब्रॉम्पटन एंग्लीकन चर्च गए जहां बेदारी चल रही थी और वहां पर उस समय की पासबान सैंडी मिलर ने उन पर हाथ रख कर प्रार्थना की। उस सुबह जब स्टीफन हिल ब्राऊन्सविल के अपने अनुभव बता रहे थे, तब लोगों ने परमेश्वर की सामर्थ के असाधारण कार्य को अनुभव किया और सभा घंटों तक चलती रही। पासबान जॉन किलपैट्रिक और ब्राऊन्सविल के अगुवे 1993 से बेदारी के लिए प्रार्थना कर रहे थे। उन्होंने जाना कि परमेश्वर कार्य कर रहा है और यह उसके साथ आगे बढ़ने का समय था। बेदारी की सभाएं उसी सप्ताह आरम्भ हुईं और अगले पांच वर्षों तक जारी रहीं। संसार के कुछ 30 लाख लोग व्यक्तिगत तौर पर आए कि पेन्साकोला बेदारी (पेन्साकोला की आत्मा की वर्षा) का अनुभव ले सके। लोग शाम 7 बजे की सभा में भाग लेने के लिए घंटों बाहर इंतज़ार करते थे जो कि बुधवार से लेकर शनिवार तक मध्यरात्रि के बाद तक चलती रहती थी। आवेशपूर्ण प्रचार था, पश्चाताप के लिए बुलाहट थी, पाप का एहसास था और आत्मिक नवीनीकरण था, लोग प्रार्थना कर रहे थे : "आग! आग! प्रभु, और!" कई लोग परमेश्वर की उपस्थिति से अभिभूत हो गए। ब्राऊन्सविल रिवाइवल स्कूल ऑफ मिनिस्ट्री (BRSM) का आरम्भ हुआ और उसके पदवीधरों को 122 राष्ट्रों में भेजा गया। परंतु, ब्राऊन्सविल के मुख्य अगुवों की टीम बिखरने लगी। सुसमाचार प्रचारक स्टीफन हिल सन 2000 में सुसमाचार प्रचार के कार्य के लिए छोड़कर चले गए। ब्राऊन्सविल रिवाइवल स्कूल ऑफ मिनिस्ट्री के अगुवे, माइकल ब्राऊन को सन 2000 में निकाल दिया गया। वरिष्ठ पासबान जॉन किलपैट्रिक और ब्राऊन्सविल के आराधना संचालक लिंडेन कूली दोनों ने 2003 में इस्तिफा दे दिया। हम सारी बातों को नहीं जानते, परंतु जब कलीसिया के अगुवों ने छोड़ दिया, तब मंडली के कई लोग आहत और निराश हो गए, उन्हें लगा कि उनके साथ विश्वासघात हुआ है। कलीसिया भारी आर्थिक कर्ज में आ गई। मंडली के कई लोग परिणामस्वरूप छोड़कर चले गए। परंतु, ब्राऊन्सविल में जो कुछ हुआ उससे कइयों को बड़ी आशीष प्राप्त हुई। कलीसिया के कुछ इतिहासकारों ने ब्राऊन्सविल की बेदारी को बीसवीं सदी का कलीसिया पर आधारित सबसे महत्वपूर्ण नवीनीकरण कहा है।

सन 2006–2007 : शिलाँग बेदारी, भारत

1904 की वेल्श बेदारी की आग 1906 में शिलाँग (मेघालय की राजधानी) की खासी पहाड़ियों में पहुंच गई और वहां से उत्तर–पूर्व भारत में फैल गई। प्रेस्बिटेरियन कलीसिया की शताब्दी की तैयारी के 2 वर्ष पहले कलीसिया परमेश्वर की दूसरी बेदारी के लिए प्रार्थना करने लगी। मैरंग प्रेस्बिटेरियन चर्च में करीब 1,50,000 लोंगो की बड़ी भीड़ के मध्य, बेदारी शताब्दी के स्मरणोत्सव की दोपहर की आराधना सभा में अप्रैल 2006 में बेदारी आरम्भ हुई। लोग बारीश में भी घंटों तक गा रहे थे और प्रार्थना कर रहे थे। बेदारी इस क्षेत्र में फैल गई जिसने इस क्षेत्र की कई स्थानीय कलीसियाओं को, मुख्य रूप से प्रेस्बिटेरियन कलीसियाओं को प्रभावित किया। पवित्र आत्मा ने लोगों को कायल किया और आश्चर्यजनक रूप से उनका उद्धार हुआ। शराबियों ने छुटकारा पाया और टूटे हुए परिवार जुड़ गए।

बच्चों के साथ हुई असामान्य घटनाओं की खबर सुनाई जाने लगी, बच्चों ने और अन्य लोगों ने यीशु का, स्वर्ग और नर्क का दर्शन प्राप्त किया। स्कूल की नियमित कक्षाओं में रुकावट आई क्योंकि बच्चों पर पवित्र आत्मा उतर आया। और वे अपने आप गाने और प्रार्थना करने लगे। सिंतबर 5, 2006 को शिलाँग के माल्की प्रेस्बिटेरियन चर्च में एक साधारण लकड़ी का क्रूस चमकने लगा और उसका चमकना कई दिनों तक जारी रहा।

2015 वर्तमान समय : कैल्वरी टेम्पल, हैद्राबाद, भारत

पास्टर सतीश कुमार ने सन 2005 में 25 लोगों के साथ कैल्वरी टेम्पल (calvarytemple.in) की शुरूवात की। सन 2015 में, कलीसिया की उपस्थिति 1,30,000 हो गई और बढ़ने लगी। कैल्वरी टेम्पल में परमेश्वर के वचन के प्रचार और शिक्षा पर ज़ोर था। परमेश्वर कैल्वरी टेम्पल में जो कुछ कर रहा है इस विषय में संचार माध्यम (टेलीव्हिजन) के उपयोग से व्यापक तौर पर लोगों को पता चलता रहा।

यह वर्तमान बेदारी : उपस्थिति और महिमा

आज जो कुछ हो रहा है वह ऐसी बेदारी है जो परमेश्वर की उपस्थिति और उसकी महिमा के प्रकटीकरण पर ज़ोर देती है, केवल चंगाइयों, चिन्ह्, चमत्कारों, सामर्थ के कामों, आत्मा के वरदानों के द्वारा नहीं, परंतु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परमेश्वर कौन है यह दिखाकर। *महत्व परमेश्वर की उपस्थिति का स्वागत करने और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसकी महिमा के वाहक बनने पर है।* हम सीख रहें और खोज रहे हैं कि आत्मा की वर्षा या जागृति को अनुभव करने के लिए क्या लगता है, परंतु साथ–ही–साथ हम ऐसे क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं जहां पर हम इसे परमेश्वर का निवासस्थान और परमेश्वर का कार्य बना सकते हैं। यह बेदारी उन सारी बातों का विकास जो पिछले समयों में हुआ, खोदे गए कई कुओं से जल निकालना है, कलीसिया को जो दिया गया उसे मज़बूत बनाना है और यहां से और ऊंचा उठना है, और आगे एवं गहराई में जाना है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में, मसीही सेवकाई के विभिन्न स्तरों में कई स्त्री पुरुष हैं जिन्हें परमेश्वर उपयोग कर रहा है ताकि उसके लोगों को उसकी और प्रकट महिमा अनुभव करने में सहायता करें। कुछ सुविख्यात अगुवें इस प्रकार हैं : : बिशप बिल हैमन (christianinternational.com), पास्टर रॉड्नी हॉवर्ड ब्राउन (revival.com), जॉन और कैरल आर्नाट (catchthefire.com), रैंडी क्लार्क (globalawakening.com), बिल जॉन्सन (ibethel.org), हाईडी बेकर (irisglobal.org). अर्थात् विश्वभर में अन्य कई हैं।

महत्वपूर्ण : आत्मा की अन्य कई वृष्टियां, नवीनीकरण और बेदारियां घटित हुई हैं, और अन्य कई स्त्री और पुरुषों ने बड़े–बड़े काम किए हैं। कुछ व्यावहारिक प्रतिबंधों के कारण उनकी सूची यहां नहीं दी गई है। उपर्युक्त समय रेखा में हमारा उद्देश्य है सुधार, बेदारियों, और मिशनों के संदर्भ में आत्मा के कार्य को समझना।

मुख्य अवलोकन

कलीसिया की समय रेखा का पुनरावलोकन करते समय कुछ मुख्य निरीक्षण इस प्रकार किए जा सकते हैं :

1, सुधार, बेदारी, पुनर्स्थापन, मिशन और कलीसिया की उन्नति

सुधार बेदारी के लिए मार्ग तैयार करता है। बेदारी का परिणाम कलीसिया के पुनर्स्थापन में होता है और वह मिशनों और कलीसिया की उन्नति को प्रेरणा प्रदान करता है।

सुधार आत्मिक सत्य की खोज और उसे पंक्तिबद्ध करना है।

बेदारी हम में परमेश्वर की उपस्थिति और कार्य के बढ़ते हुए पैमाने को भर देती है।

पुनर्स्थापन कलीसिया को नए स्तर पर जीने के लिए उठाता है, परमेश्वर ने कलीसिया में जो लाया है उसमें नए मशकों और नई संस्कृति के साथ अनुकूलन करते हुए।

मिशन और कलीसियाई उन्नति पड़ोसी समुदाय से लेकर दूर के प्रांतों से आरम्भ करते हुए, संसार पर प्रभाव डालने हेतु कलीसिया को प्रेरित करती है।

2, विश्व बेदारी के ऋतु आ रहे हैं

विश्व बेदारी के ऋतु रहे हैं, जहां कलीसिया ने एक ही समय में कई क्षेत्रों में बेदारी का अनुभव किया है।

उदाहरण के तौर पर :

1725–1750 : पहली महान जागृति के दौरान, हम उत्तर अमेरिका, स्कॉटलैंड, इंग्लैंड और जर्मनी में लगभग एक ही समय में आत्मा के सामर्थी कार्य को देखते हैं। एक स्थान की बेदारी की कहानियों ने दूसरे स्थान में बेदारी की आग लगाने में सहायता की। एक स्थान में बेदारी लाने वाले जिन प्रचारकों को उपयोग किया जा रहा था, वे अन्य क्षेत्रों में भी बेदारी की आग को ईंधन देने हेतु सामर्थ के साथ उपयोग किए गए।

पूरे विश्व में बेदारी के ऋतु देखें गए हैं, जहां पर कई कलीसियाओं ने एक ही समय में बेदारी का अनुभव किया है।

सन 1780–1810 : इंग्लैंड में दूसरी बड़ी जागृति जो उत्तर अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, यूरोप और विश्व के अन्य भागों में फैल गई।

सन 1830–1840 : महान बेदारी (या तीसरी महान जागृति) फिर से उत्तर अमेरिका और यूरोप में महसूस की गई।

सन 1857–1858 : द लेमन्स प्रेयर रिवाइवल या सामान्य विश्वासियों की प्रार्थना बेदारी जिसका आरम्भ न्यू यॉर्क में हुआ, उसने उत्तर आयर्लंड, वेल्श, स्कॉटलैंड, इंग्लैंड, जमाइका, दक्षिण आफ्रिका को प्रज्वलित किया।

सन 1900–1910 : पेन्टिकॉस्टल बेदारी के दौरान, हम संपूर्ण विश्व में प्रायः प्रत्येक द्वीपखंड पर बेदारियों को घटित होते देखते हैं। इसलिए हम समझ सकते हैं कि परमेश्वर एक क्षेत्र में जो भेज रहा है, उसी को विश्व के अन्य क्षेत्रों में भी दोहराया जाएगा। यह उसका कार्य करने का तरीका रहा है, जैसा कि कलीसिया के इतिहास में देखा गया।

परमेश्वर उसकी कलीसिया को आगे बढ़ा रहा है। यह बेदारियां, आत्मा की वर्षा, और परमेश्वर के आत्मा का सामर्थ के साथ मंडराना हो रहा है। आत्मा जो कुछ कर रहा है, उसके अनुरूप हमें कार्य करना है। अन्य स्थानों में परमेश्वर जो कुछ कर रहा है उसके साथ अनुरूप होकर हमें आगे बढ़ना है। हमें पद्धतियों, स्वरूपों, रचनाओं या कार्यक्रमों की नकल नहीं करना है। बल्कि परमेश्वर जो भेज रहा है, उसके सत्य को, प्रकटीकरण को और आत्मिक विशेषताओं को अपनाना है। इसी रीति से हम उस विश्वास, बल और महिमा के स्तर पर बने रह सकते हैं, जिसमें वह अपनी कलीसिया को ला रहा है।

3. जो बेदारी से प्रज्वलित हुए वे बेदारी के वाहक बने

जो व्यक्ति/मिशनरी बेदारी से प्रेरित और प्रज्वलित हुए वे अन्य क्षेत्रों में बेदारी ले जाने वाले बने। यह बेदारी के संपूर्ण इतिहास में निरंतर होता रहा। कुछ मामलों में, हम लोगों को साभिप्राय रूप से ऐसे किसी स्थान में जाते देखते हैं जहां बेदारी की आग जलती रहती है ताकि वे 'उस ज्वाला को थाम लें' और बेदारी के वाहक बनें।

4, लक्ष्य पर केन्द्रित, साभिप्राय परमेश्वर की खोज अक्सर बेदारी का मार्ग प्रशस्त करती है

व्यक्ति या व्यक्ति के समूहों द्वारा लक्ष्य पर केन्द्रित, साभिप्राय परमेश्वर की खोज अक्सर बेदारी का मार्ग प्रशस्त करती है।

5. बेदारी की कहानियां बताने से अक्सर बेदारी प्रज्वलित होती है

"कलीसिया के इतिहास में ऐसे उदाहरण रहे हैं जब परमेश्वर के अद्‌भुत कामों के विषय में बार–बार बताकर विश्वसनीय मध्यस्थों की अपेक्षाओं को पुनः प्रज्वलित किया गया है और दूसरी जागृति का मार्ग तैयार किया गया है।" – जे एड्विन ऑर

जब बेदारी की मूल कहानियां बताई जाती हैं, तब परमेश्वर उनका उपयोग लोगों के हृदयों को प्रोत्साहित करने के लिए करता है, जिससे बेदारी ले चलने वालों द्वारा बेदारी की कहानियां फिर बताने से संपूर्ण देश में बेदारी की ज्वाला प्रज्वलित हो जाती है।

4.

सुधारक और सुधार

हमें सुधार, बेदारी, पुनर्स्थापन और मिशनों के मध्य जो **संबंध** है उसे पहचानना है।

सामान्य तौर पर, सुधार किसी बात या व्यक्ति में दोष या समस्याओं को हटाकर या सुधारकर सुधार लाने की प्रक्रिया है।

कई उदाहरणों में सुधारकों ने और सुधार के उनके कार्य ने बेदारियों (और कुछ मामलों में, बेदारी लाने वालों) का मार्ग प्रशस्त किया।

सुधार बेदारी के लिए मार्ग तैयार करता है, जो पुनर्स्थापन की ओर ले जाता है और अंततः कलीसिया और/या मिशनरी आंदालनों को जन्म देता है जो संसार को सुसमाचार सुनाते हैं।

कुछ सुविख्यात सुधारक, जिनका हमने पिछले अध्याय में उल्लेख किया है, उनमें इनका समावेश है : जॉन हस, मार्टिन लूथर, जॉन कैल्विन, जॉन नॉक्स और जॉर्ज फॉक्स।

सुधारक – उनकी विशेषताएं

#1, उनके पास प्रकाशन था और परमेश्वर के साथ उनके अपने रिश्ते में गहराई थी।

#2, उनके पास आवश्यकता पड़ने पर अकेले खड़े रहने की ताकद थी (जो कि हमेशा रहती थी)।

#3, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक प्रणालियां विशाल और भयकारक होते हुए भी, उनके पास सच बोलने का ढाढ़स था।

#4, जिस सत्य पर वे विश्वास करते थे उस सत्य के लिए अपनी जान देने के लिए वे तैयार थे।

#5, जब कभी संभव होता था, वे अपने संदेश की घोषणा करने हेतु साधनों और मंचों का उपयोग करते थे।

आज कलीसियाओं को सुधारकों की ज़रूरत है

सुधारक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे उन बातों को सम्बोधित करने से नहीं डरते जो वास्तव में कलीसिया को आगे बढ़ने से और बेदारी का अनुभव करने से रोक रही हैं। सुधारक सत्य का ऐलान करने और विद्यमान परिस्थिति को चुनौती देने के लिए उठ खड़े होते हैं। वे हमारे आंखों पर पड़े पर्दे को पहचानने में हमारी सहायता करते हैं। वे हमें सीमाओं को तोड़ने में सहायता करते हैं जो हमने खुद पर लादी हैं। वे हमें उन बातों के साथ व्यवहार करने में सहायता करते हैं जिन्हें हमने मानदंड़ों के रूप में स्वीकार किया है, परंतु वे ऐसी बातें बन गई हैं जो हमें उस अगले स्तर की ओर बढ़ने से रोकती हैं जिसमें परमेश्वर हमें प्रवेश करवाना चाहता है।

5

बेदारी की कुछ कहानियां

जैसा कि हमने कलीसिया की समय रेखा के पिछले अध्यायों में देखा है, इस विश्व में कई बेदारियां हुई हैं। इस अध्याय में, हम कुछ चुनिंदा बेदारियों का अवलोकन करेंगे ताकि उनसे विचार करने योग्य व्यवहारिक सबक प्राप्त कर सकें।

सन 1727 : मोरावियन बेदारी और काऊंट ज़िंज़ेन्डॉर्फ

सन 1722 में, बोहेमिया और मोराविया (आधुनिक झेकोस्लावाकिया) में कैथोलिक कलीसिया के सताव से भागकर कुछ प्रोटेस्टंट मोरावियन परिवारों ने एक धनवान जवान की रियासत में आश्रय लिया, वह जवान व्यक्ति था काऊंट निकोलस लडविग वॉन ज़िंज़ेन्डॉर्फ (1700–1760), और उसने जर्मनी में हर्नहट (प्रभु का पहरा) समुदाय का निर्माण किया। यह नया समुदाय और कई मोरावियन निर्वासितों के लिए एक उपनिवेश बन गया। 1726 तक, इस समुदाय में 300 मोरावियन रहते थे।

इस समुदाय की विविधता के कारण उसके उपनिवेशकों के मध्य मतभेद और लड़ाई–झगड़ा उत्पन्न हुआ। मई 12, 1727 को, ज़िंज़ेन्डॉर्फ जो केवल 27 वर्ष के थे, उन्होंने मसीही एकता की धन्यता पर समुदाय को तीन घटों तक सम्बोधित किया। "समुदाय या सहभागिता के बगैर कोई मसीही समुदाय नहीं हो सकता," उन्होंने लोगों को उपदेश दिया। लोगों ने दुख के साथ अपने पिछले लड़ाई–झगड़ों को कबूल किया और प्रेम और सादगी से रहने का वचन दिया हर्नहट मसीह की जीवित मण्डली बन गई।

बुधवार अगस्त 13, 1727 को, हर्नहट समुदाय ने बर्थेल्सडॉर्फ पैरिश चर्च की पड़ोस की मण्डली के साथ सामुहिक प्रभुभोज में हिस्सा लिया। आराधना के दौरान, उन्होंने खुद के लिए, अपने साथी मसीहियों के लिए जिन्हें आज भी सताया जा रहा था, और अखंड एकता के लिए आग्रह के साथ प्रार्थना की। प्रभुभोज की आराधना के दौरान, पूरी मण्डली ने पवित्र आत्मा की सामर्थी उपस्थिति को महसूस किया और महसूस किया कि उनके पिछले मतभेद दूर हो गए हैं। जर्मन की मोरावियन आबादी आत्मा की जागृति से अभिभूत हो गई। काऊंट निकोलस ज़िंज़ेन्डॉर्फ ने कहा कि यह मानो स्वर्ग में रहने के समान था। इस बेदारी के दो सप्ताह बाद 24 पुरुष और स्त्रियों ने आपस में वाचा बांधी कि वे प्रतिदिन, रात और दिन मण्डली पर और उसके गवाहों पर परमेश्वर की आशीष के लिए प्रार्थना करेंगे।

100 वर्षों से अधिक समय से, मोरावियन कलीसिया के सदस्यों ने इस "एक घटे की मध्यस्थी" को लगातार अखंड़ित रूप से ज़ारी रखा। मोरावियन साहस कार्य शुरू हो गए थे, जो प्रार्थना से घिरे हुए और प्रार्थना में पूर्णता तक पहुंचे थे। उन्हें परमेश्वर के सुखी लोग" के रूप में पहचाना जाने लगा। पहले पिन्तेकुस्त के समान ये स्त्री और पुरुष सुसमाचार लेकर हर्नहट से पृथ्वी के छोर तक गए। 1732 में दो जवान पुरुष, पहले मिशनरियों ने यह इच्छा व्यक्त की कि वेस्ट इंडीज़ के गुलामों को यदि सुसमाचार सुनाने के लिए आवश्यक हुआ तो, वे गुलाम बनने के लिए तैयार हैं।

अगले करीब 35 वर्षों के अंदर, उन्होंने करीब 226 मिशनरियों को भेजा, दो सदियों में पूरे प्रोटेस्टंट लोगों ने जिन्हें भेजा था उनसे अधिक। इस अनुभव ने मोरावियन बेदारी की शुरूवात की, और प्रोटेस्टंट विश्व मिशन आंदोलन का आरम्भ किया। मोरावियन कलीसिया ने पूरे संसार में मिशनरी भेजे : एमस्टरडॅम, अल्जेरिया, कांस्टॅन्टिनोपल, ग्रीनलैंड, जॉर्जिया, गिनी कोस्ट (आफ्रीका), लैपलैंड, उत्तर अमेरिकन निवासी जनजातियां, रोमानिया, तुर्कस्तान, दक्षिण आफ्रीका, सुरिनाम और श्रीलंका (सिलोन)। 600 से कम लोगों के समुदाय से 70 से अधिक मिशनरी मिशन क्षेत्रों में भेजे गए।

विलियम कॅरी, जॉर्ज व्हिटफील्ड, जॉन वेस्ली और अन्य कई लोगों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मोरावियन बेदारी को प्रभावित किया। 18वीं सदी की अमेरिका और इंग्लैंड की बेदारियां मोरावियन मिशन और आंदोलनों से प्रभावित थीं। इंग्लैंड के मोरावियन मिशनरी पीटर बोलर ने जॉन वेस्ली को सलाह दी और उन्हें उद्धार की ओर लाया, जो बाद में इंग्लैंड की बेदारी के अगुवे बने।

मनन

एकता : हम देखते हैं कि मोरावियन समुदाय ने अपने पिछले लड़ाई–झगड़ों को और मतभेदों को हटाकर रखा और वे एकजुट होकर इकट्ठा हुए।

पवित्र आत्मा को प्रतिउत्तर देना : हम यह भी देखते हैं कि ऐसे ही एक संयुक्त सम्मेलन में, परमेश्वर के आत्मा ने असामान्य उपस्थिति के साथ उन पर अनुग्रह किया। महत्वपूर्ण यह है कि उन्होंने अखंड, निरंतर प्रार्थना और परमेश्वर की खोज के साथ परमेश्वर के आत्मा के अनोखे कार्य को पहचाना और उत्तर दिया।

प्रार्थना जिसने बेदारी और विश्व मिशनों को ईंधन डाला : इसके परिणामस्वरूप न केवल यह समुदाय 100 वर्षों तक बेदारी (नवीनीकरण) में रहा, बल्कि उसने परमेश्वर की जागृति का उदय किया जहां स्त्री और पुरुष मिशनरी आत्मा के इस कार्य की आग संसार के कई अन्य भागों में ले गए।

1800 दूसरी बड़ी बेदारी

उत्तर अमेरिका की आत्मिक और नैतिक दशा बुरी थी। बैप्टिस्ट, मेथडिस्ट, लूथरन और एपिस्कोपेलियन कलीसियाओं में गिरजाघरों की उपस्थिति घटती जा रही थी। कॉलेज में मसीहियों की संख्या दुर्लभ थी। हॉर्वर्ड में विद्यार्थियों के बीच एक भी विश्वासी नहीं था और प्रिन्सटन में पूरे विद्यार्थियों में केवल दो विश्वासी थे।

बेदारी के अग्रदूत

1794 में, जब आत्मिक और नैतिक परिस्थितियां बुरी हालात में थीं, तब न्यू इंग्लैंड क्षेत्र के एक बैप्टिस्ट पासबान आयज़ैक बैकस ने संपूर्ण अमेरिका में विभिन्न फिरकों के पासबानों को बेदारी के लिए प्रार्थना करने हेतु आग्रहपूर्ण निवेदन भेजा। **संपूर्ण अमेरिका की कलीसियाएं** बेदारी के लिए प्रार्थना में एकजुट हुई, उन्होंने प्रार्थना का एक नेटवर्क तैयार किया और प्रत्येक महिने का पहला सोमवार प्रार्थना के लिए अलग रखा। 1794 के जाड़े में, न्यू इंग्लैंड के 23 सेवक इकट्ठा हुए और वे इस बात पर सहमत हुए कि उन्हें उनकी कलीसिया के लोगों को बेदारी के लिए प्रार्थना करने हेतु बुलाने की ज़रूरत है। जल्द ही संपूर्ण देश के **मसीहियों ने छोटे प्रार्थना दल तैयार किए और वे प्रार्थना करने लगे,** उन्होंने महीने में एक दिन प्रार्थना के लिए अलग किया और हर शनिवार की सुबह आधा घंटा प्रार्थना करने लगे। उचित समय में बेदारी की आग भड़कने लगी।

लोगन काऊंटी, केंटूकी में बेदारी

केंटूकी में, बेदारी की अग्नि को प्रज्वलित करने हेतु लोगन काऊंटी, केंटूकी की गैस्पर, रेड और मडी रिवर्स पर बसी तीन छोटी मण्डलियों के प्रेस्बिटेरियन पासबान जेम्स मैकग्रिडी को परमेश्वर ने उपयोग किया। 1796 में, मैकग्रिडी हर शनिवार और रविवार की सुबह अपनी मण्डली को बेदारी के लिए प्रार्थना करने हेतु, और हर महीने के तीसरे शनिवार उपवास के साथ प्रार्थना करने हेतु अगुवाई करने लगे, ये मण्डलियां संख्या में छोटी थीं, सबसे बड़ी मण्डली में 25 लोग थे। उन्होंने ऐसा **चार साल तक** जारी रखा, बदलाव का कोई चिन्ह् नज़र नहीं आ रहा था। उसके बाद जून 1800 में, चार दिन की सभा के बाद जो मैकग्रिडी के रेड रिवर चर्च में पूरे सप्ताह अंत तक चलती रही, परमेश्वर का आत्मा सामर्थी रूप से कार्य करने लगा और लोगों की आंखों में आंसू ले आया। अंतिम दिन, दो प्रवासी मेथडिस्ट सेवकों ने सभा की अगुवाई की और कई लोगों का जीवन छू लिया गया, वे फूट–फूटकर रोने लगे, और कुछ गिर पड़े क्योंकि पवित्र आत्मा उनके मध्य कार्य कर रहा था। टेनेस्सी के एक पासबान विलियम मैक्गी ने जो कुछ इस बेदारी में देखा, उसके विषय में लिखा *"...लोग रो रहे थे और चिल्ला रहे थे, अन्य कुछ पाप के गंभीर एहसास से ज़मीन पर गिर रहे थे, प्रार्थना कर रहे थे, रो रहे थे, और परमेश्वर को उनके व्यक्तिगत उद्धार के आश्वासन के लिए खोज रहे थे।"* उसी वर्ष के जुलाई महीने में गैस्पर रिवर चर्च में एक सभा बुलाई गई, जिसमें भाग लेने के लिए लोग 100 मील से अधिक दूरी तय करके आए। लोग इस इंतज़ार में आए कि "आत्मा फिर से उतर आए" और वे तब तक रुके रहने की तैयारी से आए जब तक कि बेदारी नहीं आती। **गहरे प्रकाशनों के साथ आत्मा की बड़ी जागृति थी।** जल्द ही बड़ी सभाओं को "कैम्प मीटिंग्स" नाम दिया गया।

केन रिज, केंटूकी की बेदारी

पास्टर बार्टन डब्लू. स्टोन, कॉंकार्ड और केन रिज प्रेस्बिटेरियन कलीसियाओं के पासबान थे, जो बोबोर्न काउंटी, केंटूकी में स्थित थी। रेड रिवर चर्च की सभाओं में हिस्सा लेने पर, **वे यह बेदारी वापस अपनी दो मण्डलियों में ले गए।** अन्य कई सेवकों के साथ, बार्टन स्टोन ने केन रिज में अगस्त 6, 1801 को कैम्प सभा का आयोजन किया। यह संख्या बढ़कर अनुमानतः 25,000 हो गई, **असामान्य चिन्ह्, चमत्कार, और प्रकटीकरण होने लगे।** प्रेस्बिटेरियन, मेथडिस्ट और बैप्टिस्ट सेवकों ने और अन्य लोगों ने प्रचार टीमें तैयार की, वे एक ही समय में कैम्प मैदानों के विभिन्न भागों में प्रचार करने लगे, सभी का लक्ष्य लोगों को उद्धार पाते हुए देखना था। वहां उपस्थित जेम्स क्रॉफोर्ड नामक एक सेवक ने बताया कि **वहां करीब 3,000 लोग ज़मीन पर, "आत्मा में गिरे हुए थे।"** कुछ तो ज़ोर–ज़ोर से हंस रहे थे, और कुछ दौड़ रहे थे और चिल्ला रहे थे। कुछ कुत्तों के समान दौड़ते हुए भौंक रहे थे और पेड़ों के तनों को पकड़ रहे थे, और पश्चाताप करते हुए रो रहे थे। लोगों ने "शैतान को पेड़ से बांध दिया था", इस प्रकटीकरण को यही नाम दिया गया। जेम्स फिन्ले, जो मेथडिस्ट प्रचारक बन गया, उसने जो कुछ देखा उसका इस प्रकार वर्णन किया : *"वह आवाज़ नायगरा के गर्जन के समान थी। मनुष्य का विशाल समुद्र में मानो तूफान से हलचल मची थी। मैंने सात पासबानों को गिना, जो एक ही समय में प्रचार कर रहे थे, कुछ पेड़ के ठूंठ पर बैठे थे, अन्य कुछ गाड़ियों में और एक पेड़ पर खड़ा था जो दूसरे पेड़ के पास गिरा था।"*

इसके संख्यात्मक परिणाम आत्मिक प्रकटीकरण के रूप में आश्चर्यजनक थे। 1800–1803 के बीच केवल केंटूकी में, बैप्टिस्ट कलीसियाओं में 10,000 नए सदस्य शामिल हुए, और मेथडिस्ट कलीसिया में 40,000। वस्तुतः प्रत्येक डिनॉमिनेशन ने बेदारी के फल का अनुभव किया। बेदारी की आग देश के अन्य भागों में फैल गई।

कॉलेज के आवासों में बेदारी

उत्तर अमेरिकन पूर्वी तट के अधिकतर कॉलेजों पर कम आत्मिक प्रभाव था, कई विद्यार्थी घमंड के साथ नास्तिक होने का दावा करते थे। परंतु, परमेश्वर ने इन्हीं कॉलेजेस को सामर्थी रूप से भेंट दी। येल विश्वविद्यालय में जोनाथन का नाती अध्यक्ष तीमथी ड्वाईट मसीही विश्वास पर सात वर्षों से प्रचार कर रहा था। 1801 में, उसने ध

र्म में अविश्वास पर कई संदेश दिए। विद्यार्थियों की आधी संख्या ने मसीह पर अपना विश्वास व्यक्त किया। बेदारी की आग ने डार्टमाऊथ, विलियम्स और अन्य कॉलेजों को भी अपने वश में कर लिया और वह आग वहां से नगरों और शहरों में फैल गई।

चिंतन

प्रार्थना : इस बेदारी के महत्वपूर्ण अग्रदूतों में से एक था संयुक्त रूप से, लगातार और व्यापक तौर पर बेदारी के लिए प्रार्थना करना।

असामान्य प्रकटीकरण : असामान्य प्रकटीकरणों ने बहुत विवाद उत्पन्न किया और कई प्रेस्बिटेरियन, बैप्टिस्ट और मेथडिस्ट सेवक अचंभित रह गए। अच्छी बात यह है कि इन सेवकों ने उत्पन्न होने वाले फल को पहचाना, जो था पश्चाताप और बदले हुए जीवन। इसलिए वे इस बेदारी में आगे बढ़ गए।

समुदायों में परिवर्तन : उस समय लोगन काऊंटी में कई प्रकार के अपराधी थे और अन्य कई थे जो सब प्रकार की बुराइयों में लिप्त थे, परंतु इस स्थान पर और कॉलेज के आवासों पर आई बेदारी का समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

1857 में सामान्य विश्वासियों की प्रार्थना बेदारी, न्यू यॉर्क

1857–1858 की बेदारी अमेरिका के इतिहास में सबसे बड़ी और सर्वव्यापी बेदारी थी। 1857 एक मुश्किल वर्ष था क्योंकि व्यापारों में गिरावट आ रही थी। 14 अक्टूबर 1857 को यूनाइटेड स्टेट्स की बैंक प्रणाली में गिरावट आई, जिसका न्यू यॉर्क, फिलाडेल्फिया, बोस्टन ओर राष्ट्रभर के औद्योगिक शहरों पर भारी असर पड़ा। न्यू यॉर्क में 30,000 लोग बेरोज़गार हो गए। दूसरी ओर, चार्ल्स फिनी, वॉल्टर और फिबी पामर के प्रचार से, बेदारी के लिए गहरी भूख ने कई लोगों के हृदयों को प्रज्वलित कर दिया। **1840 में बोस्टन का पार्क स्ट्रीट चर्च बेदारी के लिए प्रार्थना करने लगा।** बोस्टन का पुराना साऊथ चर्च प्रार्थना में लग गया। 1857 से पहले वाले वर्षों में न्यू यॉर्क और बोस्टन में कई **प्रार्थना समूह ओर लोग** थे जो प्रार्थना कर रहे थे। भूमि तैयार की गई थी।

जेरेमाया लैनफियर न्यू यॉर्क शहर का नव–नियुक्त मिशनरी था। उसके मन में दोपहर की प्रार्थना सभाओं का आयोजन करने का विचार था क्योकि इसी समय अधिकतर लोग भोजन और विश्राम के लिए समय निकालते थे। उसने पर्चे बांटे और लोगों को न्यू यॉर्क में **दोपहर की प्रार्थना सभा** के लिए निमंत्रण दिया। पहली सभा बुधवार, 23 सिंतबर 1857 को दोपहर 12 से 1 बजे तक फुल्टन स्ट्रीट के डच रिफॉर्म्ड चर्च में आयोजित की गई। उसमें 6 लोगों ने भाग लिया। दूसरे सप्ताह 20 लोग आए, तीसरे सप्ताह 40 लोग और 4थे सप्ताह 100 लोगों ने उसमें हिस्सा लिया। जल्द ही गिरजाघर की पूरी इमारत दोपहर और अन्य समयों में प्रार्थना के लिए आने वाले 3,000 लोगों से भर गई। जल्द ही न्यू यॉर्क के अन्य स्थानों में भी रोज़ प्रार्थना सभाएं होने लगी जिनमें प्रतिदिन 800,000 की जनसंख्या में से **10,000 लोग** प्रार्थना के लिए उपस्थित रहते थे। जनवरी 1858 में, समाचारपत्र जो कुछ हो रहा था उसके विषय में समाचार देने लगे, "बेदारी की उन्नति" समाचारपत्रों की नियमित सूर्खियां बन गई। दोपहर की प्रार्थना सभाएं पूरे अमेरिका में फैलने लगी।

जल्द ही कलीसियाएं शाम को प्रार्थना में आने वाले लोगों से भर गईं। केवल न्यू यॉर्क में ही **10,000 से अधिक** लोग हर सप्ताह उद्धार पाने लगे। पूरे न्यू इंग्लैंड में सुबह 8 बजे, दोपहर 12 बजे और शाम 6 बजे प्रतिदिन प्रार्थना सभाएं होने लगीं। परिवर्तित जीवन की अद्भुत गवाहियां और परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति दर्ज़ की गई। मार्च 1858 में, एक धार्मिक मासिक ने लिखा : *"मेन से कैलिफोर्निया तक बड़े–बड़े शहर और नगर इस महान और महिमामय कार्य के साझेदार बन रहे हैं। शायद ही ऐसा कोई गांव या नगर होगा जहां "विशेष दैवीय सामर्थ प्रकट*

होती दिखाई नहीं देती।" द न्यू यॉर्क ऑब्ज़र्वर ने टेक्सस के वैको से परमेश्वर की सामर्थी जागृति की खबर प्रकाशित की। *"रात और दिन सभा के दौरान कलीसिया में भीड़ छाई रही...इससे पहले हमने कभी टेक्सस में पूरे समाज को धार्मिक प्रभाव के अधीन...पूर्ण रूप से संजीवित होते हुए नहीं देखा है।"*

बेदारी के इतिहासकार **जेम्स एडविन ऑर ने अनुमान लगाया है कि 100,000 लोगों ने उद्धार पाया और कलीसिया के अन्य 100,000 सदस्य 1857–1858 के दौरान जागृत हुए।** गिनती से पता चलता है कि 1858 के दौरान ऐसा समय रहा है जब **हर सप्ताह 50,000 लोगों ने उद्धार पाया!** इनमें से अधिकतर लोग बिना किसी प्रचार के विश्वास में आए क्योंकि अधिकतर प्रार्थना सभाओं का संचालन अयाजकीय विश्वासियों ने किया, पासबानों ने नहीं, यद्यपि पासबान और सेवकों ने प्रार्थना सभाओं में हिस्सा लिया। हज़ारों उद्धार न पाए हुए लोग प्रार्थना सभाओं में आए और उन्होंने उद्धार पाया।

1857 में न्यू यॉर्क में जिस बेदारी का आरम्भ हुआ, उसने दुनिया के अन्य भागों को भी प्रभावित किया जिसमें वेल्श, स्कॉटलैंड, आयर्लैंड, ब्रिटेन, जर्मनी, स्वीडन, नेदरलैंड्स, वेस्ट इंडीज़, दक्षिण आफ्रीका, भारत ओर इंडोनेशिया का भी समावेश है। 1857–1861 के इस समय ने पूरे संसार में, प्रायः सर्वत्र बेदारियों का उदय होते हुए देखा है।

मनन

प्रार्थना : बेदारी के कई वर्षों पहले जो आग्रहपूर्ण प्रार्थना की गई थी, वह भी एक महत्वपूर्ण कुंजी है जिसने मार्ग तैयार किया।

चिनगारी जिसने आग लगाई : जेरेमाया लॅनफियर के मन में जन्म लेने वाले दोपहर की प्रार्थना के साधारण से विचार ने ऐसी चिनगारी लगाई जिससे बेदारी की ज्वाला भड़क उठी।

मात्र सामान्य विश्वासी : परमेश्वर ने सामान्य लोगों का उपयोग किया और इस बेदारी में कोई विख्यात प्रचारक नहीं था और न ही बड़े वक्ता।

समाचारपत्र माध्यम : समाचारपत्रों ने बेदारी की कहानियां बताने में सहायता की, जो स्पष्ट रूप से और लोगों को प्रेरित करने का माध्यम बन गया।

पूरे विश्व में प्रभाव : पीछे पलटकर देखने पर हम देखते हैं कि 1857–1861 का समय ऐसी ऋतु थी जब संसार के कई भाग प्रभावित हुए।

सन 1904 : वेल्श बेदारी और ईव्हान रॉबर्ट्स

1904 की बेदारी से पहले, वेल्श बुरी आत्मिक दशा में था। कई गिरजाघर खाली थे। मसीहत अपना प्रभाव खोती प्रतीत हो रही थी। बेदारी आने से सात वर्ष पहले, करीब 1897 से, **पूरे वेल्श में प्रार्थना में विशेष बढ़ौतरी देखी गई।** 1902 से प्रार्थना और प्रबल हो गई क्योंकि और कलीसियाएं प्रार्थना में शामिल हो गईं, और प्रार्थना सभाएं होने लगीं। साल 1904 महत्वपूर्ण साबित हुआ। विश्व बेदारी के लिए प्रार्थना सभाएं पूरे ग्रेट ब्रिटेन में कई स्थानों में होने लगीं।

ईव्हान रॉबर्ट्स का जन्म 8 जून 1878 को कोयला खदान में काम करने वाले एक व्यक्ति के घर में हुआ और कैल्विनवादी मेथडिस्ट परिवार में वे छोटे–से बड़े हुए, वे धर्मी बालक थे जो नियमित गिरजाघर जाते थे और रात के समय पवित्र शास्त्र के वचन याद करते थे। 11 से 23 वर्ष की उम्र तक वे अपने पिता के साथ कोयला खदान में काम करते थे। रॉबर्ट्स ऐसे जवान के रूप में सुविख्यात थे जो हर सप्ताह व्यक्तिगत रीति से और सामुहिक प्रार्थना सभा में घण्टों प्रार्थना में बिताते थे। जवान ईव्हान रॉबर्ट्स प्रार्थना में पहले ही तेरह वर्ष बिता चुके थे कि पवित्र

आत्मा उन पर नियंत्रण करे। वे बेदारी के लिए परमेश्वर से बिनती करते हुए प्रार्थना में बहुत समय बिताते थे। बाद में, थोड़े समय के लिए, उन्होंने अपने चाचा के लिए लोहार के काम के लिए शिक्षार्थी के रूप में काम किया और 1904 में 26 वर्ष की उम्र में सेवकाई की तैयारी करने हेतु वे बाइबल कॉलेज में दाखिल हुए। जब उन्होंने प्रति दिन बाइबल अध्ययन में और प्रार्थना में **परमेश्वर के साथ सात घंटे बिताने की ज़रूरत महसूस की**, तब उनके व्यक्तिगत प्रार्थना प्रयास का फल उस वर्ष 1904 के प्रारंभ में दिखाई दिया।

प्रेस्बिटेरियन सुसमाचार प्रचारक और बाइबल शिक्षक सेथ जॉशुआ न्यू कैसल एम्लिन कॉलेज आए जहां पर 26 वर्ष के ईव्हान रॉबर्ट्स सेवकाई के लिए अध्ययन कर रहे थे। विद्यार्थी इतने प्रेरित हो गए कि उन्होंने पूछा कि क्या वे पास ही में होने वाले जॉशुआ के अगले अभियान में हिस्सा ले सकते हैं। इसलिए उन्होंने ब्लेनानेर्च जाने के लिए कक्षाएं रद्द की जहां सेथ जॉशुआ ने सार्वजनिक तौर पर प्रार्थना की, "हे परमेश्वर, हमें झुका।" रॉबर्ट्स सामने गए जहां उन्होंने बड़ी वेदना के साथ प्रार्थना की, "हे परमेश्वर, मुझे झुका।" यह अक्टूबर 27, 1904 की बात थी। वे पवित्र आत्मा से आत्माओं के लिए बड़े बोझ से भर गए। वे 100,000 आत्माओं के लिए प्रार्थना करने लगे, और उन्हें आश्वासन महसूस हुआ कि परमेश्वर 100,000 आत्माएं देगा।

वहां से लौटने के बाद वे अपने अध्ययन पर मन नहीं लगा सके। उन्होंने ऐसी हलचल महसूस की कि उन्हें वापस उनकी मूल कलीसिया में जाना होगा और जवानों के साथ बातें करना होगा। प्राचार्य फिलिप्स ने उन्हें वापस घर जाने के लिए एक सप्ताह का अवकाश दिया। इसलिए वे वापस अपने घर लोफोर गए और वहां अपने पासबान को अपने बोझ के विषय में बताया। पासबान को यकीन नहीं हुआ, परंतु उन्होंने सुझाव दिया कि रॉबर्ट्स सोमवार को प्रार्थना सभा में प्रचार करे। फिर उन्होंने लोगों से कहा कि यदि वे रॉबर्ट्स का प्रचार सुनने में दिलचस्पी रखते हैं, तो प्रार्थना सभा के बाद रुक जाएं। उस दिन सोमवार अक्टूबर 31, 1904 को सत्रह लोग सभा के बाद रुक गए। रॉबर्ट्स का संदेश सरल और स्पष्ट था

> प्रत्येक ज्ञात पाप आपको परमेश्वर के सामने कबूल करना होगा और दूसरों के साथ आपने जो बुराई की उसकी भरपाई करना होगा।
>
> दूसरी बात, आपको किसी भी संदेहपूर्ण आदत को त्यागना होगा।
>
> तीसरी बात, आपको तुरंत आत्मा की आज्ञा मानना होगा।
>
> अंत में, आपको सार्वजनिक तौर पर मसीह में अपने विश्वास का अंगिकार करना होगा।

दस बजे तक सत्रह लोगों ने प्रतिक्रिया व्यक्त की। पासबान इतना प्रसन्न हो गए कि उन्होंने ईव्हान से कहा कि वे अगले दिन भी अपना प्रचार जारी रखे। ईव्हान ने रुककर पूरे सप्ताह प्रचार किया। रविवार 6 नवंबर को, ईव्हान ने हर एक को बताया कि वे वही प्रार्थना करें, "यीशु मसीह की खातिर अभी पवित्र आत्मा भेज" और आत्मा सामर्थी रूप से आया। सदस्य बढ़ गए और लोग आते रहे, इसलिए उन्होंने उस सप्ताह प्रचार जारी रखा। "Here is love, vast as the ocean" यह भजन बेदारी का विषय गीत बन गया। जल्द ही वेल्श के समाचारपत्र समाचार देने लगे : *'लोफोर की ओर लोगों की बड़ी भीड़ आकर्षित होती है।'* लॅनेली और स्वान्सिया का मुख्य मार्ग जहां पर कलीसिया स्थित थी, उन लोगों से खचाखच भर गया जो गिरजाघर में आने की कोशिश कर रहे थे। दुकानदार बड़े गिरजाघर में जगह पाने के लिए अपनी दुकानें जल्दी बंद करने लगे। अब खबर प्रकाशित हुई। संवाददाता को भेजा गया और जो कुछ उसने देखा उसका हूबहू वर्णन उसने किया : *एक अजीब सभा जो सुबह 4.25 बजे समाप्त हुई और लोग भी अपने घर जाने के लिए तैयार नहीं थे। रविवार के दिन प्रत्येक कलीसिया भरी हुई थी।* ***बेदारी के पहले पाच सप्ताह 20,000 से 30,000*** *आत्माओं ने उद्धार पाया, इसके अलावा हज़ारों जागृत हुए। उद्धार पाए हुओं की सूची समाचारपत्रों को* भेजी गई, जिसमें जिन लोगों ने अपने उद्धार का अंगिकार किया था ऐसे **70,000 लोगों** के नाम थे, यह **संख्या दिसंबर 1904** तक थी – बेदारी के मात्र दो महीने बाद; मार्च 1905 के अंत तक यह संख्या 85,000 हो गई! कई जवान लोग सभाओं में प्रचार करने के लिए उत्साहित थे, कई परमेश्वर की प्रकट उपस्थिति के साथ बेदारी की सभाएं चला रहे थे। ईव्हान रॉबर्ट्स वेल्श के विभिन्न स्थानों में यात्रा करने लगे। ईव्हान

रॉबर्ट्स मुख्य रूप से दक्षिण वेल्श में कार्य करते थे, परंतु अन्य कई थे जो पूरे वेल्श में बेदारी की आग फैलाने लगे, जैसे सेथ जॉशआ, आर. बी. जोन्स, सिडनी ईव्हान्स, जोसेफ जेन्किन्स, ईव्हान लॉईड जोन्स और अन्य। ये लोग गंभीर प्रचार में और वचन की शिक्षा में लग गए, उनका ज़ोर पश्चाताप, प्रार्थना और मध्यस्थी पर था। सेवकाई में उनकी सहायता से बेदारी का फल और मज़बूत हो गया।

यह आंदोलन पूरे वेल्श में ज्वार की लहरों के समान फैल गया। मात्र **पांच महीनों में पूरे देश में 100,000 लोगों** ने उद्धार पाया। पांच वर्षों के बाद, डॉ. जे. व्ही. मॉर्गन ने बेदारी का असली रूप देखने के लिए एक पुस्तक लिखी, और इस ओर इशारा किया कि मात्र पांच महीनों के उत्साह में 100,000 कलीसियाओं में शामिल हुए, और पांच वर्षो के बाद भी उन कलीसियाओं में 75,000 की सदस्यता रही! अर्थात पांच वर्षों के बाद 75 प्रतिशत एक बढ़िया संख्या है।

सामाजिक प्रभाव चौकाने वाला था। न्यायाधीशों को सफेद दस्ताने ईनाम दिए गए क्योंकि कोई मुकदमा नहीं था : लूटमार, हत्याएं, बलात्कार और चोरियां बंद हो गई। शराबियों की संख्या आधी हो गई। शराब की दुकानें बंद हो गईं। पुलिस के पास लगभग कोई काम नहीं था। उनके पास अपराध के विरोध में लड़ने का काम नहीं था या उपद्रवी भीड़ को काबू करने की ज़रूरत नहीं थी, इसलिए उन्होंने गायकों की टीम तैयार की और जहां कहीं आवश्यक था वहां कलीसियाओं में भीड़ के साथ शामिल हो गए। कोयला खदान के काम पर भी असर पड़ा क्योंकि कोयला खदान में काम करने वाले जिनका उद्धार हुआ था, उन्होंने गाली–गलौज करना बंद कर दिया। कोयले की गाड़ियां ढोने वाले घोड़ों को अब उनकी भाषा समझ नहीं आती थी। नैतिक मानकों पर असर पड़ा, बेदारी के उस वर्ष लावारिस पैदाईश की संख्या 44 प्रतिशत से घट गई। बेदारी की आग ब्रिटेन, स्कैंडिनेविया, जर्मनी, उत्तर अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, भारत, आफ्रिका, दक्षिण अमेरिका के कुछ भागों में और अन्य स्थानों में फैल गई। 1905 में, वेल्श मिशनरी उत्तर–पूर्वी भारत के मेघालय में आए और इस क्षेत्र की खासी पहाड़ियों में बेदारी फूट पड़ी।

1905 की पतझड़ में, ईव्हान रॉबर्ट्स पर उनकी व्यस्त कार्यसूची, काम का बोझ और मांग की वजह से दबाव पड़ने लगा और उन्होंने शारीरिक और भावनात्मक कमज़ोरी महसूस की। उन्होंने अपनी बाकी ज़िन्दगी खुद को सार्वजनिक सेवा से हटा लिया, अपने मुख्य कार्य के रूप में प्रार्थना में लगे रहे और कुछ समय लेखन कार्य में बिताया। उन्होंने अपना बाकी समय पेन–लेवाइसेस की देखभाल में ज्यादा से ज्यादा एकांत में बिताया।

रॉबर्ट्स के बेदारी से हट जाने के बाद, जो अच्छा काम शुरू हुआ था उसे आगे बढ़ाने के लिए अन्य लोग आगे आए। बेदारी के कुछ बीस साल बाद, ईव्हान रॉबर्ट्स से पूछा गया कि क्या वेल्श दूसरी बेदारी का अनुभव कर सकता है। उन्होंने उत्तर दिया, "जी हां, परंतु कौन कीमत चुकाएगा?"

मनन :

प्रार्थना : 1904 से 7 वर्ष पहले बेदारी के लिए प्रार्थना शुरू हुई। और जैसे–जैसे और समूह और कलीसियाएं बेदारी के लिए प्रार्थना में लग गए, वैसे वैसे यह तीव्र होती गई।

पूर्ण समर्पण : हम ईव्हान रॉबर्ट्स की इच्छा और प्रयास देखते हैं, ऐसा व्यक्ति जो सब कुछ समर्पण करके परमेश्वर की खोज करने के लिए तैयार था।

असामान्य पात्र : बेदारी की चिनगारी सुलगाने के लिए परमेश्वर ने एक अज्ञात जवान ईव्हान रॉबर्ट्स को ऐसे समय उपयोग किया जो अपने नाम के साथ किसी बड़ी ख्याति को जोड़ नहीं सकता था।

पवित्र आत्मा का फल : वेल्श की बेदारी में जो परिणाम देखे गए अर्थात आत्माओं का उद्धार और समाज पर प्रभाव, उन्हें मनुष्य के प्रयासों से कभी उत्पन्न नहीं किया जा सकता। वह केवल परमेश्वर का शुद्ध कार्य था।

फल दृढ़ हुआ : मज़बूत शिक्षा और वचन का प्रचार, पश्चाताप पर ज़ोर, प्रार्थना और मध्यस्थी के द्वारा, बेदारी के पांच वर्षों के बाद भी 75 प्रतिशत कलीसिया में थे।

खुद को गतिमान बनाने वाली टीम के रूप में कार्य करने की ज़रूरत : ईव्हान रॉबर्ट्स के शारीरिक और भावनात्मक गिरावट से एक सबक जो सीखने की ज़रूरत है, वह है बेदारी के मध्य में विश्राम करना, ताज़गी पाना और खुद को गतिशील बनाना और टीम के रूप में कार्य करना ताकि अन्य लोग बेदारी की ज़िम्मेदारी को बांट सकें।

सन 1905 : मुक्ति मिशन की बेदारी और पंडिता रमाबाई

पंडिता रमाबाई का जन्म 1858 में ब्राम्हण परिवार में हुआ था, और वह बाद में मसीही हो गईं। 1889 में उन्होंने मुम्बई की ब्राम्हण विधवाओं के लिए "शारदा सदन" (अध्ययन भवन) खोला। ये विधवाएं अभी बच्चियां ही थीं और उनसे उम्र में बहुत बड़े पतियों की मृत्यु के बाद उनके परिवारों ने उनकी उपेक्षा की थी। 1901 तक, रमाबाई के पास स्कूल में 2000 लड़कियां थीं। यह स्कूल पूणे के पास केड़गांव में था और रमाबाई ने उसका नाम 'मुक्ति' रखा था।

1890 के दौरान, लोग एक ही समय में और स्वतंत्र रूप से भारत के विभिन्न स्थानों में **बेदारी के लिए प्रार्थना कर रहे थे।** 1897 में विद्यार्थी स्वयंसेवक आंदोलन ने पूरे भारत में प्रार्थना के दिन का ऐलान किया। जॉन हाईड 1892 में भारत आए थे और उन्होंने कई लोगों को प्रार्थना करने हेतु सक्रिय बनाया था और प्रेरित किया था। पंडिता रमाबाई ने, अपने 'मुक्ति प्रार्थना घंटी' प्रार्थना पत्र के माध्यम से लोगों को पांच वर्षों से आत्मा के उण्डेले जाने के लिए प्रार्थना करने हेतु अनुरोध किया था। वह **स्वयं भी प्रार्थना और उपवास में अधिक समय बिताने लगी थी।** 1901 में, उन्होंने आत्मा की वर्षा के लिए विशेष समय अलग निकालने हेतु निवेदन किया। परिणामस्वरूप, करीब 1200 लड़कियों ने अगले दो महीनों में बपतिस्मा प्राप्त किया।

वेल्श बेदारी का समाचार सुनकर, रमाबाई ने और प्रार्थना के लिए प्रोत्साहन दिया। उन्होंने **प्रार्थना समूह तैयार किए,** प्रत्येक प्रार्थना समूह में 10 लड़कियां थीं और प्रत्येक समूह को 10 उद्धार न पाई हुई लड़कियों के लिए प्रार्थना करने हेतु सूची दी। 1905 में खासी पहाड़ियों के वेल्श प्रेस्बिटेरियन मिशन में बेदारी आई और इस विषय में समाचार फैल गया और अन्य कई लोगों को बेदारी के लिए प्रार्थना करने हेतु प्रेरणा प्राप्त हुई। मुक्ति मिशन की करीब 30 जवान स्त्रियां **प्रतिदिन पवित्र आत्मा की सामर्थ के लिए इकट्ठा होती थीं** और फिर बाहर जाकर सुसमाचार सुनाती थीं। उसके बाद जून 29, 1905 को लड़कियों और स्त्रियों की विशाल सभा पर पवित्र आत्मा सामर्थ के साथ उतर आया। कई रो रही थीं, अपने पापों का अंगीकार कर रही थीं और आत्मा की भरपूरी के लिए प्रार्थना कर रही थीं। जून 30 1905 को, पंडिता रमाबाई ने जब सेवकाई की, तब पवित्र आत्मा अधिक सामर्थ के साथ कार्य करने लगा। लोग आंसू बहाने लगे और प्रार्थना में लगे रहे, कुछ लोगों ने दर्शन देखे और कुछ चेहरे शब्दशः स्वर्गीय ज्योति से चमक उठे। लोगों पर मानो प्रार्थना की लहरें फैलती जा रही थीं। छोटी लड़कियां यीशु की उपस्थिति में घंटों तक खोई रहती थीं – यीशु से प्रेम करती हुई, आराधना करती हुई और प्रार्थना करती हुई। कुछ सभाएं तो **बिना रुके 17 घंटे** तक जारी रहीं। आत्मा के इस चलन ने सामर्थी प्रकटीकरण देखा जिसमें **पश्चाताप, बहुत गीत गाना, अन्य–अन्य भाषाओं में बोलना, स्वप्न, दर्शन, जवान लोगों द्वारा भविष्यद्वाणी करना, आश्चर्यजनक रूप से भोजन की पूर्ति होना और आग द्वारा भस्म किए जाने का सामर्थी बोध** आदि बातें शामिल थीं।

मिनी एब्राम्स अमेरिकन मेथडिस्ट मिशनरी थी जो 1887 में मुम्बई, भारत में आई। बाद में 1898 में, उन्होंने पंडिता रमाबाई के साथ मुक्ति मिशन में काम करने हेतु अपना मेथडिस्ट पद त्याग दिया। जून 29, 1905 की एक घटना यहां दर्ज हैः बड़ी लड़कियों में से एक ने उन्हें सुबह 3:30 को नींद से जगाया। उन्होंने एक लड़की पर आग देखी थी, और पानी का बर्तन लेकर वे दौड़ पड़ीं, परंतु उन्होंने यह अहसास किया कि यह भौतिक आग नहीं थी। उन्होंने देखा कि सारी लड़कियां घुटनों पर हैं, वे प्रार्थना कर रही थीं, और रो रही थीं, और अपने पापों को अंगीकार

कर रही थीं। यह पवित्र आत्मा का "आग का बपतिस्मा" था। लड़कियों ने कबूल किया कि जब पवित्र आत्मा उन पर उतर आया, तब उन्होंने अंदर से जलन महसूस की, कभी–कभी वह असहनीय थी। वे बदल गई थीं और आनंद से और स्तुति से भर गई थीं।

मुक्ति में, **लम्बे घंटे प्रार्थना और बाइबल अध्ययन में बिताए जाते थे** ताकि प्रत्येक को सुसमाचार प्रचार करने हेतु तैयार किया जा सके। प्रतिदिन, 60 लड़कियों की टीम सुसमाचार सुनाने जाती थी और जो लड़कियां वहीं रुक जाती, वे सेवा करने हेतु जाने वाली टीमों के लिए प्रार्थना करती थीं। यद्यपि आरम्भ में, पंडिता रमाबाई नहीं चाहती थी कि बेदारी की यह खबर प्रकाशित हो, फिर बाद में, वह टीम लेकर और 'बाइबल विमेन' की टीम बाहर भेजकर प्रचार करने लगी और बेदारी की आग फैलाने लगी।

स्वयं मिनी एब्राम्स ने पूरे भारत में बेदारी को बढ़ावा देते हुए बहुत यात्रा की। उन्होंने कई लेख लिखे जिन्हें "पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और आग" इस शीर्षक के अंतर्गत 1906 में प्रकाशित किया गया, ये लेख भारत के दो मुख्य मसीही समाचार पत्रों में प्रकाशित हुएः बॉम्बे गार्डियन (स्वतंत्र) और द इंडियन विटनेस (मेथडिस्ट)। कुछ समय बाद, एब्राम्स ने समाचार के अपने लेखों को संशोधित किया और उन्हें "पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और आग" (1906) इस नाम से पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया। एक साल बाद, मिनी एब्राम्स ने इस पुस्तक की एक प्रतिलिपी शिकागो ट्रेनिंग स्कूल के पूर्व कक्षा मित्र को भेजी, चिली के मेथडिस्ट मिशनरी मे हूवर और उनके पति विलिस हूवर। **इससे चिली में बेदारी की आग लगी** जिससे मेथडिस्ट पेंटिकॉस्टल चर्च की स्थापना हुई और चिली, दक्षिण अमेरिका में व्यापक पेंटिकॉस्टल आंदोलन शुरू हुआ।

ॲलन ॲंडरसन ने एसेम्ब्लीज़ ऑफ गॉड एन्रिचमेंट जर्नल में *'द अजूसा स्ट्रीट बेदारी और वैश्विक पेन्टिकॉस्टलिज़म'* नामक अपने लेख में चार मुख्य परिणामों पर प्रकाश डाला है (2006 वसंत)। सबसे पहले है, भारत में मुक्ति मिशन बेदारी जो दो वर्षों तक बनी रही, अजूसा स्ट्रीट बेदारी की पूर्ववर्ती थी और पेन्टिस्कॉस्टलिज़म का व्यापक स्वरूप था। मुक्ति मिशन बेदारी की विशेषता केवल पश्चाताप, कायलियत, अंगीकार और विस्तृत प्रार्थना सभाएं नहीं थीं, बल्कि उसमें आत्मा के सामर्थी प्रकटीकरण भी थे जिनके साथ चंगाइयां, भविष्यद्वाणी, अन्य–अन्य भाषाएं और उनका अर्थ बताना भी था। सैंकड़ों सुसमाचार प्रचार करने वाली युवा स्त्रियों की टीमें आत्मा से सामर्थ पाकर आसपास के गांवों में गवाही देने हेतु भेजी गईं। दूसरी बात, स्त्रियों ने मुक्ति मिशन की बेदारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसकी अगुवाई स्त्रियां कर रही थीं, जो कि जवान स्त्रियों और महिला अगुवों के लिए प्रोत्साहनदायक और प्रेरणादायक था। तीसरी बात, रमाबाई की सेवकाई और जिस बेदारी में वह अगुवाई कर रही थीं, उसने अन्य मसीहियों के सामने खुलेपन, सार्वभौमिकता, और समावेशकता का प्रदर्शन किया जो कई उत्तरकालीन पेन्टिकॉस्टल आंदोलन के सख्त एकान्तिकता के विपरीत था। चौथी बात, लैटिन अमेरिकन पेन्टिकॉस्टेलिज़म पर बेदारी का प्रभाव। मिनी एब्राम्स की पुस्तिका, जिसने मुक्ति मिशन की बेदारी का प्रतिवेदन दिया था, उसके परिणामस्वरूप, चिली के वैल्पेरेसो और सान्तियागो की मेथडिस्ट कलीसिया ऐसी ही बेदारी की अपेक्षा करने लगी और उसके लिए प्रार्थना करने लगीं। इस बेदारी का आरम्भ 1909 में हुआ और विलिस हूवर नये चिलियन मेथडिस्ट पेन्टिकॉस्टल चर्च के अगुवे बन गए। आज, चिली की अधिकतर पेन्टिकॉस्टल मंडलियां इस बेदारी के वंशज हैं।

चिंतन

प्रार्थनाः फिर एक बार मुक्ति में आरम्भ हुई इस बेदारी के पूर्ववर्ती के रूप में गहरी भूख और प्रार्थना को देखते हैं।

बेदारी को सम्भालकर रखनाः हम यह भी देखते हैं कि किस प्रकार पंडिता रमाबाई ने बेदारी को सम्भालकर रखा। जब तक उन्हें यह महसूस नहीं हुआ कि बेदारी को जाहीर करने का समय आ गया है, तब तक उन्होंने उसे गुप्त रखा। परमेश्वर के वचन में लम्बे समय तक अध्ययन के माध्यम से लड़कियों और स्त्रियों को लगातार तैयार किया जा रहा था। इससे परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले कार्य को मज़बूती आई।

बेदारी फैलानाः आत्मा के सामर्थी कार्य और परमेश्वर के वचन से सुसज्जित होकर, इन बाइबल स्त्रियों को सुसमाचार सुनाने और बेदारी की आग फैलाने के लिए भेजा जा सकता था।

1906 अजूसा मार्ग की बेदारी और विलियम जोसेफ सेमोर

सिसिल एम. रोबेक, ज्यू. पीएच.डी., एसेम्ब्लीज़ ऑफ गॉड एन्रिचमेंट जर्नल (वसंत 2006) में प्रकाशित अपने लेखः "अजूसा मार्गः 100 वर्षों बाद" में अजूसा मार्ग की बेदारी का पूर्ण रूप से शोध किया हुआ ऐतिहासिक विवरण प्रदान करते हैं। वे कहते हैंः *"अजूसा मार्ग की बेदारी एक सोता है जिसने एक विश्व आंदोलन को उत्पन्न किया जिसने हमेशा के लिए मसीहत के रूप को बदल दिया।"*

विलियम जोसेफ सेमोर (1870–1922) का जन्म गुलाम माता–पिता के परिवार में लुईसियाना नामक स्थान में हुआ। करीब 1902 में, ओहियो में रहते हुए उन्हें खसरा हो गया था और उनकी एक आंख की दृष्टि चली गई। वे प्रारम्भ में लुईसियाना और टेक्सस में सुसमाचार प्रचार करते हुए सुसमाचारीय अभियानों का आयोजन किया करते थे। करीब 1905 में, वे यूस्टन गए और वहां मिसेस लूसी एफ. फैरो के साथ सेवा करने लगे, जिन्होंने आफ्रिकन–अमेरिकन समाज में एक होलीनेस चर्च में अग्रणी का काम किया था। मिसेस लूसी एफ. फैरो ने चार्ल्स फॉक्स परहैम के साथ काम किया था और टोपेका के कैन्सस बाइबल कॉलेज में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया था। जनवरी 1906 में, जब चार्ल्स परहैम ने यूस्टन में बाइबल स्कूल शुरू किया, तब लूसी फैरो ने विलियम सेमोर को इस बाइबल स्कूल में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। टेक्सस की वांशिक अलगाववादी नीतियों के कारण, सेमोर को गिरजाघर के बगल के कमरे में बैठना पड़ता था, जहां खाली दरवाज़े से वे संदेश सुन सुकते थे। सेमोर ने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा की शिक्षा प्राप्त की, यद्यपि इस समय उन्होंने उसका अनुभव नहीं पाया था। बाइबल स्कूल पूरा होने से पहले, सेमोर को, नील टेरी नामक एक मित्र की शिफारीश के माध्यम से लॉस एंजेलिस, कैलिफोर्निया के छोटे–से होलीनेस मिशन की पासबान मिसेस जुलिया डब्लू. हचिन्स से उस मंडली का पासबान बनने हेतु निमंत्रण प्राप्त हुआ। इस अवसर के लिए प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने इस निमंत्रण को स्वीकार करने का फैसला किया। परहैम ने उन्हें गाड़ी का टिकिट खर्च दिया और उन्हें आशीष दी, सेमोर फरवरी के मध्य वहां से चले गए। विलियम सेमोर फरवरी 22, 1906 को लॉस एंजेलिस, कैलिफोर्निया आए। अन्य–अन्य भाषाओं के चिन्ह के साथ पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के विषय में सेमोर ने परहैम से जो कुछ सीखा था, उसी का वे प्रचार करने लगे। मिसेस हचिन्स को यकीन हो गया कि जिस बात का सेमोर वहां प्रचार कर रहे थे, वह परम्परागत होलीनेस शिक्षा से मेल नहीं खाती थी। इसलिए होलीनेस असोसिएशन के अध्यक्ष की सहायता से सेमोर को बताया गया कि उन्हें उस कलीसिया का पासबान नहीं रखा जा सकता और उन्हें बाहर निकालकर इमारत पर ताला लगा दिया गया। मार्च के आरम्भ में, एडवर्ड एस. ली ने सेमोर को अपने घर में एक कमरा दिया। सेमोर ने बाइबल अध्ययन और प्रार्थना सभा शुरू की जो जल्द ही बढ़ गई और वे पड़ोस के 214 नॉर्थ बॉनी ब्रे स्ट्रीट पर स्थित रिचर्ड और रूथ ॲस्बेरी के घर रहने लगे।

अप्रैल 9, 1906 को, प्रार्थना सभा में करीब 15 अफ्रिकन–अमेरिकन उपस्थित थे, और पवित्र आत्मा की सामर्थी मुलाकात हुई और कई लोग अन्य–अन्य भाषाओं में बोलने लगे। ली ने सेमोर से बिनती की कि वह उन पर हाथ रखे और प्रार्थना करे। जब सेमोर ने ली पर हाथ रखा, तब ली मुर्दा व्यक्ति के समान जमीन पर गिर पड़े। जेनी मूर, जिन्होंने बाद में सेमोर से विवाह कर लिया, आत्मा के प्रभाव में 6 भाषाओं में बोली और अन्य–अन्य भाषाएं बोलते समय वह पियानो बजा रही थी। अप्रैल 12 की शाम, स्वयं विलियम सेमोर ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया, वे भी "अन्य–अन्य भाषा बोलते हुए मृत व्यक्ति के समान जमीन पर गिर पड़े।" उस सड़क से आ रहे चार लोगों ने जब उस घर में प्रवेश किया तब वे पवित्र आत्मा के प्रभाव में आ गए। अप्रैल 12 को, उन्हें 312 अजूसा मार्ग की वह खाली पड़ी हुई आधी जली हुई इमारत मिली, जहां फरवरी 1904 तक स्टीव्हन्स मेथडिस्ट एपिस्कोपल चर्च चलता था, परंतु उस समय के बाद से एक तबेले और गोदाम के रूप में उसका उपयोग किया जा रहा था। बेदारी शुरू हो चुकी थी। जैसे ही खबर फैल गई, लोग आने लगे। अप्रैल 15 (ईस्टर) तक, वे इस इमारत के तबेले वाले हिस्से

में, गंदी जमीन पर, जिस पर घास–फूंस और लकड़ी का भूसा पड़ा था, आराधना सभा लेते रहे। ऊपरी कमरे प्रार्थना कमरों के लिए, कलीसिया के दफ्तर के लिए और सेमोर दम्पत्ति के घर के रूप में उपयोग किए जाते थे। अप्रैल 17 को, लॉस एन्जेलिस डेली टाईम्स के संवाददाता ने इस सभा को भेंट दी और उसके विषय में लिखा। अगले दिन, अप्रैल 18 को, सन् फ्रान्सिस्को के भूकम्प वाले दिन, लॉस एन्जेलिस प्रेस में अजूसा मार्ग की बेदारी के विषय में पहला लेख प्रकाशित हुआ।

परमेश्वर के लिए अत्यंत लालायित व्यक्ति

विलियम सेमोर ऐसे व्यक्ति थे जो परमेश्वर के लिए अत्यंत लालायित थे। सेमोर उपवास और प्रार्थना करने लगे। जॉन जी. लेक ने 1911 में लिखे हुए "प्रेरितों के विश्वास आंदोलन का आरम्भ" ("Origin of the Apostolic Faith Movement,") में उन बातों को लिखा जो विलियम सेमोर ने अपनी व्यक्तिगत यात्रा के विषय में बताई थी : "परहैम के साथ मेरी मुलाकात से पहले, प्रभु ने मुझे मेरे पाप से शुद्ध किया, और मुझे गंभीर प्रार्थना का जीवन दिया, मैं प्रतिदिन 24 घंटों में से 5 घंटे प्रार्थना के लिए निकाला करता था। यह प्रार्थना जीवन साढ़े तीन वर्षों तक चलता रहा, जब एक दिन मैं प्रार्थना कर रहा था, तब पवित्र आत्मा ने मुझसे कहा, "आत्मिक जीवन में बेहतर बातें होना है, परंतु विश्वास और प्रार्थना से उनकी खोज करने की ज़रूरत है।" इसने मेरे प्राण को ऐसे संजीवित किया कि मैंने अपने प्रार्थना के घंटे बढ़ा दिए और 24 घंटों में से 7 घंटे प्रार्थना करने लगा और दो वर्षों तक प्रार्थना करता रहा जब तक कि हमें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिल गया।"

प्रार्थना में डूबा हुआ

प्रार्थना अजूसा मिशन की महत्वपूर्ण गतिविधि लगती है। उसमें सहभागी होने वाले ने कहा, "पूरा स्थान प्रार्थना में डूबा हुआ था।" सेमोर अपना अधिकतर समय पुलपिट के पीछे प्रार्थना करते हुए बिताते थे। वे एक सरल हृदय व्यक्ति थे, जो निरंतर पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन और बल की अपनी ज़रूरत को पहचानते थे। जॉन जी. लेक ने विलियम सेमोर का वर्णन इन शब्दों में किया है : "परमेश्वर ने उस व्यक्ति के हृदय में ऐसी भूख डाली थी कि जब परमेश्वर की आग आई तब उसने उसे महिमा प्रदान की। मैं आधुनिक समय में दूसरे किसी व्यक्ति पर विश्वास नहीं करता जिसके जीवन में परमेश्वर की इससे अधिक अद्‌भुत भरमार रही हो जो परमेश्वर ने इस प्रिय व्यक्ति को दी थी, और वास्तविक पिन्तेकुस्त की महिमा और सामर्थ ने विश्व को अपनी चपेट में ले लिया। जब इस कृष्ण वर्णीय व्यक्ति ने 10000 लोगों की मेरी मंडली में प्रचार किया, तब परमेश्वर की महिमा और सामर्थ उसकी आत्मा पर दिखाई दे रही थी, और वह व्यक्ति हिल रहा था और कांप रहा था और परमेश्वर को पुकार रहा था। परमेश्वर उसमें था।"

स्वतःप्रेरित सभाएं

अजूसा मार्ग की आराधना सभाएं स्वतःप्रेरित और सहज थीं। इनकी पूर्व घोषणा नहीं की जाती थी, विशेष गायक वृंद नहीं था, सुविख्यात गायक या प्रचारक नहीं थे। आराधना सामान्य तौर पर सुबह के समय शुरू होती और दूसरे दिन की सुबह तीन या चार बजे तक चलती रहती थीं। इसमें भाग लेने वाले एक व्यक्ति ने एक विशिष्ट सभा का यह वर्णन किया है: "कोई अन्य–अन्य भाषाओं में बोल रहा होगा। अचानक, पवित्र आत्मा मंडली पर उतर आता था। स्वयं परमेश्वर वेदी की पुकार देता था। पूरे घर भर में लोग गिरते रहते थे, जैसे किसी लड़ाई में मारे गए हों, या परमेश्वर को खोजने हेतु सामुहिक रूप से वेदी के पास दौड़ पड़ते थे। धृष्ट लोग भी कभी कभी हमारे मध्य में आते। विशेषकर ऐसे प्रचारक जो खुद को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छंद आचरण करते थे। परंतु उनके प्रयास क्षणिक होते। उनके मन भटक जाते, और उनके मस्तिष्क चकराते। उनकी आंखों के सामने अंधेरा छा जाता था। वे आगे नहीं बढ़ सकते थे। हमने केवल प्रार्थना की। पवित्र आत्मा उतर आया।" जैसे–जैसे अजूसा मार्ग मिशन में आराधना सभाएं चलती रहीं, लोगों ने यह बात फैला दी और समाचार पत्रों ने भी प्रकाशित की कि परमेश्वर वहां पर अनोखा काम कर रहा है।

स्थानीय कलीसिया और बेदारी में भेंट देने वाले लोग

विलियम सेमोर की पासबानी में चल रही अजूसा मार्ग मिशन की स्थानीय मंडली में करीब 200 लोग थे, जो लॉस एन्जेलिस और आसपास के क्षेत्रों में रहते थे। इस मंडली में करीब 50 प्रतिशत आफ्रिकन अमेरिकन, करीब दर्जन भर लैटिनो, और बाकी मिले–जुले लोग थे, अधिकतर श्वेत। 1906–1909 के बेदारी के वर्षों के दौरान, शब्दशः हजारों लोगों ने मिशन को भेंट दी। भेंट देने वाले लोग सब प्रकार के थे – अमीर, गरीब, आफ्रिकन अमेरिकन, लैटिन, श्वेत, जापानी, स्थानीय अमेरिकन निवासी, और अन्य। उनमें से कई लोगों ने अजूसा मार्ग पर पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया था और विश्वभर में अन्य स्थानों में चले गए थे, जहां पर उन्होंने यह संदेश फैलाया। अवलोकन किया गया कि वहां आने वाले 30 प्रतिशत लोग सुसमाचार प्रचारक, पासबान, शिक्षक और मिशनरी थे। तीन महीनों के अंदर उपस्थित होने वालों की संख्या 500–700 हो गई। 1906 के दौरान करीब 1500 लोग रविवार की आराधना में भाग लेते थे। आराधना सभाएं लम्बे समयों तक चलती रहती थी, लोग आते थे और जाते थे। महत्वपूर्ण बात थी विभिन्न वंश के लोगों के बीच सहभागिता – प्रेम और निगरानी को प्रोत्साहन दिया जाता था, और सब वंश के लोग आपस में मिलते जुलते थे।

सुनियोजित और सुसंगठित

रिकार्ड दर्शाते हैं कि अजूसा मार्ग मिशन अत्यंत सुसंगठित था, उसमें नियमित कर्मचारी, स्वयंसेवक, सदस्य, उसका अपना विश्वास का बयान और विश्वस्त मंडल था। यह मिशन निगमित *संस्था थी और उसकी अपनी जायदाद थी।* मिशन रविवार की दोपहर दूसरे माले पर ऊपर वाले कमरे में बच्चों का चर्च चलाता था। सोमवार की सुबह, कार्य के लिए उसके कर्मचारियों की योजना बैठकें होती थीं। जैसे–जैसे बेदारी बढ़ती गई और लॉस एन्जेलिस एवं अन्य उपनगरों में अपॉस्टोलिक फेथ मंडलियां स्थापित हुई, उन मंडलियों के पासबान भी इस सोमवार की सभा की बैठकों में शामिल होने लगे। मिशन ने एक राज्य निदेशक (फ्लोरेन्स क्रॉफोर्ड) और शहर सुसमाचार प्रचारक (जेनी मूर और फिबी सार्जेंट) को नियुक्त किया। सितम्बर 1906 से, मिशन *द अपॉस्टोलिक फेथ* नामक समाचारपत्र प्रकाशित करने लगा, जिसने देश भर के व्यापक श्रोताओं को बेदारी में जो कुछ हो रहा था उस विषय में बताने में सहायता की। वे लॉस ऐन्जेलिस के आसपास के गांवों में मार्ग की सभाओं के द्वारा सुसमाचारीय कार्यक्रम करने लगे।

आग फैलाना

बेदारी में सामर्थ पाए हुए सुसमाचार प्रचारक अजूसा स्ट्रीट मिशन से गए और वे बेदारी के आरम्भ से चार महीनों के अंदर पूरे राष्ट्र में फैल गए। इन सुसमाचार प्रचारकों के द्वारा बेदारी की आग पूरे देश में भड़क उठी। बेदारी के आरम्भ से आठ महीनों के अंदर, मिशनरी दक्षिण अमेरिका, आफ्रिका, यूरोप और आशिया के कई राष्ट्रों में जा चुके थे। 1908 तक, इस आंदोलन ने पचास से अधिक राष्ट्रों में जड़ पकड़ ली थी। 1914 तक, प्रत्येक अमेरिकन शहर में और संसार के प्रत्येक क्षेत्र में आइसलैंड से लेकर तान्ज़ानिया तक उसके 3000 या उससे अधिक प्रतिनिधि थे, और पेन्टिकॉस्टल विश्वासी तीस भाषाओं में साहित्य प्रकाशित कर रहे थे।

आलोचना और गलतफहमियां

अजूसा मार्ग मिशन ने संचार माध्यम, समाचारपत्र और जो कुछ हो रहा था उसे न समझ पाने वाले अन्य आलोचकों द्वारा आलोचना का सामना किया। लॉस एंजेलिस क्षेत्र की कुछ ऐतिहासिक कलीसियाओं ने उसके कुछ सदस्यों को खो दिया जो अजुसा मार्ग मिशन की बेदारी का हिस्सा बनना चाहते थे। इनमें से कुछ को बंद करना पड़ा। जो स्थानीय पासबान होने वाली बातों को नहीं समझते थे, वे बेदारी के विरोध में बोलने लगे और लिखने लगे। सबसे दुखद बात यह थी कि चार्ल्स फॉक्स परहैम जिन्होंने अक्टूबर 1906 में बेदारी को भेंट दी, वे भी जो कुछ हो रहा था, उसके विरोध में बोलने लगे। शायद, जो कुछ उन्होंने देखा था, उसमें उन्हें कोई आदर्श सिद्धान्त नज़र नहीं आया। उन्हें विभिन्न वंशों का आपस में मिलना पसंद नहीं आया, उन्होंने कइयों के आत्मा के बपतिस्मे के अनुभव पर

सवाल किया, वेदी की सेवा करने वाले उन्हें पसंद नहीं थे, और संसार में अपॉस्टोलिक फेथ ले जाने हेतु सेमोर का सुसमाचार प्रचारकों और मिशनरियों को भेजना पसंद नहीं आया। दुख की बात यह है कि देश के विभिन्न भागों में परहैम ने बेदारी के विरोध में बातें की।

कलह और बिखराव

बेदारी करीब तीन वर्षों तक (1906–1909) तक जारी रही। इस दौरान, बेदारी की आग अजूसा स्ट्रीट मिशन से पूरे संसार में फैल गई थी। अंत में, कलह शुरू हुआ और बेदारी की ज्वालाएं ठंडी पड़ गईं। 1908 में, फ्लॉरेन्स क्रॉफोर्ड सेमोर से अलग हो गई, वह अपने साथ कई कलीसियाएं ले गई, यह दावा करते हुए कि बेदारी का केन्द्र अब पोर्टलैंड, ओरेगॉन गया है। 1911 में, शिकागो से लॉस एन्जेलेस आए विलियम डर्हैम द्वारा, और 1913 में, लॉस एंजेलिस में वर्ल्ड वाईड अपॉस्टॉलिक फेथ कैम्प द्वारा जो कुछ हुआ था उसमें और विभाजन हुआ एवं फूट पड़ी। जब बेदारी ठंडी पड़ने लगी, तब कई लोग छोड़ कर चले गए और उन्होंने अपनी कलीसियाएं और मिशन स्थापित किए। 1914 तक, अजूसा स्ट्रीट मिशन एक छोटी–सी स्थानीय, कृष्णवर्णीयों की मंडली बनकर रह गई जिसमें कुछ ही दर्जन सदस्य थे। 28 सितंबर, 1922 को लॉस एंजेलिस में अपनी मृत्यु तक सेमोर वरिष्ठ पासबान बने रहे। उनकी पत्नी ने 1936 में उसकी मृत्यु तक पासबान के रूप में सेवा की। अंत में वह मिशन बेच दिया गया और उसे तोड़कर पार्किंग की जगह बनाई गई।

चिंतन :

अनपेक्षित माध्यम : परमेश्वर ने विलियम सेमोर का उपयोग किया जो अब तक अज्ञात था, जिसके पास कोई बड़ी उपलब्धियां नहीं थीं, सेवकाई में बड़ी सफलता का रिकार्ड नहीं था, कोई बड़ा नाम नहीं था। फिर भी हम सेमोर में एक विनम्र व्यक्ति को और परमेश्वर के लिए बेताब व्यक्ति को देखते हैं।

महत्वहीन स्थान और लोग : इसकी शुरूआत एक घर में एक प्रार्थना सभा में मात्र 15 लोगों से हुई।

आत्मा को जो उसे पसंद है वह करने का मौका देना : अजूसा मार्ग मिशन की आराधनाएं स्वतःप्रेरित थीं और जैसे आत्मा अगुवाई करता था, उसके अनुसार आगे बढ़ने हेतु स्वतंत्र थीं।

कार्य को सहारा देने और बढ़ाने के लिए मज़बूत संगठन : अजूसा मार्ग मिशन स्थानीय कार्य को सहायता देने, समाचारपत्र के माध्यम से सूचना प्रसारित करने, सड़क के सुसमाचार प्रचारों का समन्वयन करने और सुसमाचार प्रचारकों और मिशनरियों को भेजने के लिए सुसंगठित था।

उत्तम नेतृत्व : विलियम सेमोर को निकटता से देखने पर हमें यह दिखाई देता है कि वे अद्वितीय अगुवा थे, उन्होंने उस कार्य को योग्य नेतृत्व प्रदान किया जो परमेश्वर उनके मध्य में भेज रहा था।

जो दिया गया है उसे सम्हालने की ज़रूरत : शायद जिन क्षेत्रों में कुछ गलत हो गया था वह थे, अगुवों की टीम में ईर्ष्या, घमंड, लोभ और कलह। इसलिए अगुवों की टीम के सभी सदस्यों के लिए आवश्यक है कि वे अपने हृदयों की रक्षा करें और उसके द्वारा परमेश्वर बेदारी में जो भेज रहा है उसकी रक्षा करें।

6

कलीसिया की पुनर्स्थापना

विलापगीत 5:21

हे यहोवा, हमको अपनी ओर फेर, तब हम फिर सुधर जाएंगे। प्राचीनकाल की नाईं हमारे दिन बदलकर ज्यों का त्यों कर दे!

सुधार बेदारी के लिए मार्ग तैयार करता है जिसका परिणाम अक्सर कई क्षेत्रों में कलीसिया के पुनर्स्थापन में होता है :

#1, आत्मिक सच्चाइयों को समझने में पुनर्स्थापन

#2, नए दाखरस को अपने में समाने के लिए मशकों में पुनर्स्थापन

#3, परमेश्वर के उद्देश्य की खोज करने वाले परमेश्वर के लोगों में पुनर्स्थापन

#4, संसार पर कलीसिया के प्रभाव में पुनर्स्थापन

#1, आत्मिक सच्चाइयों को समझने में पुनर्स्थापन

इफिसियों 4:13–14

13 जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं।

14 ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग–विद्या और चतुराई से उनके भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर–उधर घुमाए जाते हों।

हम देखते हैं कि पिछली सदियों में आत्मिक बातों की समझ कलीसिया में धीरे–धीरे पुनर्स्थापित हुई है। अंधकार युगों के दौरान जो पूर्ण रूप से खो गया था, वह धीरे–धीरे सुधारको और बेदारी के प्रवर्तकों के द्वारा फिर खोजा गया जो उन बातों को घाषित करते हैं और अनुभवात्मक रूप से उनमें प्रवेश करते हैं, जिसमें परमेश्वर चाहता है कि उसकी कलीसिया प्रवेश करे। इन सच्चाइयों में ये बातें शामिल हैं :

- ✓ विश्वास द्वारा अनुग्रह से उद्धार
- ✓ विश्वास के लिए जल का बपतिस्मा
- ✓ पवित्रीकरण और पवित्र जीवन
- ✓ आत्मा के कार्य और सेवकाई की समझ और उसका स्वागत
- ✓ पवित्र आत्मा का बपतिस्मा
- ✓ आत्मा के वरदान
- ✓ परमेश्वर के वचन के ज्ञान में बढ़ते जाना
- ✓ विजयी मसीही जीवन
- ✓ पांच प्रकार के सेवा पदों की भूमिका और कार्य
- ✓ सेवा के कार्य में पवित्र जनों को सुसज्जित करना

#2, नए दाखरस को अपने में समाने के लिए मशकों में पुनर्स्थापन

मत्ती 9:17

"और नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरते, क्योंकि ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं, और दाखरस बह जाता है और मशकें नाश हो जाती हैं। परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरते हैं, और वह दोनों बची रहती हैं।"

परमेश्वर चाहता है कि हम लगातार नई मशकों को तैयार करते रहें ताकि हम नए दाखरस के लिए तैयार हो सकें। मशकें मात्र बर्तन हैं जिनमें दाखरस रखा जाता है और उण्डेला जाता है। मशकों का महत्व यह है कि वे सुरक्षित रूप से दाखरस को समा सकते हैं और उण्डेल सकते हैं। वास्तव में महत्व दाखरस का है, मशकें नहीं। मशकों को फेका जा सकता है और नई मशकें लाई जा सकती हैं। मशकें रचना, स्वरूप, पद्धति और हमारा कार्य करने का तरीका दर्शाती हैं।

जैसे–जैसे सुधार और बेदारियां जारी रहती हैं और कलीसिया महिमा से महिमा की और बढ़ती जाती हैं, हम नए दाखरस को रखने के लिए नई मशकों को तैयार करते रहने की ज़रूरत को महसूस करते हैं – विश्वास के नए स्तर, बल, महिमा, प्रकाशन जो कलीसिया को दिए जाते हैं।

अ. नई मशकों वाली कलीसियाएं

ब. पांच प्रकार के सेवा पदों का पुनर्स्थापन

क. विभिन्न फिरकों के अगुवों और विश्वासियों के मध्य आत्मा में एकता और सहभागिता

ड. उन आंदोलनों की शुरूवात जो नए मशकों वाली कलीसियाओं को तैयार करने में सहायता करते हैं।

अ. नई मशकों वाली कलीसियाएं

हम देखते हैं कि कलीसियाई प्रशासन, कलीसियाई रचना और कलीसिया के कार्य संचालन की पद्धतियां उन बातों के अनुसार बदलती हैं और उन बातों से अनुकूलन करती हैं जो परमेश्वर कलीसिया में करता है और जिसमें वह कलीसिया को ले जाता है। यदि वे बदलते नहीं हैं, तो उन्हें परिणामों को भुगतना पड़ता है या वे "अप्रांसगिक होकर आत्मिक प्रभाव खो बैठते हैं।"

ब. पांच प्रकार के सेवा पदों का पुनर्स्थापन

बेदारियों के साथ, हम सेवकाई के पांच पदों का (कार्यों का) पुनर्स्थापन देखते हैं, अर्थात् सुसमाचार प्रचारक, पासबान, शिक्षक, भविष्यद्वक्ता और प्रेरित जिसकी सूची इफिसियों 4:11–12 में दी गई है। इसका अर्थ यह नहीं कि ये कार्य पहले नहीं थे। वस्तुतः वे थे और इसीलिए उनकी सूची इफिसियों 4:11–12 और 1 कुरि. 12:28 में पाई जाती है। अंधकार युगों के दौरान अधिकांश रूप से इन सेवा–कार्यों का अस्तित्व नहीं रहा। जैसे–जैसे सुधार और बेदारियां आती गईं, वैसे–वैसे लोग इन सेवा पदों में कार्य करने लगे। 20वीं सदी में, जैसे–जैसे लोग इन सेवकाई के क्षेत्रों में कार्य करने लगे, जैसे–जैसे इन सेवा कार्यों की समझ और उनकी मान्यता स्थापित होती गई, वैसे–वैसे ये सेवा पद कलीसिया में पूर्ण रूप से सम्मिलित हो गए।

केवल शिक्षा के उद्देश्य से यहां कुछ नामों का उल्लेख किया गया है। विश्वभर में उनकी संख्या अनगिनत है। नीचे उल्लेख किए गए कुछ अगुवों ने उनकी सेवकाई के विभिन्न स्तरों पर एक से अधिक सेवा कार्यों में सेवा की।

सुसमाचार प्रचारक

1950 से आरम्भ होकर और आगे हम सुसमाचार प्रचारक के पद को (कर्तव्य/सेवकाई) देखते हैं। कुछ प्रारंभिक सुसमाचार प्रचारकों में इनका समावेश है :

कॅथरिन कुलमन (सन 1907–1976)
विलियम ब्रॅनहैम (सन 1909–1965)
ए. ए. ॲलन (सन 1911–1970)
लेस्टर समरॉल (सन 1913–1996)
जैक को (सन 1918–1957)
ओरल रॉबर्ट्स (सन 1918–2009)
बिली ग्रैहम (बी 1918, billygraham.org)
चार्ल्स और फ्रान्सिस हंटर (चार्ल्स 1920–2010। फ्रान्सिस 1916–2009)
टी. एल. और डेज़ी ऑस्बर्न (डेज़ी 1924–1995, टी. एल. 1923–2013)
डी. जी. एस. दिनाकरन (1935–2008)
रिनर्ड बाँकी (cfan.org)
बेनी हिन (bennyhinn.org)
रैंडी क्लार्क (globalawakening.com)

पासबान और शिक्षक

हम 1960 के दौरान शिक्षक के पद का उदय होते हुए देखते हैं और 1970 के दौरान पासबान के पद को पुनर्स्थापित होते हुए देखते हैं।

केनेथ हेगन सीनियर (1917–2003)
डेरेक प्रिन्स
बिल जॉन्सन

भविष्यद्वक्ता

हम इस सेवा कार्य को 1980 के दशक में पूर्ण रूप से स्थापित होते हुए देखते हैं।

केनेथ हेगन सीनियर (1917–2003)
बिल हॅमन
डी. जी. एस. दिनाकरन (1935–2008)

प्रेरित

हम इस सेवा कार्य को 1990 के दशक में पूर्ण रूप से स्थापित होते हुए देखते हैं।

बिल हॅमन
बिल जॉन्सन
रैंडी क्लार्क

मैं अत्यंत संक्षिप्त में समझाना चाहूंगा, हम समझते हैं कि आज कलीसिया में जो प्रेरित और भविष्यद्वक्ता कार्य करते हैं, वे मेम्ने के बारह प्रेरितों से (प्रकाशितवाक्य 21:14) और कलीसिया की नींव डालने वाले प्रेरितों (इफिसियों 2:20) से भिन्न हैं। आज के प्रेरित और भविष्यद्वक्ता इफिसियों 4:11–12 के अनुसार सेवा कार्य करते हैं।

क. विभिन्न फिरकों के अगुवों और विश्वासियों के मध्य आत्मा में एकता और सहभागिता

सुधार और बेदारियों के मुख्य परिणामों में से एक यह है कि परमेश्वर का आत्मा फिरकों की रेखाओं को मिटा देता है। यह सच है कि सुधार या बेदारी में कलीसिया में होने वाले परमेश्वर के किसी भी नए कार्य के लिए विरोधी और आलोचक हो सकते हैं, परंतु अधिक और विशाल प्रमाण में, कलीसिया एकता और सहभागिता में निकटता के साथ इकट्ठा होती है। फिरकों की रेखाएं और मतभेद मिट जाते हैं, और सहभागिता और एकता दृढ़ होती है और परमेश्वर ने हमारे लिए जो चाहा है उसके अनुसार हमें एक–दूसरे के निकट लाती है, *"जैसा तू हे पिता, मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे वे भी हममें हो, इसलिए कि जगत प्रतीति करे कि तू ही ने मुझे भेजा"* (यूहन्ना 17:21)।

ड. उन आंदोलनों की शुरूवात जो नए मशकों वाली कलीसियाओं को तैयार करने में सहायता करते हैं

जैसे–जैसे सुधार और बेदारियां आगे बढ़ती हैं, हम नए आंदोलनों को जन्म लेते हुए देखते हैं जो कलीसिया को किसी–न–किसी रीति से पुनः परिभाषित करने में सहायता करते हैं और हमें ऐसे लोग बनने हेतु आगे बढ़ाते हैं जो उस भरपूरी में चल सकते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखी है।

परमेश्वर के आत्मा का कार्य जो बल प्रदान करने वाला, संजीवित करने वाला, कलीसियाई जीवन के निश्चित क्षेत्र को पुनः परिभाषित करने वाला होता है, वह नया, ताजगीपूर्ण और सामर्थी होता है। परंतु, जब कार्य को संस्था का स्वरूप प्राप्त होता है, तब अक्सर शरीर बाधा डालकर शुद्ध कार्य को भ्रष्ट कर देता है जो पहले भेजा गया था। परंतु हम "जो नया कार्य आरम्भ हुआ है उसे बुराई के साथ फेंक नहीं देते" और इसलिए हमें आत्मा के शुद्ध कार्य को ग्रहण करने और अनावश्यक बातों को एवं देह की गंदगियों से दूर रहना सीखने की ज़रूरत है। हम में इतनी परिपक्वता होना चाहिए कि आकार लेनेवाले किसी भी आंदोलन में हम गेहूं को भूसी से अलग कर पाएं।

- ✓ **1900 पेन्टिकॉस्टल आंदोलन** : ने पवित्र आत्मा के बपतिस्मे और अन्य–अन्य भाषाओं में बोलने पर ज़ोर दिया। विभिन्न फिरकों को जन्म दिया, जैसे एसेम्ब्लीज़ ऑफ गॉड, चर्च ऑफ गॉड आदि।
- ✓ **1940 लॅटर रेन मुव्हमेंट (पिछली बारीश का आंदोलन)** : ने इस बात पर ज़ोर दिया कि सभी विश्वासी आत्मा के वरदानों को प्रकट कर सकते हैं, और पांच सेवा पदों के पुनर्स्थापन की घोषणा की। इस आंदोलन की शुरूवात कैनेडा के **सस्कॅशेवॅन** के उत्तर बॅटल फोर्ड के एक छोटे–से देहात में हुई। इस आंदोलन के परिणामस्वरूप विश्वभर में कई "पुनर्स्थापन कलीसियाएं" (रेस्टोरेशन चर्चेस) आरम्भ हुई।
- ✓ **1970–1990 द वर्ड ऑफ फेथ मुव्हमेंट (विश्वास का वचन आंदोलन)** : ने विश्वासियों को यह समझ प्रदान की कि वे मसीह में विश्वास के अनुसार, चंगाई, धार्मिकता, संपन्नता और उनकी पहचान में कैसे चलें।
- ✓ **1960–1970 कैरिस्मॅटिक आंदोलन** : ने विश्वासियों को प्रोत्साहन दिया कि वे आत्मा के वरदानों में कार्य करें।
- ✓ **1970–1980 जीज़स आंदोलन** : यहां पर लोग जो हैं वैसे उनसे प्रेम करने और उन्हें स्वीकार करने और मसीह के व्यक्तित्व से भेंट करने और आत्मा के कार्य और उनकी अगुवाई करने पर ज़ोर था। कुछ अत्यंत तेजी से बढ़ने वाले यू एस फिरकों का जन्म इसी आंदोलन से हुआ।
- ✓ **1970 – अखंड आराधना आंदोलन** : नए स्वरों में और नए गीतों के रूप में स्तुति और आराधना होने लगी। मारानाथा, इन्टेग्रिटी होसन्ना, विन्यार्ड, हिल साँग, जीज़स कल्चर, और अन्य कई।
- ✓ **1980–2000, बेदारी की तीसरी लहर का आंदोलन (द थर्ड वेव्ह मुव्हमेंट)** : ने सभी विश्वासियों के लिए कैरिस्मॅटिक अनुभव और सामर्थ के साथ सुसमाचार प्रचार पर ज़ोर दिया। यहां पर जॉन विम्बर और अन्य मुख्य अगुवे थे।

- ✓ **1980 – अखंड प्रार्थना और मध्यस्थी आंदोलन** : रीस होवेल्स (1879–1950), उसके बाद उसका बेटा सैम्यूएल होवेल्स (1912–2004) 20वीं सदी के दौरान मध्यस्थी की प्रार्थना आंदोलन के अगुवे थे। दक्षिण कोरिया के सेऊल में स्थित योइडो फुल गॉस्पल चर्च के पासबान, डेविड योंगी चो ने 1973 में दिन और रात प्रार्थना हेतु प्रार्थना पर्वत (प्रेयर माऊन्टेन) की स्थापना की। किसी क्षण परमेश्वर ने अंतर्राष्ट्रीय प्रार्थना आंदोलन को आगे बढ़ाने हेतु लॅरी ली का भी उपयोग किया। माइक बिकेल की अगुवाई में मिसूरी के कैन्सस सिटी में द इंटरनैशनल हाऊस ऑफ प्रेयर (ihopkc.org) स्थापित हुआ है, और सिंतबर 19, 1999 से लगातार सप्ताह में चौबीसों घटें प्रार्थना हो रही है। डच शीट्स और लू एंगल समकालीन भविष्यात्मक प्रार्थना अगुवे हैं। "संसार हमारा धर्म प्रांत बन गया और हमें देशों और राष्ट्रों के लिए मध्यस्थी करने हेतु ज़िम्मेदार रहने की अगुवाई प्राप्त हुई।" – रीस होवेल्श। प्रार्थना, आराधना और मध्यस्थी की यह बुलाहट सप्ताहभर के चौंबीसों घटों के लिए है।
- ✓ **1980 – अखंड, कलीसियाई उन्नति आंदोलन** : सेल्स चर्च जिसके अग्रणी डेविड योंगी चो हैं और विश्वासियों को सक्षम बनाकर और समुदायों को शामिल करके कलीसिया में उन्नति का अनुभव करने हेतु अन्य अभिनव तरीके।
- ✓ **2000 – अखंड, पवित्र जन आंदोलन (द सेंट्स आंदोलन)** : परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए जो कुछ रखा है उसके लिए उन्हें सुसज्जित करना और भेजना। इस आंदोलन के कुछ अगुवे इस प्रकार हैं : फ्रान्सिस मैक्नट (1925–वर्तमान समय), बिशप बिल हॅमन (1934–वर्तमान समय), जॉन विम्बर (1934–1997), जॉन और कॅरल आर्नाट, रैंडी क्लार्क, बिल जॉन्सन और अन्य कई।
- ✓ **2000 – अखंड, मार्केट प्लेस मिनिस्ट्री मुव्हमेंट (व्यापार केंद्र सेवा आंदोलन)** : फुल गॉस्पल बिज़नेस मैन्स फेलोशिप इंटरनैशनल (FGBMI)] और द इंटरनैशनल क्रिश्चियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स (ICCC) 1950 में प्रारंभिक अग्रणी थे, उनके बाद अन्य कई आए और वे परमेश्वर के राज्य के लिए अंतर लाने हेतु सेवा करने लगे और व्यापार के स्थानों में और बाजारों में कार्यरत विश्वासियों को गतिशील बनाने लगे। 21वीं सदी के आरम्भ से, समाज में अंतर लाने हेतु विश्वासियों को लैंस करने के द्वारा समाज की सात बातों को प्रभावित करने पर बढ़ते पैमाने पर ज़ोर दिया जा रहा है।

#3, परमेश्वर के उद्देश्य की खोज करने वाले परमेश्वर के लोगों में पुनर्स्थापन

इफिसियों 4:11–12

11 और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया,

12 जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए।

प्रभु का उद्देश्य है कि सेवा के कार्य के लिए पवित्र जनों को तैयार किया जाए ताकि उसकी कलीसिया की उन्नति हो सके। सुधार और बेदारियां कलीसिया को (विश्वासियों को) इस उद्देश्य में आगे प्रेरित करती हैं।

धीरे–धीरे हम देखते हैं कि पवित्र जन सेवा के कार्य के लिए तैयार किए जा रहे हैं। "पासबान–सामान्य विश्वासी" का भेद मिटता जा रहा है। विश्वासियों को आत्मा के वरदानों में आगे बढ़ने हेतु, मिशनों में और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने हेतु परमेश्वर की खोज करने के लिए सिखाया और प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

#4, संसार पर कलीसिया के प्रभाव में पुनर्स्थापन

मत्ती 5:13–16

13 "तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।

[14] "तुम जगत की ज्योति हो। जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता।

[15] "और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं, परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है।

[16] "उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके ताकि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।

सुधार और बेदारियां कलीसिया को इस पृथ्वी पर "नमक और ज्योति" बनने हेतु उसका स्थान फिर प्राप्त कराती हैं। कलीसिया यहां पर यह देखने के लिए है कि आत्माएं बचाई जाएं और उन्हें परमेश्वर के राज्य में लाया जाए। विश्वासियों को तैयार किया जाता है और मिशन कार्य के लिए भेज दिया जाता है। व्यापार केंद्रों में कार्यरत विश्वासी सीख रहे हैं कि समाज के सात पर्वतों को कैसे प्रभावित करें। स्थानीय कलीसियाएं एकजुट हो रही हैं, क्योंकि शहरव्यापी कलीसिया सक्रिय रूप से कलीसिया में परिवर्तन का प्रयास कर रही है।

7

हमारे दिन में बेदारी

पिछली वर्षा का समय

प्रेरितों के काम 2:17–18

17 "कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे।

18 "वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।

याकूब 5:7–8

7 इसलिए हे भाइयो, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो; देखो, गृहस्थ पृथ्वी के बहुमूल्य फल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है।

8 तुम भी धीरज धरो, और अपने हृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का शुभागमन निकट है।

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि अंत के दिनों में वह अपना आत्मा विश्व स्तर पर उण्डेलेगा, "सब प्राणियों पर"। पिछली वर्षा फसल के इकट्ठा करने के उद्देश्य से होती है। जैसे–जैसे हम प्रभु के आगमन के निकट आ रहे हैं, वैसे वैसे हम आत्माओं की कटनी की ऋतु के निकट आ रहे हैं। इसका अर्थ यह भी है कि हम पिछली वर्षा की ऋतु में हैं और आत्मा की वर्षा बढ़ती जाएगी।

बेदारी की ज़रूरत

आज हमारे पास तकनीक, साधन और कार्य–प्रणालियां उपलब्ध हैं, उससे यह मानना आसान है कि हमें सचमुच बेदारी की ज़रूरत नही है। परमेश्वर के निकट बेदारी के लिए आग्रह करने के बजाए, साधनों और उपकरणों का उपयोग करना बहुत आसान लगता है। अतः हमें बेदारी की ज़रूरत क्यों है? हम परमेश्वर से उसकी उपस्थिति, सामर्थ, और उसके आत्मा के सामर्थी उण्डेले जाने के लिए आग्रह क्यों करें?

#1. परमेश्वर के लिए, उसके वचन के लिए, उसके आत्मा के लिए हमारे आवेश को प्रज्वलित करने हेतु

कार्यक्रम, उपकरण, और प्रणालियां लोगों को उत्साहित कर सकती हैं, केवल परमेश्वर के आत्मा का कार्य ही परमेश्वर के लिए, उसके वचन के लिए, और उसके आत्मा की बातों के लिए आवेश को प्रज्वलित कर सकता है। "आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं" (यूहन्ना 6:63)।

#2. महिमा से महिमा की ओर बढ़ने हेतु और उस प्रकार के लोग बनने हेतु जैसा परमेश्वर हमारे लिए चाहता है

प्रत्येक बेदारी हमें परमेश्वर में नए क्षेत्र में ले आती है। जो कुछ हम पाते हैं, उसे यदि हम मज़बूत बनाएं, तो हम अधिकाई को पाने के लिए आग्रह कर सकते हैं और महिमा के बड़े क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं। व्यक्ति और समुदाय के रूप में हमें बल पर बल (भजन 84:7), और विश्वास (रोमियों 1:17), और महिमा से और महिमा (2 कुरि. 3:18)

पाने की ओर बढ़ना है। परमेश्वर चाहता है कि उसके लोगों के मध्य और महिमा प्रकट हो। जिस प्रकार सारी बातें हैं उसमें संतुष्ट होने के बजाए हमें और पाने की ओर बढ़ना है।

#3. हमें फसल के इकट्ठा करने को देखना है

बेदारी में लोग उद्धार पाते हैं और बड़ी संख्या में परमेश्वर के राज्य में जोड़े जाते हैं, सामान्य कार्यक्रमों और अभियानों के माध्यम से जो हासिल होता है उससे यह कई गुना अधिक होता है। जिन लोगों को उद्धार पाने की ज़रूरत होती है, उनकी संख्या बड़ी है। हमें आत्मा की बड़ी फसल इकट्ठा करने के लिए पवित्र आत्मा के सामर्थी कार्य की ज़रूरत है।

#4. यह देखना कि कलीसिया सचमुच संसार को नमक और ज्योति के रूप में प्रभावित कर रही है, परिवर्तन ले आ रही है

जैसा कि हम बेदारी के इतिहास में देखते हैं, अधिकतर बेदारियां समाज पर प्रभाव डालती हैं और कलीसिया के बाहर सामाजिक, नैतिक और आत्मिक परिवर्तन ले आती हैं। कहा जाता है कि कलीसिया संसार पर प्रभाव डालती है और बेदारी की ऋतुओं में ऐसे ऊंचे स्तर पर और बड़ी तेज गति से होता है। वास्तविक बेदारी का परिणाम समाज में परिवर्तन के रूप में होता है। परमेश्वर की उपस्थिति लोगों के मध्य से प्रवाहित होकर समाज की ओर बढ़ती है और परिवर्तन ले आती है।

बेदारी के मार्ग में आने वाली रुकावटें

कौन सी बातें हमें परमेश्वर की ओर आगे बढ़ने में रुकावट उत्पन्न करती हैं?

#1. अज्ञान

यदि हम नहीं जानते कि परमेश्वर ने कलीसिया के लिए क्या रखा है, तो हम नहीं जानते कि बहुत कुछ हमारे लिए रखा हुआ है जिसे हमें लेना है, परंतु हम पाते हैं कि हम खुद को लड़ते झगड़े पाते हैं और हमारे अज्ञान के कारण हम परमेश्वर के आत्मा के कार्य का उपहास करते हैं।

#2. गलतफहमी

कभी–कभी बेदारी, संजीवन या परमेश्वर की जागृति कैसी दिखेगी इस विषय में हमारा चित्र तिरछा होता है। कभी–कभी हम उसे सभाओं की श्रृंखला या कोई ऊंचे दर्जे का आत्मिक अनुभव कहकर उसके महत्व कम कर देते हैं। अतः, पीछे कलीसिया के इतिहास की ओर मुड़कर देखना महत्वपूर्ण है, वस्तुतः प्रेरितों के काम की पुस्तक की ओर देखें कि पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने का क्या परिणाम होगा और परमेश्वर अपनी कलीसिया के लिए क्या चाहता है।

#3. पाप और संसारिकता

जब हम परमेश्वर की बातों के विषय में अनौपचारिक रवैय्या अपनाते हैं, समझौते का जीवन बिताते हैं, तब बेदारी अधिक दिलचस्पी या महत्व नहीं रखती। हम उस विषय में चर्चा कर सकते हैं, उसे ईश्वर विज्ञान का रूप दे सकते हैं, उसके बारे में पढ़ और लिख सकते हैं, परंतु जब कीमत चुकाने की बात आती है, तब हम आराम और शारीरिक अभिलाषाओं से अभिभूत हो जाते हैं। *"हे व्यभिचारिणियो, क्या तुम नहीं जानती, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? इसलिए जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है"*

(याकूब 4:4)। हमने यह पहले सुना है कि परमेश्वर कलीसिया पर बिना किसी मिलावट के, बिना किसी परिमाण के अपना आत्मा उण्डेलेगा।

#4. आत्मसंतोष

कभी–कभी हम आत्मिक बातों के विषय में आत्मसंतुष्ट रहते हैं। हम परमेश्वर के साथ जहां पर हैं, जैसी परिस्थिति में हैं, वहां हम संतुष्ट रहते हैं, बहरहाल हमारे आत्मिक जीवन की चाल में सभी बातें बुरी नहीं होती। परंतु, हमारी "संतुष्टि" और अधिक पाने की चाह का अभाव सचमुच आत्मसंतोष का दर्शन है। परमेश्वर उस भूख, प्यास का उत्तर देता है, उन लोगों को उत्तर देता है जो उसकी अधिकाई पाने के लिए बेताब होते हैं। *"धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे" (मत्ती 5:6)। "अंतिम दिन, भोज के उस महान दिन, यीशु ने यह कहते हुए खड़े होकर पुकारा, 'फिर पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और उसने पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेगी। उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था"* (यूहन्ना 7:37–39)।

#5. आलस्य

आलस्य मात्र आत्मिक निकम्मापन है। हम बेदारी के लिए प्रार्थना करने, आगे बढ़ने, और परमेश्वर का पीछा करने का प्रयास नहीं करना चाहते। परंतु, हमें परमेश्वर के राज्य की अधिकाई को अनुभव करने के लिए आगे बढ़ने की ज़रूरत है। एक प्रकार की उत्कटता, साभिप्राय लक्ष्य की ज़रूरत है। *"यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य पर ज़ोर होता रहा है, और बलवान उसे बलपूर्वक छीन लेते हैं"* (मत्ती 11:12)। *"कोई भी तुझ से सहायता लेने के लिये चौकसी करता है कि तुझ से लिपटा रहे; क्योंकि हमारे अधर्म के कामों के कारण तू ने हम से अपना मुंह छिपा लिया है, और हमें हमारी बुराइयों के वश में छोड़ दिया है"* (यशायाह 64:7)।

#6. लापरवाही

क्या होगा कि यदि हम लापरवाह रहें! हम सचमुच परवाह नहीं करते। खोई हुई आत्माओं को उद्धार पाते हुए देखने के लिए, समाज और शहरों में सुसमाचार प्रचार होते हुए देखने के लिए, और कलीसिया को आवेश की आग से प्रज्वलित होते हुए देखने के लिए हमारे दिल में कोई आग नहीं जल रही है। जिस प्रकार लौदीकिया की कलीसिया गुनगुनी थी और वह किसी चीज़ की ज़रूरत महसूस नहीं कर रही थी, उसके समान हम महसूस करते हैं। *"क्योंकि इसलिए कि तू गुनगुना है, और न ठंडा है और न गर्म, मैं तुझे अपने मुंह में से उगलने पर हूं। तू जो कहता है कि मैं धनी हूं, और धनवान हो गया हूं, और मुझे किसी वस्तु की घटी नहीं, और यह नहीं जानता कि तू अभागा और तुच्छ और कंगाल और अन्धा, और नंगा है"* (प्रकाशितवाक्य 3:16–17)। निर्धन मनुष्य उसकी कमी जानता है और इसलिए जिसकी उसे ज़रूरत होती है उसे पाने के लिए हाथ आगे बढ़ाता है। एक अर्थ से विश्वासी होने के नाते हम मसीह में परिपूर्ण हैं, फिर भी हमें "आत्मा की दीनता" बनाए रखना है ताकि हम निरंतर उसकी अधिकता को पाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाते रहें और पूर्ण रूप से उस पर निर्भर हों। *"धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है"* (मत्ती 5:3)।

#7. बदलाव का विरोध

हम जानते हैं कि बेदारी की खोज करने हेतु यह आवश्यक होगा कि हम अपनी सुनियोजित योजनाओं, कार्यक्रमों, रणनीतियों को हटाकर रखें और पूर्ण रूप से पवित्र आत्मा पर निर्भर रहें कि वह हमारा मार्गदर्शन करे। बेदारी हानिकारक हो सकती है। बेदारी गड़बड़ी पैदा करने वाली हो सकती है। बेदारी विवादपूर्ण हो सकती है। और हम

इनमें से किसी बात को पाना नहीं चाहते इसलिए हम बेदारी की खोज नहीं करना चाहते, क्योंकि हम बदलना नहीं चाहते।

#8. व्यस्तता

कभी–कभी हम इतने व्यस्त होते हैं कि हम लम्बे समय तक प्रार्थना में परमेश्वर की खोज करने हेतु समय नहीं बिता सकते। हमारी कार्यसूचियां ऐसी बातों से भरी होती हैं जिन्हें हम करते हैं। बेदारी के लिए आवश्यक है कि हम लम्बा समय केवल परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए निश्चित करें। हम मार्था के समान बन सकते हैं; हम अच्छे कामों के व्यस्त हो जाते हैं और उस समय अधिक महत्वपूर्ण क्षण को जो हमारे सामने होता है, पहचान नहीं पाते। मार्था ने जो किया वह अपने आपमें गलत नही था। जो कुछ उसने किया वह इसलिए गलत था क्योंकि जो अधिक महत्वपूर्ण बात उस क्षण उसके लिए उपलब्ध थी, उसे वह नहीं देख पायी। *"प्रभु ने उसे उत्तर दिया, 'मार्था, हे मार्था, तू बहुत बातों के लिए चिन्ता करती और घबराती है। परन्तु एक बात अवश्य है, और मरियम ने उस उत्तम भाग को चुन लिया है, जो उससे छीना न जाएगा'"* (लूका 10:41–42)। बेदारी के मध्य प्रेरितों ने बुद्धिमानीपूर्ण निर्णय लिया, प्रशासनिक कामों से खुद के मन को विचलित न करके उन बातों पर ध्यान लगाने का उन्होंने फैसला किया जो बेदारी की आग को ईंधन देती रहेगी और बनाए रखेगी। *"इसलिए हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे"* (प्रेरितों के काम 6:3–4)।

#9. विभाजन या फूट

अक्सर हम इस बात से पूर्णतया सहमत होते हैं कि हमें हमारे शहर में बेदारी की ज़रूरत है। फिर भी हम हमारे साथी सेवकों के विरोध में कड़वाहट, क्षमाहीनता, सम्प्रदायवाद, फिरकावाद, सुपर–हीरो का दर्जा, और अन्य कई बातें अपने मन में रखते हैं जो हमें विभाजित करती हैं। स्थानीय कलीसिया में विभाजन, कलह और विवाद हो सकते हैं और ये आत्मा की सामर्थी बेदारी पाने में रुकावट बन सकते हैं। भजन 133 हमें बताता है कि अभिषेक मुक्त रूप से बहता है, और परमेश्वर एकता में रहने वाले लोगों के लिए जीवन, ताज़गी और आशीष की आज्ञा देता है। *"देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें! यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हारून के सिर पर डाला गया था, और उसकी दाढ़ी पर बहकर, उसके वस्त्र की छोर तक पहुंच गया। वह हेर्मोन की उस ओस के समान है, जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है! यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है"* (भजनसंहिता 133:1–3)।

प्रार्थना :

प्रिय स्वर्गीय पिता, कृपया यह देखने के लिए मेरी आंखों को खोलिए कि कहीं मेरे जीवन में ऐसी बातें तो नहीं जो मुझे आपकी अधिकाई की खोज करने से और मेरी कलीसिया को और शहर की कलीसिया को बेदारी के लिए आगे बढ़ने से रोक रही हैं। उन सारी बातों को मेरे जीवन से दूर कीजिए जो बेदारी के लिए आगे बढ़ने के मार्ग में बाधा बनती हैं : अज्ञान, गलतफहमी, पाप और संसारिकता, आत्मसंतोष, आलस्य, लापरवाही, बदलाव का विरोध, व्यस्तता, या विभाजन।

सच्ची बेदारी या ईश्वरीय मुलाकात की विशेषताएं

मत्ती 7:16–20

16 उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या झाड़ियों से अंगूर, वा ऊंटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं?

17 इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है, और बुरा पेड़ बुरा फल लाता है।

18 अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न बुरा पेड़ अच्छा फल ला सकता है।

[19] जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटकर आग में डाला जाता है।

[20] इस तरह उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।

कोई कार्य सचमुच परमेश्वर का कार्य है या नहीं इसे जांचने के लिए किस बात को देखना होगा?

#1, ऐसा कुछ जिसका निर्माण नहीं किया जा सकता

वास्तविक बेदारी प्रचार, संचार माध्यम, कार्यक्रम, उत्तम विज्ञापन प्रचार या अन्य प्रकार के प्रचार का परिणाम नहीं होती। बेदारी उत्तेजना या उत्साह नहीं होती जो साधनों और तकनीकों के माध्यम से उत्पन्न की जाए। वह कैरिस्मैटिक अगुवों का अनुरोध या आधुनिक सनक या भावना नहीं है। वह *"आत्मा है जो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं"* (यूहन्ना 6:63)।

#2, यीशु को ऊंचा उठाया जाता है, व्यक्ति को नहीं

पवित्र आत्मा का सच्चा कार्य हमेशा यीशु मसीह को ऊंचा उठाएगा। स्वयं यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा उसे गौरव देगा (यूहन्ना 16:14)। पवित्र आत्मा की उपस्थिति और कार्य इस संसार में यीशु का सर्वोत्तम 'विज्ञापन' है।

#3, सही शिक्षा की घोषणा वहां होती है

जैसा कि आत्मा की पहली वर्षा और प्रारंभिक कलीसिया के जन्म के समय था, हमें चाहिए कि विश्वासी परमेश्वर के वचन में स्थिर हों। पिन्तेकुस्त के दिन और बाद में ऐसा ही हुआ : *"और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे"* (प्रेरितों के काम 2:42)। क्रूस की स्पष्ट घोषणा, पश्चाताप, राज्य की जीवित जीवनशैली और परमेश्वर के बेटे और बेटियों के रूप में हमारे महिमामय जीवन के लिए बुलावा आदि के साथ, यीशु मसीह के सुसमाचार की घोषणा की जानी चाहिए।

#4, आत्मा में एकता होती है

जिन्हें परमेश्वर इस्तेमाल कर रहा है, उनके हृदय में भाईचारे का प्रेम हो, मात्र शब्दों में नहीं, परंतु कार्य और सत्य में भी। लोगों को बिना प्रतियोगिता के, एक–दूसरे के विरोध में बड़ाई न करते हुए, या फूट न रखते हुए एक साथ आगे बढ़ना है। जहां पवित्र आत्मा कार्य करता है वहां "आत्मा की सहभागिता" होती है (फिलिप्पियों 2:1)।

#5, लोग निकटता में, संपूर्णता में, मसीह की समानता में लाए जाते हैं

क्या लोग उनके प्रतिदिन के जीवन में परमेश्वर के निकट लाए जा रहे हैं? क्या लोग आत्मा, शरीर और प्राण में स्वस्थ किए जा रहे हैं? क्या लोगों को हर तरह से मसीह के समान बनने की चुनौती दी जा रही है? यह एक महत्वपूर्ण कसौटी है। उदाहरण के तौर पर, टोरोंटो की बेदारी में, पिता के प्रेम की घोषणा और अनुभव भावनात्मक रूप से टूटे हुए कइयों के लिए चंगाई ले आई। लोग आए और उन्होंने टोरोंटो की बेदारी में गहरी आत्मिक चंगाई प्राप्त की। इससे वे स्वयं प्रभु की ओर गहरे प्रेम में खींचे गए। जितना अधिक उन्हें यह मालूम हुआ कि उनसे कितना प्रेम किया गया है, उतना अधिक वे बदले में प्रेम लौटा पाए।

#6, उसमें परिवर्तित जीवन का स्थायी फल होता है

हमें घटना और प्रकटीकरणों से परे स्थायी फल की खोज करने की ज़रूरत है। अर्थात इसके लिए जागृत रहकर देखने के लिए समय की ज़रूरत होगी। उदाहरण के तौर पर : टोरोंटो की बेदारी में कुछ अत्यंत अजीब प्रकटीकरण थे जिनमें हंसना, ज़मीन पर गिर जाना, कांपना, सिंह की नाई गरजना, 'जन्म देना' और 'पवित्र आत्मा से मदहोश

होना' आदि शामिल थे। परंतु हज़ारों–हज़ारों लोग थे जिन्होंने इस बेदारी से परमेश्वर के साथ सामर्थी भेंट की, आंतरिक चंगाइयां प्राप्त की, नवीनीकरण प्राप्त किया और यहां सामर्थी सेवकाइयों के उदय की कई उल्लेखनीय कहानियां हैं। इन दो पर विचार करें :

निकी गम्बेल और अल्फा

टोरोंटो की बेदारी से जिन कई कलीसियाओं ने स्पर्श प्राप्त किया उनमें से एक था लंडन के ब्रॉम्पटन का होली ट्रिनिटी चर्च (एच टी बी) जिसके अगुवे थे निकी गम्बेल, उन्हें अल्फा के अगुवे के रूप में जाना जाता है। अल्फा को तेजी लाने हेतु टोरोंटो की आशीष की आवश्यक थी। ब्रॉम्पटन के होली ट्रिनिटी चर्च (एच टी बी) ने लंडन के खोए हुओं को सुसमाचार सुनाने के उपकरण के रूप में अल्फा पाठ्यक्रम की शुरूवात की। 1992 में, ब्रिटेन में 5 अल्फा पाठ्यक्रम थे, उस वर्ष केवल सौ लोगों ने इसमें भाग लिया था। 1994 तक 26,700 लोगों ने इसमें भाग लिया। 2015 में, अब अल्फा 160 देशों तक पहुंच गया है और प्रति वर्ष 35,000 पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं, 1,50,000 से अधिक लोगों ने इसमें भाग लिया है। यह इंग्लैंड की पहली कलीसियाओं में से एक थी जिसने टोरोंटो ब्लेसिंग से आने वाले कैरिस्मैटिक नवीनीकरण को स्वीकार किया था और राष्ट्र की सन्मानित कलीसियाओं में से एक हैं। निकी गम्बेल ने अल्फा के प्रारंभिक दिनों में कहा, "मैं मानता हूं कि इसमें संयोग की बात नहीं है कि पवित्र आत्मा का वर्तमान आंदोलन (टोरोंटो की आशीष) अल्फा पाठ्यक्रमों के विस्फोट के समय में ही आया है। मुझे लगता है कि दोनों साथ–साथ हो रहा हैं" (Renewal May 1995, page 15.)

हाईडी बेकर और टोरोंटो में जो कुछ हुआ

रोलंड और हाईडी बेकर पिछले दस वर्षों से मिशनरी थे। 1995 में वे मोज़ाम्बिक को मिशनरी बनकर गए और उनके पास **तीन–सौ से अधिक** बच्चों की ज़िम्मेदारी थी जो उन्हें 'मम्मा आयडा' कहते थे। आर्थिक तंगी थी। हाईडी थक चुकी थीं, भावनात्मक रूप से बेहाल थीं और शरीर से बीमार थीं। 1996 में, टोरोंटो की बेदारी में हिस्सा लेने से उनकी सेवकाई पूर्ण रूप से बदल गई थी। दो डॉक्टरों ने उन्हें बताया था कि वे यह सफर बिल्कुल नहीं कर सकतीं क्योंकि उन्हें डबल न्यूमोनिया हो गया है और उनके खून में ज़हर फैला गया है। परंतु विश्वास में दृढ़ होने की वजह से वे किसी रीति से हवाई जहाज में बैठ गईं और तीस घण्टों की यात्रा कर सभा में पहुंच गईं। सभा के आरम्भ में ही परमेश्वर ने उनके फेफडों को खोल दिया और वह खुली तौर पर सांस लेने लगीं। प्रतिदिन निरंतर आराधना, शिक्षा और प्रार्थना के मध्य उनका बल बढ़ता गया। वे सेवकाई की टीम के प्रिय लोगों से कई घण्टों तक प्रार्थना पाने लगीं। हाईडी हमेशा बताती हैं कि वर्षों तक प्रचार करने और शिक्षा देने के बाद भी उन्हें यह स्वीकार करना मुश्किल लग रहा था, परंतु जल्द ही उनके लिए चंगाई का गहरा समय आ गया। एक रात उन्हें ऐसा लगने लगा कि उन्हें प्रसव पीड़ा हो रही है और वे मोज़ाम्बिक के बच्चों के लिए मध्यस्थी करती हुई कराहने लगीं। वह उन्हें देखने लगी। हज़ारों बच्चे उनके पास आ रहे थे। वे कहने लगीं, "नहीं, प्रभु, ये बहुत हैं!" फिर उन्होंने यीशु को देखा और उसे यह कहते सुना, "मेरी आंखों में देख। उन्हें कुछ खाने के लिए दे।" उसने अपनी बगल से अपनी टूटी हुई देह में से कुछ निकाला और वह रोटी बन गया, और वह उन्हें बच्चों को देने लगी। फिर यीशु ने कहा, "मेरी आंखों में देख। उन्हें कुछ पीने के लिए दे।" उसने अपनी पसली से बहने वाले लोहू और जल का प्याला हाईडी को दिया, उसने यह उन बच्चों को पीने के लिए दिया। प्रभु ने कहा, "हमेशा पर्याप्त रोटी और लोहू होगा, क्योंकि मैंने अपनी जान देकर कीमत चुकाई है। मत डर, केवल विश्वास कर।" अगले दिन रैन्डी क्लार्क ने उनके लिए प्रार्थना की और यह घोषणा की कि परमेश्वर उन्हें मोज़ाम्बिक राष्ट्र देगा, बहरे सुनेंगे, लंगड़े चलेंगे और अन्धे देखेंगे। वे अलौकिक सामर्थ के साथ मोज़ाम्बिक को लौट गईं। तब से जो कुछ हुआ यह एक सामर्थी कहानी है। आयरिस ग्लोबल इस समय **10000 से अधिक बच्चों** को, उसी तरह अन्य समुदायों के कई लोगों को प्रतिदिन भोजन खिलाता है जिनमें मलावी के **4000 परिवार** भी शामिल हैं। उनके पास **10000** से अधिक कलीसियाएं हैं जिसमें से **2000 कलीसियाएं** उत्तर मोज़ाम्बिक के मकुआ लोगों में हैं। आइरिस **5 बाइबल शालाएं** चलाता है, इसके अलावा उनकी **तीन प्राथमिक शालाएं** हैं और पेम्बा में उनकी स्कूल ऑफ मिशन्स है। यह मानो 'नियंत्रण से बाहर बेदारी' है?

क्या हम परमेश्वर से बेदारी पा सकते हैं? कैसे?

1 कुरि. 3:9 क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं...

बेदारी परमेश्वर का शुद्ध कार्य है, परंतु लोगों के रूप में हम परमेश्वर के आत्मा के भारी उण्डेले जाने के लिए तैयारी कर सकते हैं और परमेश्वर की खोज कर सकते हैं।

ऐसा कोई निश्चित 'सूत्र' नहीं है जो परमेश्वर के आत्मा की वर्षा को उत्पन्न कर सके।

इन बातों में विभिन्नता होती है

अ. जो समय परमेश्वर चुनता है : बड़े आत्मिक और नैतिक पतन के समय में, या जब परमेश्वर के लोग उसे आग्रह के साथ खोजते हैं;

ब. प्रार्थना में बीज बोने के काल में : कभी–कभी प्रार्थना के कुछ ही महीनों बाद बेदारी आती है, और कभी–कभी कई वर्षों की प्रार्थना के बाद।

क. वह स्थान जो परमेश्वर चुनता है : बड़े शहर, छोटे गांव, कॉलेज के आवास, घर, सड़कों के कोने, बाज़ार के स्थान आदि।

ड. व्यक्ति या लोग जिनका परमेश्वर उपयोग करता है : शिक्षित, अशिक्षित, जवान और बूढ़े, प्रचारक, सामान्य विश्वासी, कोई भी।

इ. चिनगारी जो आग भड़काती है : कभी–कभी प्रबल सामुहिक प्रार्थना, कभी–कभी प्रचार, कभी–कभी परमेश्वर को खोजने वाला व्यक्ति आदि।

फ. पवित्र आत्मा की वर्षा के प्रकाशन : सब प्रकार के चिन्ह, चमत्कार और घटनाएं हो सकती हैं।

बेदारी परमेश्वर का सार्वभौम कार्य है, परंतु उसके सहकर्मियों के रूप में हमें अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाना है। हमारा भाग है खुद को तैयार करना और उसके आने तक उसकी खोज करते रहना।

लॉरेन्स स्पार्क ने अपने लेख (Sovereignty or Spiritual Hunger? Six Key Factors that Birthed the Toronto Blessing," (August, 2013, lawrencesparks.com) में छः मुख्य कारक बताए हैं जो जॉन और कैरल आर्नाट द्वारा टोरोंटो में संचालित एक छोटी–सी महत्वहीन कलीसिया पर परमेश्वर पिता की आशीष के उण्डेले जाने का कारण बने :

क्या हम परमेश्वर से बेदारी पा सकते हैं? कैसे?

कारक 1 : परमेश्वर के हस्तक्षेप के लिए बेताबी : पास्टर जॉन और कैरल आर्नाट, और पास्टर रैंडी क्लार्क जिन्हें परमेश्वर ने टोरोंटो की बेदारी में उपयोग किया, वे परमेश्वर के अलौकिक कार्य के लिए बेताब थे।

कारक 2 : आत्मिक भक्ति के असामान्य कार्य : उनकी बेताबी की वजह से, आर्नाट दम्पत्ति हमेशा की तरह अपनी कलीसिया का संचालन नहीं करना चाहते थे। उन्होंने अपना कार्यक्रम बदला और प्रभु की बाट जोहने के लिए समय अलग निकालने लगे।

कारक 3 : बेदारी के अगुवों की ओर से आशीष का प्रतिदान (इम्पार्टेशन) : जॉन और कैरल आर्नाट ने टोरोंटो में बेनी हिन की सभा में हिस्सा लिया जहां उन्होंने आत्मा का और कार्य देखा। पास्टर क्लॉडिओ फ्रिजॉन के द्वारा और पाने के लिए उन्होंने दक्षिण अमेरिका की यात्रा की। रैंडी क्लार्क आए और रॉड्नी हॉवर्ड ब्राऊन ने उनके लिए कई बार प्रार्थना की।

कारक 4 : गवाही की भूख उत्पन्न करने वाली सामर्थ : जॉन और कैरल आर्नाट ने जब सुना कि परमेश्वर अर्जेन्टिना में पा. क्लॉडिओ फ्रिज़ॉन के द्वारा क्या कर रहा है, तब वे उत्साहित हो गए और उन्हें अधिक खोज करने हेतु प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। उसी तरह, जब रैंडी क्लार्क ने रॉड्नी हॉवर्ड ब्राऊन की सेवकाई के द्वारा परमेश्वर जो कुछ कर रहा था, उसके विषय में गवाही सुनी, तब वे उत्साहित हो गए।

कारक 5 : बेदारी का तब तक पीछा करें जब तक कि बेदारी आपका पीछा न करने लगती है : जॉन और कैरल आर्नाट बेदारी का अनुभव कर रहे अन्य लोगों को ढूंढ़ने लगे, उनका निरीक्षण करने लगे और उनकी ओर से सीखने लगे।

कारक 6: बेदारी की आयात और निर्यात : उन्होंने बेदारी के मुख्य अगुवों का टोरोंटो में स्वागत किया और बेदारी का वहन करने वाले अन्य अगुवों को उन्होंने संसार के अन्य भागों में भेजा।

उसी तरह, स्थानीय कलीसियाई समुदाय आत्मा की वर्षा को ग्रहण करने, उसका प्रबंधन करने और उसे मुक्त करने के लिए खुद को कैसे तैयार कर सकता है?

लूका 14:28–30

[28] तुममें से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की सामर्थ मुझ में है या नहीं?

[29] कहीं ऐसा न हो, कि जब नेव डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें,

[30] "कि यह मनुष्य बनाने तो लगा, परंतु पूरा न कर सका?"

तैयारी के दो मुख्य चरण :

#1, लोगों को तैयार करें

#2, प्रार्थना में अनुसरण करें

#1, लोगों को तैयार करें

अ. पाप, संसारिकता, बचकानी हरकतें, लड़ाई–झगड़ा, प्रतिस्पर्धा, मान्यता, पद, आदि की इच्छा दूर करें। कई बड़ी बेदारियों में, परमेश्वर के लोगों के मध्य, जिन्हें वह इस्तेमाल कर रहा था, होने वाले लड़ाई–झगड़ों की वजह से बेदारी रुक गई।

1906 के अप्रैल माह में आरम्भ हुई अज़ूसा मार्ग की बेदारी के पश्चात 1909 में लोगों के मध्य गंभीर मतभेद और लड़ाई–झगड़े उत्पन्न हुए। अपॉस्टॉलिक फेथ मिशन के सचीव फ्लॉरेन्स क्रॉफोर्ड कुछ मतभेदों मे बाद अपनी डाकसूची लेकर छोड़ चली गई। इस सूची का उपयोग लोगों को बेदारी के विषय में बताने के लिए किया जाता था। छोटी–छोटी बातों के विषय में मतभेदों के कारण मिशन में संघर्ष उत्पन्न हो गए, जैसे नेक–टाय पहनना संसारिकता का चिन्ह है, मिशन के लिए तूफान से बचाने वाली छत तैयार करना विश्वास का अभाव है या अन्य कई बातें। एक या दो सप्ताह के लिए बेदारी के स्थान को भेंट देने वाले कई प्रचारक यह महसूस करने लगे कि वे उनसे बेहतर काम कर सकते हैं और उन्होंने मुकाबले में नज़दीक ही दूसरा कार्य शुरू किया। पवित्रीकरण के विषय पर ईश्वरविज्ञानियों के मध्य उत्पन्न हुए मतभेदों से भी विभाजन हो गया। इससे बेदारी कमज़ोर होती गई।

पेन्साकोला, फ्लोरिडा के पेन्साकोला ब्राऊन्सविल एसेम्ब्ली ऑफ गॉर्ड चर्च का आरम्भ 1995 में हुआ था। सन 2000 तक उसके मुख्य अगुवों स्टीफन हिल, जॉन किलपैट्रिक और आरम्भ में बी आर एस एम का प्रमुख माइकल ब्राऊन के मध्य लड़ाई–झगड़े आरम्भ हो गए। लड़ाई–झगड़ों और टूटे हुए रिश्तों के कारण आत्मा का कार्य बूझ गया।

ब. राज्य की मानसिकता रखने वाले बनें

हम यहां पर उसके राज्य को आते हुए देखने के लिए हैं। यह हमारे हृदय की इच्छा है। हम जो भूमिका निभाते हैं उसके बावजूद, बीज बोना, जल देना, या कटनी काटना आदि सब में हम सब एक हैं। परमेश्वर है जो बढ़ौतरी देता है और हम अनंतकाल के लिए फल इकट्ठा कर रहे हैं (1 कुरि. 3:3–9, यूहन्ना 4:35–38)।

क. परमेश्वर की उपस्थिति पर ज़ोर, कार्यक्रमों पर नहीं

परमेश्वर की उपस्थिति की खोज करने हेतु लोगों को प्रशिक्षित करें और बताएं कि कार्यक्रम या कार्यसूची को पकड़े न रहें।

ड. नए विश्वासियों को चेला बनाने के लिए लोगों को तैयार करें

हम अनेक लोगों को उद्धार पाते हुए देखने की अपेक्षा करते हैं। परंतु हमें उनका स्वागत करने के लिए तैयार रहने की ज़रूरत है। नए विश्वासियों को उनकी विश्वास की यात्रा में मदद करने के लिए अन्य विश्वासियों को तैयार करें।

इ. लोगों को "जाने" के लिए, बेदारी की आग लेकर चलने के लिए (अग्रणी की मानसिकता तैयार करने) के लिए तैयार करें। हमें ऐसे लोगों को तैयार करने की ज़रूरत है जो अपने आरामगाह से निकलकर परमेश्वर जो बेदारी मुक्त कर रहा है उसे दूर–दूर तक ले जाने और अन्य लोगों को देने के लिए तैयार रहेंगे। लोगों को जाने के लिए तैयार रहना है।

फ. परमेश्वर की बेदारी का उपयोग करने हेतु बदलाव करने के लिए तैयार रहें, बेदारी हमारी कार्यसूचियों में और अन्य कई पहलुओं में बाधा ला सकती है जिनसे हम सहज महसूस करते हो। परमेश्वर जिस प्रकार हमारी अगुवाई करता है उसमें उसके साथ आगे बढ़ने हेतु परिवर्तन करने के लिए हमें तैयार रहना है।

ग. आवश्यक कदम बढ़ाने हेतु, **जाने के लिए** और ज़रूरी कामों को करने के लिए अगुवों की टीमें तैयार करें। परमेश्वर अधिकार रखता है और अगुवे होने के नाते लोगों की सेवा करने हेतु जो कुछ आवश्यक है वह हमें करना है। हमें उपाधियों, पदों और भूमिकाओं को पकड़े नहीं रहना है। हमारा लक्ष्य यह देखना है कि परमेश्वर की उपस्थिति लोगों के जीवनों को स्पर्श करे।

#2, प्रार्थना में लगे रहें।

अ. बेदारी के लिए व्यक्तिगत प्रार्थना के लिए प्रोत्साहन दें।

ब. बेदारी के लिए सामुहिक प्रार्थना के लिए लोगों को बुलाएं।

जब हम बेदारी के लिए प्रयास करते हैं तब उचित क्रम बनाए रखना महत्वपूर्ण होता है। बेदारी में परमेश्वर के आत्मा के सामर्थी, अलौकिक उण्डेले जाने के लिए प्रार्थना करते समय हमें धीरे–धीरे क्रमानुसार बढ़ती हुई उन्नति को नज़रअंदाज़ नहीं करना है।

बेदारी के लिए हमारी पुकार उसकी और उपस्थिति और महिमा के लिए पुकार है।

बेदारी के लिए प्रत्येक सच्ची पुकार वास्तव में यह पुकार है कि परमेश्वर की महिमा प्रकट हो, लोगों के मध्य में परमेश्वर की महिमा के लिए बेताबी दिखाई दे। वस्तुतः यही परमेश्वर के हृदय की पुकार है। परमेश्वर चाहता है कि यहां पृथ्वी पर उसकी महिमा उसके लोगों पर प्रकट हो।

हबक्कूक 2:14

क्योंकि पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र से जल भर जाता है।

(ये वचन भी देखें गिनती 14:20–21, यशायाह 11:9)।

परमेश्वर चाहता है कि पृथ्वी उसकी महिमा से और उसकी महिमा के ज्ञान से भर जाए।

यशायाह 60:1–3

1 उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है।

2 देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रकट होगा।

3 और अन्यजातियां तेरे पास प्रकाश के लिये और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएंगे।

परमेश्वर की महिमा उसके लोगों के द्वारा प्रकट होगी।

भजनसंहिता 63:1–2 (दाऊद का भजन)

1 हे परमेश्वर, तू मेरा ईश्वर है, मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा; सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।

2 इस प्रकार से मैंने पवित्रस्थान में तुझ पर दृष्टि की, कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूं।

3 क्योंकि तेरी करूणा जीवन से भी उत्तम है, मैं तेरी प्रशंसा करूंगा ।

सारांश रूप में, यहां बेदारी के लिए पुकार है। जिस प्रकार व्यक्ति सूखी और बंजर भूमि में जल की लालसा करता है, उसी प्रकार दाऊद परमेश्वर के लिए अपनी भूख और प्यास व्यक्त करता है। और जब परमेश्वर के लोग पवित्र स्थान में इकट्ठा होते हैं, तब वह उनके मध्य उसकी 'सामर्थ और महिमा' को प्रकट होते देखना चाहता है। परमेश्वर उसके भवन को उसकी महिमा से भर देना चाहता है (हाग्गै 2:4, भजनसंहिता 26:8, गिनती 14:21)।

परमेश्वर की महिमा का प्रकटीकरण कैसे दिखता है?

निर्गमन 33:11–23

11 और यहोवा मूसा से इस प्रकार आमने–सामने बातें करता था, जिस प्रकार तो छावनी में भाई से बाते करे। और मूसा तो छावनी में फिर आता था, परंतु यहोशू नाम एक जवान, जो नून का पुत्र और मूसा का टहलुआ था, वह तम्बू में से न निकलता था।

12 और मूसा ने यहोवा से कहा, सुन, तू मुझसे कहता है, कि इन लोगों को ले चल; परंतु यह नहीं बताया कि तू मेरे संग किसको भेजेगा। तौभी तू ने कहा है, कि तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है, और तुझ पर मेरे अनुग्रह की दृष्टि है।

13 और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो मुझे अपनी गति समझा दे, जिससे जब मैं तेरा ज्ञान पाऊं तब तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे। फिर इसकी भी सुधि कर कि यह जाति तेरी प्रजा है।

14 यहोवा ने कहा, मैं आप चलूंगा, और तुझे विश्राम दूंगा।

मूसा जानना चाहता था कि परमेश्वर उसके साथ किसे भेजेगा और परमेश्वर की योजनाएं क्या थी ताकि मूसा उसका अनुसरण कर सके ('मुझे अपनी गति समझा दे')।

परमेश्वर ने उत्तर दिया कि उसकी उपस्थिति उनके संग चलेगी और वह उन्हें विजय (विश्राम) देगा।

मूसा ने अपना वार्तालाप जारी रखा और परमेश्वर की उपस्थिति पर उसकी निर्भरता जाहीर की।

15 उसने उससे कहा, यदि तू आप न चले, तो हमें यहां से आगे न ले जा।

16 यह कैसे जाना जाए कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर और अपनी प्रजा पर है? क्या इससे नहीं कि तू हमारे संग संग चले, जिससे मैं और मेरी प्रजा के लोग पृथ्वी भर के सब लोगों से अलग ठहरें?

[17] यहोवा ने मूसा से कहा, मैं यह काम भी, जिसकी चर्चा तू ने की है करूंगा; क्योंकि मेरे अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर है, और तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है।

मूसा एक और बिनती करता है :

[18] उसने कहा, मुझे अपना तेज दिखा दे।

[19] उसने कहा, मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊंगा, और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूंगा, और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूं उसी पर अनुग्रह करूंगा, और जिस पर दया करना चाहूं उसी पर दया करूंगा।

[20] फिर उसने कहा, तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नही रह सकता।

[21] फिर यहोवा ने कहा, सुन, मेरे पास एक स्थान है, तू उस पहाड़ खड़ा हो,

[22] और जब तक मेरा तेज तेरे सामने होके चलता रहे तब तक मैं तुझे चट्टान की दरार में रखूंगा, और जब तक मैं तेरे सामने होकर न निकल जाऊं तब तक अपने हाथ से तुझे ढांपे रहूंगा;

[23] फिर मैं अपना हाथ उठा लूंगा, तब तू मेरी पीठ का तो दर्शन पाएगा, परंतु मेरे मुख का दर्शन नहीं मिलेगा।

हम इन वचनों से क्या सीखते हैं?

परमेश्वर की महिमा की अभिव्यक्ति

#1, *"मेरा तेज तेरे सामने होके चलता रहेगा"* : हमारे मध्य में परमेश्वर की महिमा उसकी भलाई की अभिव्यक्ति और प्रकटीकरण ले आती है। परमेश्वर की भलाई हमें पश्चाताप की और ले जाती है।

#2, *"मैं...तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूंगा"* : हमारे मध्य में परमेश्वर की महिमा वह कौन है इसका प्रकटीकरण ले आती है।

#3, *"जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूं उसी पर अनुग्रह करूंगा, और जिस पर दया करना चाहूं उसी पर दया करूंगा"*: जब परमेश्वर हमारे मध्य में मंडराता है, तब हमारे मध्य में परमेश्वर की महिमा लोगों पर उसके अनुग्रह और तरस का प्रकटीकरण ले आती है। सार्वभौम परमेश्वर हमारी ज़रूरतों को पूरा करता है। आश्चर्यकर्म करता है और परिस्थितियों को बदल देता है।

जब परमेश्वर अपनी महिमा प्रकट करता है, तब हम दो और सच्चाइयां देखते हैं :

#1, वह हम पर उतनी ही महिमा प्रकट करता है जितनी हम संभाल सकते हैं, और हमें पूर्ण रूप से नाश होने से बचाता है।

#2, वह कुछ बातों को प्रकट करता है और कुछ बातों को छिपाता है। हम प्रत्येक बात को पूर्ण रूप से समझ नहीं पाएंगे या समझा नहीं पाएंगे जो परमेश्वर बेदारी के समय में करता है।

बेदारी के समय के दौरान हम इन बातों की अपेक्षा कर सकते हैं, यह परमेश्वर की भेंट या मुलाकात की ऋतु होती है जहां पर परमेश्वर की महिमा का एक परिमाण लोगों के मध्य मुक्त होता है। और हम परमेश्वर को पुकार सकते हैं कि वह हम पर अपनी और महिमा बरसाए।

बेदारी की प्रत्येक सच्ची पुकार वास्तव में ऐसी पुकार है कि परमेश्वर की महिमा प्रकट हो, परमेश्वर की महिमा के लिए बेताबी लोगों में देखी जाए। और यही बात परमेश्वर चाहता है, कि उसकी महिमा उसके लोगों पर देखी जाए। क्या आप हमारे मध्य में उसकी अधिकाई के लिए, उसकी उपस्थिति और सामर्थ की अधिकाई के लिए, उसकी और महिमा के लिए आग्रह के साथ उसे पुकारेंगे?

उसकी उपस्थिति के प्रकटीकरणों को समझना

उसकी उपस्थिति के कई प्रकटीकरण होते हैं (अर्थात जिसे हम पहचान सकते हैं या जो हमारे लिए साकार होता है)। उसकी उपस्थिति उस आग के समान होती है जो भूस को जला देती है और अन्धकार के कार्य को नष्ट करती है। उसकी उपस्थिति ज्योति के समान होती है, जो छिपी हुई बातों को पकट करती है और कायलियत और पश्चाताप ले आती है। उसकी उपस्थिति उस वर्षा के समान है जो ताज़गी और फलदायकता ले आती है। उसकी उपस्थिति भारी महिमा के समान होती है जो हमें उसकी भलाइयों और करूणा के कामों से अभिभूत और आशीषित करती है। उसकी उपस्थिति सामर्थ ले आती है और चिन्ह, चमत्कार, और आश्चर्यकर्मों को ले आती है। उसकी उपस्थिति बादल के समान है जो हमारी अगुवाई करती है, हमें छिपा लेती है, और भविष्य के लिए प्रतिज्ञा प्रदान करती है। उसकी उपस्थिति हवा के समान होती है जो हमें ऊंचा उठाती है और ईश्वरीय उद्देश्यों की और आगे बढ़ाती है। उसकी उपस्थिति परमेश्वर की आवाज़ ले आती है जो सामर्थी है और दिशा और शिक्षा प्रदान करती है। और उसकी उपस्थिति की अन्य कई अभिव्यक्तियां होती हैं। परमेश्वर का आत्मा जब हम पर मंडराता है तब परमेश्वर चाहे जिस तरह से अपनी उपस्थिति को प्रकट करे, हमें उसके लिए अपने दिलों को खोलना है।

उसकी उपस्थिति के विभिन्न प्रमाण या तीव्रताएं हैं। हमें अधिक पाने के लिए पुकारना है क्योंकि उसके पास और है।

उसकी उपस्थिति की विभिन्न प्रतिक्रियाएं या प्रत्युत्तर हैं। परमेश्वर को हमारे आत्मा और प्राण और शरीर को छूने का अधिकार है। उसकी उपस्थिति के स्पर्श के प्रति मनुष्य की प्रतिक्रियाएं और प्रत्युत्तर विभिन्न हो सकते हैं। जब परमेश्वर कार्य करता है और हम प्रतिक्रियाओं को और प्रत्युत्तरों को देखते हैं जो हमारे धर्मसैद्धांतिक ढांचे या अनुभव की समझ के अनुसार नहीं होते, तो हमें उनकी आलोचना नहीं करना है या उन पर दोष नहीं लगाना है, परंतु प्रभु से बिनती करना है कि जो कुछ वह कर रहा है उस विषय में हम अपनी समझ को बढ़ाएं।

बेदारी का फल – आत्मा की वर्षा का प्रभाव

हमने यह पहले देखा है और यहां पर स्मरण के लिए फिर दोहराते हैं। परमेश्वर का आत्मा जब लोगों पर मंडराता है, तब यह होता है।

#1. परमेश्वर कौन है इसका बड़ा प्रकाशन

#2. आत्मिक सत्य और वास्तविकताओं का उच्च प्रकाशन

#3. प्रभु के लोगों में आत्मिक बातों के प्रति अधिक आवेश, जोश और उत्साह

#4. उद्धार न पाए हुए लोगों का बढ़ते पैमाने पर इकट्ठा होना

#5. अलौकिक प्रकाशनों में, असामान्य और सामर्थी चिन्ह चमत्कारों में बढ़ौतरी

#6. समाज में सामर्थी परिवर्तन

#7. सेवकों और पवित्र जनों को सुसज्जित करना और तैयार करना, मिशनों, कलीसिया रोपन में नई सेवकाइयों को आरम्भ करना और बेदारी का फैलते जाना

क्या हम फल की खोज में हैं या अलौकिक घटनाओं की?

पवित्र आत्मा का प्रत्येक सच्चा फल और परमेश्वर की भेंट सुसंगत होती है, जबकि अलौकिक घटना में विभिन्नता हो सकती है।

घटना में आत्मा के विभिन्न प्रकटीकरण होते हैं, जिनमें से कइयों से हम परिचित होते हैं। अलौकिक घटनाओं या आत्मा के प्रकटीकरणों को हमें हमेशा परखना है (1 थिस्सुलुनीकियों 5:21)।

अलौकिक घटना या आत्मा के प्रकटीकरण महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह आत्मा कार्य कर रहा है इस बात की अभिव्यक्ति या प्रमाण है। इन वरदानों और प्रदर्शनों के माध्यम से जीवनों पर प्रभाव पड़ता है, उनमें बदलाव आता है और उन्नति होती है। इसलिए हमें आत्मा के वरदानों और आत्मा के प्रकटीकरणों की इच्छा रखना चाहिए जिसमें अलौकिक घटना का समावेश है।

परंतु आत्मा का उण्डेला जाना या परमेश्वर का संजीवन किसी भी घटना से बड़ा है। यह एक स्थायी फल है जिसे हमें प्राप्त करना है।

बेदारी की जोखिम

बेदारी हमेशा जोखिमभरी होती है। पासबान/अगुवा होने के नाते, बेदारी के मार्ग का अनुसरण करते समय आप एक जोखिम मोल लेते हैं। शैतान उसका विरोध करता है, और स्वाभाविक मन जिसने भले ही धर्मसैद्धातिक शिक्षा में पांडित्य हासिल किया हो, वह उसे समझ नहीं सकता। और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण विश्वासियों का शारीरिक स्वभाव भी बेदारी के मार्ग में आता है।

क्या होगा यदि लोग समझें कि आप गलत हैं और कलीसिया आना बंद कर दें?
क्या होगा यदि आप और आपकी कलीसिया को लोग धर्मोन्मत करार दें?
क्या होगा यदि अगुवे के रूप में लोग आपके इरादे को गलत समझें और सवाल पूछें?

क्या होगा यदि लोग थक जाते हैं और उन्हें बहुत देखभाल की ज़रूरत होती या छोड़ के चले जाते हैं?
क्या होगा यदि लोगों में बेदारी के लिए उत्साह और आवेश खत्म हो जाएगा?
यदि एक, दो, तीन या अधिक वर्षों की प्रार्थना के बाद भी कुछ नहीं हुआ, तो क्या होगा?

क्या होगा यदि परमेश्वर बेदारी भेजेगा और यह आपकी कल्पना से परे हो और दुनिया उलट–पुलट हो जाए?

परंतु फिर आपको और आपकी मंडली को एक चुनाव करना होगा। क्या आप हमेशा की तरह चर्च चाहते हैं, आपके कार्यक्रम जारी रखना चाहते हैं और बढ़ौतरी का पीछा करना चाहते हैं, और अंत में एक सुंदर बड़ी कलीसिया चाहते हैं, या आप आपकी कलीसिया में और कलीसिया के द्वारा परमेश्वर के आत्मा के कार्य को देखना चाहते हैं, जो प्रेरितों के कामों की पुस्तक में जो कुछ हुआ था उसके समान हो?

बेदारी का अनुसरण करने हेतु कोई बीच की भूमि नहीं है। आपको पराकाष्ठा करना होगा – परमेश्वर का अनुसरण करने में पराकाष्ठा, क्योंकि केवल वही है जो उन लोगों को उत्तर देता है जो भूखे और प्यासे हैं। कुछ लोग आपसे प्रेम करेंगे और आपकी प्रशंसा करेंगे। कई लोग आपकी आलोचना करेंगे, आपको दोष देंगे और आपका विरोध करेंगे। परंतु यह भी एक चुनाव है जो आपको करना होगा।

क्या आप बेदारी को आते देखने के लिए सब कुछ त्यागने तैयार हैं?
क्या आप इतने जुनून से भरने के लिए तैयार हैं कि उसका अनुसरण करते समय बाकी सारी बातों को दूसरा स्थान प्राप्त हो?
क्या आप खुद को पूर्ण रूप से अपने स्वयं से खाली करने तैयार हैं, ताकि वह आपको खुद से भर सके और अपनी इच्छा को आपके माध्यम से मुक्त कर सके?
क्या आप बेदारी की खोज करने के लिए कोशिश करने हेतु तैयार हैं, भले ही वह आपके जीवनकाल में न आए? जहां आप पहले कभी नहीं गए थे, वहां जाने के लिए आपको उन मार्गों पर चलना होगा जहां आप पहले कभी नहीं गए हैं।

याद रखें कि जैसा हम समझते हैं, वैसे बेदारी मात्र एक ऋतु नहीं होती। महिमा का प्रत्येक स्तर जिसमें बेदारी आपको ले चलती है, आपके कलीसियाई समुदाय का नया स्वरूप बन जाता है। और उसके बाद आप उसकी और अधिकाई को पाने के लिए दूसरी ऋतु में प्रवेश कर सकते हैं, कि वह आपको अगले स्तर की और ले जाए। और उसके बाद अगले और फिर अगले। आप महिमा से अधिक महिमा की और आगे बढ़ सकते हैं।

आप बेदारी के लिए कितने भूखे हैं? नदी में उतर जाएं और पवित्र आत्मा को अवसर दें कि वह आपको परमेश्वर में नई गहराइयों में ले जाए!

8

बेदारी की खोज – परमेश्वर की भेंट और कार्य के लिए पुकार

मत्ती 11:12

"यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य पर ज़ोर होता रहा है, और बलवान उसे बलपूर्वक छीन लेते हैं।

बेदारी परमेश्वर का सार्वभौम कार्य है और हम उसका निर्माण नहीं कर सकते। हम केवल बेदारी के लिए तैयार हो सकते हैं और उसके लिए प्रार्थना कर सकते हैं। परमेश्वर हमेशा हमारे हृदयों की भूख और पुकार का उत्तर देता है। इसी बात को हम इस अध्याय में समझाना चाहते हैं और कुछ मार्ग ढूंढ़ना चाहते हैं जो बेदारी के लिए आगे बढ़ने हेतु हमारी सहायता करेंगे।

"बेदारियां परमेश्वर के सार्वभौम कार्य हैं, परंतु उनका संबंध हमेशा परमेश्वर के लोगों की आज्ञाकारिता से होता है" – इतिहासकार वेस्ली ड्यूवेल

परमेश्वर की खोज करना

यिर्मयाह 29:13

तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।

जैसा कि हमने बेदारी के संपूर्ण इतिहास में देखा है, कि जब कभी परमेश्वर के लोग मन लगाकर परमेश्वर की खोज में लगे रहे, वह हमेशा बड़ी महिमा के साथ आया है।

ऐसा नहीं है कि परमेश्वर खुद को रोककर रखता है, परंतु वह हमेशा हमारी भूख का उत्तर देता है। जो प्यासे हैं उन पर वह जल उण्डेलता है।

ऐसा नहीं है कि परमेश्वर जान–बूझकर खुद को छिपा रहा है और खुद को हमारी पहुंच दूर कर रहा है। बल्कि वह उन लोगों को खोजता है जो उसे ढूंढ़ रहे हैं और खोज रहे हैं, जो बड़ी तत्परता के साथ, अपने संपूर्ण हृदय से उसका पीछा कर रहे हैं।

प्रार्थना में, आराधना में, उसके वचन के द्वारा परमेश्वर को खोजना कुंजी है। किसी को या लोगों के किसी समूह को तब तक उसकी खोज करने के लिए इच्छुक रहना चाहिए जब तक वे उसे अधिकाई से नहीं पाते।

यदि हम उसके निकट आते हैं, तो उसकी प्रतिज्ञा है कि वह हमारे निकट आएगा। यदि हम उसे खोजेंगे, तो उसकी प्रतिज्ञा यह है कि वह हमारे पास आएगा।

परमेश्वर को थाम लेने हेतु खुद को प्रोत्साहित करें

यशायाह 62:1–7

1 सिय्योन के निमित्त मैं चुप न रहूंगा, और यरूशलेम के निमित्त मैं चैन न लूंगा, जब तक कि उसकी धार्मिकता प्रकाश की नाईं और उसका उद्धार जलते हुए पलीते के समान दिखाई न दे।

[2] तब अन्यजातियां तेरा धर्म और सब राजा तेरी महिमा देखेंगे; और तेरा एक नया नाम रखा जाएगा जो यहोवा के मुख से निकलेगा।

[3] तू यहोवा के हाथ में एक शोभयमान मुकुट और अपने परमेश्वर की हथेली में राज–मुकुट ठहरेगी।

[4] तू फिर त्यागी हुई न कहलाएगी, और तेरी भूमि फिर उजड़ी हुई न कहलाएगी; परन्तु तू हेप्सीबा और तेरी भूमि ब्यूला कहलाएगी; क्योंकि यहोवा तुझ से प्रसन्न है, और तेरी भूमि सुहागिन होगी।

[5] क्योंकि जिस प्रकार जवान पुरुष एक कुमारी को ब्याह लाता है, वैसे ही तेरे पुत्र तुझे ब्याह लेंगे; और, जैसे दुल्हा अपनी दुल्हन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा।

[6] हे यरूशलेम, मैंने तेरी शहरपनाह पर पहरुए बैठाए हैं; वे दिन–रात कभी चुप न रहेंगे। हे यहोवा को स्मरण करनेवालो, चुप न रहो,

[7] और, जब तक वह यरूशलेम को स्थिर करके उसकी प्रशंसा पृथ्वी पर न फैला दे, तब तक उसे भी चैन न लेने दो।

सीयोन (परमेश्वर के लोग) और यरूशलेम (परमेश्वर का नगर) नए नियम में कलीसिया के प्रतिनिधि हैं, जैसा कि हम पवित्र शास्त्र में देखते हैं (इब्रानियों 12:22–23 और 1 पतरस 2:6)।

यशायाह भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के लोगों के विषय में आवेशी है। यद्यपि उसने घोषणा की कि पहले परमेश्वर की महिमा उसके लोगों पर दिखाई देगी (यशायाह 60), फिर भी उसे बाबुल के द्वारा उन पर आनेवाले विनाश का भी ज्ञान है, वह जानता है कि वे बंधुवे बनाए जाएंगे। परंतु भविष्यद्वक्ता कहता है कि वह सीयोन को पुनर्स्थापित होते देखने के लिए संघर्ष करेगा।

सीयोन के निमित्त, यरूशलेम के निमित्त (पद 1)

क्या हम कलीसिया के विषय में आवेशी हैं? कलीसिया की वर्तमान आत्मिक दशा को स्वीकार करने के बजाय, क्या हम कलीसिया को वहां देखना चाहते हैं जहां उसे होना चाहिए? क्या हम खुद के विषय में और हमारे प्रतिदिन के कामों के विषय में अधिक चिंतित हैं, बजाय इस विषय में चिंतित होने के कि कलीसिया को उस स्थान में होना चाहिए, उस प्रकार की कलीसिया बनना चाहिए जैसी यीशु ने कहा कि वह बनाएगा, अर्थात ऐसी कलीसिया जो नरक फाटकों को पराजित करेगी और स्वर्ग को पृथ्वी पर ले आएगी (मत्ती 16:18–19)? क्या हम "सीयोन में निश्चिंत रहेंगे" या सीयोन के निमित्त खुद को उत्साहित करेंगे? (आमोस 6:1)

मैं चुप न रहूंगा (मैं बोलूंगा), और मैं चैन न लूंगा (पद 1)

क्या हम यह ज़िम्मेदारी स्वीकार करते हैं कि जब तक कि हम कलीसिया को उसके और अधिक महिमा के स्थान पर नहीं देखते, तब तक हम बोलना बंद नहीं करेंगे, और विश्राम नहीं लेंगे, चैन नहीं लेंगे!

तब तक (पद 1)

हम तब तक बोलते रहेंगे और तब तक आवेशी रहेंगे...तब तक...भले ही इसमें काफी समय लग जाता है...हम आगे बढ़ते रहते हैं जब तक कि हम कलीसिया को उसकी और अधिक महिमा के स्थान पर नहीं देखते।

पहरूओं...चुप न रहो...खामोश न रहो...परमेश्वर को चैन न लेने दो...जब तक (पद 6 और 7)

हम पहरूओं के समान दूसरों को प्रोत्साहित करें जो स्वयं भी वैसा ही करेंगे – जो चुप नहीं रहेंगे और प्रभु से तब तक प्रार्थना करते रहेंगे, जब तक कि यह पूरा नहीं हो जाता।

क्या आप उन लोगों में से एक होंगे जो कलीसियाई समुदाय के रूप में हम पर, बेदारी के लिए, परमेश्वर की सामर्थी मुलाकात, परमेश्वर के आत्मा के बड़े उण्डेले जाने के लिए पुकारेंगे?

बेदारी की प्रार्थना करने हेतु हृदय की दशा

सुधार बेदारी के लिए मार्ग तैयार करता है। बेदारी का परिणाम कलीसिया में पुनर्स्थापन होता है और मिशन और कलीसियाई उन्नति को प्रेरित करता है।

सुधार का अर्थ है सत्य के साथ अनुरूपता स्थापित करना और जो गलत है उसे हटा देना।

बेदारी का आरम्भ व्यक्तिगत सुधार से होता है। बेदारी का आरम्भ मुझसे होता है।

व्यक्तिगत बेदारी की खोज करना परमेश्वर के साथ घनिष्ठता की खोज करना है, और जब ऐसा होता है तब हम निरंतर उसके प्रतिरूप में बदलते जाते हैं।

"बेदारी अकथनीय रूप से मधुर और कोमल परमेश्वर के आत्मा का उसके लोगों के मध्य उपस्थित होना है जो कायल करने वाली और बदल देने वाली सामर्थ के साथ आता है। परमेश्वर के आत्मा का उण्डेला जाना बेदारी का दैवीय पक्ष है; परंतु हृदय को तैयार करना हमारा भाग है" – चार्ल्स फिनी ;भथ्पददमल वद त्मअपअंस ए टण् त्लउवदक म्कउंद से उद्धृतद्धण्

हमें परमेश्वर से यह बिनती करने की ज़रूरत है कि वह हमारे अंदर ऐसा हृदय उत्पन्न करे जिसकी बेदारी की प्रार्थना के लिए और उसके आत्मा के अधिकाई से उण्डेले जाने के लिए उसकी खोज करने हेतु हमें आवश्यकता है।

यहां पर हृदय की विभिन्न दशाओं के विषय में बताया गया है और उसकी खोज करते समय हमें व्यक्तिगत रीति से उन्हें अपनाने की ज़रूरत है।

#1, विनम्र हृदय

पश्चाताप, समर्पण और निर्भरता के द्वारा विनम्रता प्रकट होती है।

विनम्र हृदय गलत कामों के लिए, असफलता के लिए ज़िम्मेदारी स्वीकार करने हेतु तैयार रहता है और पश्चाताप करने हेतु तत्पर रहता है।

विनम्र हृदय वह होता है जो परमेश्वर की आज्ञा और परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित रहता है और उसके अधीन रहता है।

विनम्र हृदय वह होता है जो पूर्ण रूप से उस पर निर्भर रहता है और व्यक्तिगत प्रयासों या गुणों पर भरोसा नहीं रखता। वह प्रभु में बने रहने के सिद्धांत को समझता है और जानता है कि उसके बिना हम कुछ नहीं कर सकते (यूहन्ना 15:1–5)।

2 इतिहास 7:14

तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा।

परमेश्वर हमें बुलाता है कि हम खुद को दीन बनाएं, हमारे बुरे कामों से मन फिराएं, प्रार्थना करें और उसके मुख के खोजी बनें। यदि हम ऐसा करते हैं, तो वह हमसे प्रतिज्ञा करता है कि वह स्वर्ग से हमारी सुनेगा, हमारे पापों को क्षमा करेगा और हमारे देश को चंगा करेगा।

होशे 10:12

अपने लिये धर्म का बीज बोओ, तब करूणा के अनुसार खेत काटने पाओगे; अपनी पड़ती भूमि को जोतो; देखो अभी यहोवा के पीछे हो लेने का समय है, कि वह आए और तुम्हारे ऊपर उद्धार बरसाए।

पड़ती भूमि ऐसी ज़मीन है जिसे किसी समय जोता गया था परंतु अब त्याग दिया गया है और बिना जोते छोड़ दिया गया है। इस ज़मीन पर फिर से हल चलाने की और उसे साफ करने की ज़रूरत है। हमें वापस जीवन के उन क्षेत्रों की ओर जाने की ज़रूरत है जिन्हें हमने नज़रअंदाज़ किया है – प्रार्थना, आराधना, परमेश्वर की खोज करना, जीवन में शुद्धता, आदि। यदि हम धार्मिकता को बोएंगे, तो हम उन फलों को लाएंगे जो दया ले आती है। और हम ऐसा तब तक करेंगे, उसे तब तक खोजेंगे, जब तक कि वह आकर हम पर उद्धार की वर्षा न करे।

होशे 14:1–7

1 हे इस्राएल, अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आ, क्योंकि तूने अपने अधर्म के कारण ठोकर खाई है।

2 बातें सीखकर और यहोवा की ओर फिरकर, उससे कह, सब अधर्म दूर कर; अनुग्रह से हमको ग्रहण कर; तब हम धन्यवाद रूपी बलि चढ़ाएंगे।

3 अश्शूर हमारा उद्धार न करेगा, हम घोड़ों पर सवार न होंगे; और न हम फिर अपनी बनाई हुई वस्तुओं से कहेंगे, तुम हमारे ईश्वर हो; क्योंकि अनाथ पर तू ही दया करता है।

4 मैं उनकी भटक जाने की आदत को दूर करूंगा; मैं सेंतमेंत उनसे प्रेम करूंगा, क्योंकि मेरा क्रोध उन पर से उतर गया है।

5 मैं इस्राएल के लिये ओस के समान हूंगा; वह सोसन की नाईं फूले–फलेगा, और लबानोन की नाईं जड़ फैलाएगा।

6 उसकी जड़ से पौधे फूटकर निकलेंगे; उसकी शोभा जलपाई की सी और उसकी सुगन्ध लबानोन की सी होगी।

7 जो उसकी छाया में बैठेंगे, वह अन्न की नाईं बढ़ेंगे, वे दाखलता की नाईं फूल–फलेंगे; और उसकी कीर्ति लबानोन के दाखमधु की सी होगी।

होशे 14:1–3 हमें पश्चातापी हृदय के साथ वापस परमेश्वर की ओर बुलाता है, हमें और किसी बात पर निर्भर नहीं रहना है, परंतु उस पर पूरा भरोसा रखना है। उसके बाद 4–7 वचन परमेश्वर की चंगाई की प्रतिज्ञा करते हैं, वे हमारे पीछे हटने के लिए, संजीवन, फलदायकता, और हम पर महिमा के प्रकट होने की प्रतिज्ञा करता है।

#2, जो हृदय भूखा है

परमेश्वर उन लोगों को उत्तर देता है जो भूखे और प्यासे हैं। *"धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे"* (मत्ती 5:6)। जब परमेश्वर हमें भर देता है तब इसका अर्थ यह नहीं है कि हम और पाने के लिए न पुकारें। जो हृदय भूखा है, वह जानता है कि कैसे तृप्त होना है और फिर भी और पाने के लिए कैसे पुकारना है, क्योंकि हमेशा उसके पास और अधिकाई होती है जिसे आप जान सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं।

परमेश्वर की अधिकाई पाने की इच्छा रखने का क्या अर्थ होता था यह दाऊद जानता था। परमेश्वर के लिए उसकी भूख और प्यास उसे परमेश्वर की खोज करने हेतु प्रेरित करती थी, वास्तव में परमेश्वर की खोज में निकल पड़ने हेतु। *"हे परमेश्वर, तू मेरा ईश्वर है, मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा; सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है। इस प्रकार से मैंने पवित्र स्थान में तुझ पर दृष्टि की, कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूं"* (भजनसंहिता 63:1–2)।

दाऊद ने परमेश्वर को आग्रह के साथ और सच्चे मन से पुकारा, क्योंकि वह उससे मोहित था। उसे केवल एक ही बात की चाह थी, उसे केवल एक ही बात की इच्छा थी, वह केवल एक ही बात चाहता था, वह परमेश्वर को पाना चाहता था। इसका अर्थ यह है कि वह बाकी हर बात के लिए मर चुका था। *"एक वर मैंने यहोवा से मांगा*

है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं" (भजनसंहिता 27:4)

होशे 6:1–3

[1] चलो, हम यहोवा की ओर फिरें; क्योंकि उसी ने फाड़ा, और वही चंगा भी करेगा; और वही हमारे घावों पर पट्टी बान्धेगा।

[2] दो दिन के बाद वह हमको जिलाएगा; और तीसरे दिन वह हमको उठाकर खड़ा करेगा; तब हम उसके सम्मुख जीवित रहेंगे।

[3] आओ, हम ज्ञान ढूंढ़ें, वरन् यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए यत्न भी करें; क्योंकि यहोवा का प्रकट होना भोर का सा निश्चित है; वह वर्षा की नाई हमारे ऊपर आएगा, वरन् बरसात के अन्त की वर्षा के समान जिससे भूमि सिंचती है।

जो हृदय भूखा है, वह जानता है कि परमेश्वर का अनुसरण कैसे करें, यह जानते हुए कि वह अवश्य ताज़गी लाने वाली वर्षा के समान आएगा।

परमेश्वर उन पर वर्षा करता है जो प्यासे हैं। *"क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर धाराएं बहाऊंगा; मैं तेरे वंश पर अपनी आत्मा और तेरी सन्तान पर अपनी आशीष उण्डेलूंगा"* (यशायाह 44:3)। जो प्यासे हैं उन्हें यीशु ने आकर पीने का निमंत्रण दिया। उसमें से पीने से परिणामस्वरूप जीवन जल की नदियां – पवित्र आत्मा की धाराएं – हममें से बह निकलेंगी (यूहन्ना 7:36–39)।

#3, जो हृदय जोशिला और आग्रही है

याकूब 5:16–18

[16] इसलिए तुम आपस में एक–दूसरे के सामने अपने अपने पापों को मान लो; और एक–दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।

[17] एलिय्याह भी तो हमारे समान दुःख–सुख भोगी मनुष्य था; और उसने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की कि मेंह न बरसे; और साढ़े तीन वर्ष तक भूमि पर मेंह नहीं बरसा।

[18] फिर उसने प्रार्थना की, तो आकाश से वर्षा हुई, और भूमि फलवन्त हुई।

एलिय्याह हमें आवेशी, संवेदनशील और आग्रही प्रार्थना का महत्व सिखाता है जो तब तक हटेगी नहीं जब तक कि वह इच्छित परिणाम न देख ले। हम जानते हैं कि जब एलिय्याह ने कर्मेल पर्वत पर वर्षा के लिए प्रार्थना की तब क्या हुआ। परमेश्वर ने अपनी इच्छा व्यक्त की कि वह पृथ्वी पर मेह बरसाएगा (1 राजा 18:1)। एलिय्याह ने यह घोषणा की कि भारी वर्षा की सनसनाहट सुनाई देती है और फिर वह वर्षा के लिए प्रार्थना करने लगा! एलिय्याह को जब तक मनुष्य की मुट्ठी के आकार का बादल नहीं दिखाई दिया तब तक उसे प्रबल, आवेशपूर्ण और आग्रह के साथ प्रार्थना में लगे रहना पड़ा (1 राजा 18:41–46)। याकूब एलिय्याह को हमारे लिए अनुसरण करने योग्य उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करता है, यह जानते हुए कि हमारी प्रार्थनाएं "बहुत प्रभावी" हैं।

जब हम बेदारी के लिए प्रार्थना करते हैं, तब हमें ऐसे हृदय के साथ प्रार्थना करना है जो उत्साहित है, जो जुनून, आवेश से प्रज्वलित है, जो तब तक अपना कार्य नहीं छोड़ेगा जब तक कि बेदारी नहीं आ जाती।

लूका 18:1–8 में, प्रभु यीशु ने सिखाया कि बिना निराश हुए निरंतर प्रार्थना करें। हमारे पास ऐसा हृदय होना चाहिए जो उसके निवेदन में सुसंगत बना रहे, और जब तक उत्तर प्राप्त नहीं होता, तब तक छोड़ने के लिए तैयार न हो, क्योंकि हम जानते हैं कि यह (बेदारी, आत्मा की वर्षा) अपने लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा है।

प्रार्थना में अटलता का दूसरा उदाहरण है याकूब। जब तक उसने आशीष नहीं पायी, तब तक उसने स्वर्गदूत को जाने नहीं दिया (उत्पत्ति 32:24–32)। और इस कारण, उसका नाम बदलकर याकूब से इस्राएल रखा गया।

ऐसा व्यक्ति जिसने परमेश्वर और मनुष्य के सामने "अपना ओहदा" बनाए रखा। "वह रोया और उससे गिड़गिड़ाकर बिनती की।" होशे 12:4 में कहता है कि किस प्रकार याकूब उस रात परमेश्वर के साथ संघर्ष करता रहा। शारीरिक दृष्टि से याकूब उस स्वर्गदूत की जो उसके साथ कुश्ती लड़ रहा था, बराबरी नहीं कर सकता था, उसकी स्वर्गदूत से तुलना नहीं हो सकती थी। अतः स्वर्गदूत पर उसकी पकड़ शारीरिक नहीं थी, परंतु अंदर से थी, ऐसे हृदय से थी जो आवेशी और अटल था, जो तब तक छोड़ने के लिए तैयार नहीं था जब तक कि उसे आशीष न दी जाए। उसका भविष्य पुनः परिभाषित किया गया। याकूब इस्राएल बन गया।

#4, जो हृदय तरस से भरा है

जब हम बेदारी के लिए, परमेश्वर की मुलाकात के लिए, परमेश्वर की अधिकाई के लिए प्रार्थना करते हैं, तब उसमें हमारी भावनाएं सहभागी होती हैं। जब हम प्रार्थना करते हैं, तब हमारा हृदय भावहीन, उदासीन या भावनारहित नहीं होता।

ऐसा हृदय जो पीड़ा, वेदना, और पाप का दर्द, निर्बलता, कलीसिया की सामर्थहीनता और खोए हुए लोगों की लाचारी को महसूस करता है।

परमेश्वर उन लोगों की ओर खींचा चला जाता है जिनके हृदय खेदित और व्यथित हैं (कुचले हुए) और जो नम्र हैं। *"क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है, मैं ऊंचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूं, और उसके संग भी रहता हूं, जो खेदित और नम्र है, कि, नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करूं"* (यशायाह 57:15)।

इस प्रकार प्रार्थना करना हमेशा आसान नहीं होता। जब तक कलीसिया में मसीह का स्वरूप निर्माण न हो, तब तक "जच्चा की सी पीड़ा" का बोध होता है (गलातियों 4:19)। यह प्रार्थना के समय महसूस होता हो या अन्य समयों में हो, एक गहरा अहसास, गहरा तरस होता है जो हमारे हृदय को यह देखने के लिए व्याकुल कर देता है कि कलीसिया उस बात की ओर आगे बढ़े जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखी है। ऐसी आहें भरी जाती हैं जिन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता (रोमियों 8:26–27), जो हमारे अंदर प्रार्थना में उमड़ने लगती हैं, और परमेश्वर का हृदय छू लिया जाता है और और ये भावनाएं चाहे जिस तरह से व्यक्त की जाएं, परमेश्वर उन्हें समझता है। हमारे मनों के लिए यह समझना मुश्किल होता है, परंतु स्वयं प्रभु को भी इस प्रकार गम्भीर प्रार्थना करना पड़ाः *"उसने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार पुकारकर, और आंसू बहा बहाकर उससे जो उसको मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएं और बिनती की, और भक्ति के कारण उसकी सुनी गई"* (इब्रानियों 5:7)। आंसूओं के साथ बोना, तरस के साथ बोना, हृदयस्पर्शी प्रार्थना के साथ बोना, कभी व्यर्थ नहीं होता। उसकी प्रतिज्ञा फिर भी अटल रहती हैः *"जो आंसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएंगे। चाहे बोनेवाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियां लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा"* (भजनसंहिता 126:5–6)।

जब बेदारी के लिए प्रार्थना करते हैं, तब क्या प्रार्थना करें

प्रार्थना बेदारी की कुंजी है। परमेश्वर के लिखित वचन के अनुसार प्रार्थना करना और पवित्र आत्मा की अगुवाई में प्रार्थना करना महत्वपूर्ण है। बेदारी, संजीवन, और परमेश्वर के अद्भुत कार्य के लिए प्रार्थना करते समय जिन बातों के लिए हमें प्रार्थना करना चाहिए, उनमें से मुख्य बातें हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। निम्नलिखित निर्देशिका मात्र एक आरम्भ बिन्दु है। आप यहां से शुरूवात करके उनमें और बातें जोड़ सकते हैं जो आप परमेश्वर के वचन से प्राप्त करते जाते हैं और आपकी प्रार्थना समय के दौरान जिन बातों पर ध्यान लगाने हेतु पवित्र आत्मा आपकी अगुवाई कर रहा है उनके आधार पर आप और बातों को लिख सकते हैं।

#1, पश्चाताप, समर्पण, नम्रता और आत्म–समर्पण की प्रार्थनाएं

हम व्यक्तिगत पापों से, उसी तरह कलीसिया और समाज के पापों से पश्चाताप करते हैं जिनके लिए हम प्रार्थना कर रहे हैं। हम अपने जीवनों को प्रभु के प्रति समर्पित करते हैं।

हम परमेश्वर के सामने अपने दिलों को खोल देते हैं और उसका स्वागत करते हैं कि वह हमारे हृदयों को जांचे और जो गलत है उसे सुधारे। *"हे ईश्वर, मुझे जांचकर जान ले! मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर!"* (भजनसंहिता 139:23–24)।

हम अनुचित स्नेह और जो बातें 'पाप' और 'बोझ' हैं, उन्हें त्यागकर और उनके लिए मरकर खुद को परमेश्वर के प्रति समर्पित करते हैं।

हम खुद को और खुद के जीवनों को समर्पित करते हुए, उसके अधीन करते हुए प्रार्थना करते हैं। हम खुद को खाली करते हैं, हमारे व्यक्तिगत कार्यक्रमों को छोड़कर खुद को परमेश्वर के लिए उपलब्ध कर देते हैं।

हम इस प्रकार की प्रार्थना में बने रहते हैं ताकि परमेश्वर के सामने हमेशा समर्पित, अधीनता का जीवन बनाए रख सकें।

ईव्हान रॉबर्ट्स ने प्रार्थना की जो उसने सेथ जॉशुवा से सुनी, "प्रभु, मुझे झुका।" यहां 'झुका' शब्द शरणागति, अधीनता, और परमेश्वर के प्रति समर्पण दिखाता है।

#2, परमेश्वर की अधिकाई के लिए और आत्मा के अधिकाई के साथ उण्डेले जाने के लिए प्रार्थना करें

इन प्रार्थनाओं में हम परमेश्वर से अधिकाई से पाने के लिए व्यक्तिगत भूख और लालसा को व्यक्त करते हैं। हम परमेश्वर को पहले से अधिक अनुभव करने और जानने की इच्छा रखते हैं।

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि वह प्रेरितों के काम 2:17,18 में अंत के दिनों में सब पर अपना आत्मा उण्डेलेगा। उसने हमें बताया है कि हम बरसात के अंत में यहोवा से 'वर्षा' मांगें (जकर्याह 10:1)। इसलिए हम प्रार्थना करते हैं और परमेश्वर से बिनती करते हैं कि वह बेपरिमाण रूप से अपना आत्मा उण्डेले। हमें पिछली वर्षा की और ज़रूरत है।

#3, परमेश्वर की महिमा और सामर्थ के प्रकट होने के लिए प्रार्थना करें

परमेश्वर चाहता है कि उसका भवन उसकी सामर्थ से भर जाए। परमेश्वर चाहता है कि उसकी महिमा उसके लोगों पर दिखाई दे। उसके लोगों पर परमेश्वर की महिमा और अधिकाई से दिखाई दे इसलिए हम उसकी इच्छा के अनुसार प्रार्थना करते हैं।

जिस प्रकार शिष्यों ने प्रेरितों के काम 4:29–31 में प्रार्थना की, उसी तरह हम भी प्रार्थना करते हैं और प्रभु से बिनती करते हैं कि वह सामर्थ के काम और चिन्ह प्रकट करे।

यशायाह 64 में दी गई प्रार्थना अक्सर बेदारी के लिए प्रार्थना करते समय उपयोग की जाती है :

यशायाह 64:1–3

[1] भला हो कि तू आकाश को फाड़कर उतर आए और पहाड़ तेरे सामने कांप उठे।

[2] जैसे आग झाड़–झंखाड़ को जला देती वा जल को उबालती है, उसी रीति से तू अपने शत्रुओं पर अपना नाम ऐसा प्रकट कर कि जाति जाति के लोग तेरे प्रताप से कांप उठें।

[3] जब तू ने ऐसे भयानक काम किए जो हमारी आशा से भी बढ़कर थे, तब तू उतर आया, पहाड़ तेरे प्रताप से कांप उठे।

#4, खोए हुओं के उद्धार के लिए प्रार्थना करें

हम परमेश्वर को पुकारते हैं कि पवित्र आत्मा सामर्थ के साथ हमारे समाज में कार्य करे और पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में लोगों को कायल करे (यूहन्ना 16:8–11) ताकि आत्माएं बचाई जाएं और परमेश्वर के राज्य में लाई जाएं।

#5, समाज के परिवर्तन के लिए प्रार्थना करें

प्रार्थना करें कि परमेश्वर का राज्य हमारे समाज में आए। यशायाह ने जो वर्णन किया है, उसके समान : : *"रात के समय मैं जी से तेरी लालसा करता हूं, मैं सम्पूर्ण मन से यत्न के साथ तुझे ढूंढ़ता है। क्योंकि जब तेरे न्याय के काम पृथ्वी पर प्रकट होते हैं, तब जगत के रहनेवाले धर्म को सीखते हैं"* (यशायाह 26:9)।

#6, राज्य के अधिकार और प्रभुता का उपयोग करें

कलीसिया को पृथ्वी पर राज्य का अधिकार दिया गया है (मत्ती 16:18–19)। हमारे समाज में परमेश्वर के राज्य के आने की घोषणा करें। हम अंधकार के कामों के नाश होने की घोषणा करते हैं और लोगों को परमेश्वर की अद्‌भुत ज्योति में आने की बुलाहट देते हैं।

उपवास और प्रार्थना

प्रभु यीशु ने कहा कि दुल्हे के मित्रों की एक आदत है, जब दुल्हा दूर देश में होता है तब वे उस समय में उपवास करते हैं (मत्ती 9:14–15)। हम उस समय में हैं जब हमें उपवास और प्रार्थना करने की ज़रूरत है।

अपनी पुस्तक *"Shaping history through prayer and fasting"* (उपवास और प्रार्थना के द्वारा इतिहास रचना) में डेरेक प्रिन्स ने उपवास के निम्नलिखित परिणामों को प्रस्तुत किया है :

उपवास प्रार्थना को और तीव्र बनाता है।
प्रार्थना छुटकारा और विजय ले आती है।
उपवास परमेश्वर की पिछली वर्षा के लिए तैयार करता है।

योएल 2:23 में दी गई पिछली वर्षा की प्रतिज्ञा और योएल 2:28–29 में दिए गए आत्मा के उण्डेले जाने (जिसका उल्लेख पतरस ने प्रेरितों के काम 2:17–18 में किया है) के बाद उपवास और परमेश्वर की खोज के क्रमानुसार तीन बुलावे आते हैं :

"उपवास का दिन ठहराओ, महासभा का प्रचार करो। पुरनियों को, वरन देश के सब रहनेवालों को भी अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में इकट्ठे करके उसकी दोहाई दो।" (योएल 1:14)

"तौभी यहोवा की यह वाणी है, अब भी सुनो, उपवास के साथ रोते–पीटते अपने पूरे मन से फिरकर मेरे पास आओ।" (योएल 2:12)। *"सिय्योन में नरसिंगा फूंको; उपवास का दिन ठहराओ, महासभा का प्रचार करो। पुरनियों को बुला लो; बच्चों और दूधपीउवों को भी इकट्ठा करो। दूल्हा अपनी कोठरी से, दुल्हन अपने कमरे से निकल आए"* (योएल 2:15–16)।

यशायाह 58:6–14 में, उपवास और प्रभु की खोज के अलावा, परमेश्वर हमें पुकारता है कि हम अ. लोगों के साथ हमारे रिश्तों को सुधारें – लोगों पर अन्याय करना और उनके साथ दुर्व्यवहार करना बंद करें (पद 6), दूसरों पर बोझ रखना बंद करें, दोष ढूंढ़ना, दूसरों की बुराई करना बंद करें (पद9), और ब. निर्धन और ज़रूरतमंदों की सुधि लें (पद 7,10)। यदि हम ऐसा करते हैं, तो वह हमें बेदारी, चंगाई, परमेश्वर की प्रकट महिमा, ताज़गी, पुनर्स्थापन और बढ़ौतरी की प्रतिज्ञा देता है। हम उपवास और प्रार्थना के साथ परमेश्वर की खोज करें। परमेश्वर ने बड़ी बेदारी की प्रतिज्ञा की है और जब हम ऐसा करते हैं तब और कई आशीषें प्राप्त होती हैं।

हम उपवास और प्रार्थना के साथ परमेश्वर की खोज करें। परमेश्वर ने बड़ी बेदारी की प्रतिज्ञा की है और जब हम ऐसा करते हैं तब और कई आशीषें प्राप्त होती हैं।

हम सभी उसकी खोज करने में सहभागी हो सकते हैं

हम जानते हैं कि हममें से प्रत्येक बेदारी की खोज करने की इस पुकार का अलग रीति से उत्तर देगा।

हममें से कुछ लोग तैयार हैं – उन्होंने खुद को पूर्ण रूप से बेदारी के लिए प्रार्थना करने हेतु और हमारे दिन और समय में बेदारी को आते हुए देखने के लिए समर्पित किया है। हममें से कुछ लोग इससे परिचित नहीं हैं और शायद थोड़ा डरते हैं। कभी–कभी हम इस चुनौती से खुद को अभिभूत महसूस करते हैं, हम सोचते हैं कि इस प्रकार की बुलाहट में प्रवेश करने हेतु हम तैयार नहीं हैं।

परंतु हम में से प्रत्येक वहीं से शुरूवात कर सकता है जहां वह है।

परमेश्वर ने बिनती करें कि वह आपके हृदय में सही स्थिति उत्पन्न करे। परमेश्वर से बिनती करें कि जो उसने आपमें शुरू किया है, बेदारी के लिए प्रार्थना करने हेतु उसने हृदय की जो आवश्यक स्थिति तैयार की है उसे वह बढ़ाए।

एक या उससे अधिक लोगों के साथ इकट्ठा हो जाएं और बेदारी के लिए सरल प्रार्थना करने से शुरूवात करें। जब हम एक साथ प्रार्थना करते हैं, तब हम और आवेश के लिए एक–दूसरे के हृदयों को प्रज्वलित कर सकते हैं। इसलिए हमें अन्य विश्वासियों के साथ संगति में प्रवेश करने की ज़रूरत है और बेदारी के लिए हमारे प्रयास में हमें व्यस्त होना है। सभोपदेशक 4:9–12 हमें जो सिखाता है उसे याद रखें : *"एक से दो अच्छे हैं, क्योंकि उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है। क्योंकि यदि उनमें से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा; परंतु हाय उस पर जो अकेला होकर गिरे और उसका कोई उठानेवाला न हो। फिर यदि दो जन एक संग सोएं तो वे गर्म रहेंगे, परंतु कोई अकेला क्योंकर गर्म हो सकता है? यदि कोई अकेले पर प्रबल हो तो हो, परंतु दो उसका सामना कर सकेंगे। जो डोरी तीन तागे से बटी हो वह जल्दी नहीं टूटती।"*

9

परमेश्वर की उपस्थिति का पोषण करने और उसकी महिमा प्रकट करने हेतु बेदारी को संभालना

परमेश्वर जो कुछ हमें सौंपता है उसके हम भंडारी हैं। इसमें हमें सौंपा गया आत्मिक नेतृत्व (तीतुस 1:7), परमेश्वर के राज्य के भेद (1 कुरि. 4:1,2), हमें दिए गए वरदान (1 पतरस 4:10) और हमें दी गई सेवकाई (1 कुरि. 9:17; कुलुस्सियों 1:25) शामिल है। उत्तम भंडारीपन केवल उन वस्तुओं का उत्तम प्रबंध ही नहीं है जो हमें दी गई हैं, बल्कि उसमें उसकी सुरक्षा, उसकी वृद्धि करना और उसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना भी शामिल है।

हमें बेदारियों, परमेश्वर की भेंट या दर्शन और परमेश्वर के कार्य जो हमें सौंपे गए हैं, उनका उचित प्रबंधन करना है। यह अत्यंत चुनौतीपूर्ण हो सकता है, परंतु हम भूतकाल से कुछ व्यवहारिक सबक सीख सकते हैं और उन्हें हमारे वर्तमान दिन और समय में लागू कर सकते हैं ताकि हम उसे सफलतापूर्वक और अर्थपूर्ण ढंग से कर सकें।

गेहूं को भूसी से अलग करना

मत्ती 13:24–30

[24] उसने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया, "स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया।

[25] पर जब लोग सो रहे थे तो उसका बैरी आकर गेहूं के बीच जंगली बीज बोकर चला गया।

[26] जब अंकुर निकले और बालें लगीं, तो जंगली दाने भी दिखाई दिए।

[27] इस पर खेत के मालिक के दासों ने आकर उससे कहा, 'हे स्वामी, क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था? फिर जंगली दाने के पौधे उस में कहां से आए?'

[28] उसने उनसे कहा, 'यह किसी बैरी का काम है।' दासों ने उससे कहा, 'क्या तेरी इच्छा है कि हम जाकर उनको बटौर लें?'

[29] उसने कहा, 'ऐसा नहीं, न हो कि जंगली दाने के पौधे बटौरते हुए उनके साथ गेहूं भी उखाड़ लो।

[30] कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो, और कटनी के समय मैं काटनेवालों से कहूंगा, पहले जंगली दाने के पौधे बटौरकर जलाने के लिए उनके गट्ठे बान्ध लो, और गेहूं को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो।"

किसी भी बेदारी में, आत्मा के असली कार्य के साथ मिला हुआ देह का प्रकटन होगा। लोग उत्तेजित होते हैं, कुछ लोग केवल अपनी ओर दूसरों को आकर्षित करने की कोशिश करेंगे और कुछ लोग औरों से अधिक आत्मिक दिखने का प्रयास करेंगे। देह की बातों को उत्पन्न करने वालु सब प्रकार के गलत कारण और प्रेरणाएं हो सकती हैं। जो लोग अगुवों के स्थान पर हैं, उन्हें दैहिक प्रकटनों का कैसे सामना करना चाहिए जो परमेश्वर के पवित्र आत्मा द्वारा किए जाने वाले असली कामों के साथ मिल जाते हैं?

यद्यपि मत्ती 13:24–30 बेदारी के संदर्भ में नहीं दिया गया था, फिर भी हम इस दृष्टांत से एक सत्य पा सकते हैं और उसे बेदारी के व्यवस्थापन में लागू कर सकते हैं। स्वामी को इस बात का ध्यान था कि गेहूं के अंकुरन के समय जंगली घास के साथ गेहूं उखाड़ दिया न जाए। बल्कि वह फल का इंतज़ार करेगा – कटनी के समय का।

कटनी के समय में, गेहूं को जंगली घास से अलग पहचानना आसान होगा। गेहूं के पास सही फल होता है जिसकी हमें तलाश होती है, जंगली घास के पास वह फल नहीं होता। गेहूं को जंगली घास से अलग करने का यही सही समय होता है। उसी तरह, बेदारी में ऐसा समय होता है जब देह की बातें आकर काम को बिगाड़ती हैं। भूसी को गेहूं से छानकर–पछाड़ कर कैसे और कब अलग करना है यह जानने के लिए बुद्धिमान और विवेकी अगुवों का होना ज़रूरी है। हमें फल देखने के लिए लोगों का इंतज़ार करना है। जो आत्मा का कार्य है उसमें असली और स्थायी फल लगेंगे, जो देह का कार्य है उसमें नहीं लगेंगे। उचित समय में, लोग स्वयं शरीर के कामों को त्याग देंगे।

परमेश्वर की बेदारी का परमेश्वर के निवास में व्यवस्थापन करना

भजनसंहिता 132:13–18

13 क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को अपनाया है, और उसे अपने निवास के लिये चाहा है।

14 वह तो युग युग के लिये मेरा विश्रामस्थान है; यही मैं रहूंगा, क्योंकि मैंने इसको चाहा है।

15 मैं इसमें की भोजनवस्तुओं पर अति आशीष दूंगा; और इसके दरिद्रों को रोटी से तृप्त करूंगा।

16 इसके याजकों को मैं उध्दार का वस्त्र पहनाऊंगा, और इसके भक्त लोग ऊंचे स्वर से जयजयकार करेंगे।

17 वहां मैं दाऊद के एक सींग उगाऊंगा; मैंने अपने अभिषिक्त के लिये एक दीपक तैयार कर रखा है।

18 मैं उसके शत्रुओं को तो लज्जा का वस्त्र पहिनाऊंगा, परन्तु उसी के सिर पर उसका मुकुट शोभायमान रहेगा।

परमेश्वर की परम इच्छा मनुष्यों के बीच उसका निवासस्थान बनाने की है। भजनसंहिता 132:13–18 में वर्णन किया गया है कि जब परमेश्वर अपने लोगों के मध्य वास करता है, तब क्या होता है। वह ऐसे समुदाय का वर्णन करता है वह जीवन के हर क्षेत्र में परमेश्वर के उद्धार का अनुभव करते हुए ईश्वरीय प्रयोजन की आशीषित होता है; ; परमेश्वर के आनन्द से परिपूर्ण लोग; बल और प्रभुता में बढ़ने वाले लोग; प्रकटीकरण और अभिषेक में चलने वाले; विजय और उत्सव में चलने वाले लोग। ऐसा बड़े पैमाने पर हो सकता है।

इसलिए बेदारी में, हमें परमेश्वर के दर्शन का प्रबंधन करना है ताकि उसकी उपस्थिति उसके लोगों के बीच वास कर सके।

यदि लोगों को और अगुवों को उचित रीति से तैयार किया जाएगा, तो वे इस बात को सुनिश्चित करेंगे कि परमेश्वर का भवन निवासस्थान के रूप में रहेगा जहां वास करने से परमेश्वर प्रसन्न होता है। यहां पर बाइबल से कुछ निर्देश दिए गए हैं कि किस प्रकार परमेश्वर के भवन को परमेश्वर के लिए उचित निवासस्थान (विश्राम स्थान) के रूप में तैयार करें।

#1, घर को स्वच्छ और शुद्ध रखें – घर में कोई पाप न हो

परमेश्वर के भवन को पवित्र बनाए रखना है। व्यक्तिगत् तौर पर और समुदाय के रूप में भी, हम परमेश्वर के मंदिर हैं। प्रेरित पौलुस हमें अत्यंत स्पष्ट शब्दों में सिखाता है: *"क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुममें वास करता है? यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो"* (1 कुरि. 3:16–17)। हमें परमेश्वर के लोगों को प्रोत्साहन देना है कि वे उसके मंदिर को पवित्र और शुद्ध बनाए रखें। शत्रु को प्रवेश करने के लिए कोई जगह न दें (इफिसियों 4:27)।

#2, आत्मा की एकता बनाए रखें – परमेश्वर को यह अच्छा और मनभावना लगता है

हम जानते हैं कि एकता अभिषेक, जीवन और आशीष का स्थान है (भजन 133)। हमें शांति के साथ आत्मा की एकता बनाए रखने की ओर कार्य करना है (इफिसियों 4:3)। किसी प्रकार की ईर्ष्या, कलह, निंदा, स्वार्थी अभिलाषा, आदि की अनुमति न दें जो एकता को भंग करती हैं। हम प्रेरितों के काम 6 में एक उदाहरण देखते हैं जहां संघर्ष और कलह की समस्याएं थीं, परंतु प्रेरितों ने तुरंत इस समस्या को सम्बोधित किया और व्यवस्था एवं एकता को पुनर्स्थापित किया।

#3, विनम्र हृदय बनाए रखें – परमेश्वर अहंकारियों का विरोध करता है

अगुवों के रूप में और समाज के रूप में, हमें परमेश्वर के और मनुष्यों के सामने विनम्रतापूर्वक चलने की आवश्यकता है। किसी भी प्रकार के घमंड, अहंकार या ऐसी किसी भी प्रवृत्ति के विरोध में खुद को बचाए रखें जो हममें ऐसा स्वभाव उत्पन्न करती है जिससे हम खुद को आवश्यकता से अधिक ऊंचा समझने लगते हैं (रोमियों 12:3)। *" हे नवयुवको, तुम भी प्राचीनों के आधीन रहो, वरन् तुम सब के सब एक–दूसरे की सेवा के लिए दीनता से कमर बान्धे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है"* (1 पतरस 5:5)।

#4, परमेश्वर को अपने ध्यान का केंद्र बनाएं – वह अपने स्वयं के घर पर प्रभु है

"क्योंकि वह मूसा से इतना बढ़कर महिमा के योग्य समझा गया है, जितना कि घर का बनानेवाला घर से बढ़कर आदर रखता है। परंतु मसीह पुत्र के समान उसके घर का अधिकारी है, और उसका घर हम हैं, यदि हम साहस पर, और अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें" (इब्रानियों 3:3,6)। जब हम उसकी उपस्थिति एवं सामर्थ को और अधिकाई से, और हमारे मध्य में उसकी महिमा को और अधिकाई से अनुभव करने लगते हैं, तब हमें हमारी आंखों को हमेशा उस पर स्थिर रखना चाहिए। हम उसका भवन हैं। जिसने घर बनाया और घर का मालिक है, उसे हमेशा घर से अधिक आदर मिलना चाहिए।

मज़बूत नेतृत्व महत्वपूर्ण है। परंतु नेतृत्व या अगुवाई को ध्यान का केंद्र नहीं बनना चाहिए। नेतृत्व केवल इस बात को सुनिश्चित करता है कि हर कोई घर के प्रभु, यीशु मसीह पर अपनी आंखें केंद्रित करे।

#5, प्रार्थना करते रहें जो बेदारी की आग को ईंधन देती है

परमेश्वर आग देता है, हम बलिदान चढ़ाते हैं। प्रार्थना, आराधना और भक्ति के आत्मिक बलिदान आते रहने चाहिए और उन्हें प्रबल होते जाना है। बेदारी तब खत्म होती है जब हम प्रभु के भय और परमेश्वर के साथ हमारी घनिष्ठता के साथ समझौता करते हैं। इन्हें हमेशा सम्भालकर रखना है। अर्थात्, बेदारी का समय अत्यंत व्यस्त समय होता है। परंतु हमारी इस व्यस्तता में हम प्रार्थना के इस स्थान की उपेक्षा नहीं कर सकते। हमें संसार की ध्यान बंटाने वाली बातों पर ध्यान न देते हुए प्रार्थना करने के लिए असुविधा और बेचैनी का अनुभव करने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें और अधिक पाने हेतु उत्साह, जोश, और अपेक्षा जारी रखना चाहिए।

#6, जो महत्वपूर्ण है उसके साथ बने रहें

परमेश्वर जब हमें बेदारी की एक ऋतु से दूसरी ऋतु की और, महिमा के एक स्तर से दूसरे स्तर की ओर ले जाता है, तब कुछ बातें होती हैं जिन्हें बदलना नहीं चाहिए। परमेश्वर के वचन की सही शिक्षा जो हमें उन्नति प्रदान करती हैं, आत्माओं को जीतना, और नये विश्वासियों को शिष्य बनाना, संगति, एक–दूसरे का ध्यान रखना, आपस में आदान–प्रदान, पवित्र जनों को निरंतर तैयार करते रहना, सेवकाई में पवित्र जनों को सेवा के लिए भेजना, मिशन के सुसमाचार कार्य – ये सारी बातें हमारी मसीही यात्रा के लिए आवश्यक उपादान हैं। हम इन्हें "त्यागकर" ऐसी किसी बात के पीछे नहीं पड़ सकते जो अच्छी हैं, परंतु आवश्यक नहीं हैं।

जब कभी स्वर्गदूत दिखाई देते हैं, तब उनका दिखाई देना अच्छा है। परंतु स्वर्गदूतों के दर्शन का पीछा करने या उसे अपना लक्ष्य बनाने की कोई ज़रूरत नहीं है। जी हां, सोने की धूल, स्वर्गदूतों के पंख, तेजोमंडल, रोशनी की किरण, अनमोल जवाहर, और अन्य "चमत्कारपूर्ण" बातें होती हैं – परंतु इनमें से कोई भी बात हमारा लक्ष्य न बनने पाए या इनमें से कोई भी बात परमेश्वर के साथ हमारे जीवन और घनिष्ठता की गहराई के दर्शक नही हैं। जो महत्वपूर्ण है उसके साथ बने रहें। जैसा कि हमने प्रेरितों के कामों की पुस्तक में देखा, यहां बेदारी के मध्य *"और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे"* (प्रेरितों के काम 2:42)।

उदाहरण के तौर पर, प्रेरितों के काम के 5वे अध्याय में, जब पिन्तेकुस्त का उण्डेला जाना जारी रहा, तब हम देखते हैं कि ऐसा समय आया जब परमेश्वर चंगाई करने और लोगों को छुटकारा देने के लिए पतरस की छांव का उपयोग करने लगा। पड़ोस के नगरों से पतरस की छाया के नीचे चंगाई पाने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। अब यह "बाइबल की अतिरिक्त बात" हो सकती है क्योंकि न तो यीशु की सेवकाई में और न ही पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की सेवकाई में ऐसा पहले कभी हुआ है। प्रेरितों ने क्या किया? पहली बात, उन्होंने यह बात जानना सुनिश्चित किया कि परमेश्वर यीशु के नाम में चिन्ह और चमत्कारों को उत्पन्न करके उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दे रहा था (प्रेरितों के काम 4:30)। उन्होंने यही मांगा था और यह अवश्य ही "चिन्ह और चमत्कार" था। दूसरी बात, जो प्रचार वे कर रहे थे और जो सिखा रहे थे, उसके साथ वे बने रहे। चिन्ह और चमत्कारों ने एक नई शिक्षा या नई "चंगाई की छाया" के सिद्धांत को तैयार करने हेतु उन्हें प्रेरित नहीं किया। *"और प्रति दिन मंदिर में और घर–घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है न रुके"* (प्रेरितों के काम 5:42)।

#7, जो कुछ दिया जा रहा है उसे मज़बूत बनाएं

जो भूमि हमने जीत ली है उसे हमें खोना नहीं है। जब परमेश्वर हमें विश्वास के नए स्तर, अपनी उपस्थिति के नए अनुभव, खुद के विषय में समझ, उसके मार्गों के प्रकटीकरण, शत्रुओं पर विजय, उसकी सामर्थ की सेवा करने की बेदारी में ले आता है, तो हमें इन बातों को दृढ़ करना है, मज़बूत बनाना है। हमें इन्हें खोना नहीं है। ये हमारे जीवन का, हमारे नए मानक का हिस्सा बनना चाहिए।

इसे दृढ़ करने हेतु, हमें जो कुछ भी हो रहा है, उसका बाइबल आधारित दृष्टिकोण प्रदान करना होगा, चाहे वह (अ) प्रकटीकरण की प्राप्ति हो या (ब) प्राप्त होने वाले प्रकाशन हों।

जो कुछ भी दिया गया है उसका उपयोग करते रहें। यदि हम उसका उपयोग नहीं करते हैं, तो हम उसे खो देंगे।

जहां कहीं सम्भव हो, जो कुछ भी मुक्त किया गया है उसे विश्वासियों के समुदाय के रूप में, संस्कृति का, जिस तरह हम जीवन जीते हैं और कार्य करते हैं, उसका हिस्सा बनाएं।

जहां पर उचित हो, वहां जो दिया गया है उसका उचित दस्तावेज तैयार करें।

#8, बेदारी को बनाए रखने के लिए बेदारी की संस्कृति का निर्माण करें और उसे सम्भालकर रखें

संस्कृति विशिष्ट जनसमुदाय की विशेषता और ज्ञान होता है, जो भाषा, धर्म, खानपान, सामाजिक आदतें, संगीत, और कला जैसी हर एक बात से परिभाषित होता है।

बेदारी की संस्कृति वह होती है, जो परमेश्वर की उपस्थिति पर केंद्रित होती है, कार्यक्रम या कार्यसूची पर केंद्रित नही होती। हम परमेश्वर की उपस्थिति को मूल्यवान जानते हैं और पवित्र आत्मा के कार्य और अगुवाई के अधीन होते हैं। हम आत्मा के कार्य को मान्य करते हैं और मूल्य देते हैं, तब भी जब हमारे पास पूरे उत्तर नहीं होते।

"हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहां से आती है और किधर जाती है। जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है" (यूहन्ना 3:8)।

बेदारी की संस्कृति वह होती है जहां पर हम स्वस्थ, उन्नतिप्रद वातावरण में आत्मा के प्रकाशन की अपेक्षा करते हैं और उसके लिए प्रयास करते हैं। *"इसलिए तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो"* (1 कुरि. 14:12)।

बेदारी की संस्कृति वह होती है जहां पर हम तृप्त होते हैं और फिर भी अधिक पाने की भूख हममें होती है। हम जानते हैं कि हमने सारी वस्तुओं की आशीष पाई है, फिर भी हम आत्मा में दीन (निर्धन) होते हैं और हम में अधिक पाने की चाहत होती है। हम आग्रह करते हैं।

बेदारी की संस्कृति वह होती है जहां पर प्रार्थना, आराधना, वचन, आत्माओं को जीतना और शिष्य बनाना आदि बातों के विषय में हम आवेश और बोझ रखते हैं और उन्हें उत्साह के साथ जीते हैं।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि परमेश्वर जो कुछ हमें देता है, उसका हम उचित प्रबंध करें, उसके लिए हमें आने वाली पीढ़ी को बेदारी की संस्कृति में तैयार करना है ताकि वे उसमें बने रहें और पहले से आगे बढ़ सकें।

#9, परमेश्वर से प्रेम करें। लोगों का ध्यान रखें

स्मरण रखें कि अन्य सब बातों से अधिक, लोगों से प्रेम करना ही कुंजी है। पौलुस इस विषय में हमें 1 कुरि. 13 में स्पष्ट रूप से बताता है। सारे अलौकिक प्रकटनों, चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों, पर्वतों को हटाने वाले विश्वास, आत्मा के वरदान से बढ़कर जो बात है, वह है प्रेम। पौलुस कहता है कि हमें लोगों से प्रेम करना है। लोगों के लिए सच्चा प्रेम रखें। उनकी निगरानी करें। उनकी भलाई की इच्छा रखें। उनके कल्याण के विषय में सोचें। अच्छे कामों और दयालुता के द्वारा प्रेम प्रकट करें। इस बात को सुनिश्चित करें कि लोगों को आवश्यकता से अधिक परिश्रम न करना पड़े, उन्हें उचित विश्राम मिले।

यह भी स्मरण रखें कि प्रेम इतना कठोर हो कि वह निर्बलता, पाप, और गलत कामों का सामना कर सके। प्रेम दूसरों के लाभ के लिए सच बोलेगा, भले ही इससे उन्हें दुख क्यों न पहुंचे। प्रेम सुधार लाएगा और उन बातों को सम्बोधित करेगा जिन्हें सम्बोधित करने की ज़रूरत है।

#10, बेदारी में अगुवाई करना – जो कुछ सौंपा गया है उसकी मनुष्यों से या शैतान के आक्रमण से रक्षा करना

कभी–कभी बाहर से और विस्तृत कलीसियाई मंडली के अंदर से भी ऐसे लोगों की ओर से जो समझते नहीं हैं, सताव होगा। जो कुछ हो रहा है उसे न समझने वाले अगुवों की ओर से या ईर्ष्या की वजह से भी बेदारी के अगुवों पर आवेशपूर्ण आक्रमण होगा।

अगुवे के रूप में शत्रू के कामों और युक्तियों के विषय में सावधान रहें जिसके द्वारा वह भीतर प्रवेश करने और हानि पहुंचाने का प्रयास करेगा। अपने खुद के जीवन का ध्यान रखें। जैसा कि पौलुस ने तीमुथियुस को समझाया : *"इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने, और अपने सुननेवालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा"* (1 तीमुथियुस 4:16)। शत्रु जानता है कि यदि वह चरवाहे पर वार करता है, तो वह भेड़ों को तितरबितर कर सकता है।

जो कुछ हो रहा है उसकी आत्मा में निगरानी करने और उसके लिए प्रार्थना करने हेतु – पहरूओं को नियुक्त करें।

अगुवा होने के नाते, आपके साथ काम करने वाले या आपके नेतृत्व के अधीन काम करने वाले अन्य अगुवों की निगरानी करें। आत्मा में उनकी निगरानी करें, कि कहीं शत्रु उनका उपयोग करके प्रवेश मार्ग के रूप में उनका इस्तेमाल कर, परमेश्वर जो कुछ भेज रहा है, उसे हानि पहुंचा न दे।

हमें "परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित नहीं करना है" और हमें परमेश्वर के "आत्मा को बुझाना" नहीं है (इफिसियों 4:30; 1 थिस्सल. 5:19)। लड़ाई–झगड़ा, घमण्ड, प्रतियोगिता, ईर्ष्या और शरीर के अन्य काम आत्मा को शोकित भी करते हैं और बुझाते भी हैं। इनके विरोध में खुद की रक्षा करें। पुराने नियम में परमेश्वर ने निश्चित निर्देश दिए थे कि वाचा के संदूक के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए (गिनती 4:15)। केवल याजक उसे छू सकते थे, परंतु कहातियों (लेवी) को उसे डंडे पर ले जाना पड़ता था। लेवी उज्जाह ने वाचा के संदूक को गलत तरीके से स्पर्श किया और उसे अपने प्राण की कीमत चुकानी पड़ी (2 शमुएल 6:6–8)। नये नियम में, हमारी दैहिक दखलअंदाजी परमेश्वर की प्रकट उपस्थिति को गलत तरीके से स्पर्श करने के बराबर है और जब परमेश्वर का आत्मा शोकित होता है या बुझता है, तो वह पीछे हट जाएगा।

बेदारी की अगुवानी करना, विलियम सेमर से कुछ सबक

सिसिल एम. रोबेक, जुनियर, पी.एच.डी., असेम्बलीज़ ऑफ गॉड एन्रिचमेंट जर्नल में लिखे गए उनके लेख (वसंत 2006) : *"विलियम जे. सेमरः एन अर्ली मॉडल ऑफ पेन्टिकॉस्टल लीडरशिप"* में बेदारी के अगुवे के रूप में विलियम सेमर के निम्नलिखित गुणों पर प्रकाश डालते हैंः

- ✓ वे शांत, सौम्य, विनयशील और विनम्र जन थे।
- ✓ वे सबको लेकर चलने वाले, पक्षपातरहित थे, वे अपनी नेतृत्व शैली में सबके साथ समानता का व्यवहार करते थे, अतः सब जाति के लोग जो कुछ हो रहा था उसका हिस्सा बन सके।
- ✓ जो वे थे और जो वे करने वाले थे उसमें वे व्यक्तिगत् रूप से सुरक्षित थे और इस कारण वे प्रयोग के लिए सुरक्षित स्थान प्रदान कर सकते थे जहां नये पाठ सीखे जा सकते थे और बिना गंभीर परिणामों के निर्णय लिए जा सकते थे।
- ✓ वे महिलाओं की सेवकाई का समर्थन करते थे, उन्हें नेतृत्व के पद, प्रचार, सुसमाचार प्रचार, कलीसिया रोपण और विश्व मिशन के अवसर प्रदान करते थे।
- ✓ वे सामाजिक वर्ग या अनुभव के आधार पर भेदभाव नहीं करते थे। वे "सभी विश्वासियों का याजकपन" के अनुसार चलते थे और प्रत्येक को सेवा करने और समाज में कुछ योगदान देने का अवसर प्रदान करते थे।
- ✓ वे हमेशा शांत रहते थे, उनका स्वभाव दूसरों को शांत करने वाला था। ऐसी कोई बात नहीं थी जो उन्हें विचलित करे।
- ✓ उनका स्वभाव बदला लेने वाला नहीं था, वे सौम्य, शालीन और मधुर भाषी थे और फिर भी आवश्यकता पड़ने पर दूसरों को सुधारने की क्षमता रखते थे।
- ✓ वे उच्च शिक्षा प्राप्त नही थे, फिर भी जिस बात पर वे विश्वास करते थे, उस विषय में सुनिश्चित थे, अत्यंत प्रार्थनाशील थे, और किसी भी विषय पर अपनी राय दे पाते थे।

- ✓ उन्होंने जीवन के उदाहरण के माध्यम से सीखते रहने, बदलने के लिए तैयार, खुद को सुधारने के लिए तैयार, व्यक्ति का नमूना प्रस्तुत किया। व्यक्तिगत् विनयशीलता, लोगों के प्रति प्रेम, सुधार प्राप्त करने की तैयारी, परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता, संवेदनशीलता के उदाहरण ने दूसरों को ऐसा ही करने हेतु चुनौती दी।
- ✓ नया काम शुरू करने वालों की वे प्रशंसा करते थे और सेवकाई में उनकी उन्नति से वे भयभीत नहीं होते थे।

"ये गुण सेमर की ओर ऐसे व्यक्ति के रूप में संकेत करते हैं जिसमें विनम्रता और आत्म–संयम था। मज़बूत पुरोहित वर्गों के अधीन होकर या पद के व्यक्तिगत अहंकार के बजाय, उन्होंने पवित्र शास्त्र के अधिकार के अधीन विश्वासियों के समुदाय के प्रति समर्पण का आदर्श रखकर प्रभावी नेतृत्व प्रदान किया। सेमर सेवा के कार्य के लिए लोगों को समर्थ बनाने के संबंध में नेतृत्व में उनकी भूमिका के विषय में जानते थे, और उनके लोग उनके साथ आदर के साथ, प्रेम के साथ, और स्नेह के प्रकट लक्षणों के साथ आचरण करते थे।" – सिसिल एम. रोबेक, जुनियर।

परमेश्वर की मुलाकात को परमेश्वर की बेदारी में बदल देना

हम बेदारी को एक सफर के रूप में देखते हैं जो हमारी कलीसिया को वह बनाने की ओर ले चलती है जो परमेश्वर ने वास्तव में चाहा है, लोगों के मध्य परमेश्वर की महिमा का वासस्थान। इसीलिए हमें बेदारी का अनुसरण करना है। बेदारी हमारी मूल रचना की पुनः खोज है, कि हमें वास्तव में कौन होना है। अर्थात परमेश्वर का उद्देश्य यह नहीं है कि परमेश्वर ने बड़ी कृपा से हमें आशीषित किया है उन बातों को खो बैठना, परंतु उद्देश्य यह है कि हम बेदारी को मज़बूत बनाएं और उसके वाहक बनें और परमेश्वर से और मांगें।

परमेश्वर की हर मुलाकात, हर संजीवन परमेश्वर का वासस्थान बनने पाए और परमेश्वर की जागृति बनने पाए जो कलीसिया द्वारा समाज में और संसार में मुक्त होती है।

यहां पर कुछ बातें बताई गई हैं कि हम किस प्रकार परमेश्वर की मुलाकात को परमेश्वर की बेदारी में बदल सकते हैं :

#1, दूसरों को प्रेरित करने हेतु कहानी बताएं

जिन बातों का हम अनुभव करते हैं और सीखते हैं उनके विषय में जब हम दूसरों को बताएंगे, तो इससे उन्हें प्रेरणा मिलेगी और प्रोत्साहन मिलेगा और अन्य स्थानों में बेदारी की चिनगारियां फैलने लगेंगी।

#2, जो इस अग्नी को ग्रहण करने तैयार हैं उन लोगों की खोज करें

आग तब फैलती है जब उसे सही ज्वलनशील पदार्थ मिल जाता है। ऐसे लोगों की खोज करें जो बेदारी को ग्रहण करने तैयार हैं और उस आग को आगे फैलाएं।

#3, आत्मा में प्रदान करें

बेदारी आत्मा का कार्य है और कोई विधि या कार्य करने का तरीका नहीं है। विधियों या कार्य करने के तरीकों को दूसरों पर न लादते हुए, आत्मा में जो कुछ आपने पाया है उसे दूसरों को दें। आत्मा में दें और उसके बाद हटकर खड़े रहें और परमेश्वर को उसकी इच्छा के अनुसार दूसरे समाज में काम करने दें। बिना नियंत्रण के या सबकुछ कैसा होना चाहिए यह निर्धारित करने का प्रयास न करते हुए, आत्मा के शुद्ध कार्य को जन्म लेने दें।

#4, बेदारी के वाहकों को उसे दूर–दूर तक ले जाने के लिए मुक्त करें

अंततः लोग बेदारी के वाहक हैं। इसलिए हमें लोगों को मुक्त करने के लिए और उनकी मदद करने के लिए तैयार रहना है ताकि वे जाकर समुदायों में, नगरों में, राष्ट्रों में बेदारी की आग फैलाएं।

"बेदारियां अक्सर संपर्क से फैलती हैं, बिल्कुल संक्रामक रोग की तरह। जिन लोगों या समूहों ने परमेश्वर की सामर्थ का अनुभव किया है, वे उसे दूसरों तक लाने का माध्यम हैं।" – आर. ई. डेविस

अब हमारी बारी है – राष्ट्र इंतज़ार में हैं

1906 की वेल्श बेदारी के 20 साल बाद, ईव्हान रॉबर्ट्स से एक बार पूछा गया कि क्या उन्हें लगता है कि वे वेल्श में दूसरी बेदारी की अपेक्षा कर सकते हैं। रॉबर्ट्स ने उत्तर दिया, *"जी हां, परंतु कौन कीमत चुकाएगा?"*

10

बेरिया

Bible History Online. (2016). Retrieved March 2016, from Bible History Online: www.bible-history.com

Bible Study Tools Online. (2016). Retrieved March 2016, from Bible Study Tools Online: www.biblestudytools.com/history/

Biblica-The International Bible Society. (2016). Retrieved March 2016, from Biblica-The International Bible Society: www.biblica.com

Christian History. (2016). Retrieved March 2016, from Christianity Today: www.christianitytoday.com/history

christianity.com. (2016). *Church History.* Retrieved March 2016, from www.christianity.com: www.christianity.com/church/church-history/

D.L. Moody's Story. (2016). Retrieved March 2016, from Moody Bible Institute: www.moody.edu/DL-moody/

Enrichment Journal. (2016). Retrieved 2016, from Enrichment Journal: enrichmentjournal.ag.org

History of Missiology. (2016). Retrieved March 2016, from Boston University School of Theology: http://www.bu.edu/missiology/missionary-biography/a-c/abrams-minnie-f-1859-1912/

Hyatt, E. L. (2002). *2000 Years of Charismatic Christianity.* Lake Mary, Florida: Charisma House.

Klein, R. (2016). *Profiles In Prayer: Praying John Hyde.* Retrieved March 2016, from Christian Broadcasting Network: http://www.cbn.com/spirituallife/PrayerAndCounseling/Intercession/praying_john_hyde.aspx

Maps and Summary of Paul's journeys. (2016). Retrieved March 2016, from BibleStudy.org: www.biblestudy.org

McDonald, M. (1999). *A Brief Survey of Missions.* Singapore: Far Eastern Bible College Press.

Mostert, B. (2011). *When God Renews People.* PO Box 1599, Vereeniging, 1930, Republic of South Africa: Christian Art Publishers.

Pentecostal-Charismatic Theological Inquiry International. (2016). Retrieved March 2016, from Pentecostal-Charismatic Theological Inquiry International: www.pctii.org

Porter, E. T. (2000). *The Ten Greatest Revivals Ever.* Ann Arbor, Michigan: Servant Publications.

Prince, D. (2002). *Shaping History Through Prayer And Fasting.* New Kensington, Pennsylvania: Whitaker

House.

Rabey, S. (2005, June). *Fire From Above.* Retrieved September 02, 2016, from Charisma Magazine: http://www.charismamag.com/life/216-j15/features/spiritual-revival/1609-fire-from-above

Sparks, L. (August, 2013). *Sovereignty or Spiritual Hunger? Six Key Factors that Birthed the Toronto Blessing.* lawrencesparks.com.

Study of the book of Acts. (2016). Retrieved March 2016, from Grace Communion International: www.gci.org/bible/acts

Tucker, R. A. (2004). *From Jerusalem to Irian Jaya.* Grand Rapids, Michigan: Zondervan.

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्धनों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

➢ दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ॲण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।

➢ प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **"पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता ी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों से । वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

नोट्स

परमेश्वर वास्तव में कलीसिया को जैसा बनाने की योजना रखता है, अर्थात् मनुष्यों के मध्य परमेश्वर का निवास स्थान, मनुष्यों के मध्य परमेश्वर की महिमा का निवास स्थान, इस उद्देश्य की ओर हमारे सफर की दृष्टि से हम बेदारी को देखते हैं। इसीलिए हमें बेदारी की खोज करना चाहिए। बेदारी हमारी मूल रचना की – हमें वास्तव में कौन होना था इसकी पुनः खोज है। अर्थात्, परमेश्वर का उद्देश्य यह नहीं है कि उसने हमें बड़े अनुग्रह से जिस बात से आशीषित किया है, उसे हम खो दें, परंतु हम बेदारी को मज़बूत बनाएं और बेदारी के वाहक बनें एवं परमेश्वर से और मांगे।

परमेश्वर की प्रत्येक मुलाकात या भेंट परमेश्वर का निवास स्थान बनने पाए और परमेश्वर का कार्य बनने पाए जो कलीसिया के माध्यम से समाज और संसार में भेजा जाता है।

बेदारी के विद्वान, प्रचारक और लेखक जे. एडविन ओर ने कहा है, *"कलीसिया के इतिहास में ऐसे उदाहरण रहे हैं जब परमेश्वर के अद्भुत कार्यों के विषय में बार-बार बताकर विश्वसनीय मध्यस्थों की अपेक्षाओं को पुनः प्रज्वलित किया गया है और दूसरी जागृति का मार्ग तैयार किया गया है।"*

जब मूल बेदारी की कहानियां बताई जाती हैं, तब परमेश्वर उनका उपयोग लोगों के हृदयों को प्रोत्साहित करने के लिए करता है, ताकि कहानी के वाहक जब कहानियों को फिर बताते हैं, तब पूरे देश में बेदारी की आग प्रज्वलित होती है। हमारा विश्वास है कि यह संकलन परमेश्वर के लिए आवेश को प्रज्वलित करेगा और कई स्थानों में बेदारी की आग लगाएगा। हमारी इच्छा केवल यह नहीं है कि बेदारी की आग भड़क उठे, परंतु हम स्थानीय कलीसियाओं और विश्वास करने वाले समुदायों को परमेश्वर की गहिमा के और बड़े प्रकाशनों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति के बढ़ते हुए पैमानों का निवास स्थान बनते हुए देख सकें, ताकि सच्चे और जीवित परमेश्वर से संसार की मुलाकात हो सके।

बेदारी की खोज करने के लिए कोई मध्यभूमि नहीं है। हमें पराकाष्ठा करनी होगी। परमेश्वर की हमारी खोज में पराकाष्ठा, क्योंकि वह केवल उन लोगों को उत्तर देता है जो भूखे और प्यासे हैं। कुछ लोग हमसे प्रेम करेंगे और हमारी प्रशंसा करेंगे। कई हमारी आलोचना करेंगे, हमें दोष देंगे और हमारा विरोध करेंगे। परंतु यह भी एक चुनाव है जो हमें करना होगा। क्या हम उसकी और खोज करेंगे? अब हमारी बारी है।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org